مفہوم نہیں ہوتی اسکی حقیقت
حال بخوبی معلوم نہیں ہوتی
چنانچہ کہتے ہیں کہ قدر عافیت
کسے داند کہ بمصیبتے گرفتار آید
اسلیے گوتم رشی نے نیائے
درشن کے پہلے سوتر میں پرمان
وغیرہ سولہ تتون کے گیان کو
مکتی کا سبب قرار دیا ہے وہ سوتر یہ ہے

प्रमाणादीनां तत्व
ज्ञानान्नि श्रेय सा-
धिगमः

حاصل یہ ہے کہ اگرچہ فقط آتم گیان
رستگاری کا باعث ہے لیکن چونکہ
ہر چیز کے گیان میں اسکی ضد کا
گیان بھی ممد ہوتا ہے لہذا آتم گیان
میں اناتم گیان کو بھی دخل ہے

...ज्ञान नहीं होता
...का मान नहीं
...ने कहा है कि
...ही जानता है जो
...ड़ा हो इसी
...। न्याय दर्शन
...प्रमाण प्रभृति
...मुक्ति का कारण
...प्रमाणादीनां तत्व
साधि गमः) ना-
...कि यद्यपि केवल
...का कारण है।
हर वस्तु के ज्ञान में
...का ज्ञान भी सहा-
...स लिये आत्मज्ञान
...भी सहायक है अब
...के दर्शन पद दृष्टि
...वन्ता है कि जिस
...का है जोकि छः
...और परमात्मा का
...है इससे इन को

(Page चिपका हुआ है

...ान नहीं होता
...ं का भान नहीं
...ने कहा है कि
...ो जान्ता है जो
...ड़ा हो इसी
...ाम ... न्याय दर्शन
...माण प्रभृति
...ुक्ति का कारण
...माणादीनां तत्व
...साधि गमः) ना-
...कि यद्यपि केवल
...का कारण है।
...र वस्तु के ज्ञान में
...का ज्ञान भी सहा-
...लिये आत्मज्ञान
...ी सहायक है अब
...क दर्शन पद दृशि
...वन्ता है कि जिस
...का है जोकि छः
...और परमात्मा का
...है इससे इन को

مفہوم نہیں ہوتی اسکی حقیقت
حال بخوبی معلوم نہیں ہوتی
چنانچہ کہتے ہیں کہ قدر عافیت
کسے داند کہ بمصیبتے گرفتار آید
اسلیے گوتم رشی نے نیائے
درشن کے پہلے سوتر میں پرمان
وغیرہ سولہ تتون کے گیان کو
مکتی کا سبب قرار دیا ہے وہ سوتر یہ ہے

प्रमाणादीनां तत्व
ज्ञानान्निःश्रेय सा-
धिगमः

حاصل یہ ہے کہ اگرچہ فقط آتم گیان
رستگاری کا باعث ہے لیکن چونکہ
ہر چیز کے گیان میں اسکی ضد کا
گیان بھی معاون ہوتا ہے یعنی آتم گیان
میں انآتم گیان کو بھی دخل ہے
[illegible]

1,2,3,4 Page नहीं है

(Page चिपका हुआ है →

षट् दर्शन कहते हैं यह ही
वृतान्त है इस यंत्रालय का इस
से इसका सुदर्शन नाम रक्खा
गया पुराण वालों के संकेत में
सुदर्शन विष्णु के शस्त्र का नाम
है जिस को चक्र कहते हैं और
वह प्रकाश रूप असुरों की मूल
का नाशक है जोकि इस यंत्राल-
य में वेद विरोधियों के मत का
खंडन छपता है इस कारण
सब लोगों का चित्त इसी ओर
जाता है इस कारण इस यंत्राल-
य का यही नाम बहुत योग्य है इस
यंत्रालय से सत्य के निर्णय का
स्रोत जारी है जो कि आर्यों
के लिये हितकारी है वेद
की श्रुतियों के गूढ़ अर्थों
की व्याख्या की जाती है
और ज्ञान और विज्ञान के
प्रश्नों का उत्तर दियाजाता है
जब कि आज कल सब ओर वेद

شٹ درشن کہتے ہیں یہ
ہی حال ہے اس مطبع کا لہٰذا
باسم سودرشن موسوم کیا گیا
پران والوں کی اصطلاح میں
سودرشن بشنو کے شستر کا
نام ہے جسکو چکر کہتے ہیں اور
وہ پرکاش روپ اسروں
کی بنیاد کا قطع کرنیوالا ہے
چونکہ اس مطبع میں مخالفین
وید اقدس کی تکذیب مطبوع
ہوتی ہے بنابریں خاطر عوام الناس
اسی طرف رجوع ہوتی ہے
پس یہ نام نامی و اسم گرامی
بسیار مناسب ہے بلکہ
نزدیک یار و اغیار واجب ہے
اس مطبع سے چشمہ مضمون
احقاق حق جاری ہے جو کہ آریوں کے
حق میں بہت کارآمد ہے اور وید مقدس
کی آیات کے نکات بیان کئے جاتے ہیں موافق
کیا جاتا ہے اور گیان بگیان کے سوالات کا جواب
دیا جاتا ہے چونکہ آج کل ہر طرف وید

विरोधी प्रबल होरहे हैं और
चित्तों पर अज्ञान छारहा है इस
कारण आर्य्यत्व प्रकाश का रचना
सब पुरुषों के अर्थ हितकारी है आर्य्य
धर्म्म की व्याख्या करने के बहाने सेना-
गरी और उर्दू में देश हितैषी और आर्य्य समा-
चार मेरठ आदि कई मासिक पत्र
प्रकाशित होते हैं परन्तु उन में
आर्य्य धर्म्म की कोई बात नहीं
पाई जाती मैं आश्चर्य्य में हूं
कि इन पुरुषों ने आर्य्य धर्म्म
किस को समझा है छन्दः
है नहीं सद्धर्म पर दृष्टि जिन्हों
की एक क्षण ॥ आर्य्यों में नाम
की गणना कराये क्या हुआ ॥ बहुत
लोक हैं कि अपने आप को आर्य्य
नाम से प्रसिद्ध करते हैं परन्तु
आर्य्य पन का उन में कोई चिन्ह
भी नहीं है उन कृत्रिम आर्य्यों
की जिह्वा पर रात दिन यह ही रहता
है कि व्रत करना नहीं चाहिये जप

بروز میان کا زور شور ہی
اور گوش دل کر رہ دیدہ باطن
کور ہی اس واسطے تصنیف رسالہ
آریہ تو پرکاش عوام کے حق میں
خیر خواہی ہی اور انام کے
حق میں بہلائی - ان دونوں
آریہ دھرم کی تشریح کے بہانے سے
ناگری اور اردو میں دیش ہتیشی
اور آریہ سماچار میرٹھ وغیرہ کئی
رسالہ ماہوار شایع ہوتے ہیں لیکن
آریہ دھرم کی اونمیں کوئی بات
نہیں پائی جاتی حیران ہوں کہ
ان لوگوں نے آریہ دھرم کسکو سمجھا ہے
رہی جو حق پہ جنکی ہر
نہیں نگاہ ۔ آریون میں نام
کی گنتی کرائی کیا ہوا ۔ بہت لوگ
ہیں کہ اپنے تئیں آریہ نام سے مشہور
کرتے ہیں مگر آریہ پن کا اون
میں نشان بھی نہیں ہی اون مصنوعی
آریون کی زبان پر رات دن یہی
ہی جاری ہی کہ برت کرنا نہیں چاہیے جپ

करने से क्या होता है श्राद्ध करने से क्या लाभ है संध्या का कुछ फल नहीं है प्रयोजन यह है कि सब कर्म्मो का छोडना अच्छा जान्ते हैं किसी कर्म्म की आवश्यकता नहीं समझते इस कारण अब हम आर्य्यो का सच्चा वृतांत और उनके धर्म्म की मूल २ बातों की पूरी २ व्याख्या करेंगे = प्रकट होवे कि संस्कृत कोश में आर्य्य शब्द उत्तम और कुलीन के अर्थ में लिखा है और पण्डितों के संकेत में धार्म्मिक पुरुष को कहते हैं जोकि वेदोक्त विधि और निषेध के अनुकूल वर्ते अर्थात् जिन कर्म्मों के करने की वेद में आज्ञा है उन को करता होवे और जिन बातों का निषेध है उन से बचा होवे जैसा कि स्मृति में कहा है कर्तव्य मचरन् काम मकर्त्तव्य मनाचरन् ॥ ॥ तिष्ठति प्रकृता चारे सदा आर्य्य इतिस्मृतः॥ अर्थात जो कोई करने

کرنے سے کیا ہوتا ہی شرادھ کرنے سے کیا فائدہ ہی سندھیا کا کچھ پھل نہیں ہی غرضکہ جملہ اعمال کا ترک بہتر سمجھتے ہین کسی عمل کو واجب ضرور نہین جانتے اسواسطے اب ہم آریون کی حقیقت حال اور اون کے مذہب کے اصول تفصیلوار بیان کرینگے مخفی نرہے کہ لغت سنسکرت مین لفظ آریہ بمعنی شریف وخاندانی مرقوم ہی اور دانایان سنسکرت کی اسطلاح مین اہل دہرم کو کہتے ہین کہ تابع امر اور نہی وید ہووے یعنی جن اعمال کے کرنے کا وید مقدس مین حکم ہی اونکو کرتا ہووے اور جن باتون کو منع کیا ہی اون سے بچا ہووے چنانچہ سمرتی مین کہا ہی —

कर्त्तव्य माचरन काम
मकर्त्तव्य मनाचरन् तिष्ठति
प्रकृता चारे सदा॰ आर्य्य
इति
स्मृतः

یعنی جو کوئی کرنے

योग्य काम करता है और बुरे काम से बचता है वह आर्य्य है इति ॥ दूसरे स्थान पर भी आया है ॥ श्रुतिस्मृति मिताचारः शुद्धाहारः सुनीतिमान् प्रीतिमान् यो भवेद्देवे स आर्य्यः परिकीर्तितः ॥ अर्थात् जो कोई श्रुति और स्मृति के अनुकूल कर्म करे और शुद्धाहार और न्यायकारी होवे और परमात्मा से प्रीति रक्खे उस को आर्य्य कहते हैं इति ॥ भाषा और उर्दू में जो शब्द अजी और जी बड़े और कुलीन के अर्थ में प्रचरित है वह आर्य्य का अपभ्रंश है । प्रथम आर्य्य से अजी बनाया पश्चात् अकार दूर करके जी कर लिया ॥ यहां के पारसी भाषा के विद्वान् उसके अंत में वकार अधिक कर के जीव कहने लगे ॥ आर्य्य का विरोधी दस्यु है जैसे अरबी भाषा में मोमिन और काफ़िर दो शब्द विरुद्धार्थ वाचक हैं यही व्यवस्था संस्कृत में

کے لایق کام کرتا ہی اور برے کام سے بچتا ہی وہ آریہ ہے فقط دوسرے مقام پر بھی آیا ہی ٭ श्रुति स्मृति मिताचारः शुद्धाहारः सुनीति मान् प्रीति मान यो भवेद्देवे स आर्य्यः परिकीर्तितः یعنی جو کوئی شرتی اور سمرتی کی موافق کام کرے اور رزق حلال سی پیٹ بھرے منصف و عادل ہووے اور پرماتماسی محبت رکھے اوسکو آریہ کہتی ہین فقط بھاشا اور اردو مین جو لفظ اجی اور جی بمعنی بزرگ و شریف مستعمل ہو وہ آریہ کا بگڑا ہوا ہے اول آریہ سے اجی بنایا من بعد الف دور کرکے جی کرلیا یہان کے فارسی خوان اوسکے آخر واو زیادہ کرکے جیو کہنے لگے آریہ کی مقابل مین دسیو ہی جیسے عربی مین مومن و کافر دو لفظ متضاد مشہور ہین یہی حال سنسکرت مین

शब्द आर्य्य और दस्यु की है कि प्रथम पद धर्मात्मा के अर्थ में है और दूसरा धर्म्म विरोधी और पापी के अर्थ में जैसा ऋग् वेद के पहिले अष्टक के चौथे अध्याय के दसवें वर्ग की तीसरी श्रुति है ॥ विजानीह्यार्य्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद् व्रतान् ॥ अर्थात् हे परमेश्वर। तुम आर्य्यों को जानते हो कि अपने धर्म्म और कर्म्म में प्रवृत्त हैं और जितने दस्यु हैं उन के भी ज्ञाता हो कि बुरे कर्म्म करते हैं इस लिये इन पापियों का नाश करो इति ॥ संस्कृत कोश में दस्यु कहते हैं शत्रु और चोर को दो कारण से आर्य्यों के विरोधियों पर दस्यु शब्द घटित होता है प्रथम कारण यह है कि वह लोक वैदिक धर्म्म से स्वाभाविक विरोध रखते हैं इस लिये हम उन को दस्यु कहते हैं दूसरा कारण यह है कि वह लोक अपने आत्मा को चुराते हैं अर्थात् जैसा कि

کلمہ آریہ اور دسیو کا ہی کہ اول
بمعنی ایماندار ہی اور دوم بمعنی
بے ایمان و گنہگار چنانچہ رگ
وید کے پہلے اشٹک کے
چوتھے ادھیائے کے دسوین ورگ کی
تیسری شرتی ہے विजानीह्या-
र्य्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते
रन्धया शासद् व्रतान् یعنی
اے پرمیشور تم آریون کو جانتے ہو کہ
اپنے دھرم و کرم مین مشغول ہین اور
جتنے دسیو ہین اون سے بھی واقف
ہو کہ بُرے کامون کا شغل رکھتے ہین
اس لئے ان پاپیون کا ناش کرو فقط
سنسکرت کے اصل لغت مین دسیو کہتے
ہین دشمن اور چور کو پس آریون کے مخالفون
پر دو سبب سے لفظ دسیو کا اطلاق ہوتا ہے
پہلا سبب یہ ہے کہ وہ لوگ ویدک دھرم
سے خصومت و عداوت دلی و ذاتی رکھتے
ہین لہذا ہم اونکو دسیو کہتے ہین دوسرا سبب
یہہ ہے کہ وے لوگ اپنے آتما کو
چراتے ہین یعنی جیسا کہ آتما ہے

आत्मा है उसके विपरीत प्रकाश कर
ते हैं ॥ अर्थात् जीव आत्मा केवल प
रमात्मा का उपासक है अर्थात् सब
लोगों को मन और देह से परमात्मा
की उपासना और पूजा करना अव-
श्य है परन्तु वे लोग देवता और भूत
और पानी और पत्थर आदि की पू
जा में प्रवृत्त रहते हैं फिर जीवात्मा
किसी काम में स्वतंत्र नहीं है और को
ई कार्य्य उससे बिना प्रेरणा परमात्मा
के नहीं हो सक्ता परन्तु उन लोगों का
विश्वास है कि जीवात्मा स्वतंत्र है
जो चाहता है वह करता है उसके का
म में परमात्मा का कुछ सम्बंध नहीं
है फिर सब जीवात्मा परमात्मा के
दास हैं और परमात्मा सबका स्वामी
है अर्थात् जीव और परमेश्वर में
बहुत से सम्बंध हैं उन सम्बंधों में से
एक सम्बंध दास और स्वामी भाव
का भी निश्चय हुआ है - परन्तु वह
लोग मसानी और मीरां और भूत

اوسکو برعکس ظاہر کرتے ہین
یعنی جیو آتما صرف پرماتما کا
اوپاسک ہی یعنی سب لوگون
کو من اور تن سے پرماتما
کی اوپاسنا و عبادت کرنا
لازم ہی مگر وے لوگ دیوتا
اور بھوت اور پانی اور پتھر وغیرہ
کی عبادت مین مشغول رہتے ہین
پھر جیو آتما کسی کام پر خود قادر
نہین ہی اور کوئی امر اوس سے بدون
تحریک پرماتما کی صادر نہین لیکن ان
لوگون کا عقیدہ ہی کہ جیو آتما خود مختار ہی
جو چاہتا ہی وہ کرتا ہی اوسکے کاروبار
مین پرماتما کا کچھہ تعلق نہین ہی
پھر کل جیو آتما پرماتما کے داس
ہین اور پرماتما سب کا سوامی
ہی یعنی جیو اور پرمیشور کے درمیان
بہت علائق ہین منجملہ علائق کے
ایک علاقہ مالکیت و مملوکیت کا
بھی متحقق ہے مگر وہ لوگ
مسانی و میران و بھوت

आदि के दास बन्ते हैं परमेश्वर के दास
होने में किसी प्रकार की मुख्यता
नहीं समझते इसी हेतु से अपनी संता
न का भवानी दास और भैरव दास आ-
दि नाम रखते हैं उनमें से कुछ मनु
ष्यों का यह कथन है कि दास होना
सर्व्वथा निषिद्ध है जैसे कि देवता आदि
का दास होना निषिद्ध है इसी प्रका
र परमेश्वर के दास होने से भी विरोध
रखते हैं यदि कोई उनको परमेश्वर
दास कहदे तो उसको गाली समझते
हैं॥ इस बात में और जीव के स्वतंत्र हो
ने में दयानंदी लोगों का भी एकत्व है
इसी कारण स्वामी दयानंद सरस्वती
अपने शिष्यों को उपदेश करते हैं
कि दास नाम रखना बहुत बुरा है औ
र जीवात्मा के कर्म्मों में परमात्मा को
कुछ भी सम्बंध नहीं है॥ परमेश्वर
ने चाहा तो इस विषय में एक पत्र ही
जुदा लिखा जावेगा॥ परमात्मा से भि
न्न दूसरे का दास कहलाना तो अवश्य

وغیرہ کے داس بنتے ہیں پرمیشور
کے داس ہونے میں کسیطرح کی
ترجیح نہیں سمجھتے اسیواسطے اپنی
اولاد کا بھوانی داس و بھیرو داس
وغیرہ نام رکھتے ہیں اون میں سے
بعض اشخاص کا یہہ قول ہے کہ داس
ہونا مطلقاً ممنوع ہے جیسے کہ دیوتا
وغیرہ کا داس ہونا منع ہے اسیطرح
پرمیشور کے داس ہونے سے بھی
انکار واجب جانتے ہیں اگر کوئی
اونکو پرمیشور داس کہدے تو اوسکو
گالی سمجھتے ہیں اس بات میں اور جیو کے
خود مختار ہونے میں دیانندی لوگ
بھی شریک ہیں اسیواسطے سوامی
دیانند سرسوتی اپنے مریدوں کو ہدایت
کرتے ہیں کہ داس نام رکھنا بہت برا ہے
اور جیو آتما کے اعمال میں پرماتما کو
دخل نہیں ہے پرمیشور نے
چاہا تو اس بارہ میں علیحدہ
رسالہ لکھا جاویگا پرماتما کے
سوا دوسرے کا داس کہلانا لاکلام

ही अधर्म्म है परन्तु परमेश्वर का दास होना तो आर्य्य लोगों का स्वाभाविक गुण है। न जाने दयानंदी लोग अपने आप को ब्रह्म जान्ते हैं और ब्रह्मास्मि कहते हैं यदि उनके और परमात्मा के मध्य में दास स्वामी भाव सम्बंध है तो परमेश्वर दास और नारायण दास आदि नाम रखना क्यों बुरा जान्ते हैं। प्रकट होवे कि आत्मा के चुराने के बहुत कारण हैं उनमें से दो तीन निवेदन किये शेष की व्याख्या किसी जगह की जावैगी। अब मैं पूर्व्वोक्ति के प्रमाण के लिये एक श्लोक भारत से लिखता हूं। अन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते किं न तेन कृतं पापं चौरेणात्मापहारिणा॥१॥ अर्थात् आत्मा का तत्व जिस प्रकार कि है उस को जो कोई अन्यथा प्रकाश करे उस ने कौन सा पाप नहीं किया अर्थात् वह सब पापों का कर्त्ता है वह आत्मा का चुराने वाला चोर है

ادہرم ہی لیکن پرمیشور کا داس ہونا تو آریہ لوگون کا وصف ذاتی وجبلی ہی شاید کہ دیانندی لوگ اپنی رای مین دعوئی انالحق رکھتے ہین اگر اونکی اور پرماتما کے درمیان داس سوامی بہاو کا علاقہ ہی تو پرمیشور داس ونارائن داس وغیرہ نام دہرنی سے کیونکر پرہیز کرتی ہین مخفی نرہے کہ آتما کی چرائی کی بہت وجوہ ہین اونمین سے دو تین مختصراً معرض بیان مین لائی گئین باقی کی تفسیر کسی موقع پر کیجاویگی اب مین اس تشریح کی تصدیق کے لئے بہارت سے ایک شلوک نقل کرتا ہون

अन्यथा संतमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते किं न तेन कृतं पापं चौरेणात्मापहारिणा॥ یعنی

آتما کی اصلیت جسطرح پر کہ ہی اوسکو جو کوئی برعکس واقع کے ظاہر کری اوسنی کونسا پاپ نہین کیا یعنی وہ تمام گناہون کا مرتکب ہو لیا وہ آتما کا چرانی والا چور ہے

इति ॥ इसी प्रकार मनु के चौथे अध्याय में है ॥ योन्यथा संत मात्मानमन्यथा सत्सु भाषते सपाप कृत्तमो लोके स्तेन आत्मा पहारकः अर्थात् जो कोई अच्छे लोगों के मध्य में जैसा आत्मा है वैसा नहीं कहता अन्यथा बतलाता है वह बड़ा पापी और चोर है अर्थात् आत्मा को चुराता है यदि इन श्लोकों में आत्मा शब्द परमात्मा के अर्थ में लिया जावे तो भी ठीक है अर्थात् परमेश्वर के गुण जिस प्रकार के कि हैं उनको जो कोई अयथार्थ्य प्रकाशित करे वह परमात्मा का चुरानेवाला चोर है जैसे परमात्मा शरीर और देश से पवित्र है अर्थात् परमात्मा शरीर धारी और देशादि परिछिन्न नहीं है अब जो कोई कहे कि वह शरीर धारी और देश परिछिन्न है उसके दस्यु होने में संदेह नहीं है ॥ इसी प्रकार परमात्मा एक है न उस का कोई बराबर है न उस से कोई अधिक है जिन लोगों का विश्वास

فقط اسی کی قریب منو کی چوتھی ادھیایہ میں ہی योन्यथा संत मात्मान मन्यंथासत्सु भाषते सपाप कृत्तमो लोके स्तेन आत्मा पहारकः یعنی جو کوئی اچھی لوگوں کے درمیان جیسا آتما ہی ویسا نہیں کہتا وہ بڑا پاپ کرنیوالا ہی اور چور ہی یعنی آتما کو چوراتا ہی اگر ان شلوکوں میں لفظ آتما بمعنی پرماتما لیا جاوی تو بھی درست ہی یعنی پرمیشور کی صفات جسطرح کی کہ ہیں انکو جو کوئی برخلاف اصلیت کی بیان کری وہ پرماتما کا چورانیوالا چور ہی مثلاً پرماتما جسمیت و مکانیت وغیرہ قیود سی منزہ و پاک ہی پس جو کوئی کہی کہ وہ جسمانی و مکانی ہی اوسکے دسیو ہونی میں کلام نہیں ہے اسیطرح پرماتما ایک ہے نہ اوس کے کوئی برابر ہے نہ اوس سے کوئی بڑہکر ہی جن شخصوں کا عقیدہ

इसके विरुद्ध हैं वे भी दस्यु हैं॥ इसी प्रकार परमात्मा स्वतंत्र और न्यायकारी है अब जो कोई उसको परतंत्र और अन्यायकारी माने उसके दस्यु होने में क्या संशय है इसी प्रकार जो कोई परमात्मा के किसी गुण को अन्यथा मान लेता है उस पर दस्यु पद ठीक चरितार्थ है पुराणों में जो देवासुर संग्राम लिखा है उसका तात्पर्य्य यह है कि अनादि काल से आर्य्यों और दस्युओं में विरोध चला आता है देव आर्य्य लोग हैं और असुर दस्यु हैं पुराण की कथा कहने वालों ने जो देवतों और दैत्यों की लड़ाई समझ ली है वह सर्व्वथा झूट है और वास्तव मुसलमानों की पुस्तकों से संचित की है जैसे

واذ قلنا للملائکۃ اسجدوا لادم فسجدوا الا ابلیس ابی واستکبر

इस आयत को तफ़सीर अज़ीज़ी में लिखा है कि आदम की उतपत्ति से कई सहस्र वर्ष पहिले असुरों ने सब भूमि को वश में कर लिया।

اسکے بر خلاف ہیں وے بھی دسیو ہیں اسی قیاس پر پرماتما خود مختار ہے اور دادار اب جو کوئی اوسکو مجبور و عدل و انصاف سے مجبور تصور کرے اوسکے دسیو ہونے میں کیا شبہہ ہے اسیطرح جو کوئی پرماتما کی کسی صفت میں واقع کے خلاف اعتقاد کرتا ہے اوپر دسیو کا اطلاق جائز سمجھا جاتا ہے پرانوں میں جو دیواسر سنگرام لکھا ہے آریوں اور دسیوں کی مخالفت سے مراد ہے کیونکہ ان دونوں گروہوں میں روز ازل سے دشمنی و پرخاش چلی آتی ہے دیوتوں سے مراد آریہ ہیں اور اسر سے مراد دسیو ہیں پران کی کتھا کہنے والوں نے جو دیوتوں اور دیتوں کی لڑائی سمجھ لی ہے وہ محض غلط ہے اور حقیقت یہ خود ہے مسلمانوں کی کتابوں سے چنانچہ سورہ بقر کی آیت واذ قلنا للملائکۃ اسجدوا لادم فسجدوا الا ابلیس ابی واستکبر اس آیت کی تفسیر عزیزی میں لکھا ہے کہ پیدایش آدم سے چند ہزار برس پہلے جنوں نے روی زمین پر تصرف کر لیا

था और स्थावर जंगम से यथा योग्य
लाभ उठाते थे और अन्तरिक्ष में भी आते
जाते थे - जब कि इस जाति में झगड़ा
और द्वेष बढ़ा और बहुत जिन मारे गये
खुदा ने पहिले आसमान के फ़रिशतों
को आज्ञा दी कि जिन्नों को पृथ्वी से
निकाल दो इस लिये कि भूमि उन से
पवित्र होवे तब पहिले आसमान के
फ़रिशतों ने पृथ्वी पर आकर कुछ
जिन्नों को मार डाला और कुछ उन
के हाथ से भाग कर द्वीपांतर और
पर्वतों में छुपे इबलीस जो कि जिन्नों
में से था और जिस का नाम अज़ाज़ील
था और जो बहुत विद्या और उपास
ना में प्रसिद्ध था फ़रिशतों के साथ
पहिले आसमान पर गया और निवे
दन किया कि मैं इस उपद्रव और
संग्राम में जिन्नों का साथी नहीं था
खुदा ने फ़रिशतों के कहने से उसको
निकालने से छोड़ दिया तब इबली
स ने इस लोभ से कि मुझ को सब

تھا اور حیوانات و نباتات سے
موافق حوصلہ اپنی کے منتفع ہوتے تھے
اور آسمان پر بھی آمد و رفت رکھتے تھے جبکہ
اس فرقہ کے درمیان فتنہ و فساد و خونریزی
بکثرت ہوئی خدا نے پہلے آسمان کے فرشتوں
کو حکم دیا کہ جنوں کو روئے زمین سے
دور کرو تاکہ زمین انکی لوث سے
پاک ہووے تب پہلے آسمان کے
فرشتوں نے زمین پر آکر بعض
جنوں کو جان سے مار ڈالا اور بعضے
انکے ہاتھ سے بھاگ کر جزیروں اور
پہاڑوں میں مختفی ہوئے ابلیس کہ جنوں
کے گروہ میں سے تھا اور عزازیل نام رکھتا
تھا اور بکثرت علم و عبادت ممتاز
تھا فرشتوں کے ساتھ پہلے
آسمان پر گیا اور اپنا عذر
بیان کیا کہ میں اس فساد و خونریزی
میں جنوں کے ساتھ شریک نہیں تھا
خدا نے فرشتوں کی شفاعت کے باعث
اوسکو اخراج سے محفوظ رکھا پس
ابلیس نے اس طمع سے کہ میں تمام

पृथ्वी पर मेरा राज्य होजावे उपासना में उद्योग करना प्रारम्भ किया जिस समय पहिले आसमान के फ़रिश्तों के पास ख़ुदा के यहां से कोई आज्ञा होती थी कि अमुक कार्य्य में ऐसा ऐसा उद्योग करो ॥ इबलीस सब से अधिक उस कर्म्म में परिश्रम करता था यहां तक कि पहिले आसमान के फ़रिश्तों में इबलीस ने बड़ा पद और अधिकार पाया इति ॥

सूरे हजर की والجان خلقناه من قبل من نار السموم इस आयत की तफ़सीर अज़ीज़ी में लिखा है कि बहुत काल के पश्चात् जिन्नों ने फिर द्वीपांतर और पर्व्वतों से बाहर आकर कुल पृथ्वी पर अधिकार कर लिया और ईश्वर की आज्ञा से फिर गये उस समय इबलीस ने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि आज्ञा होवे तो मैं पृथ्वी पर जाकर जिन्नों को सत्य मार्ग पर लाऊं इबलीस का यह निवेदन स्वीकार हुआ तब वह फ़रिश्तों की सेना लेकर आसमान से भूमि पर आया

زمین پر متصرف ہون عبادت مین کوشش کرنی شروع کی جسوقت پہلے آسمان کے فرشتون کے پاس خدا کے یہان سے کوئی حکم صادر ہوتا تہا کہ فلانی مہم مین چنان و چنین عمل کریں ابلیس سب سے زیادہ اوس مہم مین سعی کرتا تہا حتی کہ پہلے آسمان کے فرشتون مین ابلیس نے قدر و منزلت پائی فقط ـ

سورہ حجر کی آیت والجان خلقناہ من قبل من نار السموم) اس آیت کی تفسیر بحر مواج مین لکہا ہی کہ بعد مدت مدید کے جن پہر جزیرون اور پہاڑون سے باہر آکر ربع مسکون پر قابض ہوئے اور اطاعت الہی سے انکار کیا اوسوقت ابلیس نے جناب احدیت مین عرض کی کہ حکم ہووے تو مین زمین پر جا کر جنون کو راہ راست پر لاؤن ابلیس کی درخواست منظور ہوئی تب وہ فرشتون کا لشکر لیکر آسمان سے زمین پر آیا

ऋौर जिन्नों के पास दूत भेजा कि ऋा-
ज्ञा स्वीकार करो ऋौर नहीं तो मारे जा
ऋोगे उन्हों ने ऋति निडर होकर दूत
को मार डाला ऋौर इवलीस पर यह
वृतान्त प्रकट न हुऋा जब बहुत का
ल व्यतीत होगया ऋौर दूत का कुछ
वृतांत न विदित हुऋा तौ दूसरा दूत भे
जा जिन्नों ने उस का भी हनन किया इ
सी प्रकार इवलीस ने कई दूत उन के
पास भेजे ऋौर जिन्नों ने सब की यही
दशा की ऋंत में इवलीस ने एक ऋौर
दूत उन के पास भेजा उन्हों ने उस के
प्राण भी लेने चाहे परन्तु वह छल
ऋौर कपट से ऋपने प्राण बचाकर
इवलीस की सेवा में लौट ऋाया ऋौर
सब वृतांत कहा तब फ़रिश्तों की से
ना ने जो कि इवलीस के साथ थी जिन्नों
से घोर युद्ध किया ऋति संग्राम के
पीछे जिन भाग गये ऋौर पृथ्वी को
छोड़ दिया इति ॥ जो कि प्राचीन
काल से इस देश में ऋार्य्य लोग रहते

اور جنون کے پاس ایلچی بھیجا کہ
اطاعت اختیار کرو ورنہ قتل
کئے جاؤ گے اونھوں نے غایت
بیباکی سے ایلچی کو مار ڈالا اور
ابلیس اس حال سے غافل رہا جب
ایک مدت تک ایلچی مذکور کی خبر نہ
ملی تو دوسرا ایلچی روانہ کیا
جنون نے اوسکو بھی راہ عدم
دکھلائی اسیطرح ابلیس نے چند
ایلچی اونکے پاس بھیجے اور جنون نے
سب کو شربت شہادت پلایا
آخرکار ابلیس نے ایک اور ایلچی ونکے
نزدیک راہی کیا وے اوسکی جان کے
بھی خواہاں ہوئے مگر وہ مکر وحیلہ سے
اپنی جان بچا کر خدمت ابلیس میں واپس آیا
اور صورت حال معروض کی تب
لشکر ملائکہ نے کہ ابلیس کے ہمراہ تھا جنون
سے مقابلہ ومقاتلہ کیا بعد جنگ عظیم
کے جن مفرور ہوئے اور ربع مسکون
سے دور فقط چونکہ قدیم الایام
سے اس ملک میں آریہ لوگ کی سکونت

चले आते हैं इस हेतु से इस देश को आर्य्यावर्त्त कहते हैं जैसा कि मनु के दूसरे अध्याय में है॥ आसमुद्रात्तु वै पूर्व्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् तयोरेवान्तरं गिर्य्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः अर्थात् बंगाल के समुद्र से लेकर अरब देश के समुद्र तक हिमालय और विन्ध्याचल पर्व्वत के बीच में जितना देश है उस को आर्य्यावर्त्त कहते हैं॥ (आर्य्याणां आवर्तः आर्य्यावर्तः) अर्थात् आर्य्यों का आवर्त्त संस्कृत कोश में आवर्त्त का अर्थ देश है तात्पर्य्य यह है कि शिष्ट और धार्म्मिक पुरुषों के वास का स्थान आर्य्यावर्त्त के कुछ भाग का नाम ब्रह्मावर्त्त है जैसा कि मनुस्मृति के दूसरे अध्याय में है= सरस्वती दृषद्वत्यो र्देवनद्योर्यदन्तरम्॥ तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते= अर्थात् सरस्वती नदी जो कि गुजरात और पाञ्चाल अर्थात् पंजाब देश के पश्चिम भाग में बहती

بود و باش ہوا ہو اسطے اوسکو آریاورت کہتے ہین چنانچہ منو سمرتی کے دوسرے ادھیائے مین ہے-

आसमुद्रात्तुवै पूर्व्वादास मुद्रात्तु पश्चिमात्तयोरेवान्त गिर्य्योरार्य्यावर्त्तं विदुर्बुधाः

یعنی بحر بنگال سے لیکر بحر عرب تک کوہ ہمالیہ اور بندھاچل کے درمیان جسقدر دیش ہے اوسکو آریہ ورت کہتے ہین یعنی آریون کا آورت لغت سنسکرت مین آورت بہ معنی ملک ہے مراد یہہ ہے کہ اشرافون اور ایمانداروں کی سکونت کی جگہہ آریہ ورت کے درمیان کچھ حصہ کا نام برہما ورت ہے چنانچہ منوسمرتی کے دوسرے ادھیائے مین آیا ہے

सरस्वतीदृषद्वत्यो र्देवनद्योर्यदन्तरम्॥ तंदेवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते

یعنی سرسوتی ندی جو کہ گجرات اور پنجاب کے مغربی حصہ مین روان

है और दृषद्वती नदी जो कि नयपाल के पूर्व भाग में वहती है इन दोनों पवित्र नदियों के मध्य में जितना देश है वह सव आर्य्यावर्त्त की अपेक्षा से पवित्र और पुण्य देश है उसको ब्रह्मावर्त्त कहते हैं ॥ इति ॥ सव से पहिले ब्रह्मा जी का प्रादुर्भाव इसी देश में हुआ और उन ही के द्वारा मनुष्य की उत्पत्ति जो कि ईश्वर की सारी सृष्टि में श्रेष्ठ है यहां ही हुई इस लिये इस देश का नाम ब्रह्मावर्त्त रक्खा गया इस के पश्चात दूसरे देश वसे ॥ सव देशों के मनुष्यों ने इसी देश से विद्या सीखी और सत्यासत्य का निर्णय किया — जैसा कि मनु स्मृति के दूसरे अध्याय में यह श्लोक है ॥ एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः अर्थात् ब्रह्मावर्त्त के पैदा हुए विद्वानों से सारी पृथ्वी के लोगों ने सव विद्यायें सीखीं — इति — यहां से सिद्ध हुआ कि विद्याओं की खान और

ہی اور دریشدوتی ندی جو کہ نیپال کی مشرقی حصہ مین بہتی ہی ان دونوں متبرک ندیون کی درمیان جسقدر ملک ہی وہ بہ نسبت تمام آریہ ورت کی مشرف و متبرک دیش ہی اوسکو برہماورت کہتی ہین فقط سب سے پہلی برہما جی کا ظہور اسی ملک مین ہوا اور انکی ذریعہ سی پیدایش انسان کی کہ اشرف مخلوقات ہی یہان ہی ہوئی اس لیے ملک ہذا کا نام برہماورت رکہا گیا اسکی بعد دوسری ملک آباد ہوئی جملہ ممالک کی باشندون نی اسی ملک سی تعلیم علوم پائی اور حقیقت حق و باطل معلوم کی چنانچہ منوسمرتی کی دوسری ادہیای مین یہ شلوک ہی एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः یعنی برہماورت مین پیدا ہوئی دانایون سی روی زمین کی لوگون نی تمام علوم و فنون سیکہی فقط یہان سی ثابت ہوا کہ علوم کی کہان اور

मनुष्य की उत्पत्ति का मूल स्थान ब्र
ह्मावर्त्त है सब देशों में वहां ही से विद्या
गयी है जैसे गोडस्कर साहिब ने अपनी
पुस्तक में लिखी हैं कि जितनी विद्यायें
भूगोल में फैली हैं सब का मूल आर्य्या
वर्त है काशी में डाकटर वेलेनटायन
साहिब को बड़े परिश्रम से यह बात
विदित हुई है कि संस्कृत सारी भाषा
ओं की माता है- सब भाषायें इसी से
निकली हैं प्रथम आर्य्यावर्त्त से यूना
नीयों ने विद्या ली और यूनान वालों से
रूमीयों ने और रूमीयों से अंग्रेज़ों ने
इसी के अनुकूल पादरी स्काट साहिब
ने कवायदुल मंतिक़ के पृष्ठ ८ और
९ में लिखा है कि न्याय बहुत पुरानी
विद्या है और प्रथम काल से केवल
यूनानी और आर्य्यों में पाई जाती है
सब जातियों ने इन ही से यह विद्या
ली है- परन्तु यह ठीक नहीं ज्ञात होता
कि यूनानीयों ने आर्य्यों से पाई वा आ
र्य्यों को यूनानीयों से मिली कोई ऐसी

پیدائش انسان کا اصلی مکان
برہماورت ہے تمام ولایتوں میں
یہاں ہی سے علم و ہنر کی ترقی ہوئی ہے
چنانچہ گوڈس کر صاحب نے اپنی کتاب
میں لکھا ہے کہ جتنے علوم بھوگول میں پھیلے
ہیں سب کی اصل آریاورت ہے کاشی
میں ڈاکٹر بالین ٹین صاحب نے تلاش بسیار سے
معلوم کیا ہے کہ سنسکرت کل زبانوں کی
ماں ہے تمام زبانیں اسی سے نکلی
ہیں اول آریاورت سے یونانیوں نے
علم لیا اور یونان والوں سے
رومیوں نے اور رومیوں سے انگریزوں
نے اسی کے قریب پادری اسکاٹ صاحب
نے قوائد المنطق کے صفحہ ۸ و
۹ میں لکھا ہے بلفظہ وہاں کی عبارت
یہ ہے کہ منطق بہت پرانا علم ہے
اور قدیم زمانہ سے صرف یونانیوں اور
ہندوؤں کے درمیان پایا جاتا ہے سب قوموں نے انہی
سے یہ علم لیا لیکن یہ ٹھیک نہیں معلوم
کہ آیا یونانیوں نے ہندوؤں سے پایا یا ہندوؤں
کو یونانیوں سے ملا بعض سمجھ

संभावना करते हैं कि यूनानीयों के पास
न्याय विद्या आर्य्यों के यहां से आई
कोई इस के विरुद्ध कहते हैं - निश्च
य यह है कि इन दोनों जातियों ने पृथ
क् २ न्याय विद्या का प्रकाश किया
यूनानी यों से रूमियों ने ली और रूमि
यों से यूरोप देश वालों ने पायी - यूना
नीयों ही से अरब देश वालों ने सीखी
- इति - मेक्स मूलर साहिव ने अपनी
पुस्तक लक्चर्स आन दी साइंस आफ़
लेंग्वज के पृष्ठ १५७ में लिखा है कि
हरवास साहिव जो स्पेन देश के रहने
वाले हैं निश्चय पूर्व्वक कहते हैं कि
संस्कृत और यूनानी भाषा में बहुत
बड़ा सादृश्य है कि यूनानीयों ने अ
पनी न्याय विद्या और देवतों का वृ
त्तान्त सर्वथा संस्कृत वालों से लिया
है और कुछ शब्द और रीति पुल्लिंग
और स्त्रीलिंग की भी आर्य्यावर्त्त से
ही सीखी है ॥ इति ॥ सैयद अहमद
खां साहिव की तहज़ीबुल अख़लाक़

گمان کرتے ہین کہ یونانیون کے پاس
علم منطق ہندؤن کے یہان سے
آیا بعضے اسکے برعکس کہتے ہین
غالب یہہ ہے کہ ان دونون قومون
نے علیحدہ علیحدہ علم منطق ایجاد
کیا یونانیون سے رومیون نے لیا اور
رومیون سے یورپ والون نے پایا
یونانیون ہی سے عرب والون نے سیکھا
فقط میکس مولر صاحب نے کتاب
(لیکچرس آن دی سائنس آف لینگویج)
کے صفحہ ۱۵۷ مین لکھا ہے کہ ہرواس
صاحب جو ملک سپین کے رہنے والے
ہین یقیناً بیان کرتے ہین کہ
سنسکرت اور یونانی مین بڑی
مشابہت ہے کہ یونانیون نے اپنی
فلاسفی اور دیوتون کا حال بالکل
سنسکرت والون سے لیا ہے
اور کچھہ الفاظ اور طریقہ تانیث
و تذکیر بھی آریاورت ہی سے
اخذ کیا ہے فقط سید احمد خان
صاحب کی تہذیب الاخلاق

की जिल्द चोथी के नंबर चौधवें में
लिखा है कि गणित पर भी मुसलमा
नों ने कम ध्यान नहीं दिया उनहों ने
आर्यों से इकाई. दहाई आदिक का
यथार्थ स्थान पर रखना सीखा = और
इसी लिये उनहों ने इसका नाम सद
दहिन्दिय: रक्खा बीज गणित के वि
षय में विरोध है - कोई मुसलमानों
को उस का प्रकाशक समझते हैं परन्तु
ठीक यह है कि मुसलमानों ने यह
विद्या आर्यावर्त के पंडितों और यूना
नके विद्वानों से सम्पादन की थी प
रन्तु फिर उस में बहुत वृद्धि की वैद्यक
में भी मुसलमानों ने बहुत कुछ उन्न
ति की थी यह आर्य्यावर्त्त में आये से
स्कृत भाषा सीखी - और बहुत वि
ख्यात दो पुस्तकें जिनका नाम चरक
और सुश्रुत था अरबी भाषा में उल
था की - सब से प्रथम सन १५६
हिजरी में मूसा बिन मूसा अल फरा
री ने संस्कृत का उलथा आरम्भ किया

کی جلد چہارم کی نمبر چہاردہم مین
لکہا ہی کہ حساب مین بہی
مسلمانون نی کم توجہ نہین کی
اونہون نی ہندون سی مراتب اعداد
کا رکھنا سیکھا اور اسی لئی اس
کا نام اونھون نی اعداد
ہندیہ رکھا فن جبر و مقابلہ کی
نسبت اختلاف ہی بعض مسلمانون
کو اوسکا موجد بیان کرتے ہین
مگر صحیح یہہ ہی کہ مسلمانون نی یہہ
علم ہندوستان کی پنڈتون اور
یونان کی عالمون سی اخذ کیا تہا
مگر اوس مین پہر بہت سی ترقی
کی علم طب مین بہی مسلمانون
نے بہت ترقی کی تھی اونہون
نے ہندوستان کا سفر کیا زبان سنسکرت
سیکہی اور بہت مشہور دو کتابین سنسکرت
زبان کی جنکا نام چرک اور سشرت تہا عربی
زبان مین ترجمہ کین سب سی پہلے سنہ ۱۵۶ ھ
مین موسی بن موسی الفزاری
نے سنسکرت کا ترجمہ شروع کیا

फिर मुहम्मद बिन इस्माईल आप
आर्य्यावर्त्त में आया और उसके पीछे
१० विद्वान् आर्य्यावर्त्त में आये और
आर्य्यों की पुस्तकों को अरबी भाषा
में उलथा किया ॥ इति ॥ फिर तहज़ी
बउल अख़लाक़ की चौथी जिल्द
के पांचवें नम्बर में सैयद अहमद खां
लिखते हैं कि हमारे बड़ों का विजा
तियों से विद्या सीखना और मुसलमा
नों में फैलाना इतिहास से भले प्रकार
सिद्ध है यूनानी और सुरयानी और
संस्कृत भाषा से विद्याओं का लेना
सूर्य्य की सदृश प्रकट है इस कारण
मैं नहीं कह सकता हूं ॥
कि इस काल में कोई पढ़ा लिखा मु
सलमान योरप देश वालों से विद्या
सीखने को कुफ्र की रीति पर शिक्षा
देने को पाप कहे ॥ इति ॥ फिर इसी
जिल्द के १७ वें नम्बर में है कि यूनान
और आर्य्यावर्त्त से सब प्रकार की वि
द्यायें मुसलमानों को प्राप्त हुईं और

शेष आगे

پھر محمد بن اسمٰعیل خود ہندوستان
مین آیا اور اوسکے بعد
دس ۱۰ عالم ہندوستان مین آئے
اور ہندوؤن کے علوم کی کتابون
کو عربی مین ترجمہ کیا فقط پھر
تہذیب الاخلاق کی جلد چہارم
کی نمبر پنجم مین بھی اس قسم کا
مضمون ہے وہان کی اصل عبارت
یہہ ہے کہ ہمارے بزرگون کا غیر قومون
سے علم سیکھنا او رمسلمانون مین پھیلانا
تواریخ سے بخوبی ثابت ہے یونانی
سریانی سنسکرت سے علوم کا اخذ
کرنا مثل آفتاب کے روشن ہے پس
مین نہین خیال کرسکتا ہون
کہ اس زمانہ مین کوئی پڑھا لکھا
مسلمان اہل یوروپ سے علوم
سیکھنے کو یا اونکے طور پر تعلیم
دینے کو گناہ و کفر کہے فقط پھر
اسی جلد کی نمبر ہفتدہم مین ہے کہ
یونان و ہندوستان سے ہر قسم کے
علوم و فنون کو مسلمانون نے حاصل کیا اور

باقی آئندہ

यह बौद्ध सम्वत ६०० हिजरी तक
रही - फिर यह जाति एक उछलि हु
ए पत्थर की नाईं नीचे को चली आई
॥ इति ॥ रुहेलखंड लिटिरेरी सुसाई
टीके पत्र मखज़न उल उलूम नामक
की सातवी जिल्द के ग्यारवें अंक में
मौलवी अलताफ़ हुसेन मिम्बर देह
ली सुसाइटी का एक लेकचर है जिससे आर्य्य
लोगों की बुद्धिमत्ता विद्वत्ता प्रकट है
वहां का यह लेख है कि आर्य्यावर्त्त
के प्राचीन रहने वाले आर्य्य हैं - इन
के बड़ों का वृत्तान्त जो इतिहास में
देखा जाता है उस से इस जाति की
बहुत बुद्धिमत्ता और विद्वत्ता प्रकट
होती है आर्य्यों के प्राचीन लोगों ने
न्याय विद्या में बड़ी वृद्धि की है
यह बात सब पुरुषों को स्वीकार है
कि ज्योतिष विद्या में जो आर्य्यों ने पु
स्तकें बनाई हैं यद्यपि इन में न्यूनता
भी है परन्तु उसके साथ इन में पूर्ण
ता भी पाई जाती है और गणित विद्या

یہہ ترقی قریب ۶۰۰ سنہ ہجری تک
جاری رہی پھر یہہ قوم ایک اوچھالے
ہوئے پتھر کی مانند نیچے کو چلی آئی
فقط روہیلکھنڈ لٹریری سوسیٹی
کو رسالہ مخزن العلوم کی جلد
ہفتم کے نمبر گیارہ مین
مولوی الطاف حسین ممبر دہلی
سوسیٹی کا ایک لیکچر ہی جس سے
آریہ لوگون کی قابلیت ولیاقت
اظہر ہی بجنسہ اوسکی عبارت اسطرح
پر ہی کہ ہندوستان کی قدیم باشندہ ہنود
ہین انکے بزرگون کا حال جو تاریخ مین
دیکھا جاتا ہی اوس سے اس گروہ
کی کمال قابلیت و استعداد ظاہر
ہوتی ہی ہنود کے قدیم طبقون
نے علوم حکمیہ مین بڑی بڑی
ترقیاں کی ہین یہہ بات بالاتفاق
تسلیم کی گئی ہی کہ علم ہیئت میں جو ہنود
نے کتابین تصنیف کی ہین اونمین نقصان
اگرچہ نہایت درجہ کا ہی مگر اوسکی ساتہہ کمال
بھی اعلی درجہ کا پایا جاتا ہے اور ہیئت

के शाखाओं में जो आर्य्यों ने उन्नति
की है वह ज्योतिष विद्या से भी प्रसिद्ध
क है जैसे पुस्तक सूर्य्य सिद्धान्त कि
जिसकी सामान्य इतिहासकारकों
की बुद्धि में पांच सौ या छै सौ ईसवी
संवत् में रचना हुई है उसमें त्रिकोण का
ऐसा व्याख्यान पाया जाता है जिस
से उनको यूनान देशवालों पर प्रधान
ता नहीं दे सकते किन्तु यह कह सकते
हैं कि उसमें बहुत से प्रश्न ऐसे हैं जि
नका ज्ञान योरोप देशवालों को संवत्
सोलह सौ ईसवी तक नहीं हुआ था
अंक विद्या के कई मूलों का ज्ञान आर्य्या
वर्त्त के साथ विशेष सम्बन्ध रखव
ता है विशेष करके वह सम्बन्ध जो
अर्द्ध व्यास को वृत्त की परिधि के साथ
है उसका ज्ञान आजभर्के आर्य्या
वर्त्त को छोड़कर किसी और देश
के लोगों को न था. अंक विद्या में सब
आर्य्यों को दशमभिन्न का प्रकाशक
स्वीकार करते हैं और इसी कारण अंक

ہی سوا ریاضی کی فروع میں جو
اونہوں نے ترقی کی ہے وہ علم
ہیئت سے بھی زیادہ جتانے کے قابل
ہے چنانچہ کتاب سورج سدہانت
جو عام مورخوں کے نزدیک پانچویں
یا چھٹی صدی عیسوی کی تصنیف
مانی جاتی ہے اوس میں علم مثلثات کا
بیان ایسا پایا جاتا ہے جس سے اونکو
یونانیوں پر ترجیح نہیں دے سکتے
بلکہ یہ کہہ سکتے ہیں کہ اوس میں بہت سے
سوالات ایسے ہیں جنکا علم عموماً اہل یورپ کو
سولہویں صدی تک حاصل نہ ہوا تھا
علم ہندسہ کے بعض اصول کا علم ہندوستان
ہی کے ساتھ خصوصیت رکھتا تھا
خصوصاً وہ نسبت جو نصف قطر
کو محیط دائرہ کے ساتھ ہے
اوسکا علم زمانۂ حال تک ہندوستان
کے سوا کسی اور ملک کے لوگوں
کو نہ تھا علم حساب میں
سب کے نزدیک کسور اعشاریہ کے موجد
ہندو ہیں ظاہراً اسی سبب سے حساب کے

विद्या में इनको यूनान देशवालों पर प्र
धानता दी जाती है-बीज गणित में भी
ब्राह्मण अपने समय के लोगों से बढ़ ग
ये थे-जैसा कि इस विद्या के विषय
में उनके निर्णय का वृत्तान्त ब्रह्मगुप्त
के ग्रन्थों से जो कि संवत् छै सौ ईसवी
में हुआ है और भास्कराचार्य्य की पुस्त
क से जो कि संवत् बारह सौ ईसवी में हु
आ है ज्ञात होता है और इन दोनों विद्वा
नों ने आर्य्य भट्ट के ग्रन्थों से आशय
लिये हैं-एसा प्रकट होता है कि इस
विद्वान् के समय में विद्या बहुत उन्नति
पर थी और यह विद्वान् और डाई फ़ा
न्टस जिस ने यूनान देश में बीज गणित
सब से पहिले लिखा है किसी २ इतिहासज्ञ
की बुद्धि में एक समय में हुए हैं और यह
बात स्वीकार है कि यह विद्वान् डाई
फ़ान्टस से इस विद्या के निर्णय में एसा ब
ढ़ गया है जिसके प्राप्त करने और सम
झने पर आज कल के विद्वानों को अ
भिमान है जो कि आर्य्यों की प्रथम

علم مین انکو یونانیون پر فوقیت
دیجاتی ھی جبر و مقابلہ مین بھی
برہمن اپنے ہمعصرون سے سبقت
لیگئے تھے چنانچہ اس علم کی
بابت اونکی تحقیقات کا حال
برہم گپت کی کتابون سے جو کہ چھٹی صدی
عیسوی مین ہوا ہے اور بہاسکر اچاریہ
کی کتاب سے جو کہ بارہوین صدی مین ہوا
ہے دریافت ہوتا ہے اور ان دونون
نے آریہ بھٹ کی تصنیفات سے مضامین
اخذ کئے ہین ظاہراً اس شخص کے زمانے
مین علم کمال درجے کو پہونچا تھا
اور یہہ اور ڈائی فانٹس جس
نے یونان مین جبر و مقابلہ
سب سے پہلے لکھا ہے بعض مورخین
کے نزدیک ایک زمانہ مین ہوئے ہین
اور یہہ بات مانی ہوئی ہے کہ یہہ شخص
ڈائی فانٹس سے اس علم کی ایسی تحقیقات
مین سبقت لیگیا ہے جن کے حاصل کرنے
اور سمجھنے پر متاخرین کو
فخر ہے اور جو کہ ہندوون کی ابتدائی

उन्नति के समय में सब जातियें विद्या
रहित थीं इससे यह ही ज्ञात होता है कि
आर्य्यों ने यह विद्यायें दूसरे से नहीं लीं
किन्तु आप प्रकाशित की हैं-और
जिस काल में उन विद्यायों का विजा
तियों से सीखना सम्भव था उस समय
इन के विद्या विषयक निर्णय ऐसे
थे जिन का किसी आर्य्य भिन्न दूस
री ज्ञाति को बोध न था-और उन से
वह बातें प्रकट होती हैं कि जिनको
अब से दो सौ वर्ष पहिले तक योरप दे
श निवासी भी न जानते थे इसी प्रकार
वेदान्त और न्याय शास्त्र प्रभृति व्य
वस्थाओं में आर्य्यावर्त्त के विद्वानों
की सम्मति और विरोध और शास्त्रा
र्थ इतने हैं जिन से इन में और यूनान के
पण्डितों में एक सम्बन्ध विशेष नि
कल सक्ता है हां भूगोल विद्या में और
विद्यायों की अपेक्षा से आर्य्यों ने
कम उन्नति की है-परन्तु आर्य्याव
र्त्त का जो विभाग उन्हीं ने भूगोल विद्या

ترقی کی زمانے مین ور تمام قومین
جاہل تہین اس سی یہہ نتیجہ نکل سکتا ہی
کہ اونہون نے یہہ علوم کسی غیر ماخذ
سی نہین لیے اور جس زمانے
مین اون علمون کا غیر قومون سے
اخذ کرنا ممکن ٹہیر سکتا ہی اوس وقت
انکی علمی تحقیقات کے طریقے ایسی
اصول پر مبنی تھی جن سے کوئی
اگلی قوم اصلا واقف نہ تھی اور اون
سے ایسی تحقیقات کا علم ظاہر
ہوتا ہے جنکو اب سی دو سو برس پہلے تک
اہل یورپ بھی نہ جانتی تہے اسیطرح
الہی و طبعی اور منطقی مسائل مین
حکمای ہند کی رائین اور اختلافات
اور مباحثے اسقدر ہین جن سے
ان مین اور حکمای یونان
مین ایک نسبت معتد بہ نکل سکتی
ہے البتہ علم جغرافیہ مین
بہ نسبت اور علمون کے ہندوون نے
کم ترقی کی ہے مگر ہندوستان
کی تقسیم جو اونہون نے جغرافیہ

के अनुसार किया है वह उन के प्राचीन ग्रन्थों से विदित है और आर्य्यावर्त्त के प्रत्येक विभाग के नगरों और पर्व्वतों और नदीयों के सूचिपत्र उन के यहां अब तक विद्यमान हैं यद्यपि उन सूचिपत्रों में बिगाड़ भी बहुत है परन्तु फिर भी उन से वर्त्तमान काल के देश विभाग और नगर और पर्वतादि भले प्रकार ज्ञात हो सक्ते हैं. आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथ कर्त्ता कि जिन के ग्रंथ अब तक विद्यमान हैं चरक नरव और विश्वामित्र के बेटे सुश्रुत मुनि हैं इनके ग्रंथों का उल्था अरबी भाषा में हुआ – और दृढ निश्चय यह है कि कि अरब निवासी लोग इन ग्रन्थों का उल्था होते ही आयुर्वेद के सीखने के ओर झुके अरबी भाषा के वैद्यक शास्त्र के पंडित स्वीकार करते हैं कि हमने आर्य्यावर्त्त के वैद्यों से निस्संदेह लाभ उठाया है और आर्य्यावर्त्त के वैद्यों की पदवी में यूनान देश के

کی روسے کی ہے وہ اونکی قدیم کتابوں سے معلوم ہوتی ہے اور ہر قسمت کی شہروں اور پہاڑوں اور دریاؤں کی فہرستیں موجود ہیں اگرچہ اون فہرستوں میں بے ترتیبی بہت ہے مگر پھر بھی اون سے زمانہ حال کی قسمتیں اور شہر اور پہاڑ وغیرہ بخوبی معلوم ہو سکتے ہیں علم طب کی نہایت قدیم مصنف جن کی تصنیفیں اب تک موجود ہیں چرک اور سشرت ہیں ان کی کتابوں کا ترجمہ عربی زبان میں ہوا اور ظن غالب یہہ ہے کہ عرب والے ان کا ترجمہ ہوتے ہی تحصیل علم کی طرف متوجہ ہوئے عربی زبان کے مصنف علانیہ اقرار کرتے ہیں کہ ہمنے ہندوستان کے طبیبوں سے بیشک فائدہ اوٹھایا ہے اور ہندو طبیبوں کو مرتبے میں یونانی طبیبوں

वैद्योंकी बराबर समझते हैं-आर्य्यों
की औषधि विद्या बड़ी ज्ञात होती
है-प्रारम्भ में योरप देश निवासियों
ने यह विद्या आर्य्यों ही से सीखी-
और अब भी सांस के रोग के निवारण
के अर्थ हुक्के में धतूरा पिलाना और
कैंच की फली से कीड़ों की चिकत्सा
करनी आर्य्यों ही से सीखी है ॥ औ
र रसायन विद्या के विषय में आनेरब-
ल एल्फ़िंस्टन साहिब की यह सम्मति
है कि यह अनुमान नहीं होसक्ता कि
यह विद्या आर्य्यों में इतनी पाईजाय
शोरे और गंधक और नमक का तेज़ा
ब बनाना और तांबे और लोहे और
सीसे और टीन का मारना और विशेष
कर जस्त का मारना दोनों प्रकार से अ-
र्थात् खील और पीसक करना-और
तांबे वा लोहे वा पारे वा सुरमे वा संखि
या के साथ गंधक मिलाकर एक मि
श्रित औषधि बनाना और तांबे और
लोहे और जस्त का गंधक के तेज़ाब

کی برابر سمجھتے ہین ہندوؤن
کا علم ادویات نہایت وسیع معلوم
ہوتا ہی ابتدا مین اہل یورپ نے
اس علم کی تعلیم انہی سے پائی
اور زمانۂ حال مین بھی دمہ کے لئے
حقہ مین دہتورا پلانا اور کینچ
کی پھلی سے کیڑون کا علاج
کرنا انہی سے سیکھا ہی ہندوون
کے علم کیمیا کی نسبت انریبل
الفنسٹن صاحب بہادر کی یہہ رای ہی
کہ قیاس ہرگز نہین چاہتا کہ
یہہ علم ان مین اسقدر پایا جاے
شوری اور گندہک اور نمک کا تیزاب
بنانا تانبے اور لوہے اور سیسے
اور ٹین کا کشتہ کرنا اور خاص
کر جست کا کشتہ دونون طرح
یعنی کہیل اور پیسک کرنا اور
تانبے یا لوہے یا پارہ یا سرمہ
یا سنکھیا کو ساتھ گندہک ملا کر ایک
مرکب دوا بنانے اور تانبے
اور لوہے اور جست کا گندہک کی تیزاب

के साथ क्षार बनाना और कार बन
के तेज़ाब से सीसे का क्षार बनाना सर्व
था नहीं तो प्रायः इन औषधियों के
बनाने की रीति आर्य्यों ही के साथ सम्बं
ध रखती है- धातुओं को औषधि की रीति
पर खिलाना सब से पहिले आर्य्यों ही
के यहां से निकला है- ईंगुर अर्थात् शिं
गर्फ़ का भपारा जिस से बहुत शीघ्र
मुंह आ जाता है और रोग निवारण हो
जाता है और बारी के ज्वर में विष का
तेज़ाब प्राचीन काल से इन ही के बर्त्ता
व में चला आता है जर्राही विद्या में जो
आर्य्यों को सामर्थ्य थी वह भी वैसी
ही विलक्षण है जैसी कि रसायन वि
द्या पथरी निकालनी और आंखें बना
नी और गर्भाशय में से बच्चा निकाल
ना यह सारी बातें इनके यहां प्रसिद्ध
थीं सबसे अधिक जर्राही के कर्म
अर्थात् औज़ार आर्य्यों के यहां कार्य्य
में आते थे - सीतला में टीका लगाना
आर्य्यों के यहां प्राचीन समय से चला

کے ساتھہ کہار بنانا اور کاربن
کی تیزاب سی سیسی کا کہار بنانا بالکل
نہین تو بعضی صورتون مین
ان دواؤن کو تیار کرنیکے طریقے
ہندؤن ہی کے ساتھہ مخصوص ہین دہاتونکو
بطور دوا کہلانا سبسے پہلے ان ہی
کے یہان سے نکلا ہے شنجرف کا بہپارا
جس سے بہت جلد منہہ آجاتا ہے
اور صحت ہو جاتی ہے اور
باری کی تپ مین زہر کا تیزاب
مدت سے ان کے برتاؤ مین ہے
فن جراحی مین جو ہندؤن
کو دستگاہ تہی وہ بہی ویسے ہی
حیرت انگیز ہے جسقدر علم کیمیا
حالانکہ اوس حالت مین وہ علم
تشریح سے بالکل ناواقف تہے
چنانچہ پتہری نکالنی آنکہین بنانی
رحم مین سے بچہ نکالنا یہ سب انکے یہان شائع
تہا سو ۱۲۵ سو سے زیادہ آلات فن جراحی اونکے
یہان مستعمل تہے چیچک مین ٹیکا لگانا
اونکے یہان مدت سے چلا

ज्ञात है संस्कृत भाषा के विषय में
एक तत्ववेत्ता का वचन है कि यह
बोली यूनानी भाषा से अधिक पूर्ण
और रूमी भाषा से बहुत व्यापक और
दोनों से बढ़कर ललित है - इस से वि
दित होता है कि आर्य्यों के वृद्धों और
शिष्टों ने इस भाषा के संवारने और
सुधारने में यथावत् परिश्रम किया
लिखा है कि संस्कृत भाषा का व्याक
रण ऐसा पूर्ण है कि सारे जगत् में और
किसी भाषा का व्याकरण ऐसा नहीं
है सर विलीयम जोंस और पीटरसन
के लेखानुसार आर्य्यों की
गान विद्या बहुत प्रशंसनीय और
अति योग्य है - इन के यहां चौरासी रा
गनियां हैं - जिन में से छत्तीस रागनीयां
बहुधा प्रचरित हैं और हर एक के ताल
और स्वर जुदे २ हैं और चित्त की वि
शेष २ वृत्तियों के उत्पन्न करने में
पृथक् २ स्वभाव रखती हैं। शिल्प
विद्या में जो आर्य्यों की प्राचीन

آتا تہا سنسکرت زبان کی نسبت
ایک بڑے محقق کا قول ہے کہ یہہ
زبان یونانی زبان سے زیادہ کامل
اور رومی سے زیادہ وسیع اور
دونوں سے بڑہکر فصیح اور بلیغ ہے
اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہندؤن
کے بزرگوں نے اس زبان کی
تکمیل اور تہذیب مین جیسی چاہیے
ویسی ہی توجہ کی ہے کہ اس زبان
کی صرف و نحو ایسی مکمل ہے کہ تمام دنیا
مین کلام انسانی کے اصول اس سے
زیادہ قایم نہین کی گئی ہندؤن
کا علم موسیقی بقول سر ولیم جونس اور پٹیرسن
صاحب کی نہایت مرتب اور شایستگی سے بہرا
ہوا ہے انکے یہان چوراسی ۸۴
راگنیان ہین جنمین سے چھتیس ۳۶
راگنیان عموماً مستعمل ہین اور ہر ایک
کے تال سر علیحدہ ہین اور طبیعت کے
خاص خاص لوگون کے برانگیختہ کرنے مین
ایک جدا جدا تاثیر رکھتے ہین فن عمارت
مین جو ہندؤن کی قدیم

पुस्तकें हैं उन को न्याय पूर्वक आर्य्याव
र्त्त के एक विद्वान् ने देखकर जो व्याख्या
न लिखा है उस से प्रकट होता है कि इस
विद्या के मूलों को आर्य्यावर्त्त निवासी
लोग भले प्रकार समझते थे और उसके
बहुत से प्रकार उन्हों ने अपने बुद्धि से भी निका
ले हैं - आर्य्यावर्त्त के कर्त्तव्यों में से रूई
का कपड़ा बनाना ऐसा प्रसिद्ध वस्तु है कि
जिसका सौन्दर्य्य और सुकुमारता बहुत
काल तक प्रसिद्ध रही है और बनावट
की उत्तमता में अब तक भी किसी और
देश के मनुष्यों ने उस की बराबरी नहीं
की और पट्ट अर्थात् रेशम प्राप्त करना
और रेशमी वस्त्र बुनना आर्य्य लोग
प्राचीन समय से जानते थे और सुनहरी
और रुपहली कमख्वाब और ज़रबफ़्त प्र
भृति इनही का निकाला हुआ है रंगतों
की चमक और दमक और पक्केपन
में आनरेबल एल फ़िस्टन के वचनानुसार
अब तक योरप देश निवासियों ने आ
र्यों की बराबरी नहीं की · इससे अधिक

کتابین ہیں اونکو انصاف کی
نظر سے دیکھکر ایک دانشمند ہندوستانی
نے جو مضمون لکھا ہے اور اوسمین اونکے
قواعد کو بہت ترتیب کے ساتھہ بیان
کیا ہے اس مضمون سے معلوم ہوتا ہے
کہ اس فن کے اصول کو ہندو بخوبی
سمجھتے تھے اور بہت سے قاعدے اونکے
اونھون نے ایجاد بھی کئے ہین روئی کا
کپڑا ہندوستان کی مصنوعات مین سے ایسی
مشہور چیز ہے جسکی خوبی و نزاکت مدت تک
ضرب المثل رہی ہے اور بناوٹ کی عمدگی مین
اب تک بھی کسی اور ملک کے آدمیون نے اوسکی
برابری نہین کی اور ریشم بہم پہونچانا
اور ریشمی کپڑا بننا غالبا وہ قدیم سے
جانتے تھے اور سنہری اور روپہلی
کمخواب زربفت وغیرہ تمام
ان ہی کا ایجاد ہے رنگتون
کی چمک دمک اور پختگی مین
بقول آنریبل الفنسٹن کے
اب تک اہل یورپ نے
ہندوستانیون کی ہمسری نہین کی اور ملوا

और भी कोई २ विशेष विद्या ऐसी हैं कि जिन में प्राचीन आर्य्य निपुण थे परन्तु सच यह है कि इन लोगों की दृष्टि आन्वीक्षि की विद्या पर बहुत रही है और लोकि की वार्त्ता पर इन्हों ने ध्यान नहीं दिया और मुसलमानों के राज्य के आने के पश्चात् आन्वीक्षि की विद्या भी दिन २ प्रति घटने लगी - यहां तक कि यदि आर्य्यों के पास पुरानी पुस्तकें साक्षी के लिये न होतीं तो अब आर्य्यों की अवस्था ऐसे अंधकार में थी कि जिसमें इन की प्राचीन विद्याओं का पता लगना कठिन था - हां वेदान्त और न्याय और गणित प्रभृति में जितने शास्त्रार्थ आन्वीक्ष की विद्या के साथ सम्बंध रखते हैं इन में यदि आर्य्यावर्त्त के पण्डितों की पुस्तकें देखी जायें और उन में जो उन्हों ने निश्चय किया है और हर एक व्यवस्था को जो भले प्रकार छान बीन कर निर्णय किया है इस पर दृष्टि डाली जाय तो यह कहना सम्भव है कि यूनान वालों ने जिस बात का आरम्भ किया था उसके पूरा करने

بعض اور فن بھی ایسے ہیں جن میں اگلے زمانہ کے ہندؤن کو خاص دستگاہ تھی مگر انصاف یہہ ہے کہ ان لوگون کی نظر زیادہ تر حکمت نظری پر مقصور رہی حکمت عملی کی طرف بہت کم توجہہ کی اور اہل اسلام کی عملداری سے آکر حکمت نظری کو بھی یوماً فیوماً تنزل ہونے لگا یہانتک کہ اگر ہندؤن کو یہان قدیم مصنفون کی کتابیں شہادت دینے کو موجود ہوتیں تو آج انکی موجودہ حالت ایسی تاریکی میں تھی جس میں اگلے زمانہ کی روشنی کا پتا ملنا دشوار تھا ہان البتہ طبیعیات و منطق و ریاضی میں جتنے مباحث حکمت نظری کے ساتھہ علاقہ رکھتے ہیں ان میں اگر ہندوستان کے فاضلون کی تصنیفات دیکھی جائیں اور انہون جو انہون نے محققانہ گفتگو کی ہے اور ہر مسئلہ کو خوب چھان بین کے منقح کیا ہے اسپر نظر کیجائے تو یہہ کہنا ممکن ہے کہ یونانیون نے جس عمارت کی بنیاد ڈالی تھی اسکو پورا کرنے

में आर्य्यों ने बड़ा परिश्रम किया॥ इति॥
सैयद अहमदखां की तहज़ीबउलअ-
खलाक के खंडन में एक मासिक पत्र जि-
सका नाम तेरहवीं सदी है आगरे में मुद्रित
होता है उसके तीसरे खंड के आठवें अं-
क में लिखा है कि इसी आर्य्यावर्त्त की
विद्याओं के प्रभाव से सो जगत् को लाभ
हुआ और इसी आर्य्यावर्त्त के प्राचीन
निवासियों ने शास्त्रविद्या और शिल्प
विद्या प्रभृति में से कोई वस्तु शेष नहीं
छोड़ी और अब भी उस काल की बहुत
बातों का पिछले ग्रन्थों से पता लग सकता
है यद्यपि अब हम को आर्य्यों के पुराने
ग्रन्थ एक कहानी प्रतीत होते हैं परन्तु
कोई विद्वान् इस बात को स्वीकार न
करेगा कि अगले समय के ऐसे विद्वद्
जन अपने देश और मत के ग्रन्थों को
कहानी बना डालें हां यह बात सच है
कि ब्राह्मणों के कपट और छल से उन
में न्यूनाधिक होगया होवै तो कुछ आ-
श्चर्य्य नहीं है अब उस न्यूनाधिक होने

مین ہندوستانیون نے سعی بلیغ
فرمائی انہیں سید احمد خان کی
تہذیب الاخلاق کے جواب مین ایک رسالہ ماہواری
موسوم بہ تیرہوین صدی مطبع
آگرہ اخبار مین مطبوع ہوتا ہے اوسکی
تیسری جلد کے نمبر ششم مین لکھا ہے کہ
تیسری یہی ہندوستان جسکے فیض علوم
سے تمام جہان مستفیض ہوا اور جسکے قدیم
باشندون نے تمام علوم و فنون و صنعت
و حرفت مین کوئی چیز باقی نہین
چھوڑی اور اب بھی اوس زمانہ کی اکثر
تحقیق و صنعت کا پتہ پچھلی کتابون سے
لگ سکتا ہے گو اب ہمکو ہندوؤن کی پرانی
پوتھیان ایک فسانہ معلوم ہوتی ہین
مگر کوئی عقلمند اس بات کا اعتبار نہ
کریگا کہ اگلے زمانہ کی ایسی دانشمند
قوم اپنے ملکی و مذہبی کتابون کو
فسانہ بنا جاوے ہان یہہ امر سچ
ہے کہ اوس مین استداد و دستبرد جاہلون کی
براہمہ سے کچھ تصرف ہوگیا ہو تو عجب
نہین ہے اب اوس تصرف

से सत्यासत्य का निर्णय सहस्रों वर्ष
के पश्चात् बहुत कठिन है-और इन
ग्रन्थों में जो विमानों की कथा आती
है उस से प्रतीत होता है कि उस समय
में भी यह बेलून जो योरप देश निवा
सियों ने प्रचलित किया है विद्यमान था
जैसे यह रेल जिस पे लाखों मनुष्य
धुएं केवल से देशाटन करते हैं और
यह तारबर्की जिस पर क्षण मा
त्र में सहस्रों कोस ख़बर चली जा
ती है न होता और सौ पचास वर्ष
पहिले के ग्रन्थों में लिखा होता तो
यह भी एक कहानी प्रतीत होता
और अवश्य आगे को कभी ऐसा
ही कहा जावैगा इसी प्रकार प
हिले और वृत्तान्तों को भी समझ
लेना चाहिये - कि यद्यपि अब वह
कहानी प्रतीत होते हैं परन्तु कभी
न कभी वह अवश्य विद्यमान होंगे
और किसी न किसी रीति से इन का
प्रचार अवश्य किया जाता होगा। —

سے اصل اور باطل کی تمیز ہزاروں
برس بعد دشوار بلکہ محال ہو گئی لیکن
وہ قصہ اوس تحریر کی اصلیت کا پتہ
بتا رہا ہے کہ اوس وقت میں بھی اس
چیز کا وجود تھا اور طبائع انسانی
پر غور کرنے سے معلوم ہو سکتا ہے کہ جو
بات اپنے ذہن سے باہر ہو وہ جھوٹ
یا معجزہ معلوم ہوتی ہے مثلاً یہہ ریل
جسپر لاکھوں آدمی دھوئیں کے زور سے سفر کرتے
ہیں اور یہہ ہی تار برقی جسپر آن واحد میں
ہزاروں کوس خبر چلی جاتی ہے سو اور
پچاس برس پیشتر کی کتابوں میں لکھا
ہوتا تو یہہ بھی ایک فسانہ معلوم ہوتا
اور غالباً آیندہ بھی ایسا ہی کہا
جاویگا لیکن اسکا وجود باقی رہیگا
پس اگلی صنائع و حالات کو بھی اسی طور پر
قیاس کر لینا چاہیے کہ گو وہ اب افسانہ
معلوم ہوتے ہیں مگر کبھی نہ کبھی
اون کا وجود ضرور ہوگا اور
کسی نہ کسی طرح پر اون کا
استعمال ضرور کیا جاتا ہوگا

यद्यपि उन वृत्तान्तों को ब्राह्मणों ने
अगले राजाओं के आशचर्य्य कर्म्मों
में गिनकर एक धर्म्म संम्बंधि कर्म्म
मान लिया है परन्तु वास्तव में वह उस
आर्य्या वर्त्त की शिल्प विद्या का फल
है जैसे पुराणों में लिखा है कि अमुक
राजा पाताल के राजा से लड़ने गया
तो यह समझ में नहीं आता कि भूमि
तोड़ कर कैसे पाताल में चला गया
देखिये कि एमरीका देश जिसको
नई दुनिया कहते हैं - पृथ्वी के गो
लाकार होने के कारण पाताल में वि
द्यमान है - यदि उस समय भी यहां
का राजा वहां गया तो विद्वानों की दृ
ष्टि में मिथ्या नहीं होसक्ता और फिर
पुराणों में लिखा है कि अमुक राजा
इतनी सैना लेकर कई सौ कोस मुहू
र्त्त मात्र में चला गया यद्यपि यह अर्थ
वाद हो परन्तु रेल पर दृष्टि डालने से
विदित होसक्ता है कि उस समय में
भी यदि कोई वाहन ऐसा हो तो कुछ

اور گو اون حالات کو براہمہ نے
اگلے راجاؤن کی کرامات مین
داخل کر کے ایک مذہبی خیال
بتا دیا ہے مگر در حقیقت وہ اوس
دانشمند ملک کی حکمت و فلسفت کا
نتیجہ ہین چنانچہ ہندی پوتھیون مین
ہے کہ فلان راجا پاتال کے راجا سے لڑنے گیا
تو اب سمجھہ مین نہین آتا کہ زمین
توڑ کر کسطرح پاتال مین چلا گیا
حالانکہ ملک امریکہ جس کو نئی دنیا
کہتے ہین بوجہہ کرویت ارض
اس جگہہ سے پاتال مین واقع
ہے پس اگر اوسوقت مین بہی
یہان کا راجا وہان گیا ہو تو عقلا کے
بالغ نظر کے خیال مین لغو نہین معلوم
ہو سکتا اور ہرطرح ہندی کتابون مین
لکہا ہے کہ فلان راجا بقدر کثیر فوج لیکر
اتنے کوس چند ساعت مین چلا گیا گو اسمین
مبالغہ ہو مگر ریل پر نظر کرنے سے
معلوم ہو سکتا ہے کہ اوسوقت مین
بہی اگر کوئی ایسا مرکب ہو تو کچہہ

आश्चर्य नहीं है - इसी प्रकार इस बेलून के विषय में भी पुराणों में यह लेख निकल सक्ता है - कि अमुक राजा के घर विमान था और उसके द्वारा देशाटन किया करता था यद्यपि विमान की सूरत बेलून और गुबारे से और प्रकार की होवे परन्तु इस से उसकी सत्यता नहीं जाती और इस सूरत में कोई विद्वान् पुरुष यह नहीं कह सक्ता कि यह गुबारा और बेलून नवीन है॥ इति॥ पृष्ठ ६३ और ६४ भूगोल हस्तामलक में जो कि अंगरेज़ी भाषा के कई ग्रन्थों से संचित किया गया है लिखा है कि विद्या की मूल आर्य्यावर्त्त है इसी देश से विद्या निकली थी - सब से पहिले इसी देश के मनुष्यों ने विद्या के सम्पादन में चित्त लगाया और यहां के विद्वान् और पण्डित सर्व्वदा दूसरे दूसरे देशों में प्रसिद्ध और आदरणीय रहे हैं - मिस्र और यूनान

عجب نہیں ہے اسی طرح اس عبارہ کی نسبت بھی ہندی کتابوں سے استنباط ہو سکتا ہے مثلاً ہندی کتابوں میں لکھا ہے کہ فلاں راجا کے یہاں بہان تہا اور اوسکے ذریعہ سے جایا کرتا تہا گو اسکی صورت اس عبارہ اور بلون سے دوسری طرح کی ہو مگر اس سے اوسکی اصلیت باطل نہیں ہو سکتی اور اس صورت میں کوئی محقق اور صحیح الخیال شخص یہہ نہیں کہہ سکتا کہ یہہ عبارہ نئی ایجاد ہے فقط صفحہ شصت و سوم و شصت و چہارم بہوگول ہستا ملک میں جو کہ انگریزی زبان کی چند کتابوں سے انتخاب کیا گیا ہے لکھا ہے کہ علم کی جڑ آریاورت دیش ہی ہے اسی ملک سے علم نکلا تہا سب سے پہلے اسی ملک کے آدمیوں نے تحصیل علم میں دل لگایا اور یہاں کے علما و فضلا ہمیشہ سے مشہور و معروف اور دوسری ولایتوں میں واجب التعظیم میں مصر و یونان

देश वाले जिन्होंने सारी इङ्गलिस्तान
को मनुष्य वनाया अपने बड़े २ पंडित
और विद्वानों के इतिहास में यह ही लि
खते हैं कि वह आर्य्यावर्त्त देश से विद्या
पढ़ आये थे सिकन्दर इतना बड़ा राजा
कि जिस की सभा में अरस्तू प्रभृति बड़े २
पण्डित विद्यमान थे इस देश से
एक पण्डित को जिसका नाम वहां के
देश वाले कलन लिखते हैं और
वास्तव में कल्याण नाम हो
गा बड़ी सुश्रूषा से अपने
साथ लेगया उस समय उसके साथ
कोई बड़ा विद्वान् तौ क्योंकर गया
होगा किसी ऐसे वैसे ही ने जाना स्वी
कार किया होगा - परन्तु यूनान निवा
सी लोग उसकी प्रशंसा यों करते हैं
कि जितने दिनों वह सिकन्दर के पा
स रहा उसने अपने चाल चलन में
कुछ भी न्यूनाधिक नहीं किया और
भले प्रकार आर्य्यों के धर्म्म का पालन
करता रहा - ईरान देश अर्थात् कयकाय
देश के प्रसिद्ध राजा वहराम ने आर्य्या
वर्त्त देश से गाने वाले बुलवाये थे - गान

والی جنہوں نی ساری فرنگستان
کو انسان بنایا اپنی بڑی بڑی
حکیموں اور عالموں کی حال میں یہ
ہی لکھتی ہیں کہ وہ ہندوستان سی
تحصیل علم کر آئی تھی سکندر اتنا بڑا
بادشاہ جسکی دربار میں ارسطو وغیرہ
بڑی بڑی لایق حکیم و عالم موجود تھی
اس ملک سی ایک پنڈت کو جسکا نام
وہاں والی کلن لکھتی ہیں اور اصل میں کلیان ہوگا
معلوم ہوتا ہی بڑی خوشامد سی اپنی ساتھ
لیگیا تھا اوس وقت اوسکی ساتھ کوئی بڑا پنڈت
تو کسواسطی گیا ہوگا کسی ایسی ویسی ہی نی
یہہ بات قبول کی ہوگی لیکن یونان والی
اوسکی تعریف یوں لکھتی ہیں کہ جتنی
دن وہ سکندر کی پاس رہا اوسنی
اپنی چال چلن میں ذرہ برابر
بھی فرق نہ آنی دیا اور
اچھی طرح ہندو دہرم کا برتاو
کیا ایران کی نامی بادشاہ بہرام
نی یہاں سی گانی
والی بلوائی تھی علم

विद्या भी आर्य्यावर्त्त की सदृश दूसरी स्थान पर ऐसी नहीं है बगदाद नगर के बड़े राजा मामूं नामक ने आर्य्यावर्त्त से वैद्य बुलवाये थे सर्व्वदा उनहीं की औषधि खाता था और आर्य्यावर्त्त में ग्रन्थ भी वेदान्त और ज्योतिष और गणित और भूगोल विद्या और इतिहास और व्याकरण और छन्दो विद्या और न्याय और कणाद शास्त्र और आकर्षण विद्या और वैद्यक और गानादि विद्या के संस्कृत और प्राकृत में विद्यमान थे परन्तु मुसलमानों ने अपने राज्य में आर्य्यों के शास्त्र नष्ट कर दिये फिर राजप्रबन्ध ठीक न होने से इन विद्याओं का पढ़ना पढ़ाना ऐसा घट गया कि अब जो कोई पुस्तक भी हाथ लगती है तो उसका कोई पढ़ाने और समझाने वाला नहीं मिलता पहिले समय में आर्य्यावर्त्त में प्राकृत भाषा बोली जाती थी जिसमें बुद्ध और जैन मत के बहुधा ग्रन्थ लिखे गये हैं

موسیقی ابتک بھی ہندوستان کی مانند دوسری جگہہ نہین ہی بغداد کے بڑی خلیفہ مامون نے یہان سے طبیب بلوائے تھے ہمیشہ اون ہی کی دوا کہاتا تہا کتابین بھی اس ملک مین الہیات نجوم ہیئت ہندسہ جغرافیہ تاریخ اخلاق صرف نحو عروض قافیہ منطق حکمت جر اثقیل طب موسیقی وغیرہ سب علمون کی سنسکرت اور پراکرت مین اچھی اچھی موجود تھین مگر مسلمانون نے اپنی عملداری مین ہندوؤن کے شاستر غارت کردئے پھر بدعملی اور بے انتظامی ہونے کے باعث ان علمون کا پڑہنا پڑہانا ایسا گھٹ گیا کہ اب جو کوئی کتاب بھی ہاتھ لگتی ہی تو اوسکا پڑہانے اور سمجھانیوالا نہین ملتا قدیم زمانے مین یہان پراکرت زبان بولی جاتی تھی جس مین بودھ مت اور جین مت کی اکثر کتابین لکھی گئی ہین

परन्तु संस्कृत जिस में वेद और पुराणादि आर्य्यों के शास्त्र लिखे गये हैं ऐसा नहीं प्रकट होता कि कभी इस देश की भाषा रही हो और सब पुरुष संस्कृत में बोल चाल करते हैं इसी लिये इस को देव वाणी अर्थात् देवतों की बोली कहते हैं - इति - संस्कृत भाषा की एक छोटी सी किताब का नाम हितोपदेश है वह जिस ग्रन्थ का संक्षेप है उस को पंच तंत्र कहते हैं यह दोनों ग्रन्थ नीति शास्त्र के प्रथम ग्रन्थ गिने जाते हैं इस प्रकार की पुस्तकों के पढ़ाने से राजकुमारों की योग्यता बढ़ती है - कि वह राज्य प्रबन्ध को भले प्रकार से करें हितोपदेश ग्रन्थ पटने के पास पाटलिपुत्र नामक नगर में रची गयी थी वहां के राजा के लड़के मूर्ख रहे जाते थे विष्णु शर्म्मा पण्डित ने राजा से कहा कि मैं छः मास में आप के पुत्रों को राज्य प्रबन्ध में चतुर कर दूंगा =

مگر سنسکرت جس مین وید اور پران وغیرہ ہندؤن کی شاستر لکھی ہین ایسا نہین معلوم ہوتا کہ کبھی اس ملک کی زبان رہی ہو اور سب لوگ سنسکرت مین بول چال کرتے ہون بلکہ اسی لئی اسکو دیوبانی یعنی دیوتاؤن کی زبان کہتے ہین فقط سنسکرت زبان کی ایک دفتی کتاب کا نام ہتوپدیش ہے وہ جس کتاب کا خلاصہ و لب لباب ہے اسکو پنچ تنتر کہتے ہین یہہ دونون کتابین نیتی شاستر کی پہلی کتاب شمار کی جاتی ہین اس قسم کی کتابون کے پڑہانے سے غرض شاہزادون کی لیاقت و شایستگی ہو کہ وہ کاروبار سلطنت کو بخوبی انجام دین ہتوپدیش پٹنہ کے قریب پاٹلی پتر نامی شہر مین تالیف ہوئی تھی وہان کے راجا کے لڑکے آوارہ ہوگئے تھے تب وشنو شرما پنڈت نے راجا سے کہا کہ مین چھہ مہینے مین آپکے لڑکون کو امور سلطنت مین ہوشیار کر دونگا

इस कारण विष्णुशर्म्मा पण्डित ने
हितोपदेश ग्रन्थ रचा-और राजा के बे
टों को पढ़ाया- सन ६०० ईसवी में ईरा
न देश के राजा नौशेर वां की आज्ञा
नुसार हितोपदेश का उल्था फ़ारसी
भाषा में किया गया और सन नौसौ
ईसवी में हितोपदेश का उल्था अरबी
भाषा में हुआ जिस का नाम कलेला
दमना है १५०० ईसवी में हितोपदेश
का उल्था इबरानी भाषा में किया ग
या- फ़ारसी की प्रसिद्ध पुस्तक अनवा
र सुहेली हितोपदेश से होवनी है
शेख़ अबुल फ़ज़्ल ने कि जो अकबर
राजा के मंत्रियों में था उसने हितोपदे
श फ़ारसी भाषा में नवीन उल्था करके
अयार दानिश नाम रक्खा यह सारी
बातें अंगरेज़ी निर्णय से प्रकट होस
की हैं मौलवी रूम की मसनवी के दू
सरे दफ़तर में लिखा कि एक सत्य वा
दी पुरुष ने एक राजा से कहा कि आ
र्यावर्त्त में एक ऐसा वृक्ष है कि जो कोई

لہذا پنڈت موصوف نے کتاب
مذکور تصنیف کی اور راجا کے
لڑکوں کو تعلیم دی چھٹی صدی
عیسوی میں نوشیروان فرمانروائے
ایران کے حکم سے ہتوپدیش کا فارسی
میں ترجمہ کیا گیا عیسی کی نوین
صدی میں اوسکا ترجمہ عربی زبان
میں ہوا جسکا نام کلیلہ و دمنہ
ہے پندرہوین صدی میں ہتوپدیش
کا ترجمہ عبرانی زبان میں کیا گیا
فارسی کی مشہور کتاب انوار سہیلی
ہتوپدیش ہی سے بنی ہے شیخ
ابو الفضل نے اوسکا ترجمہ از سر
نو کر کے عیار دانش نام رکھا
یہ سب تمام باتیں انگریزی تحقیقات
سے بھی معلوم ہو سکتی
ہیں مولوی روم کی مثنوی
کے دفتر دوم میں لکھا
ہے کہ ایک مرد صادق
نے کسی بادشاہ سے کہا
کہ ہندوستان میں ایک ایسا درخت ہے کہ جو کوئی

उसका फल खाता है वह न वृद्ध हो
ता है न मरता है राजा ने यह सुनकर औ
र अपने मंत्रियों में से एक को छांटकर
आर्य्यावर्त की ओर भेजा और आज्ञा दी
कि वृक्ष को ढूंढे और जब तक उस वृ
क्ष को न पावे तब तक न लौटे उस सत्य वा
दी पुरुष ने यद्यपि उस वृक्ष को बहुत ढूं
ढा परन्तु कुछ पता न लगा इस कारण
आर्य्यावर्त से लौटा मार्ग में एक सिद्ध
पुरुष से भेंट हुई उसने कृपा करके क
हा कि जिस वृक्ष को तूने आर्य्यावर्त
में ढूंढा वह ज्ञान रूपी वृक्ष है=इसे=
अब जानना चाहिये कि वह ज्ञान सा
मान्य ज्ञान नहीं है किन्तु ब्रह्म ज्ञान है
जो कि सारे वेदान्त का सार है और मु
क्ति का द्वार है जिसने उस वृक्ष का फल
खाया वह परम पद को प्राप्त हुआ वह
वृद्धावस्था से नहीं डरता और कभी न
हीं मरता=जैसे कठवल्ली उपनिषद् की
छटी वल्ली में है यएतद्विदुरमृतास्ते भ
वन्ति अर्थात् जो लोग परमात्मा को जानते

اوسکا میوہ کھاتا ہی وہ نہ بوڑھا
ہوتا ہی نہ مرتا ہی بادشاہ نے یہ سنکر
اور ارکان دولت میں سے ایک شخص
کو چن کر ہندوستان کیطرف روانہ
کیا اور حکم دیا کہ درخت مذکور کو
تلاش کرے اور بے نیل مرام کو نہ پھرے
اوس نے ہر چند تلاش کی مگر درخت مذکور
کا پتہ نہ ملا پس وہ ہندوستان
سے واپس چلا درمیان راہ
کو ایک ولی سے ملاقات ہوئی
اوس نے رحم کرکے کہا کہ جس درخت
کو تو نے ہندوستان میں تلاش کیا
وہ علم ہی ظاہری درخت نہیں ہے
فقط اب چاہیے جاننا کہ وہ علم رسمی
نہیں ہے برہم گیان ہی جو کہ سارے ویدانت
کا سار ہی اور مکتی کا دوار ہی جس نے
اوس درخت کا بر کھایا اوس نے مرتبہ
برتر پایا وہ پیری سے نہیں ڈرتا اور ابد
[illegible] چنانچہ کٹھولی اپنشد کی
यएतद् دوسری ادھیائی کی چھٹی ولی میں ہے
یعنی جو لوگ پرماتما کو جانتے द्विदुरमृतास्तेभवन्ति

हैं वही मृत्यु से छूट जाते हैं ॥ इति ॥ मे
क्स मूलर साहिब ने पुस्तक आन्दी
साइन्स आफ़ लेंग्वेज के पृष्ठ ९९
में लिखा है कि सिकन्दर के साथी यूना
नी लोग यह जानते थे कि आर्य्यावर्त्त
के ब्राह्मणों के पास एक पुराना और गु
प्त ज्ञान है फिर इसी पृष्ठ में है कि फै
रन यूनानी विद्वान् सिकन्दर के साथ आ
र्य्यावर्त्त में आया था जब कि बुद्ध का
मत आर्य्यावर्त्त में फैला हुआ था इ
स से निश्चय होता है कि ईश्वर के निषेध
का उपदेश जोकि फैरन ने यूनान में
प्रचरित किया यह बुद्ध की शिक्षा से
सब लिया है इसी पुस्तक के पृष्ठ १००
में लिखा है कि अस्कन्द्रिया नगर के
ग्रन्थकर्त्ताओं को विश्वास था कि सा
रा ज्ञान पूर्व्व से आया है ॥ इसी पुस्तक
के पृष्ठ १६५ में है कि ख़लीफ़ा अल
मन्सूर अब्बास की सभा में एक आर्य्या
वर्त्त निवासी ज्योतिषी ग्रहों के भ्रमा
ण का नक़शा सूर्य्य और चन्द्र ग्रहण

ہیں وہ موت سے نجات پاتے ہیں
فقط میکس مولر صاحب نے کتاب لیکچرس
آن دی سائنس آف لینگویج کے صفحہ
۹۹ میں لکھا ہے کہ سکندر کے ہمراہی
یونانی لوگ یہہ جانتے تھے کہ ہندوستان
کے برہمنوں کے پاس ایک پرانا اور
پوشیدہ عقل ہے اسی صفحہ میں ہے کہ
فیرن یونانی حکیم سکندر کے ہمراہ
ہندوستان میں آیا تھا جس وقت
کہ بدھ کی فلاسفی یہاں پھیلی ہوئی
تھی اس سے یقین کیا جاتا ہے کہ خدا
سے منکر ہونے کی تعلیم جو کہ فیرن نے
یونان میں جاری کی ہے وہ بدھ کے
فلاسفی سے ساری لی ہے اوسی کتاب
کے صفحہ ۱۰۰ میں ہے کہ اسکندریہ کے
مصنفوں کو یقین تھا کہ تمام عقل
مشرق سے آئی ہے فقط اسی کتاب
کے صفحہ ۱۶۵ میں ہے کہ خلیفہ المنصور
عباس کے دربار میں ایک ہندوستانی
نجومی نقشہ حرکات سیاروں
کا مع اونکی حرکت اوسطی اور کیفیت کسوف و خسوف

की व्यवस्था सहित लाया-ख़लीफ़ा ने
मुहम्मद बिन अलिफ़ ज़ारी से उसका
उल्था कराया और सिंध हिन्द अथ
वा हिन्द सिंध नाम रक्खा उसी पृष्ठ
में है कि ख़लीफ़ा अलमामूं के समय
में मुहम्मद बिन मूसा ने संस्कृत से
बीजगणित का उल्था अरबी भाषा में
किया-उसी पुस्तक के पृष्ठ १६० में है
कि अलबरूनी ने सांख्य शास्त्र और
योग शास्त्र का उल्था अरबी भाषा में
किया फिर उसी पृष्ठ में है कि अबूसाल
ह ने एक ग्रन्थ का जो राजों की शिक्षा के
विषय में है अरबी भाषा में उल्था किया
फिर इसी पृष्ठ में है कि फ़ीरोज़ शाह बा
द शाह ने नगरकोट को वशीभूत कर
ने के अनन्तर एज़द्दीन खालिद खा
नी से संस्कृत की वैद्यक के ग्रन्थों का उ
ल्था कराया फिर उसी पुस्तक के पृष्ठ
१६८ में है कि एक किताब कि जो अश्वा
दिक पशुओं की चिकित्सा के विषय
में है अरबी भाषा में उल्था की गयी फिर

کو لایا خلیفہ نے محمد بن ابراہیم
الفزاری سے اوسکا
ترجمہ کرایا اور سندہند یا ہند
سندہ نام رکھا اور اوسی صفحہ
مین ہے کہ خلیفہ المامون کے
وقت مین محمد بن موسی نے سنسکرت
سے جبر و مقابلہ کا ترجمہ عربی
مین کیا اوسی کتاب کے صفحہ ۱۶۷
مین ہے کہ البرونی نے سانکہیا شاستر
اور یوگ شاستر کا ترجمہ عربی مین
کیا اسی صفحہ مین ہے کہ ابو صالح
نے سنسکرت کی ایک کتاب کا
جو کہ راجاؤن کی تعلیم کے بارہ مین
ہے عربی مین ترجمہ کیا ہے اسی صفحہ مین ہے
کہ فیروز شاہ بادشاہ نے نگرکوٹ پر قبضہ
کرنے کے بعد ایزالدین خالد خانی
سے سنسکرت کی حکمت کی کتابون
کا عربی مین ترجمہ کرایا اوسی کتاب کے
صفحہ ۱۶۸ مین ہے کہ ایک کتاب کہ
جس مین مویشی وغیرہ کے امراض و
علاج کا ذکر ہے سنسکرت سے عربی مین ترجمہ کی گئی

उसी पुस्तक के पृष्ठ १७६ में है कि एक योरप निवासी अपने चिट्ठी लिखी हुई जनवरी सम्वत १८३२ ईसवी में करनाटक से लिखते हैं कि जब से वेद हमारे पास आये हैं हम ने उन में से ऐसी ऋचा निकाली हैं जो कि उनकी वास्तविक सच्चाई को प्रकाशित करती हैं और जिन से मूर्त्ति पूजा नष्ट होनी चाहिये = जब कि हम उन ऋचाओं को यहां के रहने वालों के सामने करते हैं तो वह भले प्रकार अपना प्रभाव दिखलाती हैं ईश्वर का एकत्व और गुण और स्वर्ग और नरक की व्यवस्था जैसी कि चाहिए वेद में विद्यमान है उसी किताब के पृष्ठ ६३ में है कि ब्राह्मणों ने जो कुछ व्याकरण का विस्तार किया है वह समस्त भाषाओं के व्याकरणों से उत्तम है कम से कम मसीह की उत्पत्ति से ५०० वर्ष पहिले ब्राह्मण जानते थे कि संस्कृत के सारे पद कुछ थोड़ी सी धातुओं से बन जाते हैं परन्तु इस बात की

اوسی کتاب کو صفحہ ۱۷۶ مین ہی کہ ایک صاحب اپنی چٹھی مورخہ ۲۴ جنوری سنہ ۱۸۳۲ مین کرناٹک سے لکھتے ہین کہ جب سی وید ہمارے پاس آئے ہین ہمنے اونمین سے ایسی رچا نکالی ہین جو کہ اونکی سچائی واقعی کو ظاہر کرتی ہین اور جن سے بت پرستی نیست و نابود ہونی چاہئے جبکہ ہم اون کو یہان کے باشندون کے سامنے پیش کرتے ہین اونکو دل پر بہت اثر کرتی ہین خدا کی وحدانیت و صفات اور بہشت و دوزخ کی کیفیت جیسی کہ چاہئے وید مین موجود ہی اوسی کتاب کے صفحہ ۳۶۳ مین ہے کہ براہمن لوگون نے جو کچھ کہ گریمر کی تفصیل کی ہی وہ تمام قوم کی گریمرسی بڑہکر اور بہتر ہی کم سے کم مسیح کی پیدائش سے ۵۰۰ برس پیشتر براہمن لوگ کو معلوم تھا کہ سنسکرت کی کل الفاظ کا اشتقاق متعدد مصدرون کے ہی مگر اسبات کی

खोज योरप देश में सम्वत १६०० ईस
वी में हुई उसी पुस्तक के पृष्ठ १२६
में है कि आर्य्य लोगों ने व्याकरणवि
द्या की वृद्धि बिना सहायता यूनानियों
के की है-उसी पुस्तक के पृष्ठ २७३ में
है कि आर्य्य लोग गृह निर्म्माणादि
शिल्प विद्या में भले प्रकार अभ्यास
रखते थे जिहाज़ बनाना जान्ते थे क
पड़ा बुन्ने का अभ्यास रखते थे बड़ी
२ धातुओं को जान्ते थे ईश्वर का ज्ञा
न रखते थे और उनके मध्य में ईश्वर
के बहुत से नाम थे इस प्रकरण से य
ह ही विदित होता है कि सब से पहले
आर्य्यावर्त्त ही बसा और ऋषि मुनि
यों की सहायता से पृथ्वी मात्र की वि
द्याओं का मूल कारण हुआ फिर अ
ज्ञानी मुसलमानों ने जो लिखा है कि
आर्य्य लोग मिस्र देश से आकर इस
देश में बसे हैं वह सर्व्वथा मिथ्या है
कि उसकी सत्यता न वह अपने ग्र
न्थों से सिद्ध कर सक्ते हैं और न हमारे

تلاش یورپ مین سولہوین صدی
کے قریب ہوئی اوسی کتاب کے صفحہ
۱۲۶ مین ہے کہ آریہ لوگون نے علم گرمر
کی ترقی بغیر مدد یونانیون کے کی
ہے اوسی کتاب کے صفحہ ۲۷۳ مین
ہے کہ آریہ لوگ عمارت کے کام سے
بخوبی واقف تھے جہاز
بنانا جانتے تھے سینے
اور بننے کی مہارت رکھتے تھے
معدنیات سے خبردار تھے
خداوند سے آگاہ تھے اور اونکے درمیان
اوسکے بہت نام تھے اس تمہید سے
یہی ثابت ہے کہ سب سے پہلے
آریاورت ہی آباد ہوا اور رشیون
اور منیون کی کوشش سے روی زمین
کو علم و فضل کی بنیاد ہوا بس
ناواقف مسلمانون نے جو لکھا ہے کہ
آریہ لوگ مصر سے آکر اس ملک
مین آباد ہوئی ہین وہ غلط محض ہے
کہ اوسکا ثبوت نہ اپنی کتابون
سے دے سکتے ہین نہ ہماری

पुस्तकोंसे किन्तु इसके मिथ्या होने
में मेक्स मूलर साहिब ने लेकचर्स आन्
दी साइंस आफ़ लेंग्वज के पृष्ठ २८८
में लिखा है कि पारसीलोग आर्य्याव
र्त्त से उठकर ईरान देश में बसे- इसी
पुस्तक के पृष्ठ २०८ में है कि उस्ताव
ज़न्द में लिखा है कि जो देश आर्य्यों के
निवास का स्थान है उसका नाम एरिया
है=इति= इस से प्रकट होता है कि आ
र्य्यों का वास्तव स्थान यह ही देश
है और सृष्टि की आदि में इन लोगों का
वास यहां ही पाया जाता है फिर मे
क्स मूलर साहिब ने उसी पुस्तक के पृ
ष्ठ २८० में लिखा है कि ईरान देश का
राजा दारा कहता था कि मैं आर्य्य हूं
अथवा आर्य्यों के वंश में हूं कि उसके
परदादा का नाम एरियारमाना था =
इति = यहां से विदित होता है कि प्र
थम आर्य्यावर्त्त देश ही बसा और दू
सरे देश यहां के रहनेवाले लोगों से पश्चा
त् बसे आदम कि जिस को यहूद और

वास्तविक शब्द आर्य्य रमणा था = इति

یہاں سے ثابت کر سکتے ہیں بلکہ
اسکی تکذیب میں میکس مولر صاحب نے
کتاب لیکچرس آن دی سائنس آف لینگویج
کے صفحہ ۲۸۸ میں لکھا ہے کہ پارسی لوگ
آریاورت سے اٹھکر ایران میں آباد ہوئے
ہیں اسی کتاب کے صفحہ ۲۷۸ میں ہے کہ استا
وژند میں لکھا ہے کہ جو ملک آریوں کی
بود و باش کا مقام ہے اسکا نام ایریا
ہے فقط یہاں سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ
آریوں کا اصلی وطن یہہ ہی ملک
ہے اور روز ازل سے ان لوگوں کی
سکونت یہاں ہی پائی جاتی ہے
پھر میکس مولر صاحب نے اوسی کتاب
کے صفحہ ۲۸۰ میں لکھا ہے کہ دارا بادشاہ
کہتا تھا کہ میں آریہ ہوں یا
آریوں کی اولاد میں ہوں کہ اسکے
پردادا کا نام ایریاریمنا تھا فقط
یہاں سے معلوم ہوتا ہے کہ اول
آریاورت آباد ہوا اور دوسرے
ملک یہاں ہی کے باشندوں سے
بعد بسے آدم کہ جسکو یہود و

ईसाई और मुसलमान मनुष्य मात्र का पिता और जनक कहते हैं आर्य्यों में से एक मनुष्य था कि आर्य्यावर्त से निकल कर देशान्तर में जा बसा. इस कारण से कि वहां का प्रथम मनुष्य था उसने अपना नाम आदिम रक्खा क्योंकि संस्कृत भाषा में आदिम उसको कहते हैं कि जो सब से पहिले हो. इस मनुष्य के आदिम नाम रक्खे जाने का यही कारण है कि प्रथम उन निर्जन देशों में यही गया था इस से आदिम कहलाया. फिर मूर्ख लोग आदिम के इकारोत्तर इकार को दूर करके आदम कहने लगे. आदिम के आर्य्य होने और इस नाम के संस्कृत होने की बड़ी युक्ति यह है कि अरबी भाषा के मोटे कोषों में यही लिखा है कि आदम पद अजमी है. और अजमी अरबी भाषा से भिन्न भाषाओं को कहते

عیسائی و مسلمان ابو البشر کہتے ہیں آریوں میں سے کوئی شخص تہا کہ آریاورت سے نکلکر غیر ملک میں جا بسا چونکہ وہان وہ اول انسان تہا اسواسطے اوسنے اپنا نام آدم رکہا کیونکہ زبان سنسکرت مین آدم بکسر دال اوسکو کہتے ہیں کہ جو سب سے پہلے ہو رہے اس شخص کا باسم آدم مسمی ہونے کا یہہ ہی سبب ہے کہ اول اون ویران ملکون مین یہہ ہی وارد ہوا تہا لہذا آدم کہلایا بعدہ ناواقف لوگون نے کسرۂ دال کو فتح سے بدل کر ڈالا آدم کے آریہ ہونے اور اس اسم کے سنسکرت ہونیکی ایک عمدہ دلیل یہہ ہی کہ کل اہل لغت نے لکہا ہی کہ آدم لفظ عجمی ہی جو کوئی کہتا ہی کہ ادمت سے آدم مشتق ہی وہ ناواقف ہی ادمت و آدم دونو لفظ عربی مین اور کلمہ عجمی کا اشتقاق ممکن نہین ہی اور عجمی عربی کے سوا تمام زبانوں کو کہتی ہی

हैं- जबकि यह बात ठहरी तो
विदित हुआ कि यहां अजमी
से अरबी के कोशकारों का संस्कृत
ही अभिप्रेत हो- क्योंकि संस्कृत
भी अरबी से भिन्न है- दूसरी युक्ति
आदम के आर्य्य होनेकी यह है
कि कुरान के सब टीकाकारों और
मुसल्मानों के इतिहास कर्त्ताओं
ने लिखा है कि आदम का रंग
गेंहुआ था॥ इति ॥ अब आदम
के आर्य्य होने में कुछ सन्देह
नहीं कि गेहुंआ रंग होना इस
समय भी आर्य्यों के साथ वि-
शेषता रखता है- आदम के आ
र्य्य होने की तीसरी युक्ति यह है
कि शाह अबदुल अज़ीज़ ने तफ़सीर
फ़तह उल अजीज़ की पहिली जिल्द
में लिखा है कि बहुत से वचनों के
अनुकूल आदम के स्वर्ग से
गिरने का स्थान आर्य्यावर्त्त का
एक भाग है कि अरबी भाषा में

ہیں جبکہ یہہ بات ہے تو بالیقین
قرین قیاس ہے کہ یہاں عجمی
سے اہل لغت نے سنسکرت ہی
مراد رکھی ہووے کہ سنسکرت
بہی عربی سے غیر ہے دوسری
دلیل آدم کے آریہ ہونے کی
یہہ ہے کہ کل مفسرین و
مورخین نے لکہا ہے کہ آدم
کا رنگ گندمی تہا فقط اب
آدم کے آریہ ہونے مین کچہہ
شک نہین ہے کہ گندم گون
ہونا اسوقت بھی آریاورت
کے لوگون کے ساتہہ
مخصوص ہے آدم کے آریہ
ہونے کی تیسری دلیل یہہ
ہے کہ شاہ عبدالعزیز
نے جلد اول تفسیر فتح العزیز
مین لکہا ہے کہ اکثر روایات
کے موافق بہشت سے
آدم کے گرنے کی جگہہ
ہندوستان کی ایک زمین ہے

जिसको दिजनाई कहने थे
और हाकिम और वेहकी ने
इब्न अव्वास के बचनानुसार
लिखा है कि - अली ने कहा कि
तुम लोग कुछ जानते हो -
कि आर्या वर्त्त की पृथ्वी दूसरी भू
मियों की अपेक्षा से अधिक सु
गंधित क्यों है - और सुगंध के
पदार्थ अगर और जायफल और
लवंगादि आर्य्यावर्त्त की भूमि के
साथ क्योंकर संबंध विशेष रख
ते हैं - कारण इसका यह है कि
जब आदम स्वर्ग से आर्य्यावर्
त्त में गिरा था उसके शरीर पर
स्वर्ग के पत्ते लिपटे थे वायु ने उन
पत्तों को चारों ओर को फैला दिया
जिस वृक्ष पर कोई पत्ता उन पत्तों
में से पहुंचा - उस वृक्ष में उक्त प
त्तों ने सुगन्ध उत्पन्न करदी इसे
विचारो कि हाकिम और वेहकी
जो कि मुसलमानों के यहां बड़े॥

جسکو دجنائی کہتے تھے اور
حاکم و بیہقی نے بروایت ابن
عباس نقل کیا ہے کہ امیر المومنین
علی نے کہا کہ تم لوگ کچھ جانتے
ہو کہ زمین ہندوستان دوسری
زمینوں کی بہ نسبت زیادہ تر
خوشبو والی کس واسطے ہے
اور خوشبو کے اقسام عود و جوز
و قرنفل وغیرہ زمین ہندوستان
کے ساتھ کیونکر مخصوص ہین
وجہہ اسکی وہ ہے کہ جسوقت
آدم جنت سے ہندوستان
مین گرا تھا اوسکے بدن پر بہشت
کے درختون کے پتے لپٹے ہوے
تھے ہوا نے اون پتون کو
چارون طرف پراگندہ کردیا
جس درخت پر کہ کوئی پتا اون
پتون مین سے پہونچا اوس
درخت مین برگ مذکور نے
خوشبو پیدا کردی خیال کرو کہ
حاکم و بیہقی جو کہ بڑے

आचार्य्य हैं उनके मुख से भी
सिद्ध होगया कि आर्य्यावर्त्त की
भूमि सब भूमियों से श्रेष्ठ है
प्रथम यह ही देश बसा और
आदम आर्य्यों में से कोई मनुष्य
था- अब चाहिये जान्ना कि आदम
स्वर्ग से गिरा यह बात यहूद और
ईसाई और मुहम्मदी लोकों ने
अलंकार की रीति से कही है-इसका
वास्तविक अर्थ यह है कि आदम
आर्य्यावर्त्त से कि स्वर्ग तुल्य है
उन निर्जन देशों में गया जोकि इस
पुण्य भूमि को छोड़ कर उन देशों
में वास स्वीकार करना अधोगति
में पड़ना था इस कारण यहूद
प्रभृति ने आदम की अधोगति
स्वीकार करने को स्वर्ग से गिरना
ठहराया- इससे आदम के आर्य्य
होने में कुछ संदेह नहीं है-और
यह यहूद और ईसाई और
मुसलमानों का अन्याय है कि

محارث میں اونکی زبان سے بھی
ثابت ہوگیا کہ آریاورت کی
زمین تمام زمینوں سے مشرف
ہے اور اول یہی ملک آباد
ہوا اور آدم آریوں میں سے
کوئی شخص تھا اب چاہئے جاننا
کہ آدم بہشت سے گرا یہہ بات
یہود و عیسائی و محمدی لوگون
نے ازروے مجاز کے کہی
ہے اسکے معنی حقیقی یہہ ہیں
کہ آدم ہندوستان سے کہ
جنت نشان ہے اون ویران
ملکوں کی طرف گیا چونکہ اس
متبرک زمین کو چھوڑکر
اون ملکوں میں سکونت
قبول کرنا تنزل میں پڑنا تھا
اسواسطے یہود وغیرہ نے آدم
کے تنزل اختیار کرنے کو
بہشت سے گرنا قرار دیا
پس آدم کے آریہ ہونے میں کوئی شبہہ نہیں
ہے اور یہہ یہود و عیسائی و مسلمانوں کی ناانصافی ہے

आदम को पापी ठहराते हैं और
अनेक प्रकार के दोष लगाते हैं.
यहां से प्रकट है कि आर्य्य लोक
कदाचित् मिस्र देश से नहीं आये
किन्तु आर्य्यों के द्वारा ही सारे
देश बसे यदि यह लोक मिस्र से
आये होते तो अपने बड़ों की रीति
के अनुसार उस सनातन भूमि का
अवश्य ध्यान रखते और अपने
ग्रन्थों में निस्सन्देह उसका वृत्तान्त
लिखते और उस स्थान को तीर्थ
और पुण्य भूमि जानते न्याय करो
जब कि तुम्हारे ही वचनानुसार
आर्य्य लोग यहां जय को प्राप्त
हुए थे तो अवश्य है कि अपने
प्राचीन स्थान और अपने बड़ों
के वृत्तान्तों की व्याख्या को अ-
पनी बड़ाई और प्रतिष्ठा का का-
रण समझते और ऐसा न भूल जा-
ते कि जिसका आज तक भी कुछ
पता नहीं है देखो आर्य्य लोगों

کہ اوسکو بانی مبانی عصیان
و نافرمانی ٹہیراتے ہین اور طرح
طرح کے الزام لگاتے ہین یہان
سے ظاہر ہے کہ آریہ لوگ مصر سے
ہرگز نہین آئے بلکہ آریون کی
بدولت ہی سارے ملک آباد
ہوئے اگر یہہ لوگ مصر سے
آئے ہوتے تو حسب دستور اپنے
بزرگون کے اوس جائے قدیم
کا ضرور خیال رکہتے اور اپنی کتابون
مین بلاشبہ اوسکا بیان حال
کرتے بلکہ مقام مذکور کو زیارتگاہ و متبرک
مانتے انصاف کرو کہ جس صورت
مین بقول تمہارے آریہ لوگ
یہان فتحیاب ہوئے تہے تو
لاکلام اپنے قدیمی وطن اور بزرگون
کے حالات وگذارشات کی
تصریح کو موجب عزت و فخر
سمجہتے نہ کہ ایسا فراموش کردیتے
کہ جسکا آجتک کچہہ بہی پتہ
نہین دیکہو آریہ لوگون

के गोत्रादि अबतक जैसे के वैसे
ही चले आते हैं और प्राचीन ऋषि
और मुनियों के नाम से विख्यात
हैं अक्षर मात्र का भी भेद नहीं
है फिर क्या कारण है कि आपने
वहां के वृत्तान्त सर्वथा भूलगये
और यदि आर्य्यों का वास्तविक
स्थान मिश्र देश ही होता तो
अवश्य आर्यों की भाषा और
मिश्र देश की भाषा में कुछ सं
बन्ध और सादृश्य पाया जाता
परन्तु दोनों में बड़ा भेद है कोई
मनुष्य अपनी वास्तविक बोली
को ऐसा नहीं भूलजाता कि जिस
के एक शब्द का भी स्मरण न
रहे यदि आर्य्य लोक वास्तव मिश्र
देश ही के रहने वाले होते तो इन
की सारी प्राचीन पुस्तकें उसी
देश की भाषा में होतीं परन्तु
एक भी नहीं है इस कारण से
जो कोई आर्य्यों का वास्तविक

کے گوتر وغیرہ ابتک جیسکے
تیسے چلے آتے ہین اور اون
ہی ابتدائی رشیون اور منیون
سے نامزد ہین ایک حرف کا
بہی فرق نہین ہی پہر کیا سبب
ہے کہ اپنے بزرگونکی واردات
اصلی بالکل نسیا منسیا کر بیٹہے
سوائے اسکو اگر آریہ لوگون
کا مقام اصلی مصر ہی ہوتا تولاجرم
اونکی بولی اور زبان مصر مین
کسیقدر مطابقت پائی جاتی
حالانکہ تفاوت زمین و آسمان
ہے کوئی اپنی اصلی وحقیقی
زبان کو ایسی نہین بہول جاتا
کہ اوسکا ایک لفظ بہی یاد
نہ رہے بلکہ اس صورت
مین لازم آتا ہے کہ آریونکی
تمام کتب قدیم زبان مصر
مین ہوتین مگر ایک بہی نہین
ہے پس جو کوئی
آریون کا اصلی وطن

स्थान मिस्र देश को ठहराना है उसके झूंठा होनेमें कुछ संदेह नहीं है सम्भव है कि मुसल्मानों के इस मिथ्या भाषण का कारण यही होवे कि हमारे देश के मूर्ख लोग मिस्र शब्द को जो कि शकार के साथ संस्कृत में पंडित और विवेकी के अर्थ में प्रसिद्ध है उसको फ़ारसी अक्षरों में स्वाद के साथ लिखा करते हैं वस्तुत: मिश्र शब्द को (स्वाद) अक्षर से कुछ संबन्ध नहीं है कि यह अक्षर अरबी भाषा में प्रचरित है यहां तक कि फ़ारसी भाषा के किसी शब्द में भी स्वाद नहीं आता संस्कृत की का कथा है यह संपूर्ण युक्तियें दयानंदसरस्वती के नवीन सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ २२४ के इस लेख के खंडनार्थ भी पारि पूर्ण हैं ॥

مصر قرار دیتا ہے اوسکی غلط گو ہونے مین کچھہ تامل نہین ہے اغلب ہے کہ مسلمانون کی غلطی کا باعث یہہ ہی ہووے کہ یہان کے بیوقوف لوگ مصر بمعنی براہمن بصاد مہملہ لکہا کرتے ہین حالانکہ وہ مشر بشین منقوطہ ساکن و راء مہملہ موقوف سنسکرت زبان کا لفظ ہے بمعنی دانا و عالم اوسکو صاد غیر منقوطہ سے کچھہ نسبت نہین ہے کہ یہہ حرف مخصوص بزبان عربی ہے حتی کہ فارسی زبان کے کسی کلمہ مین بھی صاد نہین آتا سنسکرت کا تو کیا ذکر ہے یہہ تمام دلایل دیانند سرسوتی کے نئے ستیارتہہ پرکاش کے صفحہ ۲۲۴ کے اس مضمون کی تکذیب کے لئے بھی کافی و وافی ہین۔

कि प्रथम आर्यों की उत्पत्ति
(तिब्बत) में हुई है और संस्कृत
में तिब्बत का नाम त्रिविष्टप है
फिर समस्त भूमंडल से इस देश
को उत्तम समझ कर आर्य लोग यहां
आ बसे इति दयानन्दानुयायी
लोग अपने स्वामी जी से प्रश्न
करें कि किस वेद और शास्त्र
से आपने लिखा है कि आ
र्य लोग (तिब्बत) से आकर यहां
बसे हैं मैं कहता हूं कि
वेद और शास्त्र तो एक ओर
हैं किसी पुराण और इतिहास
में भी ऐसा नहीं है किंतु वेद और
शास्त्र तथा स्मृति और इतिहास
आदि के विरुद्ध है जैसे-
पहली बात मुसल्मानों की बना
वट है ऐसे ही यह प्रभाव: अंगरेज़ों
की कल्पना है
दयानंद सरस्वती की बुद्धि कहां
गई कि वेद और शास्त्र के विरुद्ध-

کہ اول آریون کی پیدایش
تبت مین ہوئی اور سنسکرت
مین تبت کا نام ترشٹپ ہے
پہر روے زمین سے اس ملک
کو عمدہ سمجہکر آریہ لوگ یہان
آ بسے فقط اب دیانند پنتہی
اپنے سوامی سے دریافت
کرین کہ کس وید و شاستر
سے آپ نے تحریر کیا ہے کہ
آریہ لوگ تبت سے آکر یہان
آباد ہوے مین کہتا ہون
کہ وید شاستر تو ایک جانب
ہین کسی پران و اتہاس مین
بہی ایسا نہین ہے بلکہ وید و
شاستر و سمرتی و اتہاس
وغیرہ کے مخالف ہے جیسے
پہلا مقولہ مسلمانون کا مصنوع
ہے یہہ عقیدہ بعضے انگریزی
مصنفون کا تراشیدہ ہے
دیانند سرسوتی کی عقل کہان
گئی کہ وید شاستر کی مخالفت

अंगरेज़ों के अनुयायी बन गये
इसके सिवाय दयानंद सरस्वतीके वृ
द्धों की मूर्खता भी सिद्ध होती
है कि निघन से कि जो वास्तव
(त्रिविष्टप) अर्थात् स्वर्ग वा स्वर्ग
की सदृश है हिन्दुस्तान को श्रेष्ठ जाना
और निवासके योग्य माना-
फिर आर्योद्देश्य रत्न माला-
के पृष्ठ ११ में आप दयानंद सरस्व
तीने लिखा है कि आर्य उनको कहते
हैं कि जो श्रेष्ठ स्वभाव धर्मात्मा
परोपकारी सत्यविद्यादि गुण युक्त
और आर्यावर्त्त देश में सब दिन
से रहने वाले हैं इति इसके दो
बात प्रकट होती हैं एक यह कि
दयानंद सरस्वती को अपना
लेख स्मरण न रहा दूसरी यह
कि सृष्टि की आदि में दयानंद
सरस्वती के जितने श्रेष्ठ लोग
हुये हैं उनमें कोई आर्य न था क्यों
कि वे लोग सब दिन से आर्यावर्त्त

مین انگریزی بنا رہے بن گئے علاوہ
اسکے دیانند سرسوتی کے بزرگون
کی بیخردی نوناعلمی بھی ثابت
ہوتی ہے کہ تبت سے کہ فی الحقیقت
ترشبشٹ یعنے سورگ یامانند سورگ
کی ہے ہندوستان کو افضل جانا
اور لایق بود و باش مانا سواے
اسکے آریہ اودیش رتن مالا
کے صفحہ ۱۱ مین خود دیانند سرسوتی
نے لکھا ہے کہ آریہ انکو کہتے ہین
کہ جو نیک عادت اور دہرماتما
اور خیرخواہ عام اور ست ودیا وغیرہ
گنون والے اور آریاورت
دیش مین سب دن سے رہنے
والے ہوویں انتہی اس سے
دو باتین لازم آتی ہین ایک یہہ
کہ دیانند سرسوتی کو اپنا لکھا یاد
نرہا دوسرے یہہ کہ دیانند سرسوتی
کے جتنے بزرگ گذرے ہین
ان مین آریہ کوئی نتہا کہ وے
لوگ سب دن سے آریاورت

में नहीं रहते थे किन्तु तिब्बत
के रहने वाले थे और इस
देश को उत्तम जान कर यहां आ
बसे थे सिद्धांत यह है कि जो
कुछ वेद और शास्त्र में आर्यावर्त्त
की महिमा लिखी है दयानंद सर
स्वती ने सब पर धूलि डाल दी-
अब चाहिये जानना कि यहूद और
ईसाई और मुसल्मान जो कहते हैं कि
आदम की उत्पत्ती को ६ हज़ार वर्ष
से अधिक नहीं हुये और आदम से
पहिले कोई मनुष्य विद्यमान न था
और मनुष्यों की वंशावली का वही
आदि कारण है वह सर्वथा असम्भ
व है क्योंकि सृष्टि का प्रवाह अनादि
है उसकी आदि कदाचित् नहीं है
इस सृष्टि की उत्पत्ति को कि जो आज
कल विद्यमान है अब संवत् १९४२ में
एक अरब छानवे करोड़ आठ
लाख बावन हज़ार नौ सौ पचासी
वर्ष हुये इसकी पूरी व्याख्या लिखी

یں نہیں رہتے تھے بلکہ تبت
کے رہنے والے تھے اور بسبب
عمدگی اس ملک کے یہاں آ بسے
تھے حاصل یہ ہے کہ جو کچھ
وید و شاستر میں آریاورت
کی مہما لکھی تھی دیانند سرسوتی
نے سب پر خاک ڈالدی۔
اب چاہیے جاننا کہ یہود و عیسائی
و مسلمان جو کہتے ہیں کہ آدم کی
پیدایش کو چھ ہزار برس سے
زیادہ نہیں گذرے اور اوس
سے پہلے کوئی انسان موجود نہ تھا
نسل انسان اوس سے جاری
ہوئی ہے وہ محض غلط ہے کیونکہ سلسلہ
عالم انادی ہے اوسکی ابتدا
ہرگز نہیں ہے اس سرشٹی کی
پیدایش کو جو آجکل موجود ہے
۱۹۴۲
اب سمبت اونیس سو بیالیس میں
ایک ارب چھیانوے کروڑ آٹھ
لاکھ باون ہزار نو سو پچاسی
برس ہوئے تفصیل اسکی

ग्रंथ में करेंगे - मुसल्मानों का खंडन तो मुसल्मान ही करते हैं जैसे पुस्तक मज़हर उलमज़ामीन का कर्त्ता उस पुस्तक के २२६ पृष्ठ में लिखता है कि हर सौ वर्ष में एक तह वालू पत्थर की चढ़ चूने की जमती है पृथ्वी के खोदने से उस तह के नीचे से मनुष्य की हड्डी निकली है कि जिस का ज़माना तीस हज़ार वर्ष से प्रथम निश्चित होता है॥

अब विदित होवे कि आर्यावर्त्त का नाम हिन्दुस्तान कैसे प्रसिद्ध हुआ और आर्य लोगों को हिन्दू क्यों कर कहते हैं वास्तव इस नाम रखने का कारण यही है कि संस्कृत में अटक नदी को सिंधु कहते हैं और वह आर्यावर्त्त के पश्चिम भाग में बहती है और जब ईरान देश से आर्यावर्त्त को आते हैं —

رسالہ مین یکجا دیگی مسلمانون کے رد مین تو خود مسلمان ہی گرم گفتار ہے کہ مصنف مظہر المضامین نے اوس کتاب کے ص ۲۲۶ مین لکھا ہے کہ ہر صدی مین ایک تہہ بالو - پتھر - کنکر - چونہ کی جمتی ہے زمین کے کھودنے سے اوس تہ کے تلے سے انسان کی ہڈی برآمد ہوئی ہے جسکا زمانہ تیس ہزار سال سے پیشتر کا باور ہوتا ہے -

اب معلوم ہووے کہ آریاورت کا نام ہندوستان کسطرح مشہور ہوا اور آریہ لوگون کو ہندو کہوا سطے کہتے ہین فی الحقیقت اسکی وجہ تسمیہ یہی ہوگی کہ اٹک ندی کو سنسکرت مین سندھو کہتے ہین اور وہ آریاورت کے مغربی حصہ مین واقع ہے اور جب ایران سے آریاورت کو آتے ہین

तो मार्ग में यही नदी पहिले
पड़ती है और संस्कृत में जगह
को स्थान कहते हैं निदान
(सिन्दुस्तान) = सिन्धु + स्थान)
इन दोनों सामासिक शब्दों का अ
र्थ हुआ सिन्धु के बहने की जगह
फारसी वालों ने अपनी रीति पर
सिन्धु के सकार को हकार से और
धकार को दकार से बदल लिया
और स्थान के थकार को तकार
से बदल कर हिन्दुस्तान कहने
लगे और फारसी में सकार
को हकार से बहुधा बदल देते
हैं- जैसे ख़रोस से ख़रोह
अर्थात् कुक्कुट और आमास
से आमाह अर्थात् मोटापन
इसी तरह सप्त संस्कृत का शब्द
है फ़ारसी वालों ने सकार को ह
कार और पकार को फकार से -
बदल —

تو پہلے یہی ندی راہ مین
پڑتی ہے اور جگہہ کو سنسکرت
مین ستہان کہتے ہین پس
(سندہوستہان) ان دونون
کلمے مرکب کے معنے ہوسے
سندہو کے بہنے کی جگہہ
پس فارسی والون نے اپنے
طور پر سین مہملہ اول کو ہای
ہوز سے بدل کر کے اور تا
ہوز کو دونون جگہہ سے دور
کر کے ہندوستان مستعمل کرنا
شروع کیا اور فارسی مین سین
مہملہ اکثر مقام ہاے ہوز سے
بدل ہوتا ہے چنانچہ خروس
و خروہ بمعنے مرغ و آماس
و آماہ بمعنے فربہی اسیطرح
سپت بفتح سین مہملہ و سکون
باے فارسی و وقف تاے
فوقانی سنسکرت کا لفظ ہے
کہ اہل فارس نے سین کو ہای
ہوز سے اور با کو فا سے بدل

कर हलन्त कर लिया अर्थ दोनों का संख्या वाचक सात है

अब चाहिये जानना कि फारसी वाले हिन्दु के उकार को दूर करके हिन्द कहने लगे फिर फारसी वालों ने हिन्द के अंत में सम्बन्ध वाचक उकार लगा कर आर्यावर्त निवासियों का नाम हिन्दु रक्खा और फारसी में उकार अर्थात् वाव सम्बंध के लिये आता है

दूसरा कारण हिन्दुस्तान नाम रखने का यह भी हो सक्ता है कि विंध्याचल पर्वत जिसको विन्द भी कहते हैं आर्यावर्त का एक प्रसिद्ध पहाड़ है और प्रत्यक्ष है कि प्रायः देश और नगर अपने प्रसिद्ध तालाब और नदियों और पहाड़ों के नाम से विख्यात होते हैं जैसे पंजाब अपनी पांच नदियों के कारण और अमृत सर अपने तालाब के नाम से प्रसिद्ध हुआ इसी वास्ते अंग्रेजी में आर्यावर्त को इन्डिया कहते हैं क्योंकि अंग्रेजी में

کرکے ہفت بنا لیا یعنی دونون کے ایک ہین بعدہ مخفف کرکے ہند کہنے لگے رفتہ رفتہ اوسکو آخر واو نسبت کی لگا کر یہان کے باشندون کا نام ہندو رکہا

دوسری وجہ تسمیہ ہندوستان کی یہہ بہی ہو سکتی ہے کہ بندہیاچل پربت جسکو بندہ بہی کہتے ہین آریاورت کا ایک مشہور پہاڑ ہے اور قاعدہ ہے کہ بعض ملک و شہر اپنے مشہور تالابون اور دریاؤن وغیرہ کے ساتھہ نامور ہوتے ہین چنانچہ پنجاب و امرتسر اور مانند اسکی کہ ملک پنجاب اپنی پانچ ندیون کے ساتھہ نامی ہوا اور شہر امرتسر اپنے تالاب معروف کے اسم سے مسمی ہوا اسیواسطے انگریزی مین آریاورت کو انڈیا کہتے ہین کیونکہ انگریزی مین

इन्ड अटक का नाम है जिसको संस्कृत में सिन्धु कहते हैं और फ़ारसी में सिन्द बोलते हैं इसीतरह क़ाबुल शहर अपने पास की नदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है क्योंकि इस शहर के समीप क़ाबुल नाम एक नदी है यही वृत्तान्त जेहलुम शहर का समझिये कि अपने समीप की नदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है इसीतरह सम्भव है कि आर्यावर्त्त का नाम विन्ध पहाड़ के नाम पर विन्धस्थान होवे फारसी वाले इस में कुछ अदल बदल करके हिन्दुस्तान और हिन्दोस्तान लिखने और पढ़ने लगे फारसी में वकार को हकार से बहुधा बदलते हैं. — जैसे वोश और होश अर्थात अपनी प्रशंसा करना और वार और हार अर्थात् पशुओं का विष्ठा अब जानना चाहिये कि सम्वत १९३५ में

ندا اٹک کا نام ہے جسکو سنسکرت مین سندہو کہتے ہین اور فارسی مین سند بولتے ہین اسیطرح کابل شہر اپنے قریب کی ندی کے نام سے نامزد ہوا ہے کیونکہ اس شہر کے متصل ایک کابل نامی دریا ہے یہی حال جہلم شہر کا سمجھئے کہ اپنے قریب کے دریا کے نام پر نامزد ہوا ہے اسیطرح شاید کہ آریاورت کا بھی بندہستان نام ہووے فارسیوان نے اوس مین تعرف جا بیجا کر کے ہندستان و ہندوستان لکھنا اور پڑھنا شروع کیا فارسی مین بار ہوحدہ ہا سے صورت بھی بدل ہوتی ہے جیسے بوش و ہوش یعنی خودنمائی و بار و ہار یعنی سرگین حیوانات اتفاقا سمبت ۱۹۳۵ انیس سو پینتیس مین

فقیر اندر من ملقب بکعبه کن بیاوری بخت بلند و تایید
طالع ارجمند بملازمت کیمیا خاصیت جناب مستطاب
معلی القاب والا منزلت عالی مرتبت طرازندهٔ اعلام جهانبانی
زیبندهٔ تاج و تخت خاقانی مهر سپهر حشمت و اجلال سپهر مهر
دولت و اقبال مشید قواعد رافت و احسان موکد مبانی
رحمت و امتنان دانش پناه بینش دستگاه مظهر فیوض بی انتها منظور
انظار بی انتها گوهر معدن حقایق و آگاهی چشم و چراغ دودمان والا
جاهی بحر مواج انصاف پروری محیط زخار عدل گستری
صد لمعهٔ عدل از جبینش تابنده چو نقش از نگینش تابع مالک السن نعمان
مطیع اوامر و نواهی بهگوان صاحب قلم و شمشیر والی جمون و کشمیر راجادهیراج

مجھ کو جموں کی راجدھانی میں جانا پڑا

मुझको जम्बु की राजधानी में जाना पड़ा
उस समय राजाधिराज श्री महाराज
रणवीर सिंह साहिब बहादुर ने अपने
मुखारविन्द से दरबार में यह
कहा कि वास्तव हिन्दुस्तान
की असल यह है कि बहुत
काल से इस देश में चन्द्र
वंशी राजाओं की राजधानी
रही है-
और संस्कृत में चन्द्र का
नाम इन्दु भी है और
इन्दु की जगह को इन्दुस्थान
कहते हैं-
फारसी वालों ने बिगाड़ कर
अपनी रीति पर हिन्दोस्ता
न कर लिया-
उस समय गणेश शास्त्री और
गोविन्दाचारी प्रभृति बड़े
बड़े पंडितोंने बहुत प्रशंसा
की- मैंने निवेदन किया

شری مہاراج رن بیر سنگھ
بہادر دام اقبالہ وافضالہ
واجلالہ کے حاضر ہوا اور
بدرت قدرت پر ناظر اوس وقت
بزبان فیض ترجمان شری
مہاراج نے فرمایا کہ فی الواقع
لفظ ہندوستان کی اصل
یہہ ہے کہ قدیم الایام سے
یعنی وقت کرشن ورام سے
اس ملک مین چندر بنشی
راجاؤن کی تخت گاہ اور
راجدھانی رہی ہے اور
سنسکرت زبان مین چندر کا
نام اندو بھی ہے اور اندو
کی جگہہ کو اندوستھان کہتے
ہین فارسی والون نے بگاڑ کر
اپنے لہجہ کے موافق ہندوستان
کرلیا اوس وقت گنیش شاستری
اور گوبندا چاری وغیرہ بڑے
بڑے پنڈتون نے بہت تحسین
کی اور داد آفرین دی فقیر

कि फारसी वालों ने प्रथम
इन्दु अलिफ़ के साथ लिखा और
फिर अलिफ़ को हकार से बदल डा
ला- और फ़ारसी वाले अलिफ़ को ह-
कार से बहुधा बदलते हैं जैसे अपयून और
हपयून अर्थात् अफ़ीम इसी तरह
अष्ट के अकार को फ़ारसी वालों ने
बदल कर हश्त बना लिया- अर्थ
दोनों का एक है अर्थात् संख्या वा
चक आठ निदान फ़ारसी वाले हि-
न्दोस्तान के रहने वाले को हिन्दु
कहते हैं चाहे वह आर्य्य होवें
चाहे दस्यु जैसे मोलवी रूम
की मसनवी के दूसरे दफ़्तर में है

चार हिन्दू दर इके मसजिद शुदन्द
बहरे ताइत राकेओ साजिद शुदन्द॥
हर इके बरनी यतेनकबीर कर्द॥ दर नमाज़
आमद व मिसकीनी व दर्द॥ मोअज़िन आ
मद ज़ां इकेलफ़ज़े बिजस्त॥ के मुअ
ज़्ज़िन बांग कर्दी वक़्त हस्त॥

اندر من نے عرض کی کہ فارسی میں
الف بھی ہائے ہوز سے بدل ہوتا
ہے جیسے ایپون اور ہیپون بمعنی
افیون اسی نوع سے ہے لفظ
اشٹ کہ فارسیون نے اسکے
الف کو ہائے ہوز سے بدل کر
ہشت بنا لیا معنی دونون کے
ایک ہین کہ عدد معروف ہوئے
پس فارسی والون کے نزدیک
ہندو بمعنی منسوب بہ ہند ہے
یعنی باشندہ ہندوستان کو ہندو
کہتے ہین خواہ وہ آریہ ہووے
خواہ دسیو چنانچہ مولوی روم
کی مثنوی کے دفتر دوم مین ہے

ابیات چار ہندو در یکے مسجد
شدند ٭ بہر طاعت راکع و ساجد شدند
ہر یکے بر نیتے تکبیر کرد ٭ در نماز آمد
بمسکینی و درد ٭ موذن آمد ازان
یکے لفظے بجست ٭ کای موذن
بانگ کردی وقت ہست ٭ گفت
آن ہندوی دیگر از نیاز ٭ ہی سخن

अर्थात् चार हिन्दोस्तान के रहने वाले मुसल्मान मसजिद में गये वास्ते ताइत के रुकू और सिजदा करने लगे · मौलवी वहरुल उलूम ने इन वचनों के टीके में ऐसा लिखा है कि यहां हिन्दु पद से हिन्दोस्तान के रहने वाले मुसल्मान लेने चाहियें इति इसी तरह मौलवी रूम की मसनवी के छटे दफ़्तर में भी है -

ख्वाजए रा बूद हिन्दू बन्दए ॥ परवरीद: कर्द: ओरा जिन्दए ॥ अर्थात् एक स्वामी का हिन्दोस्तान का रहने वाला एक दास था यदि इस स्थल में हिन्दु पद गुलाम के अर्थ में लिया जावेगा तो बन्दा निरर्थक होगा शेख़सादी ने बोस्तां में कहा है

दो हिन्दू बरा यन्द ज़े हिन्दोस्तां
यके दुज़्द बाशद यके पासबां ॥

अर्थ ॥ यदि दो हिन्दू हिन्दोस्तान से बाहर आवें तो उनमें से एक डाकू होगा और एक मार्ग का रक्षक अर्थात यह नियम नहीं है कि किसी देश के लोग सब एक से होवें किन्तु बुरे भले सब प्रकार के

گفتی و باطل شد نماز ہ مثنوی مین
کہ چار ہندوستان کے باشندے
مسلمان ایک مسجد مین گئے اور
واسطے طاعت کے رکوع و سجدہ
کرنے لگے اسیواسطے مولوی
بحر العلوم نے ان ابیات کی
شرح مین ایسا لکھا ہے کہ مراد
از ہندو ساکنان ہند از مسلمانان
فقط اسیطرح دفتر ششم مین بھی ہے
خواجہ را بود ہندو بندہ ؑ پروریدہ
کردہ او را زندہ ؑ یعنے ایک
مالک کا ہندوستان کا رہنے والا
ایک بندہ تھا اگر یہان لفظ ہندو
بمعنے غلام لیا جاویگا تو لفظ بندہ
بیکار ٹھہریگا فقط سعدی نے
بوستان مین کہا ہے۔ بیت
دو ہندو برآیند ز ہندوستان ؎
یکے دزد باشد یکے پاسبان ؎
یعنے یہ قید نہین ہے کہ ہر ایک
ملک کے لوگ سب یکسان
ہوں بلکہ نیک و بد سب قسم

होते हैं यहां से भी विदित है कि हिन्दु-
हिन्दोस्तान के रहने वाले को कहते हैं
इसी लिये गुलिस्तां के टीका कार
खान आरज़ू ने गुलिस्तां के टीके-
ख्यांबान में लिखा है कि (हिन्दू हि
न्द के रहने वाले के अर्थ में है- और
इस पद में वाव अर्थात् उकार सम्ब
न्ध के लिये है और उकार विशेषकर के
मनुष्य के संबंध के लिये आता है अ-
र्थात् हिन्द के दूसरे पदार्थ को हिन्दु नहीं
कह सके और हिन्दु पद फारसी वालों
के महावरे अर्थात् सांकेतिक बोल
चाल में डाकू और गुलाम के अर्थ में
आता है) खान आरज़ू के अंक के वा-
क्य से विदित है कि फारसी भाषा में हि
न्दु पद का वास्तविक अर्थ हिन्द के रह
ने वाले का है और डाकू और गुलाम
इत्यादि सांकेतिक है जो कि पहले सम
य में काबुल और कंदहार आदि पश्चिम
भाग आर्यावर्त्त के लोग ईरान देश के रहने
वालों को लूटलाते थे इस कारण उनके

ہوتے ہین مثلا اگر ہندوستان
کے باشندہ دو شخص ہندوستان
سے باہر آئین تو اونمین سے
ایک راہزن ہوگا اور ایک محافظ
راہ یہان سے بھی ثابت ہے
کہ ہندو باشندۂ ہندوستان کو
کہتے ہین اسیواسطی خان آرزو
نے خیابان گلستان مین لکہا ہی
کہ ہندو منسوب بہ ہند درین لفظ
واو برائے نسبت ہست واین نسبت
خصوصیت بذوی العقول دارد و لفظ
ہندو در محاورۂ فارسیان بمعنی
راہزن و غلام می آید فقط در محاورۂ
فارسیان الخ اس آخر کے
فقرہ سے ظاہر ہے کہ لفظ ہندو
کے معنی حقیقی باشندۂ ہند ہین اور
راہزن وغیرہ معنے مجازی ہین
چونکہ عہد سابق مین کابل و قندہار
وغیرہ مغربی حصہ ہندوستان
کے لوگ ایرانیون کو تاخت
وتاراج کرتے تھے لہذا انکی

संकेतमें हिन्दू पद डाकू के अर्थ में
प्रचरित होगया- जैसे गुलिस्तां
के सातवें बाब में शेख सादी कहता
है कि मैं शाम देश के निवा
सियों के साथ बलख़ नगर से
हिन्दोस्तान को जाता था और एक
मनुष्य बाण विद्या में निपुण हृष्ट
पुष्ट शस्त्रधारी हमारे साथ था उस
समय दो हिन्दू अर्थात् दो मनुष्य हिन्दो
स्थान के रहने वाले एक पहाड़ के नीचे
से निकले और हमारे मार डाल
ने का साहस किया उन
दोनों में से एक के हाथ
में लाठी थी और एक की कक्ष
में अर्थात् बग़ल में ढेले तोड़ने
की लकड़ी तब डर के मारे उस
बाण विद्या निपुण के हाथ से
धनुष और बाण गिर पड़े और कांपने
लगा निदान यह हुआ कि हम
ने सब शस्त्र वस्त्र और सामान
उन दोनों हिन्दुओं के

اصطلاح مین لفظ ہندو بمعنی رہزن
مستعمل ہونے لگا چنانچہ باب
ہفتم گلستان مین شیخ سعدی
کہتا ہے کہ مین ملک شام کے
باشندون کے ساتھہ بلخ سے
ہندوستان کو جاتا تھا اور ایک
جوان تیرانداز نیزہ باز سلحشور
بیش زور ہمارے ہمراہ تھا اس
اثنا مین ایک پہاڑی کے
نیچے سے دو ہندو یعنی دو
شخص باشندہ ہند برآمد ہوے
اور ہمارے مار ڈالنے کا ارادہ
کیا اون دونون مین سے ایک
کے ہاتھہ مین لاٹھی تھی اور
ایک کی بغل مین ڈھیلے توڑنے
کی لکڑی اوسوقت خوف کے
مارے جوان مذکور کے ہاتھہ سے
تیر و کمان گر پڑے اور کانپنے
لگا پس نوبت اسکی پہونچی کہ
ہم نے اسباب اور کپڑے اور
ہتھیار اون دونون ہندوؤن کے

आगे रख दिये और जैसे तैसे जान बचाई इति- इसी तरह अंगरेज़ी अमलदारी से पहिले जोकि रुहेलखंड में मरेठे लूट मार करते थे इस कारण रुहेलखंड निवासी मनुष्यों के संकेत में मरेठा शब्द लुटेरे-और डाकू के अर्थ में प्रचरित हो गया था- जब कोई कहता था कि मरेठे आये- लोग भयभीत होकर घर छोड़ कर भागते थे इति जबकि चंगेज़ खां और अहमद शाह दुर्रानी ने इस देश को जीता और यहां से बहुत लोगों को पकड़ कर ले गये और वहां उनको गुलाम बनाकर वेचा तव से शब्द हिन्दु उनके संकेत में गुलाम के अर्थ में विख्यात हुआ ॥

अब दयानंद सरस्वती जो कहते हैं कि मुसल्मानों ने शत्रुता से आर्य्यों का नाम हिन्दु रक्खा है जिसका अर्थ चोर और डाकू का है वह सर्व्वथा मिथ्या है।

حوالہ کئے اور جیسے تیسے جان بچائی فقط اسیطرح انگریزی عملداری سے پہلے چونکہ روہیلکھنڈ مین مرہٹے لوٹ مار کرتے تھے یہان کے باشندون کی زبان پر لفظ مرہٹہ بمعنے قزاق و غارتگر و راہزن مستعمل ہوگیا تہا جسوقت کوئی کہتا تہا کہ مرہٹے آئے لوگ خوفناک ہوتے تھے اور گہر چہوڑ کر بہاگتے تھے فقط جبکہ چنگیزخان و احمد شاہ درانی وغیرہ اس ملک پر غالب آئے اور یہان سے بہت لوگون کو پکڑ کر لیگئے اور وہان اونکو بطور غلام کے فروخت کیا تب لفظ ہندو مجازاً بمعنی غلام زبان زد اہل فارس ہوا پس

دیا نند سرسوتی جو کہتے ہین کہ مسلمانون نے خصومت کی راہ سے آریون کا نام ہندو رکہا ہے جسکے معنے راہزن و غلام و کافر ہین وہ غلط محض ہے

क्योंकि हिन्दू हिन्दोस्तान के निवासी को कहते हैं वह आर्य होवे वा मुसल्मान तथाहि जिस समय नादिर शाह ने दिल्ली में अपनी सेना को आज्ञा की कि (हिन्दू रा विज़न) अर्थात् हिन्दू को मार डाल · तब उसकी सेना ने आर्य्य और मुसल्मान दोनों जातियों को मार डालना प्रारम्भ किया यहां तक कि मुसलमान आर्यों की अपेक्षा से द्विगुण मारे गये यहां से विदित है कि यदि मुसलमानों ने आर्यों ही का नाम हिन्दू रक्खा होता तो नादिर शाह की सेना आर्यों ही का खून करती मुसलमानों को हाथ न लगाती परन्तु मुसल्मान दुगने मारे गये इति इसी प्रकार अहमद शाह दुर्रानी के क़ैदियों में इब्राहीम खां गारदी प्रभृति सैकड़ों मरेठों की फ़ौज के मुसल्मान भी विद्यमान थे और सब बिक कर गुलाम बनाये गये और समस्त हिन्दू पद के गुलाम के अर्थ में प्रसिद्ध होने के कारण हुये इस प्रकार के और भी बहुत वृत्तान्त हैं जिन से सिद्ध होता है कि वास्तव

کیونکہ ہندو باشندہ ہند کو کہتے ہین خواہ مسلمان ہووے خواہ آریہ چنانچہ جسوقت نادر شاہ نے حکم دیا کہ ہندو را بزن تب اوسکی فوج نے آریہ اور مسلمان دونون قسم کے ساکنان ہند کا قتل شروع کیا حتی کہ مسلمان بہ نسبت آریہ کے دو چند کشتہ ہوے یہ بات ناظرین تواریخ کو خوب معلوم ہے اسی قیاس پر احمد شاہ درانی کے اسیرون مین ابراہیم گاردی وغیرہ صدہا مرہٹون کی فوج کے مسلمان موجود تھے اور کل فروخت ہوکر غلام بنائے گئے اور بالتمام لفظ ہندو کے معنے غلام مشہور ہونے کے باعث ہوئے اس قسم کی اور بہی بہت گذارشات ہین جن سے ثابت ہوتا ہے کہ دراصل لفظ ہندو بمعنی باشندہ ہند ہے اور غلام کے معنی نہین

हिन्दू पद हिन्दोस्तान के रहने वाले के अर्थ में है और गुलाम के अर्थ में ॥

सांकेतिक होने का कारण केवल शत्रुओं के हाथ में बंधन है-और वह आर्य और मुसलमान दोनों के लिये बराबर है कि जैसे अहमदशाह दुर्रानी अफ़्ग़ानि के बंदी आर्य हुये थे वैसे ही मुसलमान भी थे तात्पर्य यह है कि जब हिन्दोस्तान के निवासी लोग जगह २ ईरान देश में बेचे गये उस दिन से उक्त संकेत ठहर गया इस व्याख्या से यही बात विदित हुई कि यद्यपि आर्यों को हिन्दू कहना गाली नहीं है परन्तु हम को योग्य है कि दूसरे देशवालों का बिगाड़ा हुआ शब्द अपने निमित्त यथाशक्ति प्रचरित न करें किन्तु उसकी जगह आर्य पद का प्रचार अवश्य करें कि संस्कृत का शब्द है और अभी तक दूसरे देश वालों के अनाधिकार से रक्षित है और फिर हिन्दु पद की मूल हिन्द शब्द है कि उसके अंत में उकार अर्थात् वकार सम्बन्ध के अर्थ का

مصطلح ہونیکا باعث صرف گرفتاری ہے وہ آریہ اور مسلمان دونون کے لئے برابر ہے کہ جیسے احمد شاہ درانی وغیرہ کے قیدی آریہ ہوئے تھے ویسے ہی مسلمان بھی تھے بس حاصل یہ ہے کہ جب ساکنان ہند ایران مین جا بجا فروخت کئے گئے اوس روز سے اصطلاح مذکورہ مقرر ہوئی اس تمہید سے یہی لازم آیا کہ اگرچہ آریہ لوگون کو ہندو کہنا گالی نہین ہے مگر ہم کو مناسب ہے کہ غیر ملک کے رہنے والون کا بگاڑا ہوا لفظ اپنے حق مین حتی الوسع مستعمل نہ کرین بلکہ اوسکی جگہہ کلمہ آریہ کا استعمال واجب سمجھین کہ سنسکرت کا لفظ ہے اور ہنوز دوسرے ملک کی زبان کے تصرف سے محفوظ ہے سوائے اسکے لفظ ہندو کی اصل کلمہ ہند ہے کہ اوسکے آخر واو نسبت

बढ़ाकर हिन्दु बनाया गया है जैसे कि सम्बंध के लिये फ़ारसी में उकार अर्थात् वकार आता है इसी प्रकार ईकार भी फ़ारसी भाषा में सम्बन्ध के अर्थ में प्रचलित है जैसे हिन्द से कभी हिन्दी भी बना लेते हैं अर्थ हिन्दु और हिन्दी का एक है कि हिन्द से संबंध रखने वाले को कहते हैं हां भेद इतना है कि वकार केवल मनुष्य जाति के संबंध के लिये आता है और ईकार मनुष्य और तद्भिन्न दोनों के लिये आता है जैसे फ़ारसी में मर्द हिन्दी और शमशीर हिन्दी दोनों ठीक हैं और वकार अर्थात् उकार उसी समय प्रचलित किया जाता है कि जब मनुष्य को हिन्द से संबंध करते हैं मनुष्य भिन्न के लिये कभी नहीं आता शमशीर हिन्दी के स्थान में यदि शमशीर हिन्दु कहेंगे तो सही था अशुद्ध है अब देखिये हिन्द और हिन्दि यह दोनों पद दसातीर में भी आये हैं जो कि पारसियों के यहां ईश्वर की पुस्तक मानी जा
वी है

زیادہ کرکے ہندو بنایا گیا ہے اور جسطرح کہ نسبت کے لیے واو آتا ہے اسیطرح یاے تحتانی معروف بہی نسبت کے معنی مین مستعمل ہوتی ہے جیسے ہند سے کبہی ہندی کرلیتے ہین معنے ہندی اور ہندو کے ایک ہین کہ منسوب بہ ہند کو کہتے ہین ہان فرق اتنا ہے کہ واو فقط ذوی العقول کے لیے آتا ہے اور یاے معروف ذوی العقول اور غیر ذوی العقول دونون کے واسطے استعمال کیجاتی ہے مثلاً مرد ہندی اور شمشیر ہندی دونون صحیح ہین بخلاف واو کے کہ جب کسی انسان کو ہند سے منسوب کرینگے اوسیوقت جایز ہوگا غیر انسان کے واسطے ہرگز نہین اگر شمشیر ہندی کی جگہ شمشیر ہندو کہا جائیگا غلط محض ہوگا اب دیکھیے لفظ ہند اور ہندی دساتیر مین بہی آیا ہے جو کہ پارسیون کے یہان کتاب آسمانی ہے

और जिसकी रचना को चार सहस्र वर्ष से अ
धिक हुये हैं जैसे ज़रतुश्त के नामह की आय
त पैंसठ में है । अकनूं बिरहमने व्यास नाम
अज़ हिन्द आयद बस दाना कि बर ज़मीं क
म कस चुनानस्त अर्थ अब एक ब्राह्मण व्या
स नाम हिन्द से आवेगा जो कि ऐसा पंडित
है कि वैसा पृथ्वी पर नहीं है । इति । इसी
नामह के एक सौ तरेसठ आयत में है कि ।
चूं व्यास हिन्दी बबलख़ आमद गश्तास्प
ज़रतुश्तरा बुख़ांद ॥ अर्थ - जब हिन्द निवा
सी व्यास बलख़ नगर में आये गश्तास्प राजा
ईरान ने ज़रतुश्त को बुलाया । फिर इसी आ
यत में है । मन मरदे अम हिन्दि निज़ाद ॥
अर्थ - मैं एक हिन्द में पैदा हुआ पुरुष हूं । फि
र उसी आयत में है । वब हिन्द बाज़ गश्त ।
अर्थ - फिर हिंदोस्तान को लौट गये । देखो
चार सहस्र वर्ष से पहिले भी हिन्द और हि
न्दी और हिन्दु शब्द आर्य्यावर्त्त और आ
र्य्यावर्त्त निवासी के अर्थ में प्रचरित थे फिर
क्यों कर हो सक्ता है कि मुसलमान शत्रुता
से आर्य्यावर्त्त को हिन्द और यहां के निवासि

اور جسکی تالیف کو چار ہزار برس
سے زیادہ گذرے ہین چنانچہ
نامہ زرتشت کی آیت ۶۵ مین
ہے (اکنون برہمنے بیاس نام
از ہند آید بس دانا کہ بر زمین
کم کس چنان است) اسی نامہ
کی آیت ۱۶۳ مین ہے کہ
(چون بیاس ہندی بہ بلخ
آمد گشتاسپ زرتشت را بخواند)
پھر اسی آیت مین ہے (من
مردے ام ہندی نژاد) پھر
اسی آیت مین ہے (وہ ہند
بازگشت) دیکھو چار ہزار سال
سے بیشتر بھی الفاظ ہند،
وہندی وہندو زبان فارسی
مین بہ معنی متنازعہ کے مستعمل
کئے جاتے تھے پس کیونکر
ہو سکتا ہے کہ مسلمانون نے
خصومت کی راہ سے
اس ملک کا نام ہند،
رکھا اور یہان کے باشندون

यों को हिन्दी और हिन्दू कहने लगे किस
लिये कि उस समय मुसलमानों का सर्व
था अभाव था मुसल्मानों की उत्पत्ति तो ते
रह सौ वर्ष के भीतर ही हुई है इस कारण
मुसल्मानों पर दयानंद सरस्वती का मि
थ्या आक्षेप है कि मुसल्मानों की उत्पत्ति से
सहस्रों वर्ष पहिले ही ईरान देश निवासि
यों की जिव्हा पर आर्य्यावर्त का नाम हि
न्द और यहां के निवासियों का नाम हिन्दि
और हिन्दु था इससे हमारा अभिप्राय य
ह नहीं है कि आर्य्य लोग अपने आपको
हिन्दि और हिन्दु कहें और कहलायें कि
न्तु हमारा वास्तव तात्पर्य्य यह है कि
हिन्द और हिन्दि और हिन्दु गाली नहीं
है जो कि ईरान देश के लोगों की अपेक्षा
से यहां के लोगों का रंग काला है इस का
रण हिन्दु शब्द फ़ारसी भाषा में काले के
अर्थ में सांकेतिक आता है इस में शत्रुता
की गंध भी नहीं है जैसे योरप निवासी हम
को काला आदमी कहते हैं और हम उनको
गोरा नाम रखते हैं परन्तु शत्रुता का दोनों ।

کو ہندی اور ہندو کہنا شروع کیا
کیونکہ اوسوقت مسلمان معدوم محض
تھے مسلمانوں کا ظہور تیرہ سو برس
کے اندر ہوا ہے پس مسلمانونپر دیانند
سرستی کا بہتان ہے کہ مسلمانوں کی
پیدایش سے ہزاروں برس پیشتر
ہی اہل فارس کی زبان مین آریا
ورت کا نام ہند اور یہان کے
باشندے باسم ہندی و ہندو موسوم
تھے اس سے ہمارا یہہ مقصود نہین
ہے کہ آریہ لوگ اپنے تئے ہندو
اور ہندی کہین اور کہلائین بلکہ ہماری
منشا اصلی یہ ہے کہ ہند و ہندی و ہندو
دشنام نہین ہے اور نہ اسے الزام نہین ہے
چونکہ ایرانیون کی نسبت یہان کے
لوگ سیاہ فام ہین لہذا لفظ ہندو فارسی
زبان مین بمعنی سیاہ کے مجازاً استعمال
کیا جاتا ہے اسمین خصومت کی کوئی
بات نہین ہے جیسے انگریز ہم کو کالا آدمی
کہتے ہین اور ہم انگریزون کا گورا نام دہرتے
ہین لیکن دشمنی و خصومت کا طرفین

और सम्भव भी नहीं है किन्तु कारण इस का यही है कि आर्य्यावर्त्त के लोग योरप निवासियों की अपेक्षा से स्याह रंग हैं और अंगरेज़ हमारी अपेक्षा से श्वेत वर्ण हैं काफ़िर के अर्थ में हिन्दू और हिन्दी कहीं नहीं आया यदि किसी ने प्रचलित किया होवे तो प्रमाण दीजिये इस लिये दयानंद सरस्वती का मुसल्मानों पर यह दूसरा मिथ्या आक्षेप है सिवाय इसके यदि मुसल्मान हिन्दु पद को काफ़िर के अर्थ में प्रचार करते तो इसकी क्या आवश्यकता थी कि आर्य्य लोगों ही को हिन्दू कहते किन्तु मुसल्मानों के सिवाय यहूद अंगरेज़ प्रभृति संपूर्ण मत वालों को हिन्दू ही कहते कि मत के विरोध में सब बराबर हैं आर्य्यों की क्या विशेषता है ॥ एक दयानंदानुयायी का ।

प्रश्न सब देशों के लोगों को एक ही नाम से पुकारने में पहचान नहीं रह सकती थी इस कारण मुसल्मानों ने भिन्न भिन्न पद जिनका अर्थ मिलता जुलता है हर एक देश वालों के लिये नियत किये - जैसे ईरान

سے وہم وگمان بھی نہین ہے بلکہ باعث اسکا یہ ہی ہے کہ یہان کے آدمی انگریزون کی بہ نسبت سیاہ رنگ ہین اور انگریز ہماری بہ نسبت سفید فام ہین کافر کے معنی مین لفظ ہندی اور ہندو کہین نہین آیا اگر کسی نے استعمال کیا ہووے تو سند دیجئے پس یہ دیانند سرسوتی کا دوسرا بہتان ہے مسلمانون پر علاوہ اسکے اگر مسلمان لفظ ہندو کو معنی کافر استعمال مین لاتے تو اسکی کیا ضرورت تھی کہ آریہ لوگون ہی کو اس لفظ کے ساتھ تعبیر کرتے بلکہ یہود و انگریز وغیرہ کل غیر مذہبون کو ہندو کہتے کہ مخالفت دینی مین سب برابر ہین آریہ کی کچھ خصوصیت نہین ہے ایک دیانندی کا سوال سب ملکون کے لوگون کو ایک ہی نام سے پکارنے مین پہچان نہین رہ سکتی تھی اسواسطے مسلمانون نے جدا جدا لفظ جنکے معنی قریب ہین ہر ایک ملک والون کے لئے مقرر کئے جیسے پارسی

देश निवासियों को गब्र प्रसिद्ध किया
जिसका अर्थ काफ़िर है और अफरीका
के एक भाग का नाम हब्श रख कर वहां
के लोगों को हबशी कहने लगे जिसका
अर्थ गुलाम का है अफरीका देश के उत्त
र भाग में एक देश को काफरिस्त: कह
कर वहां के रहने वालों को काफ़िर कहना
प्रारंभ किया इसी प्रकार योरप निवासियों
का नाम तरसा रक्खा जिसका अर्थ का
फ़िर और भय भीत है ॥ **उत्तर** ॥
जबकि मुसल्मानों की बुद्धि में निजम
तानुयायी से भिन्न सब देशों के लोग का
फ़िर हैं तो उन में पहचान रहने की क्या
आवश्यकता है कि मत के विरोध में सब
बराबर हैं यदि मत के विरोध में देश की
विशेषता भी अवश्य है तो उन लोगों के
नाम भिन्न २ मुसल्मानों के रक्खे हु
ये नहीं हैं किन्तु अपने २ देश के नाम से
प्रसिद्ध हुये हैं जैसे आर्य्यों को हिन्द
में रहने के कारण से हिन्दू और हिन्दी
कहा जाता है फिर गब्र और तरसा पदों

لوگون کو گبر مشہور کیا جسکے معنی
کافر ہین اور افریقہ کے ایک حصہ کا
حبش نام رکھہ کر وہانکے لوگونکو حبشی
کہنے لگے جسکے معنی غلام ہین افریقہ کے
شمالی حد مین ایک ملک کو کافرستہ کہکر وہانکے
رہنے والون کو کافر کہنا شروع کیا
اسیطرح یوروپ کے باشندون کا نام
ترسا کہا جسکے معنی کافر و خوفناک کے
ہین **جواب** جبکہ مسلمانون کے
نزدیک سب ملکون کے غیر مذہب
لوگ کافر ہین تو انمین پہچان رہنے
کی کیا ضرورت ہے کہ مخالفت دینی
مین سب برابر ہین اگر مخالفت
دینی مین ملک کی خصوصیت بھی
لابدی ہے تو ان لوگون کے
القاب مذکور مسلمانون کی ایجاد
نہین ہین بلکہ اپنے اپنے ملک
کے نام سے مشہور ہوے ہین
جیسے کہ یہان کے ساکنون کو بسبب
بود و باش ہند کے ہندو اور ہندی
کہا جاتا ہی پہر گبر و ترسا وغیرہ الفاظ

का अर्थ भी एक नहीं है इसीवास्तेदया
नंदी का पक्ष युक्ति शून्य है गब्र पद का अ
र्थ काफ़िर कदाचित् नहीं है होवेतो फ़ार
सी कोश विद्यमान हैं पता दीजिये· कोश
में तो यह लिखा है कि गब्र लोहे की टोपी
को कहते हैं कि जिसको लड़ाई में सर पर
रखते हैं और लोहे के वस्त्र को कहते हैं कि
जिसको लड़ाई में पहनते हैं और संस्कृत
में वक्र बोलते हैं और जरतुश्तमतावल
म्बी को कहते हैं जिसको अरबी भाषा में
मजूस बोलते हैं निदान गब्र और मजूस
और मुग और पारसी एकार्थी हैं इन शब्दों
में से काफ़िर के अर्थ में एक भी नहीं आता
और यह दूसरी बात है कि मुसल्मान पक्ष
पात की राह से आपने से भिन्न हर एक मत
वाले को काफ़िर कहते हैं ईसाई और मूसा
ई भी इनके निश्चय में काफ़िर हैं किंतु ई
साई और मूसाई पद का अर्थ काफिर कदाचि
त् नहीं है बलकि ईसा से संबंध रखनेवाले
को ईसाई और मूसा के मत वाले को मूसाई
कहते हैं इसी तरह हबशी का अर्थ काफ़िर

کے معنی قریب بھی نہیں ہیں اسیواسطے
دیانندی کا دعوی دلیل سے خالی
ہے لفظ گبر کے معنی کافر ہرگز نہیں ہیں
ہو وین تو لغت کا حوالہ دینا ضروری ہے
کتب لغت مین تو یہ ہی مذکور ہے
کہ گبر بفتح اول و سکون ثانی بمعنی خود
و خفتان ہے اور مغ کو کہتے ہیں
جسکو عربی مین مجوس بولتے ہین
غرضکہ گبر و مجوس و مغ و پارسی
مرادف ہین ان الفاظ مین سے
بمعنی کافر ایک بھی نہین آتا اور
یہہ دوسری بات ہے کہ مسلمان
براہ تعصب ہر ایک قوم کو کافر کہتے
ہین چنانچہ عیسائی و موسائی بھی
اونکے عقیدہ مین کافر ہین لیکن لفظ
عیسائی و موسائی کے معنی کافر ہرگز
نہین ہین بلکہ عیسی سے نسبت
رکھنے والے کو عیسائی اور
موسی کی امت والے کو
موسائی کہتے ہین اسیطرح
حبشی کے معنی بھی کافر

त्रिकाल में भी नहीं है किसी कोश में ऐसा लिखा होवे तो उसका नाम लीजिये हवशी का अर्थ तो हवश देश का रहने वाला है जबकि तुम्हारे निश्चय में भी हवश एक देश का नाम है तो हवशी का अर्थ गुलाम क्यों कर होसक्ता है तुमको उचित है कि प्रथम हवशी पद में दासत्व सिद्ध करो और यह असम्भव है इस वास्ते तुम्हारा सारा वाग् विलास मिथ्या है आगे यह बात रही कि उस देश का हवश नाम मुसल्मानों ने रक्खा है यह बात भी सर्वथा निर्मूल है कि मुसलमानों की उत्पत्ति से पहिले ही अरबी भाषा में उस देश का नाम हवश था इसी लिये हवश और हवशा पद अमरा उलक़ैस की कविता में जोकि मुसलमानों की उत्पत्ति से प्रथम ही अरब देश में प्रसिद्ध कवि था आये हैं इसके सिवाय जब कि मुसलमानों के पैग़म्बर मुहम्मद के मत में सौ मनुष्य भी न थे और

ہرگز انمین نہین ہے کسی اہل لغت نے ایسا لکھا ہو وے تو اوسکے نام سے اطلاع دیجئے حبشی کے معنی تو منسوب بہ حبش ہین یعنی حبشی اوسکو کہتے ہین کہ جو ملک حبش مین قیام پذیر ہووے جبکہ تمہاری رائے مین بھی حبش ایک ملک کا نام ہے تو حبشی کے معنی غلام کیونکر ہو سکتے ہین تم کو لازم ہے کہ اول لفظ حبش مین غلامیت ثابت کرو اور یہ محال ہے پس تمہاری ساری گفتگو وہم و خیال ہے ؏ این خیال است و محال است و جنون – باقی رہی یہ بات کہ اوس ملک کا حبش نام مسلمانون نے رکہا ہے یہ بہی محض بیاصل ہے کہ ظہور اسلام سے پہلے ہی عربی زبان مین اوس ملک کا نام حبش تہا اسیواسطے لفظ حبش و حبشہ وغیرہ امراء القیس کے نظم مین جو کہ ظہور اسلام سے پیشتر ہی ملک عرب مین ممتاز و شخص تہا آئی ہین علاوہ اسکے جسوقت کہ محمد صاحب پر سو لفر بہی ایمان نہ لائے تہے اور

मुसलमानी वहुत नहीं फैली थी उसी
काल में न जाशी राजा हवश देश का
मुसलमान होगया था और मुहम्मद
को सच्चा पैग़म्बर जान लिया था - इस
वात से किसी पढ़े लिखे मुसलमान
को इनकार नहीं है जवकि वार्त्ता इस
प्रकार है तो मुसलमानों को हवश
देश के रहने वालों से क्या शत्रुता थी
कि उन पर दासत्व का मिथ्या भार
धरते इसी रीति से काफ़रिया देश की
भाषा के जानने वाले से पूछना चा
हिये कि उस देश की वोली में काफ़
रिया और काफ़िर शब्द का क्या अर्थ
है सम्भव है कि वह अर्थ नेकी और
भलाई से संवंध रखता होवे क्योंकि
सव भाषाओं में वहुधा ऐसे पद होते
हैं कि अपने देश की वोली में उन
का अर्थ वड़ाई और भलाई से सं
वन्ध होता है और दूसरे देश की
वोली में नीचता और मूर्खता से सं
वंध रखता है जैसे फ़ारसी में मिहतर

دین اسلام چنداں شایع نہوا
تہا اوسی زمانہ مین نجاشی بادشاہ
حبشہ نے اسلام قبول کرلیا تہا
اور نبوت محمد پر ایمان لے آیا
تہا اس بات سے کسی محدث
و مفسر کو انکار نہین ہے جبکہ
معاملہ اسطرح پر ہے تو مسلمانون
کو ملک حبش کے باشندون سے
کیا خصومت تہی کہ اونپر غلامی کا
اتہام رکہتے اسی قیاس پر ملک
کافریہ کی زبان کے واقفکارون
سے دریافت کرنا چاہیے کہ اوس
دیار کی زبان مین لفظ کافریہ
و کافر کے کیا معنی ہین شاید کہ
نیکی و صلاح سے متعلق ہو دین
کیونکہ اکثر الفاظ ایسے ہین کہ
اپنے ملک کی بولی مین اونکے
معنی بزرگی و شرافت سے
منسوب ہین اور دوسرے ملک کی
زبان مین اونکے معنی سفاہت و بلاہت سے
تعلق رکہتے ہین جیسے فارسی مین مہتر

का अर्थ महान् और बड़े का है और
हमारी बोली में मिहतर नीच अर्थात्
भंगी को कहते हैं अरबी में सूअर कु
रान की सूरतों अर्थात भागों को कहते
हैं और उर्दू में यह शब्द पशु विशेष
के अर्थ में प्रचरित है जिसका छूना
भी बुरा है अब कोई बुद्धिमान् नहीं
कह सक्ता कि उर्दू वालों ने ईरानियों
की शत्रुता से उनके महाशय और श्रेष्ठ
को मिहतर कर के पुकारा है जिसका
अर्थ भंगी का है और मुसलमानों
की शत्रुता से उनकी पवित्र किताब
के भागों को सुअर कहा है जिसका
अर्थ अत्यन्त अशुद्ध पशु का है-
वास्तव यही है कि यह दोनों पद महा
न और कुरान के भागों के अर्थ में
उर्दू के नहीं हैं एक फ़ारसी का है
दूसरा अरबी का और उनका अर्थ भी
उन हीं भाषाओं के प्रचार करने वाले
ने अपने अभिप्रायानुकूल कल्पना
किया है उर्दू से उस अर्थ को कुछ सम्ब

کہتے ہین شریف وسردار کو اور
ہماری بولی مین مہتر سے مراد کمینہ
و خاکروب لیا جاتا ہے عربی مین
سور قران کی سورتون کو کہتے
ہین اور اردو مین یہہ لفظ ایک
حیوان کے معنی مین مستعمل کیا
جاتا ہے جسکا مس بہی ممنوع ہی
اب کوئی عاقل نہین کہہ سکتا۔
کہ اردو والون نے ایرانیون
کی دشمنی سے اونکے سردار و شرفا
کو مہتر کہکر پکارا ہے جسکے معنی بہنگی
کے ہین اور مسلمانون کی خصومت
سے اونکی کتاب مقدس کے
حصون کو سور کہا ہے جسکے معنی
حیوان نجس کے ہین اصل
وہی ہے کہ دے دونون لفظ اس
معنی مین اردو کے نہین ہین
ایک فارسی کا ہے دوسرا عربی
کا اور اونکے معنی بہی اونہین
زبانون کے واضعون نے وضع کر
ہین اردو سے اونکو کچہہ تعلق

न्ध नहीं है इसी प्रकार काफ़िरिया और काफ़िर के अर्थ में मुसलमानों की कुछ कल्पना नहीं है यह दोनों पद उसी देश की बोली के हैं और काफ़िर पद अरबी का जो कि कुफ़्र से बना है वह दूसरा पद है उर्दू के पद मिहतर और सूअर की तुल्य · इसी तरह तरसा पद रूम की भाषा का है जैसा कि सिराज उल लुग़ात से विदित है और रूम की भाषा में तरसा ईसाई को कह ते हैं और यह पद काफ़िर के अर्थ में कि सी भाषा में नहीं आया मुसलमानों की उत्पत्ति से पहिले ही उक्त पद रूम की भा षा में प्रचरित था इस वास्ते मुसलमानों की कल्पना से समस्त रक्षित है · हां यदि फ़ारसी भाषा में उक्त पद का निकास तर सीदन धातु से ठहराया जावे तो भय भी त के अर्थ में समझा जायगा · परन्तु रूमी भाषा से उसको कुछ संबंध नहीं इस कारण तरसा शब्द को भय भीत के अर्थ में समझना उसी प्रकार है कि कोई मनुष्य कहे कि फ़ारसी में जो मिहतर

نہین ہے اسیطرح کافریہ اور کافر کے معنی مین مسلمانون کا کچہ تصرف نہین ہے یہ دونون لفظ اوسی ملک کی زبان کے ہین اور لفظ کافر عربی کا جو کہ کفر سے ماخوذ ہے وہ غیر ہے مانند لفظ مہتر اور سور اردو کے اسیطرح یہ لفظ ترسا رومی زبان کا ہے جیساکہ سراج اللغات سے ثابت ہے اور رومی زبان مین ترسا نصارا کو کہتے ہین اور یہ لفظ بمعنی کافر کسی زبان مین نہین آیا زمانہ اسلام سے پیشتر ہی لفظ مذکور روم کی زبان مین شایع تہا پس مسلمانون کے تصرف سے بالکل محفوظ ہے البتہ اگر فارسی مین اس لفظ کا اشتقاق ترسیدن مصدر سے متعلق کیا جاے تو بمعنی خوفناک سمجہا جاویگا مگر رومی زبان سے اوسکو کچہ مناسبت نہین ہے اسواسطے لفظ ترسا کو بمعنی خوفناک سمجہنا اوسی قسم سے ہے کہ کوئی کہے کہ فارسی مین جو لفظ مہتر

पद प्रचरित है वह भंगी के अर्थ में है और मुसलमान जो कुरान के भागों को सुअर कहते हैं उसका अर्थ प्रसिद्ध पशु है अब जानना चाहिये कि यदि किसी जगह मुसलमानों की बातों में तरसा से काफ़िर अभिप्रेत होवे तो यह दूसरी बात है कि मुसलमान यहूद और ईसाई और मजूस प्रभृति सब मत वालों को काफिर जानते हैं जैसे कि आर्य्य लोग चार वाक और बौद्ध आदि सारे वेद विरोधियों को दस्यु और म्लेच्छ कहते हैं परंतु इससे यह नहीं निकलता कि यहूद और ईसाई और मजूस प्रभृति पदों का अर्थ काफ़िर होवे अथवा चार वाक और बौद्ध आदि शब्द दस्यु और म्लेच्छ के अर्थ में प्रचरित किये जावें यहां तक दयानंदी के प्रश्न का उत्तर दिया गया परंतु इससे हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि हिन्दू पद की जगह आर्य शब्द का प्रचार न होवे बरन हमारा सिद्धांत यह है कि हिन्दू

مستعمل ہے وہ بمعنی خاکروب ہے اور مسلمان جو قران کی سورتوں کو سور کہتے ہیں اوسکے معنی حیوان نجس کے ہیں اب جاننا چاہیے کہ اگر کسی جگہہ مسلمانوں کی گفتگو میں ترسا سے کافر مراد ہووے تو یہہ دوسرا امر ہے کہ مسلمان یہود و نصارا و مجوس وغیرہ کل فرقوں کو کافر جانتے ہیں جیسے کہ آریا لوگ چارباک اور بودہ وغیرہ تمام ویدبیرودہیوں کو دسیو اور ملیچہہ کہتے ہیں مگر اس سے یہہ لازم نہیں آتا کہ یہود و نصارا و مجوس وغیرہ الفاظ کے معنی کافر ہوویں یا لفظ چارباک اور بودہ وغیرہ بمعنی دسیو اور ملیچہ استعمال کیے جاتیں یہانتک دیانندی کے سوال کا جواب دیا گیا لاکن اس سے ہماری یہ غرض نہیں، کہ ہندو کے عوض آریہ کا عملدرآمد نہووے بلکہ ہمارا مقصود یہہ ہے کہ ہندو

शब्द गाली नहीं है और न मुसलमानों ने द्वेष से बनाया है परन्तु फिर भी हम लोगों को उचित है कि अपने लिये दूसरी भाषा के शब्द का प्रचार अच्छा न जाने किन्तु उसकी जगह पर आर्य पद का वर्ताव करें कि हमारा वास्तव और सनातन नाम यही है हिन्दू पद से हमारा कुछ संबंध नहीं कि फ़ारसी भाषा का है इसी प्रकार हमको उचित है कि अपनी बोली को आर्य भाषा और अपने देश को आर्यावर्त कहें हिन्दी और हिन्दोस्तान पद के प्रचार से दूर रहें - कि दूसरी बोली के शब्द हैं इस आख्यान से हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि फ़ारसी भाषा निषिद्ध है और इसका सीखने वाला पापी है क्योंकि पहिले फ़ारस देश में वेद मतानुयायी ही बसते थे आर्यावर्त निवासी और फ़ारस के रहने वालों में परस्पर विवाहादिक संबंध भी होते थे - जैसे राजा दशरथ की एक स्त्री का नाम केकेयी है जो कि भरत की माता थी वाल्मी

گالی نہیں اور مسلمانوں کی بدگالی نہیں مگر پہر بہی ہم لوگوں کو لازم ہے کہ اپنے حق میں غیر زبان کا لفظ روا نہ رکہیں بلکہ اوسکی جگہ لفظ آریہ کا برتاؤ کریں کہ ہمارا اصلی و حقیقی لقب یہ ہی ہے لفظ ہندو سے ہمارا کچہ تعلق نہیں ہے کہ غیر زبان کا لفظ ہی اسیطرح ہمکو مناسب ہے کہ اپنی بولی کو آریہ بہاشا اور اپنے ملک کو آریاورت کہیں ہندی اور ہندوستان کے استعمال سے کنارہ گیر ہوویں کہ غیر زبان کے الفاظ ہیں اس بیان سے ہماری یہ غرض نہیں ہے کہ فارسی زبان ناجایز و ممنوع ہے کیونکہ پیشتر ملک فارس میں تابعان وید اقدس ہی آباد تہے اور آریوں اور پارسیوں کے درمیان سلسلہ رشتہ داری و برادری بہی جاری تہا چنانچہ راجا دشرتہ کی ایک زوجہ کا نام کیکئی ہے جو کہ بہرت کی ماں تہی بالمیکی

कैकेयी

की रामायण में है कि वह केकय देश के राजा की बेटी थी क्योंकि संस्कृत में केकय ईरान का नाम है और यहां के राजा को केकय कहते हैं इसी सबब से उसकी बेटी कैकयी कहलाती है संस्कृत के व्याकरण से यह बात सम्यक् विदित है फिर यहां से जाना जाता है कि केकय पद को फ़ारसी वालों ने बिगाड़ कर अपनी रीति पर कय बना लिया है इसी लिये ईरान देश के हर एक राजा का कय ही पदवी और उपनाम होता था जैसे कय ख़ुसरो कय क़ुबाद और कय काऊस प्रभृति-इसी तरह दुर्योधन की मा का नाम गांधारी है और संस्कृत में गांधारी गांधार की बेटी को कहते हैं और गांधार उसको कहते हैं जिसकी उत्पत्ति गन्धार नगर में हो फ़ारसी वाले गांधार के गाफ़ को क़ाफ़ से बदल कर क़ंदहार बोलते हैं निदान इस पद की मूल संस्कृत है कि फ़ारसी वालों ने अपनी रीति पर बना लिया।

رامائن مین ہے کہ وہ کیکئی دیش کی راجا کی بیٹی تہی کیونکہ سنسکرت مین کیکئی ایران کا نام ہے اور وہان کے راجا کو کیکئی کہتے ہین اور اوسکی مونث اولاد کیکیی کہلاتی ہے پہر یہان سے واضح ہوتا ہے کہ کلمہ کیکئی کو فارسیون نے بگاڑکر اپنے طور پر کے بنا لیا چنانچہ پہلے زمانہ مین ایران کے ہر ایک بادشاہ کا یہہ لقب ہوتا تہا مثلا کیخسرو و کیقباد و کیکاؤس اور مانند اسکے اسیطرح دریودہن کی مان کا نام گاندہاری ہی اور سنسکرت مین گاندہاری کہتے ہین گاندہار کی بیٹی کو اور گاندہار اوسکو کہتے ہین کہ جسکی پیدایش گندہار مین ہووے فارسی والے گندہار کے گاف کو قاف سے بدلکر قندہار بولتین قندہار بولتے ہین غرضکہ اس لفظ کی اصل سنسکرت ہی کہ اہل فرس نے اپنا تصرف کرکے اپنے طور پر وضع کر لیا

इसी तरह के सहस्रों पद संस्कृत के हैं कि फ़ारसी वालों ने कुछ न्यूनाधिक कर के उनकी सूरत बदल डाली बल्कि ईरान पद ही आर्य्य से बनाया गया है ईरान देश के इतिहास से जाना जाता है कि ईरान पद इयर से संबंध रखता है और इयर फ़रेदूं राजा के बेटे का नाम है जिसको एरज भी कहते हैं और वस्तुत: इयर और एरज आर्य्य से बनाया गया है इसी वास्ते मैक्समूलर साहिब ने किताब लेक्चरस आन्दी साइन्स आफ़ लैंग्वेज के पृष्ठ २८१ में लिखा है कि ईरान और आरमीनिया यह दोनों पद आर्य्य से निकले हैं और एरी कि आर्य्य से बना है आरमीनिया देश की बोली में बहादुर के अर्थ में प्रचरित है - इति मैं कहता हूं कि एरी पद का उक्त अर्थ भी आर्य से निकला है क्यों कि आर्य्य लोगों की वीरता और शूरता और शस्त्र और शास्त्र विद्या सब देशों में प्रसिद्ध और विदित

اسی قسم کے ہزارہا الفاظ سنسکرت کے ہین کہ فارسی والون نے افراط و تفریط کرکے اونکی صورت بدل ڈالی ہے بلکہ خود لفظ ایران کلمہ آریہ سے وضع کیا گیا ہے فارس کی تاریخ سے جانا جاتا ہے کہ ایران منسوب ہے ایر سے کہ نام پسر فریدون ہے کہ جسکو ایرج بہی کہتے ہین ظاہرا ایر اور ایرج آریہ کا بگڑا ہوا ہے اسیواسطے میکس مولر صاحب نے کتاب لیکچرس آن دی سائنس آف لینگویج کے صفحہ ۲۸۱ مین لکہا ہے کہ ایران و آرمینیہ یہہ دونون لفظ آریہ سے نکلے ہین اور ایری کہ آریہ سے بنا ہے آرمینیہ کی زبان مین بمعنی بہادر مستعمل ہے فقط مین کہتا ہون کہ ایری کے معنی مذکور بہی آریہ کے معنی سے ماخوذ ہین کیونکہ آریہ لوگون کی بہادری و دلاوری اور شمشیر زنی و تیر افگنی تمام ملکون مین مشہور و مذکور

थी यहां तक कि फ़ारसी भाषा में हि
न्दी पद तलवार के अर्थ में प्रसिद्ध हुआ
अर्थात् हिन्दुओं के साथ तलवार को ऐ
सी विशेषता थी कि दूसरे देश वाले हि
न्दी पद से कि हिन्दोस्तान के हर एक पदा
र्थ और हर मनुष्य को कह सक्ते हैं केवल
तलवार मुराद रखते थे यदि कोई पु
रुष हमारी बात में सन्देह करे तो उस
को चाहिये कि बुरहान क़ातअ में कि फ़ार
सी का कोष है देखले- कि हिन्दी पद
तलवार के अर्थ में प्रचरित है इसी सबब
से फ़िरदोसी कविने शाहनामा किता
ब में बहुधा तलवार और खंजर का
हिन्दुओं के साथ संबंध विशेषद्योतन
किया है- जैसे इम: जोशनो तर्को बर
गस्त वां ॥ चह गोपालो चह खंजरे हिन्दु
आं ॥ जिल्द प्रथम तफ़सीर अज़ीज़ी
में यह बैत लिखी है ॥ तेग़ हिन्दी व खंज
रे रूमी नकुनद उच बूं तज़ार कुनद ॥
जैसे आर्य्य लोग शूर वीर हुये हैं वैसेही
विद्वान् और ज्ञानी थे कि एक ब्रह्म की

تھی حتی کہ لفظ ہندی بمعنی خنجر
و شمشیر زبان زد اہل ایران
ہوا یعنی ہندوؤن کے ساتھ
شمشیر کو ایسی خصوصیت تھی کہ
غیر ملک والے لفظ ہندی سے
کہ بمعنی ہر چیز و ہر انسان ہندوستان
کے ہو سکتا ہے صرف تلوار مراد
رکھتے تھے اگر ہماری گفتگو مین
کوئی شک کرے تو اوسکو چاہیے
کہ برہان قاطع مین کہ لغت فارسی
ہے دیکھ لے کہ ہندی بمعنی شمشیر
ہے اسی سبب سے فردوسی نے
شاہنامہ مین اکثر جگہ خنجر و شمشیر کو
ہندوؤن کے ساتھ مخصوص کیا ہے
مثلاً ہمہ جوشن و ترک برگستوان
چہ گوپال و چہ خنجر ہندوان ۔ جلد
اول تفسیر عزیزی مین یہ شعر
مرقوم ہے ۔ تیغ ہندی و خنجر رومی
نکند آنچہ انتظار کند ۔ جیسی کہ آریہ
لوگ بہادر و جوانمرد ہوے ہین ویسے ہی
عارف و گیانی تھے کہ ایک برہم کی

उपासना करते थे वल्कि आर्य्य पद का यही वास्तविक अर्थ है क्योंकि संस्कृत में आर्य्य पद ऋ गतौ धातु से बनता है और गति कहते हैं ज्ञान और पहुंचने को इससे आर्य्य शब्द का अर्थ हुआ ज्ञानी और परमेश्वर के समीप पहुंचा हुआ क्योंकि आर्य्य पद की निरुक्ति यह है ऋच्छति अर्थात् गच्छति इति आर्य्यः॥ मेकसमूलर साहिब ने उक्त पुस्तक के पृष्ठ २७५ में लिखा है कि आर्य्य शब्द से देवतों के आदर करने वाले मुराद रक्खे जाते हैं क्योंकि यह पद दस्यु शब्द का विरोधी है जो कि वेद विरोधी और सच्चे मार्ग के भूलने वाले के अर्थ में है॥

अब मैं एक यंत्र इस ग्रंथ में लिखता हूं जिससे विदित होवे कि अरबी और फ़ारसी प्रभृति भाषा संस्कृत से निकली वल्कि सारी बोलियां संस्कृत से बनी हैं जो कि योरुपदेश निवासी आप अपनी भाषाओं का मूल संस्कृत को ठहराते हैं इस वास्ते हमें इस यंत्र में अंगरेज़ी प्रभृति भाषा के पद लिखने से हाथ उठाते हैं और मुसलमानों के चुप करने के लिये केवल अरबी और फ़ारसी ही के पद लिखते हैं॥

اوپاسنا کرتے تھے بلکہ لفظ آریہ کے یہی معنی تحقیقی و اصلی ہین کیونکہ سنسکرت مین کلمہ آریہ رِی گتو دھاتو سے بنتا ہے اور گتی کہتے ہین گیان اور پہونچنے کو پس آریہ کے معنی ہوے گیانی و [illegible] ایسلئے میکس مولر صاحب نے کتاب مذکور کے صفحہ ۲۷۵ مین لکہا ہے کہ لفظ آریہ سے دیوتاؤن کی تعظیم کرنے والے لوگ مراد رکہے جاتے ہین کیونکہ یہ کلمہ لفظ دسیو کی ضد ہے جو کہ بمعنی کافر و ضال ہے اب مین ایک نقشہ مندرج رسالہ ہذا کرتا ہون جس سے معلوم ہووے کہ عربی و فارسی وغیرہ کی ماخذ سنسکرت ہے بلکہ تمام زبانین سنسکرت ہی سے برآمد ہوئی ہین چونکہ اہل یورپ خود اپنی زبانون کی اصل سنسکرت کو قرار دیتے ہین لہذا اس نقشہ مین انگریزی وغیرہ کے الفاظ درج کرنے سے ہم دست بردار ہوتے ہین واسطے سکوت مسلمانون کے ابراد الفاظ عربی و فارسی ہی پر اکتفا کرتے ہین

संस्कृत शब्द	फ़ारसी अरबी शब्द	अर्थ	معنی	الفاظ عربی وفارسی	الفاظ سنسکرت
आम्र	अंबा	आम	آم	انبہ	آمر
आदिम	आदम	प्रथम मनुष्य	مشہور	آدم	آدِم
अप्	आब	पानी	پانی	آب	آپ
आसक्त	आशिक़	प्रसिद्ध	مشہور	عاشق	آسکت
अश्व	अस्प	घोड़ा	گھوڑا	اسپ	آشو
भ्रु	अबरू	भौं	معروف	ابرو	بھرو
अस्ति	अस्त	है	ہے	است	استی
अंत	इन्तहा	समाप्ति	تمام	انتہا	انت
अभ्र	अब्र	बादल	بادل	ابر	ابھر
उष्ट्र	उश्तर	ऊंट	اونٹ	اشتر	اشٹر
अंतर	अंदर	भीतर	بھیتر	اندر	انتر
अल्ला	अल्लाह	ईश्वर	خدا	اللہ	الا
आपत्ति	आफत	प्रसिद्ध	مشہور	آفت	آپتی
आगमन	आमदन	आना	آنا	آمدن	آگمن
अंगुष्ठ	अंगुश्त	उंगली	اونگلی	انگشت	انگشٹ
अष्ट	हश्त	आठ	آٹھہ	ہشت	اشٹ
विस्तार	बिस्यार	बहुत	بہت	بسیار	بستار
भार	बार	बोझ	بوجھہ	بار	بھار
भ्रातृ	बरादर	भाई	بھائی	برادر	بھراتری
विशेष	बेश	ज़्यादा	زیادہ	بیش	بیشیش

संस्कृत शब्द	फारसी व अरबी शब्द	अर्थ	معنی	الفاظ عربی فارسی	الفاظ سنسکرت
वंश	बनी	घराना	خاندان	بنی	بنس
वेद	वेद-बेद	ज्ञान विज्ञान	علم وآگاہی جیسا کہ ہے بیدار ضد خفتہ جو مرکب ازبید وار کہ کلمہ نسبت ہے	بید	وید وبید
विंशति	बिस्त	बीस २०	بیس ۲۰	بست	بنشتی
वात	बाद	वायु	ہوا	باد	ابت
वर्षा	बारिश	मेंह	مینہہ	بارش	برشا
वर्णन	बयान	व्याख्या करना	مشہور	بیان	برنن
बंध	बंद	बंधाहुआ	قید	بند	بندہ
वर्षाकाल	वर्षाकाल	बरसात	برسات	برشکال	برشاکال
वादित्र	बरबत	बाजा	باجا	بربت	بادتر
भूमि	बूम	धरती	زمین	بوم	بھومی
भीम	बीम	डर	خوف	بیم	بھیم
पुष्टि	पुश्ती	दृढ़ता	مضبوطی	پشتی	پشٹی
पितृ	पिदर	बाप	باپ	پدر	پتری
पंच	पंज	पांच	پانچ	پنج	پنچ
पंचदश	पांजदह	पंद्रह	پندرہ	پانزدہ	پنچدش
पदाति	प्यादः	प्रसिद्ध	معروف	پیادہ	پداتی
ताम्बूल	तम्बोल	पान	پان	تنبول	تامبول
तनु	तन	शरीर	جسم	تن	تنو
तर	तर	अधिक	زیادہ	تر	تر
युवा	जवान	प्रसिद्ध	مشہور	جوان	یووا
यव	जौ	प्रसिद्ध अन्न	غلہ معروف	جو	یو
चर्म्म	चर्म	चमड़ा	چمڑا	چرم	چرم
चंदन	चन्दन संदल	प्रसिद्ध लकड़ी	مشہور	صندل	چندن

संस्कृत शब्द	फ़ारसी अरबी शब्द	अर्थ	معنی	الفاظ عربی و فارسی	الفاظ سنسکرت
चतुर	चहार चार	संख्याविशेष	چار	چہار	چتر
खर	ख़र	गधा	گدہا	خر	کہر
शुष्क	ख़ुश्क	सूखा	سوکہا	خشک	شُشک
दाम	दाम	जालकी रस्सी	رسی جال کی	دام	دام
दन्त	दन्दां	दांत	دانت	دندان	دنت
द्वादश	दुवाज़दह	बारह संख्याविशेष	بارہ	دوازدہ	دوادش
दश	दह	दस १०	دس	دہ	دش
दीनार	दीनार	मुद्रा	معروف	دینار	دینار
दुहिता	दुख़्तर	लड़की	لڑکی	دختر	دہتا
द्वि	दो	दो २	دو	دو	دوی
दुश्मन	दुश्मन	शत्रु	معروف	دشمن	دشٹ من
ज्ञाति	ज़ात	जन्म	معروف	ذات	جاتی
रूष	रूस	देशविशेष	ملک معروف	روس	روشں
रवि	रब	ईश्वर	خدا	رب	ربی
जिव्हा	ज़बां	जीभ	عضو مشہور	زبان	جہوا
सम्वत्	सन	वर्ष	برس	سنہ	سنبت
श्वेत	सुफ़ेद	सुफेद रं०	معروف	سفید	شویت
स्वामी	सामी	श्रेष्ठ	بزرگ	سامی	سوامی
सरल	सहल	सुगम	آسان	سہل	سرل
छाया	सायाह	छांह	معروف	سایہ	چہایا
शर्कर	शकर	प्रसिद्ध	معروف	شکر	شرکر
शाक	शाक	शुबह	بشبہہ	شک	شک
शंका	शक़	भ्रम	شبہہ	شک	شنکا

संस्कृत श०	फारसी श०	अर्थ	معنی	الفاظ فارسی وغیرہ	الفاظ سنسکرت
शकुन	शुगून शुगूं	शुबन	شگن	شگن و شگون	شگن
षट्	शश	६ संख्या	چھ	شش	ششٹ
शत	सद	सौ संख्या	سو	صد	شت
शाखा	शाख	डाली	ڈالی	شاخ	شاکھا
शृगाल	शिगाल	गीदड़	گیدڑ	شغال	شرگال
शालि	शालि	धान	دھان	شالی	شالی
शिर	सिर	प्रसिद्ध	عضو معروف	سر	شر
जालम	ज़ालिम	अन्यायी	معروف	ظالم	جالم
गंधार	कंदहार	नगर प्रसि०	شہر مشہور	قندہار	گندہار
क्षीर	शीर	दूध	دودھ	شیر	کشیر
कर्पूर	काफ़ूर	प्रसिद्ध	مشہور	کافور	کرپور
कृपालु	करीम	दाता	سخی	کریم	کرپالو
कोटपाल	कोतवाल	प्रसिद्ध	[illegible]	کوتوال	کوٹپال
कृमि	किर्म	कीड़ा	کیڑا	کرم	کرمی
काम	काम	प्रयोजन	مقصد	کام	کام
कुलाल	कुलाल	कुम्हार	کمہار	کلال	کلال
कृ	करदन	करना	کرنا	کردن	کری
कर्षण	कशिश	खैंचना	کشیدگی	کشش	کرشن
खानि	कान	खान	کھان	کان	کھانی
गो	गाव	प्रसिद्ध	چارپایہ معروف	گاو	گو
गोधूम	गन्दुम	गेहूं	گیہوں	گندم	گودھوم
गोजिह्वा	गावज़बां	प्रसिद्ध	دوائے مشہور	گاوزبان	گوجھوا
लाक्षा	लक	प्रसिद्ध	لاکھ مشہور	لک	لاکشا
लव	लम्हः	सरस्या पल	پل ... کی مقدار	لمحہ	لو

संस्कृत भा॰	फारसी भा॰	अर्थ	معنی	الفاظ عربی و فارسی	الفاظ سنسکرت
मुष्टि	मुश्त	मुट्ठी	مٹھی	مشت	مشتی
महिष	मेश	भैंस	چارپایہ معروف	میش	مہش
माष	माश:	प्रसिद्ध अन्न	غلۂ معروف	ماش	ماش
मास	माह	महीना	مہینہ	ماہ	ماس
मूषक	मूश	चूहा	چوہا	موش	موشک
महत्तर	मिहतर	सर्दार	سردار	مہتر	مہت تر
मातृ	मादर	मां	ماں	مادر	ماتری
नाद	नार:	आवाज़	آواز	نعرہ	ناد
नाभि	नाफ़	प्रसिद्ध अवयव	ٹونڈی	ناف	نابھی
नील	नील	रंगविशेष	رنگ مشہور	نیل	نیل
नास्ति	नेस्त	नहीं है	نہیں ہے	نیست	ناستی
नाम	नाम	प्रसिद्ध	معروف	نام	نام
नर	नर	पुरुष	مذکر	نر	نر
नख	नाख़ुन	नुंह	نہہ	ناخن	نکھہ
नारिकेल	नारजील	नारयल	ناریل	نارجیل	ناریکیل
नव	नोह	नौ	عدد معروف	نہ	نو
नव	नौ	नया	نیا	نو	نو
सप्त	हफ्त	सात	سات	ہفت	سپت
हस्त	दस्त	हाथ	ہاتھہ	دست	ہست
सुमनस	यासमन	फूल	پھول	یاسمن	سمنس
एक	यक	एक	عدد معروف	یک	ایک
एकादश	याज़दह	ग्यार:	گیارہ	یازدہ	ایکادش

आर्यत्व प्रकाश का प्रथम भाग समाप्त हुआ दूसरा भाग नागरी और उर्दू में पृथक २ छपैगा॥

تمت

آریتو پرکاش کا حصہ اول تمام ہوا حصہ دوم ناگری میں علیحدہ اور اردو میں علیحدہ مطبوع ہوگا۔

مشتی نمونہ خروار

دیانند سرسوتی نے جو رگ وید وغیرہ کی بھاشیہ بھومیکا مین لکھا ہے کہ
۱۹۶۰۸۵۲۹۷۶ سال اس سرشٹی اور ویدون کی پیدائش کو گذرے ہین اور
۲۳۳۳۲۲۷۰۲۴ سال اس سرشٹی کے باقی رہے ہین اونکا یہ لکھنا محض غلط ہے
دیکھو اونھون نے لکھا ہے کہ چارون یوگون کے ۴۳۲۰۰۰۰ سال ہوتے ہین
اور ایک ہزار چتریوگیون کا براہم دن ہوتا ہے ایک سرشٹی کو ہزار چتریوگی تک پرمیشور قایم
رکھتا ہے تو خیال کرو کہ ہزار چترپوگی کے ۴۳۲۰۰۰۰۰۰۰ سال ہوے یعنی ایک
سرشٹی کا ۴۳۲۰۰۰۰۰۰۰ سال تک قایم رہنا ثابت ہوا۔ اب دیکھو کہ سوامی جی نے
۱۹۶۰۸۵۲۹۷۶ سال سرشٹی کی پیدایش کو گذرے لکھے اور ۲۳۳۳۲۲۷۰۲۴
سال سرشٹی کے باقی رہے بیان کئے دونون کی میزان کی تو ۴۲۹۴۰۸۰۰۰۰ ہوے
بدین حساب ۴۳۲۰۰۰۰۰۰۰ زمانہ مذکورہ سرشٹی مین ۲۵۹۲۰۰۰۰ سال کی کمی
رہی اس غلطی کی تحقیقات اسطرح بھی ہوسکتی ہے کہ جب ایک سرشٹی ہزار چترپوگی تک
قایم رہتی ہے اور بقول سوامی جی کے ایک منونتر اے چترپوگی
کا ہوتا ہے تو ۱۴ منونتر کی ۹۹۴ چترپوگی ہوئین چھ چترپوگی
کا حساب کہ جسکے ۲۵۹۲۰۰۰۰ سال ہوتے ہین
سوامی جی سراسر بھول گئے سوامی جی کی
اتحریر پر اور بھی چند اعتراض عاید
ہوتے ہین اہل انصاف بغور
ملاحظہ فرماوین

—

دل لگے اور برے کامون سے بچین تیسرا اعتراض لڑکیون کو گہر کا کام سیکہنا ہی مناسب ہے اگر وے پڑہنے لکہنے مین مشغول رہینگی تو گہر کے کاروبار مین ہرج واقع ہوگا لہذا تعلیم نسوان ضروری نہین ہے **جواب** پڑہنا گہر کے کام سیکہنے کا ہارج نہین ہے لڑکیون کو چاہیے کہ پڑہین بہی اور گہر کا کام بہی سیکہین پڑہنے سے گہر کے کام مین بہی ترقی ہوسکتی ہے کیونکہ علم سے ہر ایک کام کو مدد پہونچتی ہے مثلا خوانده اور ناخوانده دو آدمی ایک ہی کام کو کرین تو بہر کیف خوانده آدمی کا کام ناخوانده کے کام سے عمده ہوگا۔

چوتہا اعتراض اگر لڑکیان علم پڑہینگی تو اونکو غرور ہوجاویگا گہر کے کام سے ہزار کوس بہاگینگی پس نبہاه مشکل ہوگا۔ **جواب** ودیا پڑہنے سے تو غرور دور ہوجاتا ہے اور کما حقہ تہذیب کا ظہور ہوتا ہے علاوه اسکے تحصیل علم کرنے والے لوگ بڑے محنتی اور جفاکش ہوتے ہین اگر لڑکیان علم پڑہینگی تو غرور کو ترک کرکے اپنے گہر کا کام محنت کے ساتہہ کرینگی اگر علم پڑہنے کا نتیجہ تکبر و غرور ہی ہے تو مردون کو بہی علم سے دور رہنا چاہیے اور لڑکون کی تعلیم بہی مناسب نہین ہے کہ علم پڑہکر مغرور و متکبر ہوجاینگے فقط غرض تعلیم نسوان کے باره مین لوگ اسی قسم کے اعتراض کیا کرتے ہین چونکہ وے رسائل متذکره اوله مین بالکل مندرج ہین لہذا یہان اونکی تشریح کی چندان ضرورت نہین ہے۔ ✣

حصہ دوم آریتو پرکاش تمام ہوا اور اہل انصاف کی رای مین

منتہی الکلام ہوا

فقط

سودر کی یونی یا چنڈال کی یونی فقط دیکھو اس شرتی مین ہیشیہ کو پوتر یونی شمار کیا ہے اور پاپ یونی صرف چنڈال کو قرار دیا ہے اس سے جانا گیا کہ شودر اور براہمن وغیرہ کی عورتین بھی پوتر یونی ہی ہین پاپ یونی فقط چنڈال ہین یا اونکی مانند جس کسی کے اعمال ہین پس گیتا کے شلوک کا ارتھ اوپنشد کی موافق کرنا چاہیے یہان سے واضح ہے کہ جو لوگ تعلیم نسوان پر اعتراض کرتے ہین وے حق سے اعراض کرتے ہین لہذا اب ہم اونکے بعض اعتراض نقل کرکے جواب دیتے ہین پہلا **اعتراض** عورتون کو پڑھنا نچاہیے کہ وید اور اتہاس و پران وغیرہ مین کوئی عورت پڑھی ہوئی نہین سنی جاتی **جواب** بہت عورتین پڑھی لکھی گذری ہین جنکا وید کے براہمنون اور اتہاس وغیرہ مین ذکر ہے جیسے گارگی اور میتری اور ساوتری اور دیوہوتی اور سرسوتی اور پاروتی اور سیتا اور سلبھا اور اہلیا اور انوسویا اور دیوکی اور مدالسا اور دروپدی اور کنتی اور ارندھتی اور سوبھدرا وغیرہ دوسرا **اعتراض** پڑھنا لکھنا واسطے روزگار کرنے کے ہے لڑکیون کو پڑھا کر کیا اون سے روزگار کرانا اور اونکی کمائی کھانی ہے **جواب** پڑھنا لکھنا صرف روزگار ہی کے لئے نہین ہے بلکہ دہرم اور برہم کے گیان کے واسطے ہے کیونکہ حق شناسی فقط علم پر منحصر ہے اگر تحصیل علم روزگار ہی کے لئے ہوتی تو امیر و زمیندار حتی کہ راجا اور بادشاہ کس واسطے نوشت و خواند کی مشقت مین پڑتے علاوہ اسکے دنیا کے کامون کی درستی بھی علم ہی سے ہے خواندہ لوگ دستکاریون مین علم کے زور سے طرح طرح کی ترقی کرتے ہین سوا اسکے کتنے ہی بوڑھے اور لڑے اور اندھے وغیرہ بھی پڑھتے ہین جنکو روزگار کرنے کی خواب مین بھی امید نہین ہے اسیطرح اکثر سپاہی اور اہل حرفہ و پیشہ جیسے آہنگر و درزی وغیرہ نوشت و خواند مین طبیعت آزماتے ہین کہ فوائد دنیا و آخرت سے بہرہ ور ہوویں قطع نظر اس سے کتابین بھی طرح طرح کی ہین لڑکیون کو وہی کتابین پڑھاؤ جنسے دہرم کا گیان ہووے اور پرماتما کی طرف

ترجمہ عورتیں دو طرح کی ہیں ایک (برہم بادنی) دوسری (ستدیو ودہو) اون دونوں قسم کی عورتوں میں سے برہم بادنیوں کو اوپنین یعنی زنار بندی اور اگنی ہوتر اور وید پڑھنا وغیرہ چاہیے اور دوسری قسم کی عورتوں کا اوپنین کرکے بیاہ کرنا مناسب ہے فقط یم رشی نے ہی خبر دی ہے کہ ایام سابق میں اس حکم پر عملدرآمد ہوتا رہا یم رشی کا وہ قول یہ ہے

पुराकल्पेषु नारीणां मौंजीबंधनमिष्यते अध्यापनंच
वेदानां सावित्री वचनं तथा ॥ ९॥

ترجمہ پہلے زمانہ میں عورتوں کا یگیوپویت کرتے تھے اور اونکو وید پڑھاتے تھے اور گایتری منتر سکھاتے تھے فقط آجکل کے مصنف جیسے دھرم سندھو وغیرہ کی کرتا جو کہتے ہیں کہ اس قسم کے قولوں کا منشا یہ ہے کہ اور یگیوں میں عورتوں کے لیے یگیوپویت وغیرہ جائز تھا کلی یگ میں روا نہیں ہے وہ محض غلط ہے کیونکہ ان اقوال میں کسی یگ کی خصوصیت کے معنی کا کوئی لفظ نہیں پایا جاتا بلکہ ابد الآباد کے واسطے یگیوپویت کی اجازت دی گئی ہے پس کلی یگ کی عورتوں نے کیا خطا کی کہ اس نعمت سے محروم رہیں لاکلام اسیطرح کے جملہ مسائل بے اصل متعصبین نے ایجاد کئے ہیں اسیطرح جو کوئی بیشیہ وغیرہ کو پاپ یونی کہتا ہے وہ جھوٹوں کا جھوٹا ہے کہ اوسکی گفتگو چھاندوگیہ اپنشد کے خلاف ہے چھاندوگیہ اپنشد کی وہ شرتی یہ ہے

तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यत्ते रमणीयां योनिमाप
द्येरन्ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं वा अथ य
इह कपूयचरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन्
श्वयोनिं वा सूकरयोनिं वा चंडालयोनिं वा ॥७॥

ترجمہ نیک کام کرنے والوں کو اچھی یونی ملتی ہے جیسے براہمن کی یونی یا کشتری کی یونی یا بیشیہ کی یونی اور بد کام کرنے والوں کو بری یونی ملجاتی ہے جیسے کتے کی یونی یا

دہرموں مین راجا سے کسطرح بحث کی کہ یہہ بحث وید اور اونپشدہی کے
گیان پر موقوف و منحصر ہے اسیطرح راج دہرم کے چودہوین ادہیاے مین ہے
کہ دروپدی نے راجا یدہشٹہر کو دہرم کا اوپدیش کیا اوسی جگہہ دروپدی کی صفت
وثنا مین یہہ الفاظ واقع ہین۔

धर्मज्ञा धर्मदर्शिनी

یعنی دروپدی دہرم کی جاننے والی بلکہ دہرم کی دیکہنے والی ہے یعنی گویا دروپدی
نے دہرم کو بچشم سر دیکہہ لیا غرض یہ ہے کہ حقیقت دہرم سے کما حقہ واقف ہے
اور یہہ وید کے جاننے پر موقوف ہے کہ سارے دہرموں کی مول وید ہے اور بس
اسیطرح اودیوگ پرب کے ایک سو تینتیسوین ادہیاے مین ہے کہ ایک عورت بدولا
نام نے اپنے بیٹے کو راج دہرموں کا اوپدیش کیا اور یہہ کام پڑہی لکہی شاستر جاننے والی
کا ہے کپل رشی نے جو کہ سانکہہ شاستر کے کرتا ہین اپنی ماں دیوہوتی کو برہم ودیا اپدیش
کی اور برہم ودیا عین وید اور اونپشد ہی اگر عورت کیلئے وید وغیرہ کی ممانعت ہوتی تو کپل رشی کسواسطے
دیدہ و دانستہ مخالف حق مین پڑتے پس معلوم ہوا کہ اس قسم کی اکثر باتین متعصب
لوگون کی تراشی ہوئی ہین سوال جبکہ عورت کے لئے وید کا پڑہنا روا ہے تو چاہئے
کہ یگیوپویت یعنی زنار بندی بہی عورت کے واسطے جایز ہووے حالانکہ گیتا کو ادہیاے
نہم مین عورت اور ویش اور شودر کو پاپ یونی کہا ہے جواب بلا شبہ عورت کے لئے
یگیوپویت جایز ہے اور بہارت ورش تک اوسپر عمل رہا ہے من بعد غفلت و ناواقفی سے متروک
کر بیٹہے ہین آجتک اوسی مدہوشی مین پڑے ہین چنانچہ ہاریت رشی کی سمرتی مین ہے۔

द्विविधा स्त्रियो ब्रह्मवादिन्यो सद्योवध्वश्च तत्र ब्रह्मवादिनी
नामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे भैक्ष्यचर्य्येति स
द्योवधूनामुपनयनं कृत्वा विवाहः कार्य्य इति ॥

ستھان پرمان سے ثابت ہے کہ واو بمعنی واسطے کے ہے اور عربی مین واسطے
کے لئے لام مستعمل ہے لہذا ہم کہہ سکتے ہین کہ قران کے اول مین (الم) ترجمہ
اوم ہے - مہابھارت کے موکش دہرم کے ادہیاے ۵۴۱ مین ہے کہ ایک
عورت سلبھا نام سنیاسنی جو کہ پردہان نام راج رشی کے خاندان مین تھی موکش
کے دہرمون مین راجا جنک کا امتحان کرنے کے لئے اوسکے پاس گئی برہم ودیا
کے مباحثہ مین راجا پر غالب آئی اور آخر کار اوسکو تتو کا اوپدیش کیا مہابھارت مین
اس مضمون کا شروع شلوک ہذا سے ہے -

अत्राप्युदाहरंतीममितिहासं पुरातनं जनकस्य च संवादं सुल
भायाश्चभारत ॥१॥

غرض یہ ہے کہ راجا یدہشٹہر نے بہشم پتامہ سے سوال کیا تہا کہ گرہستہا شرم کے
بغیر ترک کیے ہوئے بہی کسی نے موکش حاصل کی ہے اس مطلب کی تشریح کیجے
اسواسطے بہیشم نے راجا جنک اور سلبھا عورت کے مباحثہ کی تفسیر کی یہان سے
ثابت ہے کہ وہ وید اور اونپشد سے بخوبی واقف تہی وگرنہ اوسنے برہم ودیا مین
راجا سے کسطرح بحث کی اور کیونکر اوسکو تتو کا اوپدیش کیا یہہ کام وید خوان اور اونپشد
دان کا ہے دوسرے کا ہرگز نہین اور سلبھا کی کتہا سے یہ بہی ثابت ہے کہ عورت کو سنیاس
کا بہی ادہکار ہے کہ وہ سنیاسنی تہی اگر عورت کے لئے سنیاس کا حکم نہین ہے تو
اوسوقت کے سنیاسیون نے اوسکو کسواسطے سنیاس دیا تہا پہر شانتی پرب کے
راج دہرم کے ادہیاے اٹھارہوین مین ہے کہ جسوقت راجا جنک سنیاسی ہونے
پر آمادہ ہوا تو اوسکی عورت نے راجا سے موکش دہرمون مین مباحثہ کر کے اوس ارادہ
سے راجا کو باز رکہا اگر وہ عورت وید اور اونپشد نہ پڑہی تہی تو اوس نے موکش

ان دونون مین سے میتری برہم بادنی تہی فقط اب غور کرو کہ لغت سنسکرت مین لفظ
برہم کے دو معنی ہین ایک وید دوسرے پرماتما پس برہم بادنی کے معنی ہوے وید کی
کہنے والی یا پرماتما کی کہنے والی بر تقدیر اول ہمارا مطلب بخوبی حاصل ہے کہ یاگیو
لکیہ کی ایک زوجہ جسکا نام میتری ہے وید کا بیاکہیان دینے والی اور اوپدیش کرنے
والی تہی غرض یہہ ہے کہ وید کا پڑہنا تو ایک جانب رہا وہ وید کی پڑہانے والی اور
سنانے والی تہی اگر پڑہنے ہی پر منحصر ہے تو پڑہانا بدون پڑہنے کے ناممکن ہے
کیونکہ جو کوئی پڑہیگا وہی پڑہائیگا پس پڑہنا خود ثابت ہوگیا حاصل تقریر یہہ ہے
کہ برہدارنہ اوپنشد سے جو کہ یجر وید کے براہمن شت پتہہ کا ایک پارہ ہے واضح و آشکارا
ہے کہ یاگیولکیہ رشی کی عورت خود وید پڑہی تہی اور دوسرون کو پڑہاتی تہی بر تقدیر
دوم بہی ہمارا مقصود کہین نہین گیا ہے کہ پرماتما کی ذات و صفات کا بیان کرنا اور
بیاکہیان دینا بغیر علم وید کے ممتنع و محال ہے کیونکہ وید اور اوپنشدین مین کما حقہ پرماتما
کی تفسیر و تشریح ہے دوسری کتاب مین ہرگز نہین اگر کسی کتاب مین کوئی بات آگئی
ہے تو وہ وید سے ماخوذ ہے جیسے قران کے اول مین الم ہے اگرچہ اسوقت کے مسلمانون
کو مطلق خبر نہین ہے کہ ان حروف سے کیا غرض ہے اسواسطے اونکو متشابہات
مین داخل کر کے کہتے ہین کہ انکے معنی خدا ہی جانتا ہے ولیکن ہماری دانست مین
ان حروف سے اوم مراد ہے کیونکہ اوم (الف و میم و واو) ان تین حروف سے
مرکب ہے الف سے مراد پرماتما ہے اور میم سے مقصود جیو ہے اور واو بمعنی واسطے
کے ہے کہ پرماتما اور جیو کے درمیان جو تعلق ہے اوسکو ظاہر کرتا ہے یعنی جیو واسطے
پرماتما کے ہے یعنی اوسکی اوپاسنا اور عبادت کے لئے ہے یہہ ہی اوم کے معنی ہین
اور بس کسی رسالہ مین اس مضمون کی تشریح کیجاوے گی پس صاحب قران نے الف
و میم کو بجنسہ قایم رکہا مگر واو کا ترجمہ لام کر دیا کیونکہ سنسکرت مین تو رب ہیمان اسکے

کرنے یعنی بیاپک ہونے سے پرش کہتے ہین اور جیو آتما کا نام پرش اس سبب سے ہے کہ پوری یعنی جسم مین نشین کرتا ہے یعنی بود و باش رکہتا ہے دیکہو ویدا اور اوپنشد کی لیاقت و نمیت اور تذکیر و تانیث پر موقوف نہین ہے بلکہ چیت کی شانتی اور شم وغیرہ صفات پر محصور ہے پس جو کوئی کہتا ہے کہ عورت کے لئے وید منع ہے اوسکا کلام تعصب سے خالی نہین ہے اب ہم برہدارنہ اوپنشد کی وے شرتیان نقل کرتے ہین جن کو یاگولکیہ رشی نے گارگی عورت کے واسطے تعلیم کیا تہا۔

एतस्यवाक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्या चन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठत: ॥

یعنی اے گارگی اس لازوال پرمیشور کے حکم مین آفتاب و ماہ رکے ہوئے موجود ہین فقط

एतस्य वाक्षरस्य प्रशासने गार्गि द्यावा पृथिव्यौ विधृते तिष्ठत: ॥

یعنی اے گارگی اس لازوال پرماتما کے حکم مین زمین و آسمان رکے ہوئے موجود ہین فقط

एतस्य वाक्षरस्य प्रशासने गार्गि निमेषा मुहूर्त्ता अहोरात्राण्यर्द्धमासा मासा ऋतवः संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्ति ॥

یعنی اے گارگی اس لازوال پرمیشور کے حکم مین پل مہورت یعنی دو گہری رات دن آدہا مہینا مہینا رتو سال یہ کل رکے ہوئے موجود ہین فقط اس قسم کی بہت شرتیان یاگیولکیہ رشی نے (بچکنو) کی بیٹی گارگی کو اوپدیش کین ہمنے بطور نمونہ کے تین ہی شرتیون پر اکتفا کیا اگر عورت کے لئے وید منع ہوتا تو کیونکر یاگیولکیہ رشی گارگی کو عین وید اور اوپنشد کے مضامین تعلیم کرتے اس سے معلوم ہوا کہ وید کی تعلیم کے سب مستحق ہین بشرطیکہ شانتی وغیرہ رکہتے ہووین یہہ برہدارنہ اوپنشد مین ہے۔

अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्य्ये बभूवतुर्मैत्रेयी च कात्यायनी च तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव ॥

یعنی یاگیولکیہ رشی کے دو زوجہ تہین ایک کا نام میتری ہے اور دوسرے کا نام کاتیاینی

تعلیم کرنا ضروریات و واجبات سے ہے اور جو عورت بلکہ مرد بھی ایسا نہیں ہے اوسکے
لیئے اوپدیش وید اور اوپنشد کا ممنوع ہے اس قسم کے مرد اور عورتون کے لیئے رشی او
منیون کی بنائی سمرتی اور اتہاس وغیرہ پڑہانے مناسب ہین جب تک کہ اونکو اعتقاد
ولیاقت سے بہرہ وری ہووے اسیواسطے منڈک اوپنشد مین لکہا ہے کہ برہم گیان
کے اوپدیش کی لایق وہ شخص ہے کہ جسنے چت کو قابو مین کیا ہووے اور شم رکہتا
ہووے وہ شرتی یہ ہے۔

तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्र
ह्मनिष्ठं ॥१२॥

तस्मैसविद्वानुपसन्नायसम्यक्प्रशान्तचित्तायशमान्वि
ताययेनाक्षरंपुरुषंवेदसत्यंप्रोवाचतांतत्त्वतो ब्रह्मविद्यां
॥१३॥

یعنی برہم گیان کا طالب اپنی حیثیت کی موافق ہاتہہ مین پیشکش و نذر لیکر گورو کے پاس
جاوے کہ وید اور ویدانت پڑہا ہووے اور پرماتما پر پورا اعتقاد رکہتا ہووے وہ برہم کا
جاننے والا گورو نزدیک آئے ہوئے اور پرشانت چت اور شم والے شاگرد
کے لیئے کماحقہ برہم ودیا اور برہم کا گیان اوپدیش کرے جس ودیا اور گیان سے
وہ لازوال برحق پرش جانا جاوے فقط (پرشانت چت) اوسکو کہتے ہین کہ جسنے
انتہ کرن یعنی حواس باطنی کو قابو مین کیا ہووے (شم والا) وہ شخص ہے کہ
جسکے حواس ظاہری بس مین ہودین غرضکہ واسطے تعلیم برہم ودیا اور برہم گیان
کے کہ عین وید اور اوپنشد ہین وہ انسان لایق و سزاوار ہے کہ جس نے حواس باطنی
اور ظاہری کو قابو مین کیا ہووے شنکراچاریہ نے اس شرتی کے بہاشیہ مین
لکہا ہے کہ پرشانت چت وہ شخص ہے کہ جو غرور و تکبر و غصہ وغیرہ صفات ذمیمہ سے
منزہ ہووے پرماتما کو پورن ہونے اور پوری یعنی کل موجودات مین شیین

پہر دیکہو یجروید کے سوتر مین جنکو شروتر سوتر کہتے ہین لکہاہے کہ یگیہ کرنیوالا اپنی عورت کو وید کی پہتک دیکر پڑہوائے جب تک کہ ایسا نہ کریگا اوسکا یگیہ تکمیل کو نہ پہونچیگا وہ سوتر یہ ہے

वेदं पत्न्यै प्रदाय वाचयेत्

یعنی وید اپنی عورت کو دیکر پڑہوادے فقط اب مقام غور ہے کہ اگر عورت کو وید کا اوہکار نہین ہے تو اس حکم کی تعمیل کیونکر ہوگی اس سے جانا گیا کہ وید مرد و زن و براہمن و شودر وغیرہ سب کے لیئے ہے اگر مرد کی تخصیص ہوگی تو تکمیل یگیہ تا ابدالاباد دشوار ہوگی کیونکہ جب تک یگیہ کرنے والا اپنی زوجہ سے وید نہ پڑہوا ویگا اوسکا یگیہ کامل نہ ہوگا پس جنہون نے کہ عورت کے لیئے وید پڑہنے کی ممانعت کی وہ یگیہ مین کہ عبادت خاص ہے خلل انداز ہوئے برہدارنیہ اوپنشد مین ہے کہ ایک عورت گارگی نام بچکنو کی بیٹی نے یاگیولکیہ رشی سے سوال کئے اور یاگیولکیہ نے اوسکے سوالون کے برابر جواب دئے اور وے سوال و جواب خود برہدارنیہ اوپنشد مین منقول ہین اور برہدارنیہ اوپنشد یجر وید کے شتپتہہ براہمن مین داخل ہے اور جو لوگ کہ عورت کے لیئے وید پڑہنے کی ممانعت کرتے ہین اونکی راے مین شتپتہہ براہمن عین وید ہے چنانچہ اون لوگون کا قول ہے کہ

मंत्रब्राह्मणात्मकत्वं वेदत्वं

یعنی سنہتا اور براہمن دونون کا نام وید ہے فقط افسوس ہے ان لوگون کے تعصب اور بے انصافی پر کہ جس صورت مین انکے عقیدہ کی موافق عورت کے سوالات اور اونکے جواب خود وید مین نقل ہین تو کیونکر کہتے ہین کہ عورت کے واسطے وید پڑہنا جایز نہین ہے جبکہ گارگی نے یاگیولکیہ رشی سے سوال کئے تو اونہون نے عین وید اور براہمن اور اوپنشد کے مضمون و مفہوم اوسکو تعلیم دئے اگر عورت کے لیے وید کی ممانعت ہوتی یاگیولکیہ ایسا ہرگز نہ کرتے پس معلوم ہوا کہ عورت کے واسطے بہی وید منع نہین ہے مگر لیاقت و اعتقاد شرط ہے یعنی جو عورت کہ معتقد وید اور اوسکے اوپدیش کی لایق سمجہی جاوے لاکلام اوسکو وید کی

کی صورت مین لفظ (نشادستہ تہہتی) کے وہی معنی ہین کہ جو نشاو اپنی قوم کا سردار ورمئیس ہووے اور اوسکو اوتنے وید کی کہ جسقدر رنگمیہ مین پڑہایا جاوے اجازت دیگئی ہے پس یہہ قول کہ شودر اور عورت کو وید پڑہنے کا اوہکار نہین ہے لایق اعتماد واعتبار نہین ہے سبہا پرب کے اوہیایے پنجانش مین ہے کہ جو کچہ اندر دیوتانے اپنے گوروسے پڑہاتہا بدر اوس سب کو جانتا ہے چنانچہ۔

देवर्षिर्वासवगुरुर्देवराजाय धीमते यत्प्राह शास्त्रं भगवान्
बृहस्पतिरुदारधीः तद्वेद विदुरः सर्वं सरहस्यं महाकविः ५

یعنی بڑے عقلمند اندر کے گورو دیوتون کے رشی برہسپتی نے جو کچہ شاستر دیوتون کے راجا اندر کو پڑہایا اوس سب کو معہ پوشیدہ باتون کے بڑے پنڈت بدرجی جانتے ہین فقط غرضکہ جو کچہ اندر دیوتانے اپنے گورو برہسپتی سے پڑہا تہا اوس تمام سے بدرجی بھی خبردار تہے حالانکہ بدرجی شودر تہے اگر اندر دیوتا وید اور شاستر پڑہا ہے تو بیشک بدر بھی پڑہا تہا حالانکہ شودر تہا پس جو کوئی کہتا ہے کہ شودر کے لیئے وید کا اوہکار نہین ہے وہ حقیقت حال سے خبردار نہین ہے اسیطرح بن پرب کے اوہیایے دوسو پانچ سے لیکر دوسو پندرہ تک مذکور ہے کہ کوشک رشی دہرم بیادہ کے پاس گیان لینے گیا جو کہ شودر سے بھی نیچ تہا اور دہرم بیادہ نے اوسکو گیان اوپدیش کیا اور درمیان اوپدیش کے دہرم بیادہ نے جابجا وید کی شرتون کے حوالے دیے کہ وید مین ایسا لکہا ہے آخرکار کوشک رشی نے کہا کہ شودر سناتن دہرم سے واقف ہووے یہہ بات دشوار ہے اسواسطے مین تجہکو براہمن جانتا ہون فقط ہم کہتے ہین کہ اگر دہرم بیادہ وید نہ پڑہا تہا تو کیونکر وید کے دہرم کا آچار یہ بن بیٹہا اور کس طرح اوس نے کوشک رشی کو سارے وید کا خلاصہ تعلیم کیا اور کسواسطے کوشک نے اوس کو اپنا گورو تسلیم کیا اس سے یہی لازم آیا کہ وید و دنیا کے سب مستحق ہین

گیان ہی کا ذکر چلا آتا ہے چنانچہ اس سے پہلا یہہ شلوک ہے۔

ज्ञानान्मोक्षोजायते राजसिंह नास्त्यज्ञानादेवमाहुर्नरेन्द्रसम्य
ग्ज्ञानं तत्वतोन्वेषितव्यं येनात्मानं मोक्षयेज्जन्ममृत्योः ८७

یعنی اے راجون مین جوانمرد اور انسانون مین سردار گیان سے موکش ہوتی ہے اگیان سے نہین اسیطرح رشی اور منی کہتے ہین لہذا اصلیت کے ساتھہ گیان کو تلاش کرنا مناسب ہے جسکے وسیلہ سے آتما یعنی جیو جنم لینے اور مرنے سے رہائی پاسے فقط مخفی نرہے کہ شلوک مذکورۂ بالا مین لفظ نیچ سے مراد چانڈال ہے پس جبکہ چانڈال سے بھی گیان لینے کا حکم ہے تو خود ثابت ہوگیا کہ سب کو وید پڑھنے بلکہ پڑھانے کا بھی ادھکار ہے اگرچہ چانڈال وغیرہ وید اور اوپنشد نہ پڑہینگے تو وے دوسرون کو کیونکر آتم گیان کا اوپدیش کرین گے اور آتم گیان وید اور اوپنشد کے سواے دوسری جگہہ سے اصلا حاصل نہین ہوسکتا پس اکثر لوگ جو کہتے ہین کہ عورت اور شودر وغیرہ کو وید منع ہے وہ محض غلط ہے کیونکہ نشاد کے لئے کہ چانڈال کی قسم سے ہے رگ وید کے براہمن کی شرتی مین وید کا ادہکار لکہا ہے وہ شرتی یہہ ہے۔۔

॥ निषादस्थपतिं याजयेत् ॥

یعنی اوس نشاد کو کہ جو اپنی قوم کا رئیس و سردار ہووے یگیہ کرانا چاہئے فقط او یگیہ وہی کرسکتا ہے کہ جو وید پڑہا ہووے کیونکہ یگیہ کرنے کے وقت وید کی بعض شرتیون کی تلاوت واجبات سے ہے لہذا بدون وید پاٹھہ کے یگیہ کرنا ناممکن ہے اگرچہ شرتی مذکورہ کے یہہ معنی بھی ہوسکتے ہین کہ نشادون کے سردار و رئیس کو کہ دو جاتیون مین سے ہووے یگیہ کرانا چاہئے اور یہہ معنی اوس صورت مین ہین کہ لفظ (نشاد ستھپتی) تتپورش سماس تسلیم کیا جاوے مگر نیاے شاستر کے بڑے بڑے آچاریون نے تتپورش سماس کو رد کرکے (کرم دہاریہ) سماس ہی اختیار کیا ہے اور (کرم دہاریہ) سماس

ٹہیرایا ہے کہ جو جو پدارتھہ پرمیشور سے پرکاشت ہوئے ہین سو سو سب کے اوپکار کے لئے ہین) وہ محض غلط ہے کہ بہت سی مخلوق ایسی ہین کہ اون سے کسی کا فایدہ متصور نہین ہے بلکہ اکثر جاندار کے حق مین باعث نقصان وزیان ہین جیسے شیر و گرگ وغیرہ اب سوامی جی اور اونکے پیرو لوگ جواب دیوین کہ شیر کس کے لئے فائدہ مند ہے اور گرگ سے کون خرسند ہے چونکہ ہمارا اعتقاد یہہ ہے کہ وید کا سب کے لئے ادہکار ہے لہذا دیانند سرسوتی کے رد مین زیادہ گفتگو نہین کرتے مطلب اصلی کی طرف متوجہ ہوتے ہین منوسمرتی کے دوسرے ادہیاے مین ہے ۔

अन्त्यादपि परं धर्मं

یعنی پرم دہرم کو چانڈال سے بھی سیکھہ لے فقط پرم دہرم سے مراد مکتی کا اوپای آتم گیان ہے اور آتم گیان وید اور اوپنشد سے ہی ہوسکتا ہے دوسری کتاب سے ہرگز نہین پس جبتک کہ چانڈال وید اور اوپنشد کو نہ پڑہیگا تو آتم گیان سے کسطرح بہرہ ور ہوگا اور براہمن وغیرہ دوسرا شخص اوس سے کیونکر آتم گیان کا اوپدیش لے سکیگا۔ اس سے جانا گیا کہ چانڈال تک کو بھی وید اور اوپنشد کا ادہکار ہے شودر وغیرہ کا تو کیا ذکر ہے یہہ ہی مطلب شانتی پرب کے ادہیاے ایک سو چوالیس مین ہے ۔

प्राप्यं ज्ञानं ब्राह्मणात् क्षत्रियाद्वा वैश्याच्छूद्रादपि नीचादभीक्ष्णं श्रद्धातव्यं श्रद्दधानेन नित्यं न श्रद्धिनं जन्ममृत्यू विशेतां ॥ ८८ ॥

یعنی براہمن و کشتریہ و ویشیہ و شودر اور نیچ سے بھی گیان پاکر شردہا والے کو چاہئے کہ گیان مین شردہا کرنی چاہئے کہ شردہا کرنے والے پر جنم لینا اور مرنا تصرف نہین کرتے یعنی جو کوئی گیان مین شردہا کرتا ہے وہ نہ جنم لیتا ہے نہ مرتا ہے یعنی وہ اجر اور امر ہے ایسا گیان سواے آتم گیان کے نہین ہوسکتا لہذا یہان گیان سے آتم گیان مراد ہے کیونکہ شانتی پرب مین جہان یہہ شلوک واقع ہے وہان اوپر سے موکش کے ذریعہ آتم

لفظ (یا رن) کہ سنسکرت مین غیر مرکب مستعمل ہے اوسکے معنی اتی شودر کے نہین ہین بلکہ لوگون کی صفت وثنا بیان کرکے اوقات بسر کرنے والے کو کہتے ہین جیسے بہاٹ وغیرہ دیانند سرسوتی سے اس شرتی کی معنی مین اور بہی چند غلطیان سرزد ہوئی ہین تفصیل اونکی کسی مقام پر کیجاویگی اب چاہئے جاننا کہ لفظ (رانا می) کے بعد کلمہ (تتہا) محذوف ہے کہ زبان سنسکرت مین قاعدہ ہے کہ اگر کہین لفظ (یتہا) واقع ہووے تو اوسکے مقابلہ مین (تتہا) بہی بالضرور آتا ہے خواہ لفظاً ہووے خواہ معنیً یہان لفظاً نہین ہے تا معنی مین ملحوظ ہے لفظ (دکشنا) مین جیتر ہی شتتی کے ارتہہ مین ہے اور لفظ (دانو) اگرچہ مفرد ہے مگر اوس سے دینیوالون کی جماعت مراد ہے یہہ ساری باتین ہمنے متقدمین کی تحقیقات سے نقل کی ہین دیانند سرسوتی کو کچہہ بہی معلوم نہین کہ معاملہ کیا ہے اور کونسا لفظ کس معنی مین مستعمل کیا گیا ہے اب ہم شرتی مذکورہ کی تفسیر کا خلاصہ از سر نو پیش کرتے ہین پرماتما کہتا ہے کہ اے لوگو جسطرح مین نے وید کا اوپدیش کیا ہے اوسیطرح تم بہی وید کو پڑہکر براہمن کشتری ویشیہ شودر دوست دشمن وغیرہ کل انسان کو پڑہاؤ اور سناؤ کہ وید ایسی بانی ہے کہ سب ہمیشہ واسطے بہلائیان کرنے والی ہے کسی کے لیے ترجیح وتخصیص نہین ہے پس جو لوگ کہ کہتے ہین کہ تعلیم وید صرف دو تین جاتیون یعنی براہمن کشتری ویشیہ کے لیے ہے دوسرے کیواسطے نہین ہے وے اہل تعصب ہین باقی شرتی کی تفسیر اسطرح پر ہے کہ پرمیشور کہتا ہے کہ جیسے مین وید کا اوپدیش کرکے وید پڑہانے والون اور وید پڑہنے والون کا پیارا ہو رہا ہون ایسے ہی تم لوگ بہی طرفداری چہوڑکر درس وتدریس وید کے ذریعہ سے سب لوگون کے عزیز ہو تاکہ دنیا مین وید رواج پاوے اور سب لوگون کو وید کی ودیا آجاوے اس مسئلہ مین ہمارا اور دیانند سرسوتی کا اتفاق ہے مگر اونہون نے بہو میکا کے صفحہ ۳۱۰ تین سو دس اور گیارہ مین اسی مسئلہ کے بارہ مین جو یہہ کلمہ

کی تخصیص و ترجیح نہین ہے کیونکہ وید پرمیشور کی ستایش وگیان ہے اور پرمیشور کے گیان
و تمام مین سب کو اوپکار ہے کہ کل لوگ دنیا و عقبی مین بہلائی حاصل کرنے کے لیے کوشش کرین
اور پرمیشور کو جانکر اپنے دہرم و کرم مین مشغول رہین چنانچہ یجروید[26] کے چہبیسوین ادہیاے
کی دوسری شرتی ہے ۔

यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्यः ब्रह्मराज न्याभ्यां
शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय प्रियोदेवानां दक्षिणा
यैदातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादोनमतु
॥२॥

یعنی پرماتما کہتا ہے کہ جیسے یہہ کلیان کرنے والی بانی یعنی وید اقدس سب لوگون کے
لیے مین کہتا ہون براہمن اور کشتریون کے لئے اور شودر کے لیے اور ویشیہ کے لیے
اور اپنے لیے یعنی جو لوگ کہ پرمیشور کو دوست رکہتے ہین اونکے لیے اور دشمن کے
لیے یعنی جو لوگ کہ پرمیشور کے احکام کی مخالفت پر آمادہ ہین اونکے لیے ویسے ہی یہان
یعنی دنیا کے درمیان دیوتون یعنی وید کے پڑہانے والون کا مین عزیز ہوتا ہون اور
دکشنا دینیوالون کا یعنی جو لوگ کہ وید پڑہتے ہین اور دہن اور دولت سے گورو کی خدمت
کرتے ہین اونکا بہی مین پیارا ہوتا ہون یعنی وید پڑہانے والے اور پڑہنے والے دونون
مجہہ سے محبت کرتے ہین اسبارہ مین کوشش کرو کہ میرا یہہ مطلب ترقی پکڑے اور سارا
جگت مجہسے محبت کرے فقط اب مخفی نہ رہے کہ اس شرتی مین لفظ (چارنائچ) مین چکار
عطف کے لیے یعنی اور کے معنی مین ہے اور لفظ (آرن) بمعنی دشمن ہے کہ اسمین
الف واسطے نفی کے ہے اور (رن) بمعنی آواز ہے اور مراد اوس سے گفتگو ہے یعنی
ایسا شخص کہ جسکے ساتہہ گفتگو ترک کی گئی ہووے مراد اوس سے دشمن ہے پس ویانند
سرسوتی نے جو (چارن) بمعنی اتی شودر ایک لفظ قرار دیا ہے وہ اونکی غلطی ہے کہ
یہان چارن ایک لفظ نہین ہے بلکہ مرکب ہے جیم فارسی اور (آرن) سے اور جو

محض ہے اگر کوئی کہے کہ پرماتما بیکنٹھ مین بیٹھا ہے یا آسمانون کے درمیان عرش پر جلوہ گر ہے مگر اوسکی شکتی اور قدرت کل جگہہ موجود و مہیا ہے اپنے ید قدرت سے سارے کام کرتا ہے اسکی کیا ضرورت ہے کہ خود پرماتما بذات خود کامون مین پرورت اور مشغول ہووے ایسا کونسا کام ہے کہ جسکو پرماتما اپنی جگہہ بیٹھا ہوا اپنے دست قدرت سے نہین کرسکتا تو جواب یہہ ہے کہ قدرت گن اور عرض ہے اور پرماتما درویہ اور جوہر ہے یعنی پرماتما بذات خود قایم ہے اور قدرت قایم بالغیر ہے پس فقط قدرت ہر مقام پر حاوی نہین ہوسکتی کہ بغیر ذات کے اوسکا انتقال ممتنع و محال ہے کسواسطے کہ عرض اور گن اپنے جوہر اور درویہ سے علیحدگی ہرگز نہین اختیار کرسکتا پس ممکن نہین ہے کہ قدرت بدون صاحب قدرت کے آمد و شد کرسکے جبکہ تنہا قدرت کا انتقال عقل کے خلاف ہے تو پرماتما بیکنٹھ وغیرہ مین بیٹھا ہوا اپنے دست قدرت سے سب جگہہ سارے کام نہین کرسکتا بلکہ بیکنٹھ وغیرہ ہی کا انتظام اوس سے ممکن ہے اگر کوئی پیرو پران یا تابع موسی و سلیمان یا کرسٹان یا مسلمان کہے کہ بعضے گن اور عرض ایسے بھی ہین کہ بغیر جوہر کے انتقال کرسکتے ہین جیسے ہر چند چراغ و آفتاب و ماہ وغیرہ ایک جگہہ قایم رہتے ہین و لیکن انکی روشنی دور تک پہیلتی ہے تو جواب یہہ ہے کہ روشنی اور پربھا عرض و گن نہین ہے بلکہ جوہر اور درویہ ہے اسی لئے چراغ و آفتاب کی روشنی مین گرمی محسوس ہوتی ہے اور ماہ وغیرہ کی چاندنی مین خنکی پائی جاتی ہے کیونکہ گن مین گن نہین رہتا اور عرض مین عرض نہین ورنہ تسلسل اور الوست تہا تسلیم کرنی پڑے گی اور یہہ جملہ عقلا کے خلاف ہے یہانتک قدامت وید مین گفتگو ہوئی اور دیانند سرسوتی کی جہوٹی تفسیر کی تکذیب تو بکو ہوئی اب اسبات کا بیان ہے کہ وید کی تعلیم کس کے لئے جایز ہے ہم کو ثابت ہوا ہے کہ کل مرد و زن و دیوتا اور دیتہ وغیرہ کے واسطے وید پڑہنا چاہئے البتہ شرط اور اعتقاد شرط ہے غرض آنکہ جو کوئی معتقد وید ہووے اوسکو وید کا پڑہنا روا ہے کسی قوم کے لئے وید خوانی

اور جبکہ کسی چیز کے اجزا الگ الگ ہوتے ہین تو وہ نظر سے غائب ہوتی ہے کہ اوسکی
کثافت و سطبری یا یہ لطافت و باریکی کو پہونچ جاتی ہے اس سے معلوم ہوا کہ حالت
سطبری و غلاظت کا نام اوتپتی اور آفرینش ہے اور حالت لطافت و باریکی کو فنا اور ناش کہتے ہین جو
چیز کہ پیدا ہو کر غائب ہو جاتی ہے اوسی کو غیر قدیم کہتے ہین جو کوئی اس پیدائش
اور فنا سے بری ہے وہ قدیم اور نتیہ ہے از روے دلائل عقلی و نقلی کے اکثر پدارتھہ
نتیہ اور قدیم ہین جیسے پرماتما اور جیوا ور پرکرتی وغیرہ کسی جگہہ یہ مطلب تفصیلوار
مرقوم ہوگا اب چاہیے جاننا کہ جو پدارتھہ اجزاے کے ملنے سے وجود پکڑتا ہے اوسکو
سنسکرت مین کاریہ کہتے ہین اور جتنے کاریہ ہین اونکا کرتا یعنی فاعل ضرور ہوتا ہے
اجزاے لایتجزی کے ملانے اور اونکے الگ کرنے پر ایک پرماتماہی قادر ہے دوسرا
کوئی نہین ہے کیونکہ جو شے انکے ملنے سے پیدا ہوتی ہے وہ اونکے ملانے کی اور
جدا کرنے کی اصلا طاقت نہین رکھتی لہذا انسان و جن وغیرہ کو پرکرتی اور پرمانو
کے سنیوگ اور بہوگ کرنے کی ہرگز تاب و توان نہین ہے کیونکہ جن و انسان خود
پرمانون کے سنیوگ سے موجود ہوئے ہین اور اجزاے لایتجزی و جوہر فرد کے درمیان
ترکیب دینے والا اور پراگندگی لانے والا اونکی بہ نسبت لطیف تر ہونا چاہیے
مثلاً چونکہ پانی مٹی کی بہ نسبت لطیف تر ہے اسواسطے اوسکے اجزا مین داخل ہو کر
اونکا سنیوگ اور بہوگ کر سکتا ہے اسیطرح آگ چونکہ بہ نسبت آہن وغیرہ کے
سوکشم ہے اونکے اندر دخول کرکے آمیختگی اور پراگندگی اجزا پر قادر ہے چونکہ
پرماتما پرکرتی اور پرمانو کی بہ نسبت سوکشم تر اور لطیف تر ہے لہذا اونکے سنیوگ
اور بہوگ پر وہی قدرت رکھتا ہے دوسرے کی مجال نہین ہے کہ ایسا کر سکے
اسیواسطے پرماتما کو کل مخلوق کا خالق اور کرتا کہتے ہین معدوم محض کو وجود مین
لانا اور موجود کو معدوم مطلق کرنا محالات سے ہے اور جو کچھ محال ہے وہ باطل

پیدائش ہے یہ ہرگز نہین ہے کہ عناصر اول مین معدوم محض تھے عدم سے وجود
مین آئے ہین اگر اوس حالت لطافت کا نام جو کہ اول مین ہر ایک چیز کی ہوتی ہے عدم
رکھا جاوے تو ہم کو اوس سے کچھ انکار نہین ہے غرضکہ تبدیل صورت و ہیئت ہی کو
اوتپتی اور آفرینش کہتے ہین جو چیز کہ بالکل معدوم ہے اوسکا ظہور پکڑنا تو خلاف دانشمندی
ہے جیسے انسان کے سینگ اور عقیمہ کا بیٹا اور مانند انکی کیونکہ انسان کے سینگ محض
باطل ہین کسی وقت نہین ہوئے نہ ہونگے عقیمہ کے بیٹے کا بھی یہہ ہی حال ہے کہ معدوم
محض ہے کسواسطے کہ اگر اوسکے بیٹا ہوتا تو عقیمہ کیونکر ہوتی اسی قسم کی اور بھی اکثر اشیا
ہین کہ باطل مطلق ہین جیسے ریتی کا سانپ اور مرگ ترشنا کا پانی حاصل اس تمہید کا
یہ ہے کہ آفرینش و فطرت کسی چیز کی اسکے سواے نہین ہے کہ اجزاے لایتجزی حالت
کثیف حاصل کرتے ہین اب چاہیے جاننا کہ فنا اور ناش ہونا اشیا کا کیا ہے بالضرور اور
بالیقین حالت کثافت و سطبری کو چھوڑ کر حالت لطیف و باریک کو پہنچنا ہے جیسے کپڑے
کا تھان اگر جلایا جاوے تو لاجرم اوسکے اجزا باقی رہینگے گو نظر نہ آوین نظر نہ آنے ہی کو
سنسکرت مین ناش کہتے ہین اور یہ لفظ (نش اورشنی و ہاتو) یعنی مصادر سے مشتق
ہوتا ہے غرض اس سے یہ ہے کہ معدوم محض کوئی چیز نہین ہوتی صرف حالت لطیف کو
پہونچنے کا نام ناش و فنا ہے جسوقت مٹی کے پیالہ کو توڑ کر اوسکے ٹکڑون کو باریک
پیسکر اوڑا دوگے تو وے کہین نہ کہین رہینگے یہ ہرگز نہین ہے کہ معدوم محض ہوجاوین
جو لوگ کہ اوتپتی اور ناش کی کیفیت سے واقف ہین وے بخوبی جانتے ہین کہ پیدا ہونے
والی اور ناش ہونے والی چیزون مین سے نہ کوئی اول مین معدوم محض تھی اور نہ
کوئی آخر مین معدوم محض ہوگی بلکہ حالت کثیف اور لطیف کو پہنچنا ہی اوتپتی اور ناش
کے ساتھ تعبیر کیا جاتا ہے اب پوشیدہ نرہے کہ جس وقت اجزاے لایتجزی کی ترکیب
سے کوئی چیز حادث ہوتی ہے تو نظر آتی ہے کہ سطبری و غلاظت سے اوسکو چارہ نہین ہے

کی ستایش وثنا مین کہا ہے۔

न्यग्रोधः सुमहानल्पे यथा बीजेऽव्यवस्थितः संयमे विश्व मखिलं बीज भूते तथात्वयि १

یعنی جیسے پیپل کا درخت بلند اپنے خرد بیج مین موجود رہتا ہے ایسے ہی پرلے کال مین سارا جگت بیج کے قایم مقام پرماتما مین مہیا ہوتا ہے فقط مقصود یہ ہے کہ جتنی چیزین پیدا ہوئی ہین اون مین سے معدوم محض کوئی نہی بلکہ کل کی اول مین حالت لطیف تہی وہی حالت لطافت ساتہ عدم کے تعبیر کیجاتی تہی معدوم محض کا وجود پکڑنا اور ظہور کرنا تو ناممکن ومحال ہے چنانچہ کسی بزرگ سے کہا ہے۔

यथोदपान खनन नाद्वीयते न जलांतरं सदेव नीयते व्यक्ति मसतः संभवः कुतः १

یعنی جیسے کنوان کہودنے سے وہی پانی برآمد ہوتا ہے کہ جو موجود تہا دوسرا نہین نکلتا کیونکہ جو معدوم محض ہے اوسکا توکسیطرح پر موجود ہونا ممکن ہی نہین ہے فقط گیتا کی دوسرے ادہیاے مین ہے۔

नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः

یعنی معدوم محض کا موجود ہونا ہہین ہو سکتا اور موجود کا معدوم مطلق ہونا ہی محال ہے فقط پس کسی چیز کا پیدا ہونا یہہ ہی ہے کہ بہت سے اجزا ملکر ایک صورت کثیف پکڑ لیتے ہین مثلاً کپڑا کیا چیز ہے سواے اسکے کچہ نہین ہے کہ بہت سے تارون نے ملکر ایک صورت کثیف اختیار کی ہے یہہ ہی کپڑے کی پیدایش ہے اور بس یہ ہرگز نہین ہے کہ اول مین کپڑا معدوم مطلق تہا اور پہر موجود ہوگیا بلکہ اوسکے مادہ یعنی تارون مین یہ ہیئت مجموعی صورت لطیف اور باریک کے ساتہہ اول ہی موجود تہی تارون کے ملتے ہی ظاہر ہوگئی اسیطرح سے عناصر کی فطرت اور آفرینش ہے مثلاً زمین کیا چیز ہے بہت سے اجزاے لایتجزی نے ملکر ایک صورت پکڑلی ہے اسی قیاس پر پانی وغیرہ کی

کلیہ سے لازم آتا ہے کہ حادث اور جھوٹ کا وجود ہی نہین ہے بلکہ کل کے لیے قدامت
اور راستی لازم ہے پس وید کے واسطے کسیطرح کی تخصیص ثابت نہوئی اگر اس
صورت مین سوامی جی کہین کہ وید کے سواے کوئی چیز پرمیشور کے گیان مین سدا نہین
رہتی تو محض غلط ہے کہ پرماتما کی عالم الغیبی و ہمہ دانی مین نقصان آتا ہے کہ وہ خس
و خاشاک اور جھوٹ دروغ وغیرہ اشیا کو ہر وقت نہین جانتا بلکہ کسی وقت جانتا ہے اور کسی وقت نہین
جانتا کیونکہ اشیاے مذکورہ ہر وقت اوسکے گیان مین نہین رہتی ہین پس وہ نہ
عالم الغیب ہے اور نہ ہمہ دان غرضکہ سوامی جی نے جسقدر دلائل وید کی قدامت اور بحالی
مین لکھے ہین اون تمام سے وید کی حقارت ثابت ہے اب مخفی نرہے کہ جس صورت
مین ہم وید کو بدلائل عقلی پرمیشور کا کلام ثابت کر چکے اور مخالفین کو از آغاز تا انجام ساکت
تو وید کے قدیم اور برحق ہونے مین کیا شک ہے کیونکہ کلام صفات مین داخل ہے
اور یہہ بات عقلاے زمان کی مسلمہ ہے کہ قدیم کی صفتین قدیم ہوتی ہین اور حادث
کی صفات حادث جبکہ پرماتما کی کل صفات برحق و قدیم ہین تو بالضرور اوسکا کلام بھی
برحق و قدیم ہی ہوگا وید کے قدیم و برحق ہونے مین یہ ہی دلیل کافی ہے کہ جسکی ذات
قدیم ہے اوسکی صفات بھی قدیم ہین اور جسکی ذات حادث ہے اوسکی صفات بھی حادث
ہین اگر کوئی قدیم کی صفات کو حادث قرار دے تو غلط ہے کہ قدیم محل حوادثات
نہین ہوسکتا اسیطرح حادث کے محل کا قدیم ہونا ناممکن و محال ہے اب آریہ بھائیون
کی راے بیضا ضیاء پر واضح ہووے کہ قدیم اوسکو کہتے ہین کہ حدوث و فنا سے مبرا
ہووے یعنی نہ پیدا ہووے اور نہ فنا قبول کرے بلکہ دائم قایم رہے پیدا ہونے سے ہماری
غرض حالت کثافت و سطبری کو پہنچنا ہے مثلاً پیپل کا درخت اپنے تخم مین مع شاخ و برگ
و پھول و پھل کے اول ہی موجود و مہیا ہوتا ہے پس اوسکی پیدایش و فطرت یہ ہی ہے
کہ حالت لطافت کو چھوڑ کر حالت کثافت اختیار کرے چنانچہ پراشر رشی نے پرماتما

مین خس و خاشاک و زمین و افلاک و انسان و جان سب ہی قدیم ہین کہ کل کی اصل پرمیشور
سے ہے پرماتما کے بغیر کوئی چیز نہین ہے ہر ایک شے و مبدم پرماتما کی محتاج ہے کہ وہ
مبداے کل اشیا ہے پس وید کی کیا خصوصیت ثابت ہوئی کہ جسطرح تمام چیز کی اصل
پرمیشور سے ہے اسیطرح بقول دیانند سرسوتی کے وید کی اصل پرمیشور ہی سے قرار پائی
لہذا وید بھی دیانند سرسوتی کے نزدیک خس و خاشاک وغیرہ کی مانند ناچیز ٹہیرا قدامت
اور ازلیت ویدکا تو کیا ذکر ہو سوامی جی نے خوب وید کی حمایت کی کہ جس سے علانیہ اہانت
نکلی اسی قسم کی سوامی جی نے دو تین یکتی اور وید کی قدامت مین لکھی ہین جن سے
مذمت وید برآمد ہوتی ہے اسواسطے طبیعت حق طویت اونکی نقل او تکذیب سے کشیدہ
ہے کہ خاطر سامعین اونکے استماع سے رنجیدہ ہے اب ہم وہ فقرہ نقل کرکے رد کرتے ہین
جسکو دیانند سرسوتی نے سب دلائل کے آخر مین لکھا ہے اور کل لب لباب سمجھا ہے۔
سوامی جی پرمیشور کے گیان مین ویدون کو سدا موجود رہنے سے سچے ارتھہ والا
اور نتیجہ سب لوگون کو ماننا مناسب ہے صفحہ ۳۹ اور ۴۱ بہومیکا کے آخر مین دیکھو
جواب اگر پرمیشور کے علم مین ہمیشہ موجود رہنا ہی قدامت اور سچائی کا سبب ہے تو تمام
اشیا اچھی اور بری قدیم و سچی ہووین کہ دائما پرماتما کے گیان مین موجود رہیا ہین
یعنی جو کچھہ ازل سے ابد تک وجود پکڑے گا وہ ابداً پرمیشور کے علم مین موجود ہے یعنی
اوسکا علم ہمیشہ کل ذرات پر حاوی ہے ایسا ایک ذرہ بھی نہین ہے جسپر ہر وقت
پرماتما کا گیان محیط نہووے ع ذرہ نیست در زمین و زمان ٭ کہ نہ علمش بود محیط
بآن ٭ اس صورت مین اگر پرمیشور کے علم مین سدا موجود رہنا ہی قدامت کا باعث
ہے تو کوئی غیر حادث نہین ہے سب قدیم ہین پس وید کی کیا خصوصیت ہے اسیطرح
اگر پرمیشور کے گیان مین ہمیشہ مہیا رہنا ہی سچائی کا کارن ہے تو جھوٹون کا جھوٹ
بھی سچ ہی ہووے کہ اوسپر پرماتما کا گیان سدا احاطہ کر رہا ہے بلکہ سوامی جی کو اس

بہی تقدیم وتاخیر ہوگی جملون اور فقرون کی تقدیم وتاخیر کا تو کیا ذکر ہے جس قسم کی قدامت
کہ آریہ لوگ وید مین تسلیم کرتے ہین وہ خود وید سے ثابت ہے یجروید کا چالیسوان
ادہیاے دیکہو۔

स्वयंभूर्याथातथ्यतो र्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः

یعنی پرماتما ہر ایک سرشٹی کی شروع مین اپنی برابر چلی آنیوالی دیوتا وغیرہ مخلوقات کے لئے
وید کے ذریعہ سے ایک ہی انداز پر ارتہون کا اوپدیش کرتا ہے فقط اب مخفی نرہے کہ
یہانتک ہمنے اون شرتی اور سوترون کے معنی اصلی لکہے جنکو دیانند سرسوتی نے
اپنی خواہش کی موافق درہم برہم کیا تہا اسکے بعد سوامی جی نے دو تین دلیل عقلی بہی
وید کی قدامت مین تحریر کی ہین حالانکہ اونکو وید کے قدیم ہونے سے اصلا علاقہ نہین ہے بلکہ
دیانند سرسوتی کے مدعا کے برعکس وے حدوث وید پر قایم ہین یہہ ساری سوامی جی کی
دانائی اور پانڈتہ کی خوبی ہے اب ہم اون مین سے ایک دلیل نقل کرکے حوالہ قلم حق
رقم کرتے ہین سوامی جی جیسے شاستر کے پرمانون سے وید نتیہ ہین ویسے ہی یکتی یعنی
دلیل عقلی سے بہی اونکا نتیہ ہونا ثابت ہوتا ہے کیونکہ عدم سے وجود کا ہونا ہرگز نہین
ہوسکتا ایسے ہی وجود کا عدم بہی اصلا نہین ہوسکتا جو ستیہ ہے اوسی سے آگے
پرورتی بہی ہوسکتی ہے اور جو چیز ہی نہین اوس سے دوسری چیز کسیطرح نہین ہوسکتی اس قاعدہ
سے بہی ویدون کو قدیم ہی ماننا ٹہیک ہے کیونکہ جسکی اصل ہی نہین ہوتی اوس کی
شاخ وبرگ وشگوفہ وغیرہ کبہی نہین ہوسکتی اسیطرح جب پرمیشور مین بے انتہا ودیا رہتی
ہے تب ہی لوگون کو ودیا کا اوپدیش بہی کیا ہے اور جو پرمیشور مین بے انتہا ودیا نہو
تو وہ اوپدیش کسطرح کر سکتا اور جگت کو بہی کسطرح بنا سکتا کیونکہ دنیا مین بے اصل کا
ہونا اور بڑہنا غیر ممکن ہے اس سے یہ جانا گیا کہ پرمیشور سے وید ودیا کی اصل ہے
جواب اگر یہہ ہی قدامت وید کی سوامی جی کے پاس دلیل عقلی ہے تو اونکی راے

پہلے سوتر کے معنی ٹھیک نہین ہوتے کیونکہ اس صورت مین حاصل یہہ ہی ہوگا کہ برہم کے جاننے کے بعد برہم کے جاننے کا ارادہ کرنا چاہئے اور یہہ مہمل ہے کہ جب ایک چیز کو جان لیا اور اوسکا حقہ اوسکا علم ہو گیا پس اوسکے جاننے کا ارادہ کرنا بیمعنی و تحصیل حاصل ہے اسواسطے پہلے سوتر مین جو لفظ اتہہ ہے اوسکے معنی یہ نہین کہ (چار سادہن کے حاصل ہونے کے بعد) بلکہ یہہ معنی ہین کہ (وید وکت کرم کرنیکے بعد) اور یہہ ہی معنی مقتضی مقام ہین کہ یگ وغیرہ کرم کرنیکے بعد ہی پرماتما کے گیان کی شائستگی پیدا ہوتی ہے فقط اب چاہئے جاننا کہ پہلے سوتر کے معنی سمجھنے کے بعد انسان اس کشمکش مین پڑتا ہے کہ برہم کیسا ہی اور اوسکی تعریف کیا ہے لہذا بیاس جی نے ویدانت کا دوسرا سوتر بنایا کہ برہم اوسکو کہتے ہین کہ جو جگت کا خالق اور حافظ اور مالک ہے یعنی اول جگت کو پیدا کرتا ہے پھر قایم رکھتا ہے آخر کار فنا کرتا ہے دوسرے سوتر کے معنی سمجھنے کے بعد انسان کو یہ تلاش ہوتی ہے کہ برہم کی ہستی مین ثبوت کیا ہے آیا شکل منطقی ہے یا اوسکے سوائے کوئی اور دوسرا ثبوت ہے اسواسطے بیاس جی نے تیسرا سوتر بنایا کہ برہم کے ہونے مین وید اور اوپنشد ہی سند ہے انومان اوسکو جیسا کہ چاہئے ثابت نہین کر سکتا ساری تقریر کا حاصل وہی ہے کہ زبان سرسوتی کی مستندہ بیاس جی کے سوتر کو قدامت و حدوث وید سے ہرگز تعلق نہین ہے اس سے ہماری یہ غرض نہین ہے کہ بیاس جی کو قدامت وید سے انکار ہے لاریب وے وید کو قدیم مانتے ہین چنانچہ اونہون نے ویدانت سوتر کے پہلے ادھیائے کے تیسرے پاد مین علانیہ وید کے قدیم ہونے کے ثبوت مین سوتر بنایا ہے جسکی ہم اوپر تفصیل کر چلے مگر قدامت وید کی کیفیت وہی ہے کہ پرماتما انادی کال سے ہر ایک سرشٹی کی ابتدا مین ایک ہی آن پوربی یعنی ترتیب کے ساتھہ وید کو برہما جی کے لئے اوپدیش کرتا چلا آتا ہے اور اسیطرح اننت کال تک اوسی ترتیب کے ساتھہ اوپدیش کرتا رہیگا غرضکہ وید کی شرتیون کی جو ترتیب کہ اب موجود ہے یہہ ہی ازل سے ابد تک رہیگی ایک لفظ کی

کے وہ کسی وقت بنایا گیا ہے تو اوسکے حادث ہونے مین کیا شک ہے اور حادث کے
لیے فنا لازمی و ضروری ہے لہذا شنکراچاریہ اور دیانند سرسوتی کے عقیدہ کی مطابق
کسی روز وید فنا بھی قبول کریگا چونکہ حدوث وید شنکراچاریہ کے مذہب کے مخالف تہا کہ
اونکے عقیدہ مین وید انادی اور ازلی ہے اسواسطے شنکراچاریہ نے سوتر مذکور کے بہاشیہ
مین دیانند سرسوتی کے مستندہ معنی و مطلب سے قطع نظر کرکے سوتر مذکور کے دوسرے معنی
لکھے ہین اور وہ یہہ ہین کہ اس سے پہلے سوتر مین کہا گیا کہ برہم اوسکو کہتے ہین کہ جو
کوئی جگت کی سرشٹی اور پالن و سنہار کرتا ہے اب اگر کہا جاوے کہ اوس برہم کے
ہونے مین کیا پرمان ہے اسواسطے بیاس جی نے تیسرا سوتر اس مضمون کا بنایا کہ برہم
کی ہستی و وجود مین صرف شاستر ہی پرمان ہے اور شاستر سے مراد وید اور اوپنشد ہین
اور یہہ طنز ہے نیاے شاستر کے کرتا گوتم رشی وغیرہ پر کہ وہ پرمیشور کا ہونا انومان
یعنی شکل منطق سے ثابت کرتے ہین اب خیال کرنا چاہیے کہ بیاس جی کے سوتر مذکور کا سچا
ارتہہ یہی ہے وید کی قدامت و حدوث سے اوسکو کچہ تعلق نہین ہے پس ہماری راے
مین تینون سوتر کا آپسمین ربط و ضبط اسطرح پر ہونا چاہیے کہ دنیا جگت کرم کرنے کے
بعد اس سبب سے کہ کرمون کا پہل محدود اور فانی ہے برہم کے جاننے کی فکر کرنی چاہیے
کہ برہم کے گیان کا پہل غیر محدود اور جاودانی ہے جو لوگ کہ اس سوتر کے معنی مین کہتے
ہین کہ چار سادہن کے حاصل ہونے کے بعد ایسا اور ویسا کرنا چاہیے اونکے مطلب کو وہی
جانتے ہونگے ہمارے نزدیک تو اوسکی صحت مین تامل ہے کہ اون چار سادہن مین پہلا
سادہن ستیا ستیہ بیبیک ہے یعنی ستیہ اور استیہ کے درمیان تمیز حاصل کرنا ستیہ
سے مراد برہم ہے اور استیہ سے مراد ماسواے برہم اسیکا نام برہم گیان ہے جبکہ یہہ
گیان حاصل ہوگیا کہ برہم حق ہے اور ماسواے باطل پس اسکے بعد انسان کس برہم
کے جاننے کا ارادہ کرے شاید کہ اون لوگون کی راے مین کوئی دوسرا برہم ہے لہذا

وہ برہم ہے اوسکو پرماتما اور پرمیشور ونارائن و ایشور اور مانند اسکے کہتے ہین
اب چاہئے جاننا کہ جس صورت مین برہم عالم کا خالق ورازق و مالک ہے تو لابد عالم الغیب
وہمہ دان بہی ہوگا کیونکہ بغیر ہمہ دانی وعالم الغیبی کے خلق جہان ممکن نہین ہے اسی عالم الغیبی
وہمہ دانی کے دوبارہ ثابت کرنے کے لئے بیاس جی نے تیسرا سوتر بنایا اور وہ یہ ہے

शास्त्रयोनित्वात् ३

معنی انکے شاستر یعنی وید کا کارن ہونے سے بہی برہم عالم الغیب و دانائے کل ہے
اگر ایسا نہوتا تو وید کو کیونکر بناتا وید کے بنانے پر عالم الغیب و دانائے کل کے سوائے
کوئی قادر نہین ہو سکتا کہ وید ساری ودیاؤن کی اصل ہے برین تقدیر اس سوتر
مین لفظ شاستر سے وید مراد لیا جاویگا اور یہ ممکن ہے کیونکہ شاستر کہتے ہین ہت
یعنی فایدہ دنیا وآخرت کے جتلانے والی کتاب کو سو وید ایسا ہی ہے لہذا اوسکو
شاستر کہنا مناسب ہے بیاکرن والے لفظ شاستر سے معنی مذکور اسطرح پر نکالتے ہین

शिष्यतेऽनेन हितं तच्छास्त्रं

یعنی جس کتاب کے ذریعے سے فایدہ دنیا وآخرت کی ہدایت کیجاوے وہ شاستر ہے
اسیواسطے کسی نے کہا ہے۔

प्रवृत्तिश्च निवृत्तिश्च पुंसां येनोपदिश्यते तद्धर्माश्चोपदिश्यन्ते शास्त्रं शास्त्रविदो विदुः

یعنی جس سے لوگون کو امرونہی کی ہدایت کیجاتی ہے اور اونکے دہرم کی تعلیم دیجاتی ہے
اوسکو شاستر کے جاننے والے شاستر کہتے ہین فقط اب مخفی نرہے کہ دیانند سرسوتی کا مستند
بیاس جی کا سوتر اسبارہ مین ٹہیرا کہ پرماتما عالم الغیب و دانائے آغاز و انجام ہے
اور وید اوسکا کلام ہے پس سوتر مذکور مین قدامت وید کا کچہ ذکر نہین ہے بلکہ اوسکے
خلاف حدوث وید مذکور ہے کیونکہ جس صورت مین بقول شنکراچاریہ اور دیانند سرسوتی

ہین) لازم آتا ہے کہ زمین و آسمان وغیرہ عناصر بھی قدیم اور ہمہ دان ہونے کے لایق ہووین کہ یہ بھی پرمیشوری کے بنائے ہوئے ہین اسی قیاس پر مور و مگس وغیرہ کیڑے مکوڑے بھی قدیم ہونے اور ہمہ دان ہونے کے لایق ہووین مگر یہہ محض غلط ہی کہ جو چیز بنائی جاتی ہے وہ قدیم ہرگز نہین ہوتی اسیطرح ہمہ دان ہونا خاصہ ذی روح ہے اور وید وغیرہ ذیروح نہین ہین علاوہ اسکے وید تو پرماتما کی بدیا اور گیان ہے اور گیان کے لیے گیان والا قرار دینا سوامی جی کی دانای کا ثمرہ ہے کیونکہ ہمہ دان کہتے ہین سب کے جاننے والے کو جبکہ وید ہمہ دان ہوگا تو اوسکے لئے سب کا گیان ہوگا پس دیانند سرسوتی کا مت سب سے نرالا ہے کہ اونکے نزدیک گیان بھی گیان والا ہے ساری تقریر کا خلاصہ یہ ہے کہ بیاس رشی نے سوتر مذکور مین قدامت وید کی بحث لکھی ہے اور نہ شنکر اچاریہ نے اوسکے بھاشیہ مین وید کے قدیم ہونے کا بیان کیا دیا ہے یہ تمام سوامی جی کی غلط بیانی ہے اسلئے اب ہم سوتر مذکور کے شنکر بھاشیہ کا خلاصہ درج پرچہ کرتے ہین پوشیدہ نرہے کہ ویدانت شاستر کا پہلا سوتر یہ ہے۔

अथातो ब्रह्म जिज्ञासा

اس سوتر کا حاصل شنکر بھاشیہ کے موافق اسطرح پر ہے کہ چار سادہن کے حاصل ہونے کے بعد برہم کے جاننے کا ارادہ کرنا چاہیے تسواسطے کہ اگنی ہوتر وغیرہ کرمون کا پھل فانی ہے اور برہم گیان کا نتیجہ جاودانی ہے خلاصہ معنی یہ ہین کہ سب لوگون کو لازم ہے کہ برہم کے جاننے کا ارادہ کرین کیہ اوسکا ثمرہ نجات ابدی ہے جسکو اصلا تنزل نہین ہے اب بیاس جی کو برہم کے لکشن لکھنے کی ضرورت پڑی کہ برہم کیا شئی ہے اور اوسکا لکشن یعنی تعریف کیا ہے لہذا بیاس جی انے دوسرا سوتر بنایا اور وہ یہ ہے

जन्माद्यस्य यतः २

یعنی جو کوئی اس جگت کو پیدا کرتا ہے اور اوسکی حفاظت کرتا ہے اور آخر کار اسکو فنا کرتا ہے

کی شکتی نہوئی ورنہ اسقدر خلاف واقع تحریر نہ کرتے بلکہ ہم کہہ سکتے ہین کہ اگرچہ
سوامی جی شنکر اچاریہ کے مذہب کے کسی سنیاسی کے چیلے بہی ہوے اور اونکے مت
کی دو چار کتابین بہی پڑہین مگر اونکے مذہب سے محض ناواقف ہین کیونکہ شنکر اچاریہ
کے مذہب مین ایک برہم کے سواے کوئی چیز نتیہ اور قدیم نہین ہے البتہ وید وغیرہ
چند چیز اونکے مذہب مین انادی اور ازلی ہین مگر آخر کار وے بہی فنا ہونے والی
ہین کسواسطے کہ اگر شنکر اچاریہ برہم کے سواے کسی چیز کو نتیہ اور قدیم مانین تو اونکا
یہ مقولہ کہ انجام کار ایک برہم حق ہے اور باقی کل باطل ہین ہرگز پایہ ثبوت کو
نہ پہونچے کیونکہ نتیہ اور قدیم کی صفت یہ ہے۔

त्रिकालाबाध्यंनित्यं

یعنی جو کہ تینون زمانہ مین معدوم نہووے اوسکو نتیہ اور قدیم کہتے ہین اسصورت
مین اگر شنکر اچاریہ وید کو نتیہ مانینگے تو اونکا مت ہی زمین کا پیوند ہوجاویگا لہذا
جو کچہ دیانند سرسوتی نے شنکر اچاریہ کے حوالے سے لکہا ہے وہ بالکل افترا ہے اور اونکی
افترا بندی پر اون ہی کی تحریر گواہ ہے کہ آپ ہی سوامی جی ایک جگہ پر شنکر اچاریہ
کی زبانی نقل کرتے ہین کہ چارون وید سچے ارتہون کے پرکاش کرنے والے
ہین اونکا بنانے والا ہمہ دانی وغیرہ صفتون کے ساتہ موصوف پربرہم ہے)
دوسری جگہہ لکہتے ہین کہ (پرمیشور کے بناے ویدون کو پڑہکر انسان حتی الوسع
علم حاصل کرتے ہین) دیکہو جس صورت مین بقول سوامی جی کے شنکر اچاریہ کا عقیدہ
ہے کہ وید پرمیشور کے بنائے ہوئے ہین تو قدیم کہان رہے کیونکہ جو چیز بنائی جاتی
ہے تو اوسکا قدیم ہونا تو ایک طرف رہا وہ تو انادی وازلی بہی نہین ہوسکتے سوامی
جی کی یہی پاندتہ ہے اسی علم وفضل کے بہروسے اونہون نے دگ بجی کیا ہے پہر سوامی
جی کے اس فقرہ سے (چونکہ پرمیشور قدیم اور ہمہ دان ہے اوسکے بناے وید بہی قدیم اور ہمہ دان ہونے کے

کپل منی وغیرہ پر اتہام کیا اور اونکے سوترون کی تشریح مین خیال خام کیا ویسے ہی اب بیاس رشی پر بہتان کرتے ہین اور اونکے سوتر کا غلط بیاکھیان سوامی جی اسطرح ویدون کے قدیم ہونے کے بارہ مین بیاس جی نے بہی لکہا ہے۔

शास्त्रयोनित्वात्

اس سوتر کے معنی مین شنکر اچاریہ نے بہی ویدون کو قدیم مانکر بیاکھیان کیا ہے کہ رگ وغیرہ چارون وید سبہی ارتہون کے پرکاش کرنے والے ہین اونکا بنانے والا ہمہ دانی وغیرہ صفتون کے ساتہہ موصوف پربرہم ہے کیونکہ ہمہ دان برہم کے سوا اس ان ویدون کو کوئی جیو نہین بنا سکتا البتہ وید کے ارتہہ پہیلانے کے لئے کسی جیو نے اور شاستر کا بنانا ممکن ہے جیسے پانی نی وغیرہ منیون نے بیاکرن وغیرہ شاستر بنائے ہین علاوہ اسکے پرمیشور کے بنائے ویدون کو پڑہکر انسان جمیع علوم حاصل کرتے ہین ایسا شنکر اچاریہ نے بہی کہا ہے اس سے لازم آیا کہ ویدون کے قدیم ہونے مین سب آچاریون کی شہادت ہے پہر چونکہ پرمیشور قدیم اور ہمہ دان ہے اوسکے بنائے وید بہی قدیم اور ہمہ دان ہونیکے لایق ہین اور کا بنایا ایسا گرنتہہ کبہی نہین ہو سکتا دیکہو بہومیکا صفحہ ۳۵ جواب ہرچند بیاس رشی وید کو نتیہ اور قدیم مانتے ہین جیسے کہ ہم نے اوپر تشریح کی ہے مگر اس سوتر کو قدامت وید سے کچہہ تعلق نہین ہے یہ سوامی جی کی دہوکہہ بازی ہے اسیواسطے سوتر کو مین قدامت کے معنی کا کوئی کلمہ نہین ہے یہ بہی محض بے اصل ہے کہ شنکر اچاریہ نے اس سوتر کے معنی مین قدامت وید کا بیاکھیان دیا ہے وگرنہ شنکر بہاشیہ قلمی و مطبوعہ کے ہزارون نسخے موجود ہین شاید کہ سوامی جی نے یہ ہی خیال کیا ہووے کہ شنکر اچاریہ کی تصنیف بیاس کے سوترون کا بہاشیہ کسی نے نہین دیکہا ہے البتہ ہم اس بنا پر کہہ سکتے ہین کہ سوامی جی کو آجتک شنکر بہاشیہ کے مطالعہ

که اگر دیانند سرسوتی کے غلط معنی سوتر کے قبول کئے جاوین تو لازم آتا ہے کہ زمین و درخت و انسان و حیوان وغیرہ کل چیزین قدیم ہو وین کہ جملہ اشیا پرمیشور کی قدرت علمی سے ظاہر ہوئی مین کیونکہ خالق اوسی صورت مین خلق اشیا کریگا کہ اول اوسکو اون اشیاے مخلوقہ کا کماینبغی علم ہوگا مثلاً کلال خم و کوزہ وغیرہ مین سے جسکو بناتا ہے اول اوسکا کلال کو علم ہوتا ہے پس اگر پرمیشور کی قدرت علمی سے ظاہر ہونا ہی قدامت کا باعث ہے تو ساری مخلوق قدیم ہونی چاہیے مگر یہ خیال باطل ہے اب پوشیدہ نرہے کہ جو ارتھ کپل رشی کے سوتر کا ہم نے لکھا ہے وہی بگیان بھکشو بھاشیہ کار نے حوالہ قلم کیا ہے اصل عبارت ان کی یہ ہے۔

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यं ५१

वेदानां निजा स्वाभाविकी या यथार्थज्ञानजननशक्तिस्तस्यां मन्त्रायुर्वेदादावभिव्यक्तेरुपलंभादखिलवेदानामेव स्वत एव प्रामाण्यं सिद्ध्यति न तु वक्तृयथार्थज्ञानमूलकत्वादिनेत्यर्थः ॥

یعنی ویدون کی اپنی ذاتی جو ٹھیک ٹھیک گیان پیدا کرنے والی شکتی یعنی قدرت ہے اوسکے منتر اور آیوروید مین حاصل ہونے سے سارے ویدون کا سوتہ پرمانیہ ثابت ہوتا ہے نہ ویدون کے مصنف پرمیشور کے ٹھیک ٹھیک ارتھ گیاتا ہونے کی جہت سے فقط حاصل آنکہ وید کا سوتہ پرمانیہ خود ویدہی کی ذاتی شکتی کی جہت سے ہے اوسکے مصنف پرمیشور کی راستگوئی کی جہت سے نہین ہے پس یہ بیشک شاستر کے موجد کنادرشی پر ظاہر ہے کہ وے وید کا سوتہ پرمانیہ پرمیشور کا کہا ہوا ہونے کی جہت سے مانتے ہین اور کہتے ہین کہ وید پرمیشور کا کہا ہوا ہونے کی جہت سے سوتہ پرمان ہے دونون رشیون کے مذہب مین فرق باریک ہے یہان سے ظاہر کہ سوامی دیانند سرسوتی کی مصنوعی تقریر قابل التفات نہین ہے کہ دلیل عقلی اور تجربہ بگیان بھکشو کے مخالف ہے پوشیدہ نرہے کہ جیسے دیانند سرسوتی نے کنادرشی اور

کے گلے مین کنٹھی باندہ کر اور کان پھونک کر گورو ہونے کا دعویٰ کرتے ہین اور اپنی تعریف
مین اس مضمون کے شلوک پڑہتے ہین کہ گورو ہی پرمیشور ہے اور گورو ہی برہم ہے اور
مانند اسکی وہ اونکی بے ایمانی ہے کیونکہ گورو وہی ہوتا ہے کہ جو اگیان کا ناش
کرتا ہے اور پرمیشور کی راہ دکہلاتا ہے اور وہ شلوک ان ہی لوگون کے ساخته
اور مصنفہ ہین وید اور شاستر کے مخالف ہین مخفی نہ رہے کہ جیسے سوامی جی نے یوگ سوتر
کے معنی مین اپنا تصرف کیا ہے اسیطرح اب سانکہہ سوتر کے ارتہہ مین اپنی جانب سے
الفاظ زیادہ کر کے ناواقف لوگون کو دہوکہا دیتے ہین **سوامی جی** اسی پرکار سے
سانکہہ شاستر مین کپلاچاریہ ہی کہتے ہین —

निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम ॥५१॥

ارتہات پرمیشور کی سوابہاوک جو مدیا شکتی ہے اوس سے ظاہر ہونے سے ویدون
کی قدامت اور سوتہ پرمان سب لوگون کو تسلیم کرنا چاہیے **جواب** سوامی جی کی
عبارت کا حاصل یہ ہے کہ سانکہہ شاستر مین کپل رشی نے کہا ہے کہ وید قدیم اور سوتہ پرمان
ہے کہ پرمیشور کی قدرت علمی سے ظاہر ہوا ہے فقط مگر یہ غلط محض ہے اور غلطی کی دو وجہ
ہین اول آنکہ کپل رشی کے سوتر کا یہ مطلب نہین ہے اور نہ سوتر مذکور مین قدامت وید کی
بحث ہے بلکہ سوتہ پرمان اور پرتہ پرمان کا مباحثہ ہے دیانند سرسوتی نے جاہلون کو
فریب دینے کے لئے قدامت وید کا تذکرہ اپنی جانب سے زیادہ کیا ہے کپل منی کے سوتر
مرقوم کے معنی حقیقی یہ ہین کہ وید سوتہ پرمان ہے کہ اوسمین ٹہیک ٹہیک گیان پیدا کرنے
کی شکتی پائی جاتی ہے یعنی جو کوئی وید کو صدق دل سے پڑہتا ہے اور اوسکے مضمون
اور مطلب کو کماحقہ پہنچتا ہے اوسکو خالق و مخلوق وغیرہ کا ٹہیک ٹہیک گیان حاصل
ہوتا ہے چونکہ وید مین اسطرح کی شکتی موجود ہے اسواسطے وہ سوتہ پرمان ہے یعنی
خود بخود سند ہے اوسکو دوسری سند کی احتیاج نہین ہے دوسری وجہ غلطی کی یہ ہے

زمانہ کا دخل نہین ہے وہ تینون زمانہ مین حاضر و ناظر ہے پس پرمیشور ہر وقت اپنے کلام اقدس یعنی وید مقدس کے ذریعے سے زمانہ ثلاثہ کے لوگون کو ہدایت کرتا ہے اور ہادی ہی کو گورو کہتے ہین کسواسطے کہ سنسکرت مین لفظ گورو گری نگرنے دہاتو سے بنتا ہے جیسے

गिरत्य ज्ञानं यः सः गुरुः

یعنی اگیان اور جہل کے دور کرنے والے کو گورو کہتے ہین اور گری شبدی دہاتو سے بھی بنتا ہے جیسے

गृणाति उपदिशति धर्मं यः सः गुरुः

یعنی دہرم کے اوپدیش کرنے والے کا نام گورو ہے چونکہ پرماتما نے وید مقدس کی بدولت دہرم اور ادہرم کی تمیز بخشی ہے لہذا فی الواقع گورو وہی ہے یہہ بھی ممکن ہے کہ لفظ گورو دو لفظون سے مرکب ہووے یعنی (گو) اور (رو) سے کیونکہ سنسکرت مین گو بہ معنی چرک مستعمل ہے اور یہان اوس سے مراد تاریکی و اگیان ہے اور رو کہتے ہین دور کرنے والے کو چنانچہ مشہور ہے۔

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रुशब्दस्तन्निरोधकः। अन्धकार निरोधित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते ॥

یعنی لفظ گو بمعنی تاریکی ہے اور لفظ رو بمعنی (دور کنندہ) تاریکی جہل کے دفع کرنے کے بسبب اوپدیش کرنے والے کو گرو کہتے مین فقط اب جاننا چاہیے کہ یہہ تاریکی جہل وہ اگیان ہے کہ جو جیو اور پرماتما کے درمیان ہے یعنی جس اگیان و جہل کے بسبب انسان اپنے خالق و مالک سے واقف نہین ہے اوس اگیان اور نادانی کو جو کوئی اپنے سچے اوپدیش سے دور کردے وہ گورو ہے فی الحقیقت ایسا پرماتما ہی ہے کہ اوسنے وید کے ذریعے سے انسان کو اپنی ذات و صفات سے آگاہ کیا ہے اگر اوسی وید کا اوپدیش سنا کر کوئی انسان بھی لوگون کا اگیان دور کرے اور اونکو پرمیشور کی طرف راہ دکہلاوے تو وہ بھی گرو ہی ہے یہان سے ظاہر ہے کہ اکثر لوگ جو عوام

اونکو کچھ تعلق نہین ہے غرضکہ نہ وہ اگنی اور بایو وغیرہ جو کہ عناصر مین شامل ہین سرشٹی کی ابتدا مین پیدا ہوے ہین اور نہ انکے موکل دیوتا سب سے پہلے خلق کیے گئے بلکہ اگنی وغیرہ عناصر مہتتو اور اہنکار وغیرہ کی پیدایش کے بعد ایجاد کیے گئے ہین اور اونکے موکل دیوتا برہمادی کی اوتپتی کے بعد پیدا ہوے ہین اور انگرا رشی تو برہما جی سے بلکہ منو سے بھی کئی درجہ کے بعد موجود ہوے ہین دیکھو منڈک اونپشد مین اور نیز منوسمرتی کے پہلے اودہیاے کے ۳۴ اور ۳۵ شلوک کو ملاحظہ کرو وہ اسطرح ہے

अहं प्रजाः सिसृक्षुस्तु तपस्तप्त्वा सुदुश्चरम् पतीन् प्रजानामसृ
जं महर्षीनादितो दश ३४ मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुल
हं क्रतुम् प्रचेतसं वसिष्ठं च भृगुं नारदमेव च ॥ ३५ ॥

یعنی اولاد کے خواہشمند منو نے تپ کر کے اول دس مہرشی پرجاپتی پیدا کیے جنکے نام یہ ہین (۱) مریچی (۲) اتری (۳) انگرا (۴) پلستیہ (۵) پلہہ (۶) کرتو (۷) پرچیتا (۸) بششٹھہ (۹) بھرگو (۱۰) نارد فقط غرضکہ دس رشی رشی وغیرہ سے ہین سب کے اول برہما جی پیدا ہوے ہین اور غیر ذی روحون مین مہتتو پیدا ہوا ہے لہذا سوامی جی کا قول کسی طرح پر لایق التفات نہین ہے پھر سوامی جی جو بحوالہ یوگ سوتر کے لکھتے ہین کہ اوسی پرمیشور کے رچے ہوے ویدون کی قدامت متحقق ہے وہ محض اتہام ہے پتنجلی رشی پر کہ سوتر مذکور مین وید کا اصلا ذکر نہین ہے نہ قدامت اور رچنے کے معنی کا کوئی لفظ ہے سوامی جی کا قاعدہ ہے کہ اپنی جانب سے الفاظ بڑہاکر رشیون اور منیون سے منسوب کرتے ہین پھر سوامی جی کو اتنا سلیقہ بھی نہین ہے کہ رچنا کیا چیز ہے اور قدیم کسکو کہتے ہین ورنہ زمین و آسمان وغیرہ بھی قدیم ہو دین کہ وے بھی پرمیشور نے رچے ہوے ہین ویدون کی کیا تخصیص ہے اب چاہیے جاننا کہ پرمیشور زمانہ ماضی و حال و استقبال کے لوگون کا گرو اسطرح پر ہے کہ اوسکی ذات و صفات مین

اور بایو اور سورج وغیرہ الفاظ کے معنی کئے گئے ہین ایک آتش و ہوا و آفتاب کو کہتے ہین دوسرے انکے موکل دیوتا کا نام بہی یہہ ہی ہے تیسرے یہ تینون لفظ پرماتما کے معنی مین بہی استعمال کئے جاتے ہین کسی رسالہ مین اسکی تشریح مفصلاً کیجاویگی مگر دیانند سرسوتی جو کہتے ہین کہ اگنی اور بایو اور سورج رشی اور منی ہین وہ محض غلط ہے کسی کوش یعنی لغت سے اوسکا ثبوت نہین ہے پہر سوامی جی جو کہتے ہین کہ (اگنی اور بایو اور سورج اور انگرا سرشٹی کی ابتدا مین پیدا ہوئے تہے) وہ غلط محض ہے کہ اگنی وغیرہ سرشٹی کے شروع مین ہرگز پیدا نہین ہوے بلکہ منتو وغیرہ اچیتن اور برہما وی چیتن کی پیدایش کے بعد پیدا ہوے تہے چیتنون یعنی ذی روحون مین سب سے پہلے برہما جی پیدا ہوے ہین چنانچہ منڈک اوپنشد کے شروع مین ہے

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संब भूव विश्व स्यकर्त्ता

یعنی برہما جی جسکے طفیل سارا جگت پیدا ہوا ہے سب دیوتون سے پہلے پیدا ہوئے ہین فقط یہہ شوتیا شوتر اوپنشد مین ہے۔

यो ब्रह्माणं विद धाति पूर्वं

یعنی پرماتما نے برہما جی کو کل ذی روح سے پہلے پیدا کیا فقط یہہ اوسی اوپنشد کے دوسرے مقام پر بہی آیا ہے۔

हिर ण्य गर्भं जनया मास पूर्वं

یعنی پرماتما نے سب کے اول برہما جی کو پیدا کیا فقط دیکھو جیسے کہ ہم نے برہما جی کے کل مخلوق سے پہلے پیدا ہونے مین اوپنشدون سے پرمان دیا آیا دیانند سرسوتی نے اگنی وغیرہ کے سرشٹی کی ادی مین پیدا ہونے کا کوئی بچن بہی سند دیا یعنی پران کا شلوک تک بہی سند دیا وید اور اوپنشد کا تو کیا ذکر ہے سوامی جی کے تمام عقائد اسیطرح از خود ایجاد کئے ہوئے ہین وید اور اوپنشد وغیرہ سے

پتنجلی منی بھی وید کو قدیم مانتے ہیں چنانچہ اونھوں نے یوگ شاستر کے پہلے ادھیائے کے پرتھم پاد میں کہا ہے۔

सएष : पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात् ॥

یعنی جو کہ پراچین اگنی اور بایو اور سورج اور انگرا اور برہما دی یہ سرشٹی کی ابتدا میں پیدا ہوئے تھے اون سے لیکر ہم لوگوں تک اور ہم لوگوں سے آگے جو ہونیوالے ہیں ان سب کا گرو پرمیشور ہی ہے کیونکہ وید کے ذریعے سے سچی باتوں کی ہدایت کرنے سے پرمیشور کا نام گرو ہے وہ پرمیشور واجب بالذات ہے کہ اوس میں زمانہ کا تصرف اصلا نہیں ہے اوسی پرمیشور کے رچے ویدوں کی سچائی اور قدامت بھی متحقق ہے اسیطرح سب لوگوں کو جاننا چاہیے جواب جو کوئی کہ زبان سنسکرت سے کچھ بھی واقف ہے وہ بخوبی معلوم کر سکتا ہے کہ جو کچھ سوامی جی نے پتنجلی رشی کے سوتر کی شرح کے بہانے سے لکھا ہے اوسکا پتنجلی رشی کے سوتر سے کچھ تعلق نہیں ہے سوتر میں نہ وید کی قدامت کا ذکر ہے اور نہ وید کی سچائی کی بحث ہے سوتر کے الفاظ کا ترجمہ یہ ہے کہ پرمیشور پہلوں کا بھی گرو ہے کہ زمانہ کا اوسمین تصرف نہیں ہے اور لفظ بھی سے یہ برآمد ہوا کہ جیسے پرماتما پہلے لوگوں کا گرو ہے اسیطرح زمانہ حال کے اور زمانہ استقبال کے لوگوں کا بھی پرمیشور گرو ہے ہم اس بات کی کہ پرمیشور سب لوگوں کا گرو کس طرح ہے اور گرو کے معنی کیا ہیں آگے تشریح کرینگے اب اول دیانند سرسوتی کی کی ہوئی سوتر کی شرح کے نکات بیان کرتے ہیں۔

سوامی جی فرماتے ہیں کہ پراچین اگنی و بایو و سورج وغیرہ کونسے ہیں پراچین کہنا تو اوس صورت میں بن سکتا تھا کہ ایک اگنی اور بایو اور سورج وغیرہ نوین یعنی نئے ہوتے اور دوسرے پراچین یعنی پرانے حالانکہ ایک ہی اگنی ہے اور ایک ہی بایو ہے اور علی ہذا القیاس سورج وغیرہ بھی ایک ہی ہیں ان میں نئے اور پرانے اور جدید و قدیم کی تقسیم ہرگز نہیں پس لفظ پراچین کے ایراد کرنے سے سوامی جی کی ناواقفی ظاہر ہے پھر اگنی

آنکہ یہ مضمون الفاظ خاص پرماتما کے نام ہیں دوسرا (آمنایسیہ) یعنی وید تیسرا (پراماہیم)
یعنی لائق سند ماننے کے ہے پس لفظ بلفظ سوتر کا ترجمہ یہ ہوا کہ پرمیشور کا بچن ہونے سے وید
سند ماننے کے لائق ہے فقط بیان سے ظاہر ہے کہ دیانند سرسوتی نے سوتر کا ارتھ بیجا کیا اور
لوگوں کو دھوکا دیا جیسے دیانند سرسوتی نے کناد منی کے سوتر کا ارتھ غلط کیا اسیطرح اب
گوتم رشی کے سوتر کا جھوٹا ارتھ کرتے ہیں سوامی جی ویسی ہی نیائے شاستر میں
گوتم منی بھی شبد کو قدیم کہتے ہیں۔

मंत्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्

ارتھات ویدوں کو قدیم ہی ماننا چاہیے کیونکہ سرشٹی کے شروع سے لیکر آجتک برہمادی
جتنے آپت ہوئے ہیں وہ سب ویدوں کو قدیم مانتے آئے ہیں اور ان آپتوں کا ضرور پرمان
کرنا چاہیے کیونکہ آپت لوگ وے ہوتے ہیں کہ جو مکر و فریب نہیں کرتے اور جھوٹ نہیں
بولتے **جواب** اس سوتر کے ارتھ میں بھی سوامی جی نے لوگوں کو دھوکھا دینے کے
لیے اپنی طرف سے الفاظ زیادہ کیے ہیں گوتم رشی نے شبد کو ہرگز قدیم نہیں مانا اور
نہ وے وید کی قدامت کے قائل ہیں سوامی جی کے مستندہ گوتم سوتر میں بھی نہ شبد کی
قدامت کا ذکر ہے نہ وید کی ازلیت مذکور ہے اگر سوتر مذکور کا کوئی لفظ سوامی جی کے دعوی
کی تصدیق کرتا ہووے تو بیان کریں سوتر کا لفظی ترجمہ یہ ہے وید کا پرمان ہونا سب کو
ماننا چاہیے کہ برہمادی ساری آپت لوگوں نے پرمان مانا ہے منتر او طب کی طرح
یعنی جسطرح منتروں اور طب کے احکامات کا نتیجہ وثمرہ دیکھکر اہل دنیا انکو سند مانتے ہیں
اسی طرح برہمادی آپتوں نے وید میں کہے ہوئے عملوں کا پھل دیکھکر اوسکو سند
مانا ہے لہذا سبکو لازم ہے کہ وید کو سند مانیں یہاں سے دیانند سرسوتی کی بناوٹ
اور جعل سازی ظاہر ہے کہ گوتم کے سوتر میں جن باتوں کا نشان بھی نہیں ہے سوامی جی
انکو گوتم سوتر سے منسوب کرتے ہیں سوامی جی یوگ شاستر کے ایجاد کرنے والے

تمام رشی و منی کے خلاف ہے کسی رسالہ مین اوسکی کیفیت تماماً و کاملاً لکھی جاوے گی
قطع نظر اس تمام سے سوامی جی کی تصنیف وید بہومیکا وغیرہ کتابون مین ستہ ودیا اور دہرم
کا بیان اور بدیا کہیان ہے یا نہین ہے برتقدیر اول وے کتابین بہی قدیم ہونی چاہئین
کیونکہ علت قدامت کہ ستہ ودیا اور دہرم کا بیان ہے اون مین موجود اور مہیا ہے پس
سوامی جی کو لازم ہے کہ اونکو اپنی طرف منسوب نہ کرین بلکہ پرمیشور کا کلام کہین برتقدیر
دوم سوامی جی کی کتابین تقویم پارینہ ہین اور جعفر زٹلی کا سفینہ کہ ستہ ودیا اور دہرم کے
بیان سے خالی ہین اور اونکے وید بہو میکا وغیرہ اسمار جہوٹے و جعلی ہین یہہ سوامی
جی کا یہ کلیہ کہ (پرمیشور قدیم ہے اس سے اوسکی ودیا بہی قدیم ہے) غلط محض ہے
کیونکہ اگرچہ پرماتما کی ودیا اور گیان وغیرہ صفات قدیم ہین مگر یہہ قید نہین ہے کہ
قدیم کی صفت قدیم ہی ہووے کسواسطے کہ ہرچند آکاش قدیم ہے مگر اوسکی صفت شبد
قدیم نہین اسیطرح اگرچہ پرماتما صانع عالم ہے اور عالم اوسکی صنعت ہے ولیکن عالم
قدیم نہین ہے بلکہ حادث و فانی ہے اس تمام تقریر کا خلاصہ یہہ ہے کہ سوامی جی اور
مت تارہ کنا و نہی کے سوترمین قدامت وید پر دلالت کرنے والا کوئی لفظ نہین ہے
کہ تمام سوترین تین ید ہین پہلا (تدبچنات) ہے یعنی اوسکا بچن ہونے سے سندہا ہے
ہین قاعدہ ہے کہ شئی معروف و مشہور کی طرف بغیر تذکرہ مرجع کے ضمیر غائب راجع
کرتے ہین لہذا ہرچند سوتر مذکور سے پہلے پرماتما کا ذکر نہین تہا مگر چونکہ وہ معروف
و مشہور ہے بغیر تذکرہ اوسکے بہی ضمیر ایراد کی گئی کناد سوترون کے بہاشیہ کے
تیلے مین لکہا ہے کہ (تت) پرماتما کے خاص نامون مین سے ایک نام ہے جیسا
سمرتی مین آیا ہے۔

ओ३म् तत्सदितिनिर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ॥

یعنی یہہ تین پرماتما کے نردیش ہین اول - اوم - دوم - تت - سوم - ست - یعنی مقصود

کہا ہوا ہونے سے وید پرمان ہے فقط غرضکہ بیشیشک شاستر کے سوتر مین
نہ وید کی قدامت کا ذکر ہے نہ وید کے بارہ مین جمع کا صیغہ ہے بلکہ (آمنایسیہ) صاف
صیغہ واحد ہے جو کہ وید کی وحدت کا شاہد ہے پس دیانند سرسوتی جو کہتے ہین کہ
(ویدون مین ستہ ودیا اور دہرم کا بیان ہے اس سبب سے چارون وید قدیم مین)
وہ محض غلط ہے کیونکہ کسی کتاب مین ستہ ودیا اور دہرم کا ہونا اوسکی قدامت کا سبب
ہرگز نہین ہو سکتا کہ وید اقدس کے سوائے اور بہی اکثر کتابون مین ستہ ودیا اور دہرم
کا بیان بخوبی ہے حالانکہ اونکو سوامی جی بہی قدیم نہین مانتے جیسے کنادمنی کے سوتر جنکو
بیشیشک شاستر کہتے ہین ہرچند ستہ ودیا اور دہرم کے بیاکہیان اور بیان پر مبنی
ہین چنانچہ کنادمنی نے پہلے ہی سوتر مین دہرم کے پرتی پادن کا عہد کیا ہے
لیکن بیشیشک شاستر کو دیانند سرسوتی ہرگز قدیم نہین مانتے بلکہ کنادرشی کا
ساختہ و پرداختہ قرار دیتے ہین اور حق بہی یہ ہی ہے بیشیشک شاستر کا پہلا سوتر
یہہ ہے

अथातो धर्म्मं व्याख्यास्यामः १

یہان (اتہہ) شبد کا ارتہہ منگل ہے جسکو عربی دان و فارسی خوان لوگ ثنا و ستایش
کہتے ہین یعنی کنادمنی عہد کرتے ہین کہ ہم پرماتما کی ثنا و ستایش کرکے اس کتاب مین
دہرم کا اوپدیش کرینگے فقط اب چاہیے جاننا کہ ستہ ودیا ارتہات تتوگیان یعنی
حقیقت اشیا کا علم دہرم کا نتیجہ و ثمرہ ہے چنانچہ دوسرے سوتر مین خود کنادمنی
نے دہرم کی تعریف کے طریق پر اس مطلب کی بخوبی تفسیر کی ہے۔

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः सधर्म्मः २

یعنی جس سے تتوگیان حاصل ہووے اور بالتمام رنج والم زایل وہ دہرم ہے فقط
حاصل آنکہ یعنی دہرم سے تتوگیان ہوتا ہے اور تتوگیان سے نجات ابدی ملتی ہے
جو کچہہ تعریف دہرم کی دیانند سرسوتی نے ستیارتہہ پرکاش مین کی ہے وہ کناد وغیرہ

سو جنم تک بھی ودیا مارینگے جیمنی کی بات سمجھنے کا سلیقہ و شعور خواب مین بھی دستیاب نہو گا پس ازین سوامی جی نے کناد منی کے سوتر کا ارتھ غلط کیا ہے تفصیل اسکی اسطرح پر ہے سوامی جی اسیطرح ویشیشک شاستر مین کناد منی نے بھی کہا ہے۔

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यं

ارتھ یہہ ہے کہ وید پرمیشور کے کہے ہوے ہین ان مین ستہ ودیا اور دہرم کا پرتی پادن یعنی بیان ہے اس سے چارون وید قدیم ہین ایسا ہی سب لوگون کو ماننا مناسب ہے کیونکہ پرمیشور قدیم ہے اس سے اوسکی ودیا بھی قدیم ہے جواب البتہ ویشیشک شاستر کے پہلے ادہیاے کا یہہ تیسرا سوتر ہے لیکن اسمین قدیم ہونے وید کی بحث نہین اسیواسطے معنی قدامت سے خالی ہے یعنی اس سوتر مین ایسا کوئی لفظ مندرج نہین ہے کہ جو معنی قدامت پر دال ہووے دیانند سرسوتی نے یہ تو نون کو دہوکہا دینے کے لیے سوتر مذکور کی تفسیر مین (چارون اور قدیم) یہہ دونون لفظ اپنی طرف سے بڑہاے ہین اور بجاے مفرد کے صیغہ جمع بھی اون ہی کا تصرف ہے سوتر مذکور کا اصلی ترجمہ اسطرح پر ہے کہ پرمیشور کا بچن ہونے سے وید پرمان یعنی سند ہے کناد سوتر کی بہاشیہ کار نے بھی اسیطرح پر سوتر مذکور کی تفسیر کی ہے اصل عبارت وانکی یہ ہے

तदित्यनुपक्रान्तमपि प्रसिद्धिसिद्धतयेश्वरं परामृशति यथा तदप्रामाण्यमनृतव्याघातपुनरुक्तदोषेभ्य इति गौतमीयसूत्रे तच्छब्देनानुपक्रान्तोऽपि वेदः परामृश्यते तथा च तद्वचनात्तेनेश्वरेण प्रणयनादाम्नायस्य वेदस्य प्रामाण्यमिति

یعنی اگرچہ اوپر پرمیشور کا ذکر نہین ہے مگر چونکہ پرمیشور مشہور و معروف ہے اسواسطے بغیر مرجع کے بھی ضمیر اوسکی طرف راجع ہے جیسے کہ گوتم رشی کے سوتر مین بغیر مرجع کے ضمیر وید کی طرف بسبب اوسکی شہرت کے راجع ہے معنی آنکہ اوسکا یعنی پرماتما کا

راہ فنا بتلاتے ہیں مثلاً لفظ گو میں جو کہ ملفظ گاف کا ہے وہی اوسکی پیدائش ہے کہ
ملفظ کے ساتھہ ہی گاف پیدا ہوتا ہے اور جو کہ ملفظ گاف کا نیست و نابود ہوتا ہے وہی
اوسکا مفقود ہونا ہے کہ جسوقت ملفظ گاف کنارہ گیر ہوتا ہے فوراً گاف بہی فنا پذیر ہوتا ہے
پس گویا ملفظ گاف کی اوتپتی اور ناش ہی گاف کا وجود اور عدم ہے دوسری بات
ہرگز نہیں ہے پہر سوامی جی جو کہتے ہیں کہ (آکاش میں شبد کے حاصل ہونے سے شبد
سب جگہہ بہرے ہیں) وہ بہی غلط ہے کہ آکاش میں شبد کا حاصل ہونا اوسکی سب جگہہ
بہرے ہوئے ہونے کی دلیل ہرگز نہیں ہوسکتی بلکہ اسبات کی دلیل ہے کہ شبد
اور آکاش کے درمیان کچہہ تعلق ہے اور وہ سوائے اسکے نہیں ہے کہ شبد آکاش
کا گن ہے اور دونوں کے تعلق کو سنسکرت میں گن گنی بہاو کہتے ہیں پہر سوامی جی کا
یہہ قول کہ (اس سے یہہ ثابت ہوا کہ شبد آکاش کی مانند قدیم ہیں) محض غلط ہے کہ
اس سے قدامت شبد ہرگز ثابت نہیں ہوتی بلکہ یہہ ثابت ہوتا ہے کہ شبد حادث ہیں کہ جبتک
کام وزبان متحرک نہیں ہوتے شبدوں کا تلفظ وسمع وقوع میں نہیں آتا اس سے
معلوم ہوا کہ حرکت کام وزبان ہی سے شبد حادث ہوئے ہیں و اگر نہ حرکت مذکور کے
بغیر شبد کے ظہور کا کون مانع ہے قطع نظر ان تمام دلایل سے اگر شبد آکاش کی مانند قدیم
بہی ہوئیں تو ویداقدس میں کسطرح کی خصوصیت ثابت نہیں ہوتی بلکہ توریت انجیل قرآن
وغیرہ بہی قدامت میں وید کی برابر ہیں کہ ویسے ہی شبد روپ ہیں حتی کہ سوامی جی کے عقیدہ
کے موافق سنگ وخر کی آواز بہی قدامت کے بارہ میں وید سے کم نہیں ہے ان ہی
عقائد فاسدہ کی اشاعت کے لئے سوامی جی حامی وید بنتے ہیں جس طور پر کہ آریوں کے
یہاں وید قدیم ہے وہ طریق انیق اوپر مفصل مرقوم ہوا دوبارہ کی ضرورت نہیں ہے اسکے
بعد سوامی جی نے بحوالہ جیمنی منی کے شبد کی قدامت میں جو کچہہ گفتگو کی ہے اوسکا جواب
یہہ ہے کہ جیمنی منی کے مطالب ومعنی کے سمجہنے کے لئے عقل وادراک چاہئے اگر سوامی جی

ہوتا ہے الفاظ سے اور الفاظ مرکب ہین حروف سے مرکب کے حدوث مین کسی دانا
وعاقل کو کلام نہین ہے سنی مسلمانون نے جو کلام الہی کو دو طور پر بیان کیا ہے ایک
لفظی دوسرا نفسی وہ بھی عقلمندی کی بات نہین ہے اور صورت مبند مین اوسکی بخوبی تکذیب
کی گئی ہی زیادہ تر کسی رسالہ مین پھر بھی کیجاوے گی **سوامی جی** شبد آکاش کی مانند
سب جگہ پر پور ہے ہین مگر جب تک تلفظ عمل مین نہین آتا ظاہر اسنائی نہین دیتے جیسے
(گو) اسکے تلفظ مین جب تک تلفظ گاف مین رہتا ہے واو مین نہین ہے اور جب واو
مین ہے تب گاف مین نہین اسی قیاس پر تلفظ کی اوتپتی اور ناش ہوتا ہے شبدونکا نہین
آکاش مین شبد کے حاصل ہونے سے شبد اکھنڈ ایک رس سب جگہہ بھرے ہین مگر جب تک
زبان اور ہوا کی حرکت نہین ہوتی تب تک شبدون کا تلفظ و تسمع نہین ہوتا اس سے
یہہ ثابت ہوا کہ شبد آکاش کی مانند قدیم ہین **جواب** (شبد آکاش کی مانند سب جگہہ
پر پور ہے ہین) یہہ فقرہ غلط محض ہے کہ اس سے لازم آتا ہے کہ آکاش مظروف ہے
اور سب جگہہ ظرف ہے کیونکہ جو چیز کہین پر ہوتی ہے وہ پر ہونے والی چیز مظروف ہے
اور جسمین پر ہوتی ہے اوسکا نام ظرف ہے جبکہ شبد آکاش کی طرح سب جگہہ بھرے
ہین تو اس سے واضح ہوا کہ آکاش بھی جا بجا بھرا ہوا ہے حالانکہ یہہ امر غلط ہے
کیونکہ آکاش نہ کسی جگہہ بھرا ہے اور نہ کسی کا مظروف ہے بلکہ کل اشیا آکاش ہی مین بھری
ہین اور آکاش کل اشیا کا ظرف ہے حقیقت اشیا کو اوسکے بعکس سمجھنا سوامی جی کی
علمیت کا نتیجہ ہے یہہ سوامی جی کا مطلب اصلی کہ (شبد سب جگہہ پرپور ہے ہین) بالکل
خبط ہے کیونکہ اگر شبد سب جگہہ پر ہوتے تو ہر وقت کل اشخاص کو مسموع ہوتے کہ قوت سامعہ
کا استماع ہی کام ہے عجیب بات ہے کہ شبد جا بجا پر ہین اور قوت سامعہ اپنے کام مین مصروف
ہے پھر بھی شبد سنائی نہین دیتے مگر اوسیوقت کہ فعل تلفظ عمل مین آتا ہے پس معلوم
ہوا کہ شبد وقت تلفظ خلق کئے جاتے ہین اور جبکہ فعل تلفظ کا خاتمہ ہوتا ہے فی الفور شبد بھی

برآمد نہین ہوتے مثلاً ہاتھہ پر ہاتھہ مارنے سے جو آواز نکلتی ہے وہ بہی شبد ہے مگر زبان سے اوسکا کچھہ تعلق نہین ہے لہذا سوامی جی نے جو شبد کی تعریف لکھی ہے وہ جامع بھی نہین ہے یعنے کل شبدون پر صادق نہین آتی اسکا نام سنسکرت مین ابیاپتی ہے تعریف ایسی چاہیے کہ جامع اور مانع ہووے یعنی ابیاپتی اور اتی بیاپتی سے بری ہووے پس شبد کی تعریف یہہ ہی مناسب ہے کہ جسکا کان سے گرہن ہووے یعنی قوت سامعہ سے جسکا علم ہووے اسیواسطے نیاے شاستر کی کتابون مین کہا ہے

॥ श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः ॥

یعنی شبد وآواز اوسکو کہتے ہین کہ جو قوت سامعہ سے مدرک ہووے اگر فرض کیا جاے کہ سوامی جی کا مصطلحہ شبد قدیم ہووے تو وید اقدس مین کوئی خصوصیت ثابت نہین ہوتی کیونکہ جس صورت مین سارے شبد قدیم و ازلی ہین تو وید و انجیل و قران و الہا و طوطی نامہ وغیرہ سب برابر ہین بلکہ خرس و خنزیر و خر وغیرہ کی آواز بہی کم نہین کہ وہ بہی زبان سے نکلتی ہے عقل سے جانی جاتی ہے آکاش مین رہتی ہے اسی عقل و ادراک پر سوامی جی وید کے حامی بنے ہین زیادہ تر افسوس ہے دیانند پنتھیون کی عقل پر کہ ایسے ایسے مسایل واہیہ پر دل و دین نثار کرتے ہین جنکا انجام یہہ ہے کہ کوے اور گدہے کی آواز بہی وید کی برابر ہے کہ قدامت مین یہہ کل مساوی ہین جیسے وید قدیم ہے اسیطرح وہ بہی قدامت سے خالی نہین ہین حقیقی آریون کے مذہب مین تو وید اوسی طور پر قدیم و ازلی ہے کہ پرماتما انادی کال سے ہر ایک سرشٹی کے شروع مین اسی ترتیب کے ساتھہ برہما جی پر وید نازل کرتا ہے جو کہ فی زمانہ موجود ہے پس قدامت وید کا حاصل یہہ ہوا کہ کل سرشٹیون کی آدی اور شروع مین ایک ہی آنوپوربی اور ترتیب کے ساتھہ وید کا نازل ہونا اوسکی ہمیشگی اور ازلیت ہے فی الحقیقت تو کوئی کلام قدیم و ازلی نہین ہے کہ مرکب

اجزا ہین وے سب جاویدانی وغیر فانی ہین اور شبد اونکو کہتے ہین کہ جنکا کان سے
گرہن ہوتا ہے اور جو عقل سے جانے جاتے ہین اور جو زبان سے نکلنے کے سبب ظاہر ہوتے
ہین اور جنکی رہنے کی جگہہ آکاش ہے جواب پتنجلی وغیرہ نے جو کچھہ کہا ہے اوسکے
سمجھنے کے سے معذر چاہیے آپ کہیے کہ شبد ازلی و قدیم کیونکر ہین جبکہ تم خود کہتے ہو
کہ شبد ذی اجزا ہین اور اجزا اونکے حروف وغیرہ ہین تو اونکا ازلی و قدیم ہونا غیر ممکن
و محال ہے کیونکہ جو جو اشیا سادیونی ذی اجزا ہین وہ وہ حادث و فانی ہین جیسے قلم
و دوات وغیرہ ذی اجزا بھی ہین اور حدوث و فنا بھی رکھتے ہین سوامی جی کی عقل پر
افسوس ہے کہ اجزا کے قدیم ہونے کو ذی اجزا کے قدیم ہونے کی دلیل ٹھیراتے ہین اور کہتے ہین کہ تمام
شبد قدیم ہین کہ اونکے حروف وغیرہ اجزا جاویدانی ہین اے مہاراج اگر آپ کی دلیل کافی ہووے
اور تمہارے مطلب کو مدلل کرے تو تمام اشیا خشت و سنگ وغیرہ غیر حادث و قدیم ثابت
ہوونگی کہ آپکے عقیدہ مین انکے اجزا بھی جنکو سنسکرت مین پرمانو اور عربی مین جزو لایتجزی
اور جوہر فرد کہتے ہین قدیم و غیر حادث ہین پھر سوامی جی نے اسکے بعد جو شبد کی تعریف
لکہی ہے وہ بھی محض غلط ہے کہ (جو عقل سے جانے جاتے ہین اور جو زبان سے نکلتے ہین
اور جنکے رہنے کی جگہہ آکاش ہے) یہہ تینون قیدین فضول ہین کسواسطے کہ عقل سے
ساری چیزین جانی جاتی ہین شبد کی کچھہ خصوصیت نہین ہے اگر یہہ قید بھی شبد کی
تعریف مین شامل کیجاوے تو ساری چیزین شبد مین داخل ہوونگی کہ عقل سے جانی
جاتی ہین حالانکہ اونکو کوئی دانا شبد نہین جانتا اسیطرح آکاش مین کل اشیا
رہتی ہین پس اگر آکاش مین رہنا شبد ہونے کا سبب ہووے تو تمام اشیا کو شبد
کہنا چاہیے کہ سب کے رہنے کی جگہہ آکاش ہے پس یہہ تعریف مانع نہین ہے یعنی
شبد سے غیر مین بھی صادق آتی ہے اسکا نام سنسکرت مین اتی بیاپتی ہے پھر شبد کے
بارے مین زبان سے نکلنے کی قید بھی غلط ہے کیونکہ اکثر شبد ایسے ہین کہ زبان سے

مگر یہہ سوامی جی کا خیال خام ہے کہ کاغذ کا کم خرچ ہونا اور تھوڑی جگہہ مین
بہت عبارت کا آجانا اچھی گی در عمدگی نہین ہے بلکہ ندرت و غرابت اوسمین ہے کہ
جیسا کاتبا پڑہا جاوے لہذا انزول وید منتر کرت ہی مین مناسب ہوا گو کاغذ زیادہ خرچ
ہوتا ہے پھر سوامی جی جو کہتے ہین کہ اگر جتنے دیش بہاشا ہین اونمین رچتے تو کتابون کی
انتہا ہی نہوتی وہ محض غلط ہے کہ تمام دیش بہاشا محدود و محدود ہین نا بے انتہا
ہرگز نہین ہین جس صورت مین کہ دیش بلکہ کل انسان معلوم و محدود ہین تو اونکی بہاشا
اور بولی کے محدود و محدود ہونے مین کیا کلام ہے سوامی جی کی عقل و دانش پر
افسوس ہے کہ اتنا بھی نہین جانتے کہ دنیا مین انسانون کی بولی اور زبان محدود
ہین نا بے انتہا ہین بڑے افسوس کی بات یہہ ہے کہ دیانند سرسوتی کی رائے مین
انسانون کی بولیان تو بے انتہا ہین مگر انس و جان و دد و دام و حشرات طیور وغیرہ کی
ارواح ہونے کے بے انتہا ہونے مین قباحت ہے پھر سوامی جی کی یہہ گفتگو کہ (اسوا
پرمیشور نے ہمہ دان بہاشا مین وید رچے) سراسر لغو ہے کہ کوئی زبان اور بہاشا ہمہ
دان اور ہمہ جان نہین ہو سکتی کیونکہ ہمہ دانی اور ہمہ جانی خاصہ جاندار ہے کہ گیان
اور علم چیتن ہی کا دہرم ہے بولی اور بہاشا جاندار و چیتن نہین ہو سکتی بلکہ غیر
ذیروح اور جڑ ہے پس یہہ سوامی جی کی دانائی اور لیاقت کا ثمرہ ہے کہ جڑ اور چیتن
مین امتیاز نہین دے سکتے اب مخفی نرہے کہ جیسے دیانند سرسوتی نے ستیارتھ پرکاش مین
وید کے حدوث و قدامت کے بارہ مین گفتگو پریشان کی ہے ویسے ہی بھومیکا مین
بہی اکثر جگہہ لکہتے ہین کہ وید پرمیشور نے رچے ہین اور اوسمین سے کہین با وصف اسکے
پہر کہتے ہین کہ وید انادی اور قدیم ہین ہم سوامی جی کے اقوال اول کو بسبب
کثرت کے قلم انداز کرکے اقوال دوم پر نظر غور فرماتے ہین سوامی جی پتنجلی
وغیرہ رشی کہتے ہین کہ سارے شبد ازلی و قدیم ہین کہ اونکے جتنے حروف وغیرہ

مین رہے جاتے تو بڑی بڑی کتابین ہوجاتین اور ایک ہی ملک کا اوپکار ہوتا اگر جتنی دیش بہاشا مین اون مین رہتے تو کتابون کی انتہا ہی نہوتی اسواسطے پرمیشور نے ہہر دان بہاشا مین وید رچے ہین **جواب** (رچے گئے ہین - رچے جاتے رچتے - رچے ہین) سوامی جی کے ان چارون لفظ سے اونکا عقیدہ ظاہر ہے کہ وہ وید کی اوتپتی کے قایل ہین اور ظاہر ہے کہ جو کوئی کسی چیز کی اوتپتی کا قایل ہوگا تو وہ اوسکے ناش پر بہی اقرار کریگا پس سوامی جی کے عقیدہ کا خلاصہ یہہ ہوا کہ اونکے نزدیک وید حادث و فانی ہے پس وہ کس منہہ سے جابجا کہتے ہین کہ وید پرمیشور کی ودیا ہے اور اوتپتی اور ناش سے منزہ ہے پہر سوامی جی جو کہتے ہین کہ اگر بہاشا مین وید رچے جاتے تو بڑی بڑی کتابین ہوجاتین وہ محض غلط ہے کیونکہ جسقدر عبارت سنسکرت کی جتنی جگہہ پر سماتی ہے وتنی ہی جگہہ پر اوسیقدر عبارت بہاشا کی لکہی جاتی ہے مثلاً

देवदत्तस्यपुत्रः

یہہ عبارت سنسکرت کی ہے اور اسمین مفرد اور مرکب آٹہہ حرف ہین اگر اسکی بہاشا کیجاوے تو اوسمین بہی آٹہہ ہی حرف ہوونگے چنانچہ

देवदत्तकाबेटा

اگر بالفرض سنسکرت کی بہ نسبت بہاشا مین ایک دو حرف کی کمی و بیشی بہی ہووے تو وہ قابل لحاظ نہین ہے کہ اسقدر تفاوت سے ضخامت کتاب اندک و بسیار نہین ہوسکتی البتہ سنسکرت اور بہاشا کی بہ نسبت اردو مین کم جگہہ گہرتی ہے یعنی اگر یہہ ہی عبارت سنسکرت اور بہاشا کی اردو مین تحریر کیجاوے تو کم جگہہ گہیر لیگی اور کاغذ تہوڑا خرچ ہوگا یہہ ہی حال فارسی کا ہے ان زبانون مین جگہہ تہوڑی گہرنے اور کاغذ کم لگنے کا سبب یہ ہے کہ اعراب نفس حروف مین داخل نہین ہوتے اسیواسطے انکے پڑہنے مین دقت پڑتی ہے تفصیل اسکی اوپر ہوچکی پس سوامی جی کی جواب کی بنیاد پر وید اردو یا فارسی مین نازل ہونا چاہتا تہا کہ وہان عبارت طویل اندک کاغذ مین سماتی ہے

جی کی ہر ایک بات کو سچ مانینگے تو اونکی فہم و فراست پر افسوس ہے **سوال** پرماتمانے وید مقدس سنسکرت زبان مین کسواسطے نازل فرمایا شاید کہ پرمیشور کی زبان سنسکرت ہی ہے اگر دیش بہاشا مین ہوتا تو بآسانی لوگون کی سمجھہ مین آتا **جواب** بلاشبہ سنسکرت دیوتاؤن اور پرمیشور کی زبان ہے لہذا اوسکو دیوبانی اور سربانی کہتے ہین کہ لفظ دیوا ورسر سنسکرت مین بمعنی پرمیشور اور دیوتا کے مستعمل ہے اسوجہہ سے وید کا نزول سنسکرت ہی مین مناسب ہے اگر دیش بہاشا یعنی زبان ملک مین وید نازل ہوتا تو پرمیشور پر ترجیح بلامرجح لازم آتی کہ دیش بہاشا سیکڑون ہین جس دیش کی زبان مین کتاب نازل ہونے اوسمین دوسری زبان کی بہ نسبت کوئی خصوصیت ہونی چاہیے اگر کسی زبان مین بہ نسبت کل زبانون کے تخصیص نہین ہے تو ہر ایک ملک کی زبان مین جداگانہ کتاب کا نزول ضروریات سے ہے پس پرمیشور کی صدہا کتابین ہونی چاہئین حالانکہ تین چار ملک والون ہی کو دعوی ہے کہ ہمارے دیش کی زبان مین پرمیشور نے کتاب بھیجی ہے مثلاً باشندگان عرب کہتے ہین کہ عربی زبان مین خدانے محمد صاحب پر قران نازل کیا اب جو لوگ کہ قرآن کو کلام الہی جانتے ہین اونپر واجب ہے کہ زبان عربی مین بہ نسبت دوسری زبانون کے کسی طرح کی خصوصیت ثابت کرین ورنہ جناب الہی لوث ترجیح بلامرجح سے بری نہین ہے گویا خدا کو عربون کی رعایت منظور تھی کہ اونپر تعلیم و تعلم قران آسان کیا مگر یہہ بات غلط محض ہے کہ پرمیشور کا دامن عاطفت و رحمت غبار تعصب سے منزہ ہے اسواسطے اوسنے وید اقدس اپنی ہی زبان مین برہماجی پر نازل فرمایا غرض یہ ہے کہ سنسکرت کو کل زبانونپر ترجیح حاصل ہے کہ پرمیشور کی زبان ہے لہذا اوسی مین نزول وید مناسب ہے جو کچھہ کہ سوامی دیانند سرسوتی نے اس سوال کا جواب دیا ہے اوسکو بجنسہ نقل کرکے نظر انصاف سے دیکھتے ہین **سوامی جی** سنسکرت مین اس سبب سے وید رچے گئے ہین کہ چھوٹی کتاب مین سارے علم آجاوین اگر بہاشا

رچا ہے اگر سوامی جی اپنے اسی قول پر قایم ہین تو لا کلام اونکی راے مین پرمیشور کی ودیا اور علم کسی روز پیدا ہوتا ہے اور جبکہ اوسکے لیے پیدایش ہے تو ایک دن فنا بھی ضرور ہوگا کہ حادث کی فنا واجبات سے ہے ع کہ حادث کو فنا لازم ہے ہر دم ٭ بقا واجب کو لابد ہے مسلم ٭ اگر کوئی دیانندی کہے کہ سوامی جی نے لفظ (رچا ہے) اور ہی معنی مین استعمال کیا تو محض غلط ہے کہ اسی بحث مین ستیارتھ پرکاش کے صفحہ ۲۲۴ دو سو چوبیس وغیرہ مین اکثر جگہ خود سوامی جی لفظ رچا بمعنی بنایا لاے ہین پس لاجرم سوامی جی کی عقل مین فتور ہے کہ رچا بجا کہتے ہین کہ وید پرمیشور نے رچا ہے اور اکثر جا دعوی کرتے ہین کہ وید پرمیشور کی ودیا ہے اور اوتپتی اور ناش سے مبرا ہے **سوامی جی** بھاگوت مین جو لکھا ہے کہ بیاس جی نے وید رچے ہین وہ ویدون کی نندا یعنی مذمت ہے اور غرض اوس سے یہہ ہے کہ جس نے وید رچے مین اوسی نے بھاگوت رچا ہے اور ویدون کے رچنے سے بیاس جی کی شانتی نہوئی مگر بھاگوت کے رچنے سے اونکو شانتی ہوئی اسواسطے بھاگوت ویدون سے بہتر ہے **جواب** یہان سے سوامی جی کی پانڈتہ اور علمیت بخوبی ظاہر ہے کہ اونہون نے نگاہ سے بھاگوت بھی نہین دیکھا اگر دیکھا یا سنا ہوتا تو عبث کاغذ سیاہ نہ کرتے اور غلطی صریح مین نہ پڑتے اسی بیہودہ گوئی پر دعوی یکتائی ہے ع شیشہ حجر بغل مین پنہان ہے ٭ پھر بھی دعوی ہے پارسائی کا جبکہ بھاگوت مین مضمون مذکور کہین نہین ہے البتہ پہلے سکندہ کے تیسرے ادھیای مین یہہ لکہا ہے کہ بیاس جی نے کلجگ کے لوگون کی کم استطاعتی پر نظر کرکے ایک وید کے چار حصے کر دیے۔

चातुर्होत्रंकर्मशुद्धंप्रजानांवीक्ष्यवैदकं
व्यदधाद्यज्ञसंतत्यैवेदमेकंचतुर्विधं ॥१९॥

اسکے بعد بھاگوت مین یہہ مضمون ہے کہ بیاس جی نے بھارت بنایا اور اونکی تسکین نہوئی اسواسطے اونہون نے بھاگوت تصنیف کیا فقط اتنے پر ہی اگر دیانندی لوگ سوامی

رچا ہے مگر اپورشیہ ہی اور پورشیہ بہی ہی کیونکہ پورش مجسم جیو کو کہتے ہین اور پورن ہونے سے پرمیشور
کا بہی نام پرش ہے وید اپورشیہ اس سے ہے کہ کسی دیہہ دہاری جیو کا رچا نہین ہے
اور پورشیہ اس سبب سے ہے کہ پورن پرش پرمیشور نے رچا ہے اور اس ہی کارن سے
بہی وید اپورشیہ ہے کہ پرمیشور کی سناتن ودیا ہے کہ پرمیشور کی ودیا کی نہ کبہی اوتپتی ہوئی
ہے اور نہ ناش جواب جبکہ وید پرمیشور نے رچا ہے تو اپورشیہ کہان رہا بلکہ پورشیہ
ٹہیرا کیونکہ پورشیہ اوسکو کہتے ہین کہ جسکو کسی پرش نے بنایا ہووے اور پرش کہتے ہین جیو
آتما اور پرماتما کو تحقیق اسکی اوپر گذری پس وید اپورشیہ کسیطرح پر نہین ہو سکتا کہ بقول سوامی
جی کے پرش کا بنایا ہوا ہے لہذا سوامی جی کا یہہ کہنا کہ وید اپورشیہ بہی ہے محض غلط ہے
شاید کہ وے پورشیہ اور اپورشیہ کے معنی نہین جانتے علاوہ اسکے جبکہ وید پرماتما کا رچا ہوا ہے
تو وہ پرمیشور کی سناتن ودیا کہان سے ہوا بلکہ پرمیشور کا ساخته اور اسناتن ٹہیرا کیونکہ
جو چیز کسی وقت بنائی جاتی ہے وہ سناتن اور جاودانی ہرگز نہین ہو سکتی شاید کہ سوامی
جی (رچا ہے) اپنے اس لفظ کے معنی نہین جانتے بغیر جانے بوجہے وید کے بارہ مین
اوسکا استعمال کر بیٹہے ہین سوامی جی کی عجب عقل ہے کہ وید کو پرمیشور کا رچا ہوا بہی کہتے
ہین اور پہر اوسی وید کو پرمیشور کی ودیا اور گیان بہی قرار دیتے ہین شاید کہ اونکے عقیدہ
مین اول پرمیشور ودیا اور گیان نہ رکہتا تہا بلکہ اودیا شونیہ اور مورکہہ یعنی بے علم و جاہل تہا
پس اوسنے اپنے گیان اور ودیا کو خود رچا اور گیان وان اور عالم ہوا اگر یہہ ہی بات
ہے تو ایک دن پہر حالت اصلی پر آجاویگا اور بے علم و بے عقل رہجاویگا کیونکہ جو شئے
حادث ہے وہ بالیقین فانی ہے چنانچہ شاستر کارون کا مشہور مقولہ ہے ۔ यत्कृतकं तदनित्यं
یعنی جو جو حادث ہے وہ وہ فانی ہے پس وید کیونکر اپورشیہ اور پرمیشور کی ودیا ہے
اگر بفرض محال پرمیشور کی ودیا ہی ہے تو بقول سوامی جی کے اوسکی اوتپتی اور ناش مین
کیا شک ہے کہ عنقریب سوامی جی زبان مبارک سے فرما چکے ہین کہ وید پرمیشور نے

جنکی نبوت و رسالت کے ہم لوگ قائل ہین اونکی طرف اس قسم کا احتمال ابدًا نہین ہو سکتا کہ
برہما جی کے ظہور کے وقت اونکی برابر مرتبہ و منصب و علم و ادراک مین کوئی نہ تہا کل کی نسبت
فوقیت و برتری ظاہری و باطنی اون مین نمایان و عیان تھی کہ وے تمام دیوتا اور انسان کے
جد بزرگوار تہے سب اون ہی سے پیدا ہوئے تھے اور سب نے اون ہی سے تعلیم پائی
تھی بلکہ جس کسیکو جو کچہہ مرتبہ و منصب حاصل ہوا وہ اون ہی کے ذریعے اور وسیلہ سے
تہا اپنے پسر و نبیرہ و شاگرد و مرید و مطیع و پرستار و خدمتگار پر بزرگی و عزت پانے کی
لئے کوئی متنفس تدبیر نہین کرتا کیونکہ ایسے اشخاص پر خود ہی عزت و عظمت ثابت ہوتی ہے
تحصیل حاصل کی مشقت مین کون پڑتا ہے پس برہما جی کس عزت و شوکت کے حاصل
کرنے کے واسطے جہوٹہا دعوی کرتے کہ ساری بزرگیان اون مین روز پیدایش سے
خدا داد مہیا تہین کسی عزت و شان کی اونکو پرواہ نہ تھی لہذا ترجیح بلا مرجح کا
بہی امکان نہین ہے کیونکہ اوتعالی نے اونکے اعمال حسنہ کی موافق جو کہ پچہلی سرشٹی
سے باقی رہگئے تہے برہما جی کو ساری بزرگیون اور عزتون کے ساتہہ پیدا کیا تہا اور منصب
نبوت و رسالت دیا تہا پس لاجرم اونکے تئین تمام مخلوق پر ترجیح حاصل تھی علاوہ
اس تمام کے وید مقدس مین اونکے مطلب کا کوئی مضمون نہین ہے بخلاف قرآن کے
کہ نصف کے قریب محمد صاحب کی حظ نفس پیغمبرانہ کی لئے قرمزدہ ہے اس تمہید سے محقق ہے کہ صرف برہما جی پرماتما
کے وقت یعنی پیغمبر ہین اور موسی وغیرہ کی رسالت مخدوش ہے اسیطرح ایک وید
اقدس ہی کتاب آسمانی ہے اور توریت وغیرہ کی سماویت مشکوک ہے اب جاہیے
جاننا کہ سوامی دیانند سرسوتی نے ستیارتہہ پرکاش کے صفحہ ۲۴۴ سو چوانسی وغیرہ مین دربارۂ
وید گفتگو سے پریشان کی ہے اب ہم بطور خلاصہ اونکی عبارت نقل کرکے جواب دیتے ہین
ستیارتہہ پرکاش کی عبارت کی شروع مین قلم جلی سے لفظ سوامی جی ہے اور ابتدائی
پاسخ مین کلمہ جواب ہے سوامی جی ... [illegible]

ہین اونکو یہہ ہی خواہش وہوس دامنگیر ہوتی ہے کہ جیسے فلانے اور فلانے کی
بات سب لوگ مانتے ہین اور تعظیم وتکریم کرتے ہین ایسے ہی کسیطرح ہم کو بھی عزت
و شہرت حاصل ہووے کہ ہماری بھی دنیا مین شہرت پھیلے اور نام وری باقی رہے
چنانچہ جسوقت موسیٰ وغیرہ نے نبوت کا دعوی کیا تہا ہزارہا اشخاص اونکی بہ نسبت
علم وفضل و دولت وعزت مین برتر اور بڑہکر تھے اور اطراف وجوانب مین اپنے دعوی
رسالت کے سبب سے نبی وپیغمبر مشہور ہو رہے تہے اور لوگ اونکے نام پر اپنا مال وجان
نثار کرتے تہے پس جاے احتمال ہے کہ موسیٰ وغیرہ نے اپنے زمانہ کے اشخاص کی ترقی
جاہ وحشمت پر نظر کرکے خیال کیا ہووے کہ کوئی حیلہ پیش کرنا چاہیے کہ جس سے ہم کو
فلان اور فلان کی برابر مراتب ومناصب حاصل ہووین اور عوام وخواص ہماری طرف
رجوع کرین چنانچہ اب بہی دیکہا جاتا ہے کہ بہت لوگ عزت وامتیاز پانے کے لیے اپنے تئین
اہل کرامت وولایت ظاہر کرتے ہین علی الخصوص محمد صاحب کے زمانہ مین زرتشت وموسیٰ
وعیسیٰ وغیرہ کی نعت وستایش گردنواح کے باشندون کی زبان پرجاری تہی اور ملک ایران و
شام کے لوگ اونکو مقرب جناب کبریا جانکر پرستش کرتے تہے تواریخ سے ثابت ہے کہ محمد صاحب
اکثر ملکون مین چالیس برس کی عمر تک سوداگری کے لئے جاتے رہے اور یہہ سارا احوال بنظر
خود ملاحظہ فرماتے رہے پس ظن غالب ہوتا ہے کہ اونکے دل مین یہہ ہی سمایا ہووے کہ جیسی تعظیم وتکریم
زرتشت وموسیٰ وعیسیٰ کی ہو رہی ہے ایسی ہی عزت وعظمت مجکو ملے لہذا اونہون نے اپنی
خواہشات کو رواج دینے کے لئے بدروغ دعوی نبوت کیا ہووے اور اپنی مصنفہ کتاب کو خدا کی
طرف منسوب فرمایا ہووے چالیس برس کی عمر مین اپنے لئے رسول ظاہر کرنے سے ہمارا ظن مبدل
بہ یقین ہوتا ہے ورنہ محمد صاحب مین کیا خصوصیت تہی کہ اوتعالی نے اونکو اپنا رسول قایم کیا کہ اوسوقت
حسب ونسب وفہم وفراست مین اون سے افضل واکمل لوگ ملک حجاز مین موجود تہے چنانچہ اس بات کا تذکرہ
اوسوقت کے لوگون نے بہی کیا تہا تفاسیر قرآن مین دیکہو تو شاید کہ خدا محمد نے ترجیح بلا مرجح پسند کی ہووے

یعنی پرماتما ہاتہہ اور پاؤن نہین رکہتا مگر ہاتہہ اور پاؤن کا کام کرتا ہے آنکہہ سے منزہ ہے اور دیکہتا ہے وہ کان نہین رکہتا اور سنتا ہے فقط چونکہ پرمیشور قادر مطلق ہے اسواسطے اوسکو کلام کرنے مین زبان کی ضرورت نہین ہے کہ وہ زبان کی زبان ہے چنانچہ تولکار اپنشد مین ہے۔

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद् वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः चक्षुषश्चक्षुः ॥

یعنی پرماتما کان کا کان ہے من کا من ہے زبان کی زبان ہے پران کا پران ہے آنکہہ کی آنکہہ ہے یعنی کل حواس اوسی کی عطا کی ہوئی قوت سے اپنے کام مین مصروف ہین فقط جبکہ یہہ حال ہے تو وہ کسی چیز کا محتاج نہین ہے بلکہ تمام حواس اپنے اپنے کام مین اوسکی احتیاج رکہتے ہین اور اوسکے بغیر کچہہ نہین کرسکتے فقط علاوہ اسکے انسان بھی بغیر مدد دہان وزبان کے کلام کرسکتا ہے کہ اکثر اوقات ہر شخص بیحرکت کام ودہان کے دل ہی مین وظیفہ پڑہتا ہے دل ہی مین حمد وشکر کرتا ہے دل ہی مین کسی کو گالی دیتا ہے جبکہ انسان کی یہہ شان ہے تو پرماتما کا کیا بیان ہے کہ بغیر سعی ہاتہہ پاؤن وغیرہ کے زمین وآسمان کا خالق ہے جو کوئی کہتا ہے کہ پرمیشور دہان وزبان کے بغیر کلام نہین کرسکتا ہم اوس سے دریافت کرتے ہین کہ پرمیشور نے ہاتہہ اور پاؤن وغیرہ اعضا کے بنا جگت کس طرح بنایا غرضکہ جیسے دست وپا وغیرہ عضو کے بغیر پرماتما ساری سنسار کا خالق ہے ویسے ہی منہہ اور زبان کے بنا گفتگو بھی کرتا ہے اور وید اوسکا کلام ہے **سوال** یہہ کسطرح جانا گیا کہ وید پرمیشور کا کلام ہے شاید کہ برہما جی نے اپنی فضیلت ثابت کرنے کے لئے اپنی مصنوعی کتاب پرمیشور کی طرف منسوب کی ہووے۔ **جواب** اپنی فضیلت جتلانے اور شریعت پہیلانے کے لئے اون ہی لوگون کو مکر وفریب کرنے کی ضرورت پڑتی ہے کہ جن کے عہد مین دوسرے لوگ علم وفضل وعزت وآبرو مین اونکی بہ نسبت زیادتی رکہتے ہووین کیونکہ اس صورت

سوال جبکہ سوتہ پرمان اپنا ثابت کرنے والا آپ ہے تو آتماشری دوش آیا
کہ وہ اپنا محتاج آپ ٹھیرا حالانکہ کوئی اپنا پرمان آپ نہیں ہوسکتا **جواب** اگرچہ
آنکھہ کو دوسری روشنی کی ضرورت ہے کہ وہ اپنی روشن اور ظاہر کرنے والی آپ
نہین ہے ولیکن آفتاب وغیرہ اپنے اور دوسری اشیاکے روشن اور ظاہر
کرنے والے ہین اسواسطے اونکو سوپرکاشک اور پر کاشک کہتے ہین آنکھہ مین
یہہ بات نہین ہے کہ جب تک چراغ وغیرہ کی روشنی نہووے آنکھہ کسی چیز کو نہین
دیکھہ سکتی مثلاً حالت تاریکی مین انسان کو کوئی چیز نظر نہین آتی پس آنکھہ کی روشنی
اشیا کے ظاہر کرنے مین سورج وغیرہ کی روشنی کی محتاج ہے بغیر اوسکے کچھہ نہین کرسکتی
لیکن سورج وغیرہ اپنے تئین بھی اور دوسری اشیا کو بھی پرکاشت کرتے ہین اور
سواے اپنے کسی روشنی کی ضرورت نہین رکہتے اسیطرح ویدبھی سوپرکاشک اور
پرپرکاشک ہے یعنی اپنا پرمان بھی آپ ہی ہے اور دوسرون کا پرمان بھی وہی ہے
لہذا اوسکو دوسری سند کی احتیاج نہین ہے کہ وہ خود سند بالذات ہے اور سورج
وغیرہ کی تشبیہ سے آتماشری دوش بھی نہین آتا کہ جیسی کہ سورج وغیرہ
اپنے اور غیر کے ظاہر کرنے والے ہوتے ہین ایسے ہی وید اپنی سند بھی آپ ہے
اور دوسری کتابون کی بھی ہے اسیواسطے جس کتاب مین وید کی سند قایم نہین
ہے وہ کتاب درجۂ اعتبار سے خارج ہے اگر کوئی کہے کہ پرمیشور مجسم نہین ہے
اور دست و دہان و کام و زبان وغیرہ اعضا سے بری ہے پس وید اوسکا کلام
کیونکر ہوسکتا ہے تو جواب یہہ ہے کہ ہرچند پرماتما کام و دہان وغیرہ اعضا سے منزہ ہے
مگر تمام اعضا کے کام کرنے پر قادر ہے کہ اوسکی قدرت بے انتہا ہے چنانچہ شوتیا شوتر
اونپشد مین آیا ہے ۔

अपाणिपादोजवनोग्रहीतापश्य त्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः ॥

سنسکرت مین سوتہ پرمان کہتے ہین جس سند کو دوسری سند کی احتیاج ہوتی ہے وہ خود سند نہین ہے بلکہ اوس دوسری سند کے ذریعہ سے سند ہو ایسی سند کو پرتہ پرمان کہتے ہین جیسے کہ رشیون کے اقوال کہ وید کے موافق ہونے سے سند ہین سوتہ پرمان ہی کو پرمان تم کہتے ہین لہذا وید پرمان تم ہے کہ دوسرے پرمان کا محتاج نہین ہے جسکو دوسرے پرمان کی ضرورت ہوتی ہے وہ پرمان تر کہلاتا ہے جو پرمان تر کا محتاج ہے وہ صرف پرمان کہلاتا ہے مثلا سوتہ پرمان وید ہے منو نے کہا ہے۔

धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः

یعنی جو لوگ کہ دہرم کے جاننے کا ارادہ کرتے ہین اونکو وید پرمان تم ہے۔ یعنی دوسرے پرمان کی حاجت نہین ہے فقط ویدانت سوتر وغیرہ پرمان تر ہین کہ اونکے صرف وید کی مطابقت درکار ہے ویدانت سوتر پر جو آچاریون نے بہاشیہ بنائے ہین وے پرمان ہین کہ پرمان تم و پرمان تر کے محتاج ہین اور نیای وغیرہ شاستر کارون کی اصطلاح مین پرمان کہتے ہین پرما یعنی علم کے آلہ اور ذریعہ کو प्रमाकरणं प्रमाणं یعنی جس سے کسی چیز کا علم اور گیان ہووے وہ پرمان ہے یہہ بحث دور و دراز ہے بدہ کے مذہب مین صرف ایک پرتکش پرمان ہے کناد رشی کے انویایون نے دو[2] پرمان مانے ہین پرتکش اور انومان پتنجلی منی نے یوگ شاستر مین تین[3] پرمان تسلیم کئے ہین پرتکش اور انومان اور شبد گوتم رشی کے مطیعون نے چار پرمان قبول کئے ہین پرتکش اور انومان اور اپمان اور شبد میمانسک لوگ چھہ[6] پرمان مانتے ہین پرتکش[1] انومان[2] اپمان[3] شبد[4] ارتہاپتی[5] انپلبدہی[6] آریون کے یہان تو پرتکش اور انومان اور شبد تین ہی پرمان ہین دیانند سرسوتی نے پران والون کی پیروی کرکے وید بہومیکا وغیرہ مین تمام شاستر کارون کی خلاف آٹھہ پرمان لکھے ہین کسی موقع پر اسبارہ مین بخوبی اونکی تکذیب کیجاوے گی

پرماتما کو اوپنشد پرش کہتے ہین یعنی اوپنشد وغیرہ شاستر کو برہم کے گیان کا وسیلہ اور کارن ہونے سے برہم یونی اس سوتر مین کہا گیا ہے حاصل یہہ ہے کہ پرماتما بدرجۂ غایت لطیف اور سوکشم ہونے سے حواس خمسہ سے اور پرتکش پرمان سے دور تر ہے اور بے نشان اور لنگ شونیہ ہونے سے انومان یعنی شکل منطقی کو بھی وہان رسائی نہین ہے لہذا صرف وید اور اوپنشد ہی کسیقدر اوسکی تفسیر کر سکتے ہین اسیواسطے تو للکار اوپنشد مین آیا ہے۔

यद्वाचानभ्युदितं येनवागभ्युद्यते तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि

یعنی جسکو کہ کلمہ اور کلام ظاہر نہین کر سکتے اور جس سے سارے کلمہ اور کلام ظاہر ہوتے ہین اوسی کو تو برہم جان فقط یعنی وید اور اوپنشد کے سوا ے پرماتما تک کسی کلمہ اور کلام کی رسائی نہین ہے۔ اسیطرح تیتریہ اوپنشد مین آیا ہے۔

यतो वाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह

یعنی من کے ساتھہ کلام جسکو نپاکر واپس آتے ہین وہ برہم ہے فقط یعنی پوتر من اور وید اور اوپنشد کے کلام کے سوائے پرماتما تک کوئی نہین پہنچ سکتا اسلئے صرف وید اور اوپنشد ہی اوسکی ذات وصفات کے علم کا وسیلہ اور ذریعہ ہین اس تقریر کا خلاصہ یہہ ہے کہ ویدانت سوتر نے وید کو پورشیہ اور حادث کہین نہین کہا ہے بلکہ بیاس رشی نے ویدانت سوتر کے پہلے ادہیاے کے تیسرے پاد مین صریح نتیہ اور اناوی اور قدیم وازلی کہا ہے وہ سوتر یہہ ہے۔

अत एव च नित्यत्वं

یعنی چونکہ ہر ایک سرشٹی کی آدی مین پرجاپتی یعنی برہما وید کے لفظون کے ارتھہ کو یاد کر کے تمام ذیروح اور غیر ذیروح کی پیدایش کا ذریعہ اور وسیلہ بنتا ہے اس سے وید کی قدامت وازلیت ثابت ہوئی اب چاہیے جاننا کہ آریون کو دہرم اور ادہرم کی تحقیقات مین زیادہ سند بالذات ہے کہ اوسکو دوسری سند کی ضرورت نہین ہے اور ایسی سند کو

اس شرتی کا ارتھہ سمجھنا چاہیے کیونکہ یہان دو فعل واقع ہین ایک جاگرت اور دوسرا جات اور دونون فعل جنی پرا اور بہاوے دہاتو یعنی مصادر سے بنے ہین اور پرا اور بہاو کہتے ہین ظاہر ہونے کو اور ظہور اشیاے موجودہ ہی کا ہوتا ہے پس اس شرتی سے یہی بیہہ ہی اشکار ہوا کہ پرماتما شروع پیدایش مین وید موجودہ ہی کو برہما جی پر نازل کرتا ہے یعنی ترتیب وید ہی کے ساتھہ اونکے دل مین ڈالتا ہے سوال تم کیونکر وید کو قدیم اور اپورشیہ کہتے ہو بیاس رشی نے تو ویدانت سوتر مین وید کو برہم کا معلول اور کاریہ کہا ہے وہ سوتر بیہہ ہے۔

शास्त्रयोनित्वात्

اس سوتر کا ارتھہ بیہہ ہے کہ شاستر یعنی وید کا کارن ہونے سے پرماتما دانائے جز و کل ہے کہ اگر وہ ہمہ دان نہوتا تو ایسا وید کیونکر بناتا پس جبکہ وید پرماتما کا کاریہ ہے اور پرماتما او سکا کارن ہے تو وید قدیم اور اپورشیہ کہان رہا جواب اس سوتر کے وہ معنی غلط ہین صحیح بیہہ ہین کہ اونپشد ہی یونی یعنی پرمان اے سنا جسمین وہ پرماتما ہے اس سوتر مین شاستر سے مراد اونپشد ہی غرض کہ پرماتما مین صرف ویدہی پرمان ہے نہ پرتکش اور انومان کہ پرماتما صورت و رنگ و نشان وغیرہ سے منزہ ہے پس بیہہ ظاہر ہے نیایک پر کہ وہ انومان سے پرماتما کو ثابت کرتے ہین ویدانتیون کا تو بیہہ ہی قول ہے کہ پرماتما کے ثبوت مین پرتکش وغیرہ پرمان کو کچھہ دخل نہین ہے صرف اونپشد ہی سے وہ جانا جاتا ہے اسیواسطے اونپشد مین وارد ہے۔

तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि

یعنی مین اوس پرش اے محیط کل اشیا کو دریافت کرتا ہون جسکی کہ اونپشد مین تشریح کیگئی ہے فقط لفظ یونی کے معنی سنسکرت مین ذریعہ اور سبب اور وسیلہ اور کارن مین اور لغوی معنی لفظ شاستر کے بیہہ ہین کہ جو ہدایت کرنے والا ہووے اور وہ وید اور اونپشد وغیرہ ہے پس چونکہ صرف اونپشد ہی برہم کے گیان کا ذریعہ اور کارن ہے اسواسطے

ویدکا انادی اور ایورشیہ ہونا اوسی طور پر ہے جیسے کہ آریون کے طرز پر بند کو ہوا اسوال برہدارنہ اوپنشد کی شرتی سے جانا جاتا ہے کہ وید حادث ہے وہ شرتی یہہ ہے۔

अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः ॥

یعنی رگ وغیرہ وید کے چارون حصے اس علت اولی یعنی جگت کے کارن پرماتما کے نشواس ہے سانس مین فقط اب سانس کے حدوث و فنا مین کسی کو کلام نہین ہے کیونکہ منہہ اور ناک سے پران وایو کے نکلنے کو نشواس اور سانس کہتے ہین جواب یہان نشواس سے مراد یہی ہے جیسے کہ نفس عربی مین بمعنی کلام مستعمل ہے یہہ ہی حال سنسکرت مین اوسکے مرادف لفظ نشواس کا ہے پس برہدارنہ کی شرتی کا حاصل یہہ ہے کہ وید پرماتما کا کلام ہے اس شرتی مین حدوث و فنائے وید کی بحث نہین ہے سوال مذکور کا دوسرا جواب یہہ ہے کہ وید کو پرماتما کا نشواس اسواسطے کہا کہ جیسے جاندار بلا محنت و مشقت کے سانس لیتا ہے اسیطرح پرماتما کو وید کے اوپدیش کرنے مین کسیطرح کی محنت و مشقت نہین پڑتی بلکہ بفور ارادہ کے ابتدائے پیدائش مین برہما جی کو وید اوپدیش کرتا ہے فی الحقیقت پرماتما سانس لینے سے منزہ ہے کہ جسم و جسمانی نہین ہے بغور و تامل دیکھیے کہ کوئی جاندار نشواس اور سانس خود خلق نہین کرتا بلکہ باد موجودہ ہی براہ دہن اور بینی کے برآمد ہوتا ہے اوسیکو نشواس و سانس و نفس و دم کہتے ہین اسیطرح پرماتما سب سرشٹیون کی آدی مین ترتیب قدیم کے ساتھہ وید کا پرکاش کرتا ہے یہہ ہی وید کا ایورشیہ ہوتا ہے اور یہہ ہی وید کی قدامت ہے پھر وید کو نشواس اور سانس کی مانند کہنے سے یہہ بھی ملحوظ و منظور ہے کہ پرماتما مجسم نہین ہے کہ سانس لیتا ہووے اسیواسطے کہا گیا کہ وید کا پرماتما سے ایسا تعلق ہے جیسا کہ انسان وغیرہ جاندار سے سانس کا تعلق ہے کہ باد موجودہ ہی اوسکے منہہ اور ناک سے نکلتی ہے اسی قیاس پر یجروید کی

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत

اور یہہ ہی اوس سے پہلی سرشٹی مین اور یہہ ہی اوس سے پہلی مین اسی قیاس پر
انادی کال تک سمجہو اور ازل سے ہر ایک سرشٹی مین آیات وید کی ایک ہی ترتیب ہونا آریون
کے نزدیک اوسکی قدامت اور ازلیت ہے شرتیون کی ترتیب کو الفاظ اور حروف کی ترتیب
پر بھی حاوی سمجھنا چاہتے یعنے ابتدا زمانہ سے لیکر پرماتما وید کے حروف والفاظ
وآیات کی ایک ہی ترتیب مرعی رکھکر برہما جی کو اوسکی تعلیم کرتا چلا آیا ہے اور لاانتہا
وقت تک وہی ترتیب ملحوظ رکھیگا یہہ ہی وید کا انادی اور اننت ہونا ہے اور یہہ ہی وید کا اپورشیہ
ہونا ہے ساینا چاریہ کہتے ہین کہ جو کتاب کسی انسان کی بنائی ہوئی ہے وہ پورشیہ ہے
اور جو پرماتما کی ساختہ ہے وہ اپورشیہ ہے وید پرمیشور کی صنعت ہونے سے اپورشیہ ہی
فقیر مولف عرض کرتا ہے کہ اس قول کی صحت مین بھی تامل ہے کیونکہ زبان سنسکرت مین پورشیہ
کہتے ہین پرش کے بنائے ہوئے کو اور پرش کے دو معنی ہین ایک جیو دوسرا پرمیشور وید
اور اوپنشد مین بھی لفظ پرش پرمیشور کے لئے آیا ہے چنانچہ یجروید کے اکتیس [۳۱] ادھیای مین ہے

सहस्र शीर्षा पुरुष: + वेदाहमेतं पुरुषमहान्तमादित्य वर्णं तमस: परस्तात् ॥

کٹھولی اوپنشد کے دوسرے ادھیای مین ہے، पुरुषान्न परं किंचित्

پہلی شرتی کے معنی یہ ہین کہ ہم لوگون کے بیشمار سر ہین جس پرش مین نقط دوسری شرتی کے
معنی یہہ ہین کہ مین اوس بڑے پرش کو جانتا ہون جو کہ نورانی ہے اور اگیان سے پرلی طرف
ہے نقط تیسری شرتی کے معنی یہ ہین کہ پرش سے پرلی طرف کچھہ نہین ہے فقط سنسکرت
مین پرش کے معنی ہین پورن اور بیاپک چونکہ پرماتما محیط کل عالم ہے اسواسطے اوسکو پرش
کہتے ہین اور جیو آتما پرش اس سبب سے کہا جاتا ہے کہ وہ اپنے گیان اور علم کے ذریعہ
سے اس جسم کا احاطہ کر رہا ہے غرضکہ جس صورت مین ساینا چاریہ کے عقیدہ کے موافق
وید پرمیشور کا بنایا ہوا ہے تو اوسکے پورشیہ ہونے مین کیا کلام ہے کہ پورشیہ پرش کے ساختہ
کو کہتے ہین اور جو پرش نام پرماتما کا ہے ع پرش پرماتما یہ منیتا نیلس کاری ہے ؟ وہ اصل

مین اخذ کیا گیا ہے پس لفظ وید کے معنی یہہ ہین کہ جس سے پرماتما اور جیو آتما کی ذات و صفات کا اور دونون کے درمیان تعلقات کا کماحقہ گیان ہووے اور واو کو بای موحدہ سے بدلکر لفظ مذکور کو اہل فارس بہی اسی معنی مین استعمال کرتے ہین چنانچہ بیدار مقابل خفتہ اوس شخص کو کہتے ہین جو علم و ہوش رکہتا ہووے کیونکہ بید بہ معنی علم و ہوش ہے اور آر کلمہ نسبت ہے بہار جسم مین دیکہہ تو خیال کرو کہ پرمیشور کا گیان کسی وقت پیدا نہین ہوا جیسی کہ اوسکی ذات کبہی مخلوق نہین ہوئی بلکہ واجب و قدیم ہے پرماتما کا گیان و علم حواس اور اندریون کے اختیار نہین ہے کیونکہ پرمیشور حواس اور اندریہ وغیرہ سے منزہ و پاک ہے یہان شوتیا شوتر اوپنشد کی یہہ شرتی سند ہے

नतस्य कार्यंकरणंचविद्यतेनतत्सम
श्चाभ्यधिकश्चदृश्यते॥ परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयते
स्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच॥

معنی آنکہ اوسکے جسم و حواس نہین مین نہ کوئی اوسکی برابر ہے اور نہ کوئی اوس بڑہکر ہے اوسکی شکتی یعنی قدرت برتر ہے اور طرح طرح کی ہے اور اوسکی گیان کریا اور بل کریا یعنی علم و قوت و بید و شاستر مین ازلی و ابدی سنی جاتی ہے حاصل آنکہ پرماتما کے علم و قوت ابتدا اور انتہا سے منزہ ہین اگر کوئی کہے کہ وید فقرات کا مجموعہ ہے اور فقرے لفظون سے مرکب ہین اور الفاظ حروف سے ترکیب دئے گئے ہین لہذا وید قدیم نہین ہوسکتا کیونکہ جو چیز مرکب ہے وہ حادث ہے تو جواب یہہ ہے کہ آریہ لوگ وید مین اس قسم کی قدامت و ازلیت ثابت کرتے ہین کہ پرماتما انادی کال سے یعنی روز اول سے ہر ایک سرشٹی کی ابتدا مین ایک ترتیب کے ساتہہ برہما جی کو وید اوپدیش کرتا ہے یعنی پرماتما نے جس ترتیب کے ساتہہ اس سرشٹی کی ادی مین وید نازل کیا ہے یہہ ہی ترتیب شرتیون کی اس سے پہلے سرشٹی مین تہی

ضروری ہے کیونکہ جو چیز حادث ہے لابد فانی ہے پس لازم آیا کہ پرماتما تمام مخلوق کی مانند وید کو بھی خلق کرتا ہے اور انجام کار ساری مخلوق کی طرح طاق فنا پر ہوتا ہے شنکر اچاریہ کے مت والے یعنی وجودیہ لوگ کہتے ہین کہ وید آکاش وغیرہ مخلوق کی مانند سرشٹی کال مین پیدا ہوتا ہے اور پرلے کال مین آکاش وغیرہ مخلوق کی طرح فنا قبول کرتا ہے پھر ان لوگون کا قول ہے کہ جس آنپوربی یعنی ترتیب کے ساتھہ اس سے پہلی پہلی سرشٹی مین انادی کال پرنیت یعنی لاانتہا زمانہ تک وید تھا اوسی ترتیب کے مانند ترتیب کے ساتھہ ہر ایک سرشٹی یعنی پیدایش کے شروع مین پرمیشور وید کو ترتیب دیتا ہے پہلی پہلی ترتیب کے مخالف ترتیب کے ساتھہ ہرگز وید کو مرتب نہین کرتا اسی کا نام انکے یہان اپورشیہ ہے یعنی وجودیہ لوگ اس سبب سے وید کو اپورشیہ اور انادی کہتے ہین کہ پرمیشور ہر ایک سرشٹی کے شروع مین پہلی پہلی سرشٹی کی ترتیب کی مانند ترتیب کے ساتھہ وید کو مرتب کرکے برہما جی کو تعلیم کرتا ہے اب خیال کرنا چاہیے کہ جس صورت مین پہلی ترتیب کی مانند ترتیب ہوگی تو فی الحقیقت وہی پہلی ترتیب نہوگی بلکہ پہلی ترتیب سے غیر دوسری ترتیب ہوگی مثلاً خشت پز ایک خشت بناوے اور پھر اوس خشت کو توڑکر اوسی کی مانند بناوے تو لاکلام یہہ خشت پہلی خشت سے غیر ہوگی جیسی کی ویسی پہلی ہرگز نہوگی اور دونون خشتون کا فاعل خشت پز ہی قرار پاویگا اس سے یہہ ہی ظاہر ہوا کہ ہر ایک سرشٹی کے اول پرمیشور نیا ہی وید تصنیف کرتا ہے اسواسطے وجودیون کے یہان وید پورشیہ ٹھیرا پس وے لوگ جو وید کو اپورشیہ کہتے ہین وہ محض بے بنیاد ہے بلکہ استعارہ ہین یا کون

اور اودیب بادیون کا مت برابر ہے آریون کے عقیدہ مین تو وید قدیم اور اپورشیہ اور لازوال ہے کہ پرماتما کے گیان مین شامل ہے یعنی اوسکے گیان اور علم کا ایک شعبہ اور ایک ودیش ہے کہ وید و وگیانی دہاتو یعنی مصدر سے سنسکرت

ब्राह्म्यं तु ब्रह्मणा प्रोक्तं पाद्म्यं तथैव वैष्णवं पराशरेण कथितं वैष्णवं मुनि पुंगवा : शैवं शैलालिना प्रोक्तमि-
त्यादि ॥

یعنی براہم پران اور پدم پران برہمانے بناے ہین اور بشنو پران پراشر کا مصنفہ ہے اور شیلاری نے شب پران کہاہے الخ غرضکہ خود پرانون سے ثابت ہے کہ پرانون کے بنانے والے بہت اشخاص ہین کرشن دیپاین کا ساختہ کوئی پران نہین ہے لہذا جو کوئی کہتاہے کہ پران بنانے کی جہت سے اونکا نام بیاس ہواہے وہ بالکل جہوٹ ہے بلکہ اونکو بیاس اس سبب سے کہتے ہین کہ اونہون نے وید ارتہہ کا پرکاش کیا تہا اب چاہیے جاننا کہ پرانون مین جو لکہاہے کہ برہماجی اور رشیون نے پران بناے وہ بہی جہوٹ ہے کیونکہ بہ تقدیر پرانون مین وید اقدس کے خلاف مضامین ہرگز نہوتے کہ برہماجی اور رشی لوگ بات بات مین وید کے تابع ہین مخالفت وید اونکی شان سے بعید ہے یہانتک یہہ بات ثابت کی گئی کہ وید کتاب واحد ہے اور رگ وغیرہ اوسکے چار رسالے ہین اور یہہ چارون حصہ پرمیشور ہی نے جداگانہ قایم کردیے ہین بیاس کو اونکی تقسیم مین کچہہ دخل نہین ہے کیونکہ اگر یہہ تقسیم بیاس ہی سے متعلق ہوتی تو خود وید مین رگ وغیرہ نام نپاے جاتے اب مخفی نرہے کہ آریون مین بعض لوگ ایسے ہین کہ وید کو حادث جانتے ہین اور اکثر لوگ قدیم مانتے ہین حادث ماننے والے ایک نیا تک ہین وہ کہتے ہین کہ وید پورشیہ ہے یعنی پرش نے بنایاہے یہان لفظ پرش سے پرماتما لیا جاتاہے یعنی وید بنایا ہواہے فقرون کا مجموعہ ہونے سے بہارت وغیرہ کی مانند کیونکہ جو جو فقرون کا مجموعہ ہوگا بیشک کسی کا ساختہ ہوگا کہ فقرات الفاظ سے مرتب ہوتے ہین اور الفاظ حروف سے ترتیب دیے گئے ہین جسقدر مرکبات ہین وہ بالکل حادث ہین کہ کسی وقت کسی نے اونکو ترکیب دیاہے جیسے کہ مرکب کے حدوث مین کلام نہین ہے اسیطرح اوسکی فنا بہی

ماخوذ ہے اور کس کا بنایا ہوا ہے پس ایسے مجہول قول پر بہروسہ کرنا شایان عقل نہین ہے اصل یہ ہے کہ پرانون کے بنانے والے اشخاص خاص ہین متسہ پران کے ادہیای آخر مین اونکے نام جدا جدا مذکور ہین منجملہ اون شلوکون کے دو شلوک

वराह कल्पवृत्तांतमधिकृत्य पराशरः यत्
प्राह धर्मानखिलान् विष्णोस्तद्वैष्णवं विदुः ॥१॥ یہہ ہین یہ
यत्रेशानकल्पस्य वृत्तांतमधिकृत्य च कल्पितं लैंग
मित्युक्तं पुराणं ब्रह्मणा स्वयं ॥२॥

یعنی پراشر رشی نے جس پران مین براہ کلپ کی سرگذشت شروع کرکے بشنو کے سارے دہرم کہے ہین اوسکا نام بشنو پران ہے اور برہما جی نے ایشان کلپ کا حال شروع کرکے جو پران بنایا ہے اوسکا نام لنگ پران ہے فقط ان دونون شلوکون کا حاصل یہہ ہے کہ بشنو پران پراشر رشی نے تصنیف کیا ہے اور لنگ پران برہما کا بنایا ہوا ہے اسیطرح لنگ پران کے ادہیای شصت و سوم مین ہے کہ پلست رشی نے پراشر کو دعا دی کہ تو بشنو پران کا بنانے والا ہوگا اور پرماتما کی حقیقت کو کما حقہ جانیگا مین بعد بششٹ نے دست دعا اوٹہایا کہ جو کچھہ پلست نے تیرے حق مین کہا ہی وہ ویسے ہی ہوگا بعد ازین لنگ پران کا مصنف کہتا ہے کہ پلست اور بششٹ کی دعا سے پراشر نے بشنو پران بنایا جسکی ضخامت ۶ ہزار شلوک ہین یہہ مطلب لنگ پران مین اس شلوک سے شروع کیا ہے۔

त्वयास्मात्समस्तानि भवान शास्त्राणि वेत्स्यतीति ॥
اس شلوک تک
प्रसादाद्वैष्णवं चक्रे पुराणं वै पराशरः षट्सहस्रप्रमाणं
च समस्तार्थस्य साधकं ॥१॥

لنگ پران کے تمام مضمون کا حاصل یہ ہے کہ بشنو پران کا مصنف پراشر رشی ہے متسہ پران مین بہی اٹہارہ پران کے بنانے والون کے نام مندرج ہین اور آغاز اوس مضمون کا اس شلوک سے ہے۔

کو جدا جدا کر دیا اس سبب سے اونکا نام وید بیاس پڑا کہ وید بیاس کہتے ہین وید کے
تقسیم کرنے والے کو وہ غلط ہے کہ وید مقدس کے رسالے قدیم الایام سے باہم
جداگانہ مقسوم ہین اور خود وید مین باسماے رگ و یجر و تہرب و سام موسوم ہین کرشن
دوی پاین کو اونکی تقسیم و تفریق مین کچھہ دخل نہین ہے اگر پراشر کے بیٹے
ہی نے وید کے الگ الگ رسالے کئے ہوتے تو خود وید مین کہان سے چارون کے
حوالے دئے ہوتے اونکا وید بیاس نام اسواسطے ہوا کہ اونہون نے شہر بشہر وید کے
ارتہہ کے بیاکہیان مسمےٰ اور رقتہً فوقتہً یعنی وید اقدس بیان کئے بعضے اہل تحقیق
نے لکہا ہے کہ پراشر کے بیٹے کو وید بیاس اس سبب سے کہتے ہین کہ اونہون نے
وید معظم کی شاکہا کہ ایک قسم کی شرح ہین بنائین اور شاکہاؤن کے ذریعے سے وید کو
ملک بہ ملک و شہر بشہر پہیلایا بعض کا قول یہہ ہے کہ پراشر کے پسر کو وید بیاس اسوجہ
سے کہا جاتا ہے کہ اونہون نے وید کا مفہوم لیکر ویدانت سوتر اور یوگ بہاشہ وغیرہ
بہت کتابین بنائین اور اونکے وسیلہ سے روے زمین پر وید ارتہہ کو رواج دیا لہذا
وے وید بیاس مشہور ہوئے کیونکہ وید بیاس کہتے ہین وید کے پہیلانے والے کو
وید بیاس کے یہہ بہی معنی ہوسکتے ہین کہ جسکی عقل ویدون مین پہیلی ہوئی ہو وے چونکہ
کرشن دوی پاین نے ویدون کو پڑہکر دنیا مین پہیلایا لہذا اونکا نام وید بیاس مشہور ہوا
پورانک لوگ کہتے ہین کہ اونکا نام وید بیاس اسطرح ہوا ہے کہ اونہون نے وید کا
آشے لیکر اٹہارہ پران بنائے اور اس حیلہ سے وید کو پہیلایا پہر یہہ لوگ اپنا مطلب
ثابت کرنے کے لئے یہہ آدہا شلوک سند دیتے ہین ۔

अष्टादश पुराणानां कर्त्ता सत्यवती सुतः ॥

یعنی اٹہارہ پران کا بنانے والا ستیوتی کا بیٹا ہے فقط مگر یہہ محض غلط ہے کہ کسی کو
معلوم نہین کہ اس آدہے شلوک کا دوسرا آدہا ٹکڑا کسطرح ہے اور یہ کس کتاب سے

مین اگر صیغہ کے جمع ہونے پر مدار ہوتا تو دیانندی لوگ رگ وغیرہ کی جمعیت پر بھی مصر ہوتے
اور کہتے کہ رگ وغیرہ بھی متعدد ہین یعنی جیسے وید چار ہین ویسے ہی رگ وغیرہ بھی تین
تین سے کم نہین ہین کیونکہ سنسکرت مین عموماً صیغہ جمع تین سے کم مین مستعمل نہین ہوتا اور
زیادہ کی حد معین نہین ہے علاوہ اسکے اگر صیغہ ہی کے مفرد و جمع ہونے پر حصر ہے تو
ہزارہا مقام پر لفظ وید بصیغۂ مفرد استعمال کیا گیا ہے اب صیغہ جمع کو دلیل گرداننے
والون پر لازم ہے کہ جیسے صیغہ جمع کے بنے سے ویدون کو متعدد مانتے ہین ویسے ہی انکو
چاہیئے کہ صیغہ مفرد کے مستعمل ہونے سے ویدون کو کتاب واحد ہی سمجھین اتھرب وید کی
مہا اپنشد مین ہے کہ چارون وید کے برہماجی کے چار مونہہ سے متعلق ہین چنانچہ۔

अथ: पुनरेव नारायण: सोन्यत्कामो मनसाध्यायेत तस्य
ध्यानांत: स्थस्य ललाटात्स्वेदोपतत् ताइमा: प्रतता आ
पस्तासुतेजोहिरण्मयमण्डं तत्र ब्रह्मा चतुर्मुखो जायत सो
ध्यायत पूर्वाभिमुखो भूत्वा भूरिति व्याहृति गायत्रं छंद ऋग्वे
द: पश्चिमामुखो भूत्वा भुवरिति व्याहृति त्रैष्टुभं छंदो यजुर्वेद:।
उत्तरामुखो भूत्वा स्वरिति व्याहृतिर्जागतं छंद: सामवेद: दक्षिणा

پھر دیانندی لوگ جو متعدد منہہ کا ہونا محال قرار دیتے ہین اوسکا جواب یہہ ہے کہ انسان
کے حق مین البتہ غیر ممکن ہے دیوتون کے لئے کچھہ محال نہین ہے اور اس بارہ مین
کل آریہ ہمارے شریک ہین بلکہ یہود و عیسائی و مسلمان وغیرہ کو بھی ہماری تائید کے سوا
چارہ نہین ہے تفصیل اس امر کی تحفۃ الاسلام وغیرہ کتب مین کی گئی ہے سرائیل وغیرہ
فرشتون کی سرگذشت دیکھہ لیجیے پھر دیانندی جو کہتے ہین کہ انسان ہی دیوتا ہین انسانون
سے غیر نہین ہین وہ محض غلط ہی پرماتما نے چاہا تو کسی رسالہ مین یہہ بحث بھی مفصل لکھی جائیگی
پورانک لوگ جو کہتے ہین کہ پراشر رشی کے بیٹے کرشن دوئی پاین نے وید کے رسالون

یعنے اوس پرماتما سب کے معبود سے رگ ظاہر ہوتے ہین اور سام ظہور کرتے ہین
اور چھندس یعنے اتھرب آشکار ہوتے ہین اوسی سے یجر نمودار ہوتا ہے فقط یہہ اتھرب
وید کے چونتیسوین[۳۴] ادہیای مین ہے۔

यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि
यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः

یعنی جس من مین رگ قرار پکڑتے ہین اور سام قیام پذیر ہوتے ہین اور یجر جا بگیر ہوتے
ہین جیسے رتھہ کے پہیئے کی ناہبی مین آرے ٹہیرے رہتے ہین کیونکہ سارا گیان
من ہی سے متعلق ہین فقط اتھرب وید کے اونیسوین[۱۹] کانڈ مین ہے۔

कालाद् ऋचः संभवन् यजुः कालादजायत ॥

یعنی کال سے رگ ظاہر ہوتے ہین کال سے یجر صورت پکڑتا ہے فقط یہان اس تسرتی
مین کال سے مراد پرماتما ہے کیونکہ کال ہی پرماتما کے نامون مین سے ایک نام ہے
کہ لغت سنسکرت مین کال اوسکو کہتے ہین کہ سب کی حرکات و سکنات جسکے اختیار مین
رہتی ہین اور اوسکو بہی کہتے ہین جو کل کی شمار کیا کرتا ہو وے یا اپنی ذات
اور صفات سے کل کا احاطہ کر رہا ہو وے کیونکہ سنسکرت مین لفظ کال کل دہاتو یعنی
مصدر سے بنتا ہے جو کہ معنی حرکت دینے اور شمار کرنے اور احاطہ کرنے وغیرہ مین
مستعمل ہے تیتریہ سنہتا مین ہے

परिमितानि सामानि परिमिता
ऋ. यजूंषि अथैतस्यैवान्तो नास्ति यद् ब्रह्म ७-३-१५

یعنے سام محدود ہین اور یجر محدود ہین وہی غیر محدود ہے جو برہم ہے فقط
دیکہو جبکہ رگ و سام و یجر وغیرہ الفاظ بصیغہ جمع وارد ہوئے ہین تو لفظ وید کے
بصیغہ جمع واقع ہونے مین کیا جائے شگفت ہے کیونکہ رگ وغیرہ کی تعداد کا
کوئی قایل نہین ہے بلکہ جتنے لوگ تعدد وید کے معتقد ہین وے بہی اس بات پر
قایم ہین کہ اگرچہ وید چار ہین مگر رگ وغیرہ فی نفسہ کتاب واحد ہین اس صورت

نام سفر الخلیفہ ہے اور دوسرے کا نام سفر الخروج اور تیسرے کا نام کتاب قوانین علی ہذا القیاس
پہر توریت ایک ہی کتاب شمار کیجاتی ہے کسی کو اوسکی وحدت مین شبہ نہین ہے یہہ ہی
حال وید مقدس کا ہے کہ ہرچند اوسکے چار حصے اسماے اربعہ کے ساتہہ دنیا مین مذکور و
مشہور ہین ولیکن پہر بہی وید کتاب واحد ہے اوسکے ایک ہونے مین سواے دیانند
سرسوتی کے کسی آریہ کو گفتگو نہین ہے **سوال** جبکہ خود وید اور اوپنشد مین چارون
وید کے نام درج کئے گئے ہین تو کیونکر کہتے ہو کہ وید کتاب واحد ہے **جواب** بلاشبہ
وید اور اوپنشد مین وید کے چارون حصون کے نام آئے ہین وے ذات وید کے نام نہین
ہین کہ اجزا کے نام ذی اجزا کی طرف منسوب نہین ہوسکتے کسی چیز کے اجزا اور شی ہین
اور ذی اجزا وہ چیز اور شے ہے وید نام اوس چیز ذی اجزا کا ہے اور رگ وغیرہ
اسماے اجزا ہین پس کوئی قباحت وارد نہین ہوتی جیسے ہاتہہ اور پانوؤن وغیرہ
جسم کے اجزا ہین اور جسم ذی اجزا ہے ہاتہہ اور پانوؤن کو کوئی عقلمند ازروی حقیقت
و اصلیت کے ذی اجزا جسم نہین کہتا کیونکہ اجزا اور ذی اجزا مین تفاوت ظاہر ہے
جیسے کہ موکش دہرم وغیرہ شانتی پرب کے اجزا ہین اور شانتی پرب وغیرہ بہارت
کے اجزا ہین ایسی ہی رگ و یجر و سام و اتہرب وید کے حصے ہین دراصل وید ایک ہی
کتاب ہے جن لوگون کا مقولہ ہے کہ وید چار ہین وے اعتراضات مذکورۂ بالا کے
زیربار ہین۔ **سوال** وید چار ہی ہین اسیواسطے وید اور اوپنشد وغیرہ مین لفظ وید
بصیغہ جمع آیا ہے **جواب** زبان سنسکرت مین قاعدہ ہے کہ کبھی بجاے مفرد
کے صیغہ جمع کا استعمال کرتے ہین چنانچہ یجروید کے اکتیسوین ادہیاے مین لفظ
رگ اور یجر اور چہندس کہ مراد اتہرب وید سے ہے بصیغہ جمع آئے ہین حالانکہ رگ
وغیرہ کی جمعیت اور کثرت کا کوئی قایل نہین ہے وہ یجر وید کا بچن یہہ ہے ۔

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे छन्दांसि
जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ०

ہووے مگر ان دونون حالت مین پرمیشور کے علم وعقل کا قصور ثابت ہوگا کہ انجام کار سے واقف نہین ہے اگر ہر ایک کام کے انجام سے خبردار ہوتا تو اول ہی ایسی کتاب نازل کرتا کہ جس سے پوری پوری کار برآری ہوتی دوسری کتاب کی ضرورت نہ پڑتی اور ایسا مضمون و مطلب کہ جسکا چند روز بعد نسخ بہتر گردانا گیا اول ہی نازل نہ کرتا دونون طرح پر پرمیشور کے گیان مین کوتاہی پائی جاتی ہے اگنی وغیرہ کا رشی اور منی ہونا بھی صرف دیانند سرسوتی کا ساختہ اور پرداختہ ہے کسی کتاب قدیم و جدید سے ثابت نہین ہے اور سوامی جی نے بھی اس بارہ مین کوئی سند پیش نہین کی وید معظم تو پرماتمانے برہما جی پر نازل کیا ہے اور اون ہی کے ذریعہ سے ہم کو ملا ہے اور کل متقدمین اور متاخرین کا یہی عقیدہ چلا آتا ہے اسکی مخالفت سوا دیانند سرسوتی کے کسی نے آجتک نہین اختیار کی۔ تفصیل اس امر کی وید دوار پرکاش نامی رسالہ مین کی گئی ہے جو کہ متقدمین نے وید اور اوپنشد سے ایک طریق اپنی قایم کیا ہے بے سبب وعبث اوسکی برعکس نئی بات اپنی طرف سے اختراع کرنی سوامی جی کی ہٹ ہے کوئی آریہ اوسکو تسلیم نہ کریگا اب ہم تعدد وید کے چند سوال نقل کرکے ایک ایک کا جواب دیتے ہین **سوال** کسی شے کے اجزا کو مستقل اور جداگانہ نام کے ساتھ کوئی نہین بولتا پس جس صورت مین رگ وغیرہ اجزاے وید ہین تو جداگانہ اور مستقل نام سے کیونکر مذکور اور مشہور ہین **جواب** اکثر اشیا ایسی ہین کہ اونکے اجزا جداگانہ اور مستقل نام کے ساتھ بولے جاتے ہین جیسے انسان وغیرہ کا جسم کہ اوسکے اجزا خاک و آب و باد وغیرہ جداگانہ مستقل نام کے ساتھ کہے جاتے ہین مگر یہہ انسان وغیرہ اپنی ذات مین شی واحد ہے اسی طرح توریت کے اونتالیس ۳۹ حصے جداگانہ و مستقل نام سے مشہور ہین پہلے حصہ کا

آریون کو تفریح دیگئی ہے اب ہم ان باتون کی تشریح کا انتظام کرتے ہین اور ایک ایک کو واضح راے خاص و عام - مخفی نرہے کہ وید مقدس دراصل ایک ہی کتاب ہے تعدد وید کا باعتبار رساون کے ہے جن کے نام رگ و یجر و سام و اتھرب ہین دراصل چارون وید کتاب واحد ہے اگر کتاب پرماتما متعدد ہووین تو ہر مشہور کی کتاب اور زید و بکر کی کتاب مین کیا فرق ہے شاید کہ جیسے زید و بکر اول ایک کتاب تصنیف کرتے ہین جب اوس سے پوری کاربرآری متصور نہین ہوتی تو دوسری کتاب کی بنیاد ڈالتے ہین اسیطرح پرمیشور بھی وقتاً فوقتاً کتابین نازل کرتا ہے جب ایک کتاب سے کاربرآری نہین ہوتی تو دوسری بھیجتا ہے اسیطرح دوسری کے بعد تیسری اور تیسری کے بعد چوتھی علی ہذا القیاس پس لازم آیا کہ پرمیشور کی کتاب بھی زید و بکر کی مصنفہ کتاب کی مانند کامل و تمام نہین ہے اب چاہیے جاننا کہ سرشٹی کی آدی سے لیکر آجتک جتنے رشی و منی و پنڈت و آچاریہ گذرے ہین سب یہی مانتے چلے آئے ہین کہ وید اقدس کتاب واحد ہے اور تعدد اوسکا باعتبار رساون کے ہے جنکے نام رگ وغیرہ ہین آجکل دیانند سرسوتی نے ایک نیا مذہب چلایا ہے کہ رگ وغیرہ چارون وید بذات خود جداگانہ اور مستقل چار کتابین ہین اور باوقات مختلفہ اگنی وغیرہ چار رشیون پر نازل ہوئے ہین مگر یہہ مسلمانون کے مذہب سے ماخوذ ہی اور محض غلط ہے کیونکہ جس صورت مین وید متعدد کتابین ہین تو لازم آتا ہے کہ پرمیشور کی کتاب بھی زید و بکر کی کتاب کی مانند پوری اور کامل نہین ہوتی بلکہ پرماتما کو بھی ایک کتاب کے بعد دوسری کی ضرورت پڑتی ہے جائے تعجب کہ چار کے بعد پانچوین کی احتیاج نہوئی چار ہی پر خاتمہ بالخیر ہوگیا علاوہ اسکے مختلف وقتون مین کئی کتاب کا آنا اوسی صورت مین ہو سکتا ہے کہ جب ایک سے کاملاً و تماماً کاربرآری ہووے تو باقی ماندہ مضمون و مفہوم دوسری مین مرقوم کیا جاوے یا پہلی کی دوسری ناسخ

وغیرہ کی ترقی مین اپنی ترقی چاہے اگر بالفرض کوئی شاذ ونادر ایسا ہی ہووے اور خدانخواستہ اوسکی درخواست کی موافق عیسائی وغیرہ ترقی بھی پائین اور وہ آریہ اونکی ترقی کو اپنی ترقی بھی خیال کرے تو اوسکا آریہ پن کہان رہیگا وہ تو اون عیسائی اور مسلمان وغیرہ ہی مین شامل ہوجاویگا شاید کہ سوامی جی کا آریہ پن اسی بنیاد پر قایم ہے اگر لفظ سب سے کہ تمام افراد بشر پر حاوی ہے گروہ خاص مراد رکہا جاوے تو بھی سوامی جی کی پانڈتہ ظاہر ہے کہ عام وخاص کی تمیز سے بے بہرہ ہین اور نہین جانتے کہ لفظ سب کا استعمال کس جگہہ ہوتا ہے اور اوسکا مفہوم کیا ہے علاوہ اسکے نوین اصل چھٹی ہی مین شامل ہے اوسکو علیحدہ اصل قایم کرنا فضول وعبث ہے کیونکہ چھٹی اور نوین کا ایک مدعا ہے اور ایک منشا دسوین اصل بھی گفتگو سے خالی نہین ہے کہ اوسکے آخر مین جو لکھا ہے کہ (ہر ٹیک ہتکاری نیم مین سب خود مختار رہین) وہ محض غلط ہے کیونکہ کوئی اہل مذہب کسی کام مین خود مختار نہین رہ سکتا ہر ایک کام مین اپنے مذہب کی شریعت کا پابند ہے اپنے دین کی کتاب آسمانی کا بات بات مین مقید ہے مثلاً آریہ لوگ وسبدم ہر ایک کاروبار مین وید اور شاستر کے تابع ہین بعض یا کل کام مین خود مختاری کا حیلہ وہی نکالیگا جو کوئی وید وشاستر کے حکم کو پس پشت ڈالیگا پس وہ آریہ نہین بلکہ پورا دیو ہے دیکہو کتنی کہ جسکیلیے آریہ لوگ سارے کرم اور دہرم اور جپ اور تپ کرتے ہین وہ دیانندیون کی اصول سے خارج ہے گویا ان لوگون نے ایسی ادنی چیز قرار دی کہ اصول دہگانہ سے باہر شمار کی صد آفرین دیانند سرسوتی کے علم وفضل پر۔ اب ہم آریون کے اصل الاصول بیان کرتے ہین وہ اصل الاصول وید مقدس ہے جو کہ ایک کتاب قدیم ہے اور شری برہما کے وسیلہ سے پرماتما کی جناب سے ہم کو ملی ہے جسمین کرم اور گیان وغیرہ کے مضامین مین اور آریون کے دہرم کے قانون اور آئین مین جیو اور پرمیشور کے علایق کی تشریح کی گئی ہے اور مکتی کے اوپایون سے

پرماتما سرو انتریامی ہے تو جیو انتریامی بہی ضرور ہوگا کیونکہ جیو سرو پدارتھ سے غیر ہین
سے پس جیو پرتنتر ٹہیرا لہذا سوامی جی جو جیو کو سوتنتر مانتے ہین خود اونہی کی دوسری اصول کے
خلاف ہے تیسری اصل اصل الاصول ہے چوتہی سے لیکر دسوین تک کل فروع ہین اونکو
اصول مین داخل کرنا سوامی جی کی عقلمندی کا ثمرہ ہے چوتہی اور پانچوین مین صرف لفظی
تفاوت ہے مفہوم دونون کا ایک ہے مضمون واحد دو عبارت مین ادا کرنے سے متعدد
نہین ہوسکتا شاید کہ سوامی جی کی یہہ ہی راے ہے کہ فرق لفظی و معنوی ایک ہی
چیز ہے اے آریہ بہائیون جن کے راے پر تم نے اپنی آخرت کی بہلائی منحصر رکہی ہے
اونکو اتنی بہی تمیز نہین ہے کہ فرق معنوی کیا ہے اور تفاوت لفظی کسکو کہتے ہین چہٹے
اصل کے دو فقرے سوامی جی نے قایم کئے ہین لفظ سنسار سے لیکر کلمہ منشا تک
پہلا فقرہ متن ہے اور لفظ ارتہات سے لیکر اونتی تک دوسرا فقرہ شرح ہے
لاکن یہہ شرح متن کے خلاف ہے کیونکہ متن مین سنسار کا اوپکار کرنا قایم کیا ہے
اور شرح مین اوسکے برعکس سماجک اونتی قایم کرتے ہین اور سماجک اونتی کہتے
ہین سماج کے متعلقون کی ترقی کو اور ظاہر ہے کہ سنسار عام ہے اور سماج خاص پس
سنسار کا اوپکار کہکر اوس سے سماج کے متعلقون کی ترقی مراد رکہنا بے تمیزی سے
خالی نہین ہے ۔ آٹہوین اصل مین بہی ہم کو گفتگو ہے کہ اودیا کے ناش کو مقدم
اور علیحدہ بیان کرنا بے شعوری ہے کیونکہ جبوقت ودیا کی ترقی ہوگی اودیا کا ناش
خود ہو جائیگا جیسے کہ روشنی کے موجود ہوتے ہی تاریکی راہ فرار لیتی ہے کہ وجود روشنی
اور عدم تاریکی دونون لازم و ملزوم ہین یہہ ہی حال ودیا کی ترقی اور اودیا کے
ناش کا ہے کہ جب دم ودیا ترقی پکڑیگی ممکن نہین کہ اودیا راہی عدم نہووے جبکہ
یہ بات ٹہیری تو اودیا کے ناش کو علیحدہ ذکر کرنا اور ودیا کی ترقی پر تقدیم دینا بالکل
غلط ہے نوین اصل بہی لغو ہے کیونکہ ممکن نہین ہے کہ ہر ایک آریہ عیسائی و مسلمان

۵ سنسار کا اوپکار کرنا اس سماج کا خاص منشا ہی ارتہات شاریرک اور آتمک اور ساماجک اونتی کرنا ۶ سب سے محبت کے ساتہہ دہرم کے موافق علی قدر حیثیت برتنا چاہیے ۷ اودیا کا ناش اور ودیا کی ترقی کرنی چاہیے ۸ ہر ایک کو اپنی ہی ترقی پر قانع نرہنا چاہیے بلکہ سب کی ترقی مین اپنی ترقی سمجھنی چاہیے ۹ سب لوگون کو ساماجک سروہتکاری نیم پالنے مین خود مختار رہنا نہ چاہیے اور ہر ایک ہتکاری نیم مین سب خود مختار رہین۔ ۱۰ اب ہم سرسری طور پر ان اصول دہگانہ پر نظر کرتے ہین پہلی اصل ویدک آریون کے خلاف ہے کہ جسصورت مین ودیا یعنی علم سے جانے گئے پدارتہہ یعنی اشیا کی مول یعنی علت پرمیشور ہے تو جیوآتما اور پرکرتی اور پرمانو وغیرہ اناد اور ازلی نرہے بلکہ دوسری مخلوق کی مانند حادث اور سادی ٹھہرے حالانکہ یہہ کبہی آریہ کا مذہب نہین ہے چنانچہ خود سوامی جی نے جیوآتما اور پرکرتی وغیرہ کو دید یہو دیپکا وغیرہ کتابون مین قدیم مانا ہے علاوہ اسکے جبکہ پرماتما کل اشیا کی آدی مول ہے تو مخلوق اور پرمیشور مین فرق اتنا ہی ہے جتنا کہ درخت کی بنیاد اور شاخ مین فاصلہ ہے پس لازم آیا کہ جیو اور پرکرتی وغیرہ کی پرمیشور علت مادی ہے اور پرمیشور متغیر ومتبدل ہے کیونکہ بنیاد ہی تغیر وتبدیل قبول کرکے صورت فروع پکڑتی ہے اور سب طرف کو بڑہتی ہے پہلی اور دوسری اصل مین کچھہ فرق نہین ہے دونون کا مفہوم واحد ہے کیونکہ پرمیشور موصوف ہے اور ست چت وغیرہ اسکی صفات ہین صفت اور موصوف کی علیحدگی کسیوقت ممکن نہین ہے پس انکو دو شمار کرنا دیانند سرسوتی کے علم وفضل کا نتیجہ ہو شاید کہ سوامی جی یہہ ہی سمجہے ہین کہ پرمیشور کی ذات وصفات مین گاہے گاہے جدائی بہی ہوتی ہے مگر یہہ محض غلط ہے کیونکہ پرمیشور کی ذات وصفات دونون انادی اور اننت ہین اور ان دونون مین جو گن گنی بہاو سمبندہ ہے وہ بہی انادی و اننت ہی علاوہ اسکے جبکہ سوامی جی کے نزدیک

نہ کرے فقط دید انوکول ترک اور یکتی کی ہمیشہ ضرورت پڑتی ہے چنانچہ

आत्मा वारे द्रष्टव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः

یعنی آتما کا درشن اور منن اور دہیان کرنا واجب ہے فقط منن بروزن چمن کہتے ہین دلائل عقلی کے ساتھہ غور کرے گو مطلب یہ ہے کہ وید کی موافق جتنی یکتیان کہ کہتا ہووے کل کو آتما کے حصول مین صرف کرے یہان لفظ آتما جیو آتما اور پرماتما دونون کا دال ہے برہسپتی رشی نے تو یکتی کی اشد ضرورت سمجھی ہے کہ یکتی کے بغیر کسی بات کی تحقیق نہین ہوتی ہے وہ برہسپتی کا بچن یہہ ہے۔

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो हि निर्णयः॥ युक्तिहीन विचारे तु धर्महानिः प्रजायते॥

یعنی یکتی سے قطع نظر کر کے صرف شاستر سے کسی بات کی تحقیق نہ کرنی چاہیے کیونکہ یکتی سے خالی گفتگو مین دہرم کی ہانی ہوتی ہے فقط اسواسطے کل آریہ بہائیون کو مناسب ہے کہ جو بات دیانند سرسوتی کی بہی یکتی اور شرتی کے خلاف ہووے اس سے دستبردار ہو دین اب ہم دیانند سرسوتی کے دسون اصول کو میرٹہہ سماچار پتر سے بجنسہ نقل کر کے میزان انصاف مین تولتے ہین اور ایک ایک کا حسن و قبح علانیہ کہولتے ہین وے اصول یہہ ہین۔ سب ستیہ ودیا اور ودیا سے جو پدارتہہ جانے جاتے ہین اون سب کا آدی مول پرمیشور ہے ۱ ایشور ست چت آنند سروپ۔ نراکار۔ انوپم۔ سرواد ہار۔ سرو ایشور۔ سرو ویاپک۔ سرو انتریامی۔ اجر۔ امر۔ ابہی۔ نتہ۔ پوتر۔ سرشٹی کرتا ہے اوسیکی اوپاسنا کرنی یوگیہ ہے۔ ۲ وید ستیہ ودیاؤن کی پستک ہے وید کا پڑہنا اور پڑہانا اور سننا سنانا آریون کا پرم دہرم ہے ۳ ستیہ کے اختیار کرنے اور استیہ کے چہوڑنے مین ہمیشہ کمربستہ رہنا چاہیے ۴۔ سب کام دہرم کے موافق یعنے ستیہ اور استیہ کو خیال کر کے کرنے چاہین۔

کیونکر لایق تسلیم ہو سکتی ہے کہ رشیوں اور منیوں کے نزدیک جو کچھہ با دلیل ہے وہی معتبر ہے چنانچہ لشستھ رشی نے کہا ہے۔

युक्तियुक्तमुपादेयंवचनंबालकादपि ॥ अन्यत्तृणमिवत्याज्यं अयुक्तंपंडितैरपि ॥१॥

یعنی جو بات کہ دلیل کے ساتھہ ہو وہ لڑکا بالغ کی بہی مقبول ہے اور بغیر دلیل کے پنڈتون کی بات بھی شایان اعتبار نہین ہے منو نے بہی کہا ہے۔

आर्षंधर्मोपदेशंचवेदशास्त्राविरोधिना ॥ यस्तर्केणानुसंधत्तेसधर्मंवेदनेतरः ॥

یعنی جو کوئی وید کے ارتہہ اور دہرم کے اوپدیش کو وید امی شاستر کے موافق دلیل کے ساتھہ تحقیق کرتا ہے وہی دہرم کو جانتا ہے دوسرا نہین نقط یہان سے واضح ہوتا ہے کہ جو یکتی اور ترک یعنے دلیل کہ وید کے موافق و مطابق نہین ہے وہ ممنوع ونا مشروع ہے اسیواسطے ویدانت سوتر کے دوسرے ادہیاے کے پہلے پاد کے گیارہوین سوتر مین جو ترک کی تکذیب کی ہے اوس سے وہی ترک مراد ہے جو کہ وید کے مخالف ہے وید کے انوکول ترک کی کہین ممانعت نہین ہے شرتی اور سمرتی مین وید کے برعکس ترک کی مذمت کی ہے وہ شرتی کٹھوتی اپنشد کے پہلے ادہیاے مین ہے۔

नैषामतिस्तर्केणापनेया

یعنی یہ نشیور کی دی ہوئی اس عقل کو وید کے مخالف دلیل سے آلودہ نہ کرنا چاہیئے فقط وہ سمرتی یہہ ہے۔

अचिंत्याखलुयेभावाननांस्तर्केणयोजयेत

یعنی اکثر باتین ایسی ہین کہ عقل سے برتر ہین اونکو وید بروذہی دلایل سے متعلق

شاخ کو جتنی باتین کہ اصل کے سواے ہین اونکو فرع کہتے ہین مت بادیون کی اصطلاح مین اصل وہ ہے کہ جسکے اقرار سے اوس مذہب مین داخل ہوتا ہے اور جسکے انکار سے اوس مذہب سے خارج ہوتا ہے اور فرع وہ ہے کہ جسکی تعمیل سے ثواب ہووے اور جسکی ترک کرنے سے گناہ جیسے راست گفتاری وغیرہ کیونکہ جو کوئی سچ بولیگا اوسکو ثواب ہوگا اور جو کوئی دروغگوئی اختیار کریگا وہ گنہگار ہوگا آریہ پن اوسکا نہین جاسکتا بس راست گوئی وغیرہ آریون کے مذہب کے فروع ہین بعض فروع ایسی ہین کہ ان کرنے مین ثواب ہے اور نہ کرنے مین گناہ نہین ہے جیسے سنسار کا اوپکار یعنی رفاہ عام مین مشغول ہونا مثمر ثواب ہے اور اوس سے یکطرف رہنا گناہ نہین ہے پس راستگاری و رفاہ عام وغیرہ کو جو دیانندیون نے اصول مین داخل کیا ہے وہ اونکی بیخبری ہے کیونکہ ہر ایک مذہب کی اصول وہ ہی باتین ہین کہ جن پر اعتقاد کرنے سے انسان اوس مذہب مین داخل ہوتا ہے اور جن سے منکر ہونے کی بجہت اوس مذہب سے برگشتہ شمار کیا جاتا ہے مثلاً جسوقت کوئی شخص اصول چہارگانہ اور ایک اصل الاصول مذکورہ بالا پر ایمان لاویگا اوسکے آریہ ہونے مین کچھہ شک نہین ہے اور جبکہ ان پانچون باتون سے انکار کریگا اوسکے دسیو ہونے مین کیا تامل ہے جو کوئی ان پانچون باتون مین سے کسی کا مقر ہوگا اور کسی سے منکر تو اوسکا آریہ پن کامل نہین ہے اور وہ بالکل دسیو بھی نہین ہے بلکہ آریون اور دسیون کے درمیان ہے کہ دونون کی صفت کے ساتھہ موصوف ہے دیانندیون نے جو دس اصول لکھے ہین اونکا ان چار ہی مین انتہا ہے اونکو الگ الگ دس شمار کرنا بیہودہ گفتاری ہے کہ جیسے اونکے یہان دس حکم ہین ایسے ہی دیانندی بہی دس اصول کے تابع ہین آریون کو چاہیے کہ طرفداری چہوڑ کر فکر کرین کہ جیسے وے بشر ہین ایسے ہی دیانند سرسوتی بہی انسان ہین جب تک کہ سوامی جی کی بات دلیل کے ساتھہ نہو گی

پس آریون کے مذہب کے اصول سے مراد وہ باتین ہین کہ جنکے اقرار کرنے سے انسان آریون مین داخل ہوتا ہے اور جن سے انکار کرنے کے بسبب آریون کے گروہ سے خارج ہوکر دسیو ہوجاتا ہے پرماتما بچاوے اس آفت سے اور وہ اصول چار ہین پہلے یہہ ہے کہ ایک پربرہم * پرماتما- قادر مطلق- عادل رحیم ابتدا و انتہا سے منزہ - سب کا مالک - ذات وصفات سے محیط کل اشیا سب مخلوق کا خالق- صفات حمیدہ کے ساتہہ موصوف اور صفات ذمیمہ سے پاک وہی اوپاسنا کی لایق ہے اور ارتہہ دہرم کام موکش کا دینے والا ہے -

دوسری یہہ ہے کہ روح و پرکرتی وغیرہ بہی انادی اور انت یعنی واجب و قدیم ہین - تیسری یہہ ہے کہ روح یعنی جیو آتما ایک قالب سے دوسرے قالب مین جاتا ہے - اور ہر ایک جیو کے قالب یعنی شریر بیشمار گذرے ہین ابتدا و انتہا نہین رکہتے اس سے سلسلۂ دنیا کی قدامت بہی برآمد ہوتی ہے - چوتہی یہہ ہے کہ نجات ابدی یعنی مکتی پرماتما کی ذات وصفات کے گیان سے ہمیشہ کے لئے ہوتی ہے اور اپنی روح کا گیان اوسکا ذریعہ و وسیلہ ہے اسکے سوا مکتی کی دوسری تدبیر نہین ہے کرم اور اوپاسنا وغیرہ جیو اور پرمیشور کے گیان کے کارن ہین پس یہہ سب بواسطہ و بلا واسطہ مکتی کے سادہن ہین آریون کے مذہب کی اصل الاصول یعنی بنیادون کی بنیاد اور جڑون کی جڑ جسکو سنسکرت مین مہامول کہتے ہین ایک ہے اور وہ وید مقدس کو کہ کلام یزدانی اور صحیفہ نورانی ہے باقرار دل وزبان صحیح جاننا ہے اب چاہیے جاننا کہ دیانند سرسوتی نے جو اپنے رسایل مین آریون کے مت کے دس اصول قایم کئے ہین وہ بالکل بے بنیاد ہین اون مین سے پہلی اور دوسری اصل ہے اور تیسری اصل الاصول ہے باقی فروع ہین فروع جمع فرع کی ہے فرع کہتے ہین

بعد عبارت اسطرح ہوگئی کہ یہہ نامہ بر ہمارا اہت ہے اسکو بشا دیدیجیو یعنی حامل خط ہذا
ہمارا دوست ہے اسکے ساتھہ بشا کا بیاہ کردیجیو پس اوس امیر کے بیٹے نے نامہ بر کے
ساتھہ اپنی بہن کا بیاہ کردیا چنانچہ اس مضمون کی طرف ایک شاعر نے اشارہ
کیا ہے ؎ جن پاین پنہین نہین اونہین دیت گجراج ۔ بش دیتے بشا ملی ہر پربھے
گیرت نواج ۔ یعنی جنکے پانون مین جوتا نہین اونکو ہاتھی ملتا ہے اور زہر دیتے ہوئے
بشا ملی پرماتما بڑا غریب نواز ہے دیکہو جس زبان کو آپ بڑی معصون اور محفوظ سمجھتے
ہین اسمین یہہ تبدیل و تغیر اوسی مین ہوئے **جواب** میان محمد علی کی سعی کئی وجہہ
سے مردود ہے وجہہ اول آنکہ قصہ مذکور مہابھارت مین کہین نہین ہے اشومیدہ
پرب کا تو کیا ذکر ہے البتہ آپ کی مستندہ بیت دہاتین ہند مین مشہور ہے وجہہ دوم
آنکہ کمی و بیشی حروف و الفاظ کی جہت سے تو ہر ایک خطوط مین کچھہ کا کچھہ ہوجاتا
ہے عربی مین مثلاً جسوقت غلام کے اول الف زیادہ کرین اغلام پڑہا جاوے اور جب
اغلام کے اول کا الف محو کیا جاوے غلام رہجاوے اس بارہ مین کسی زبان کی خصوصیت
نہین ہے ہان عربی و فارسی وغیرہ مین بغیر کمی و بیشی و تبدیل و تغیر حروف کے ہر ایک
لفظ متعدد طرح پڑہا جاتا ہے بلکہ اکثر الفاظ کو صدہا طور پر پڑہ سکتے ہین یہہ
ہی ہمارا عربی وغیرہ پر اعتراض ہے اور یہہ ہی بے ایمانی و جعلسازی کی بنیاد ہے
پس قصہ مذکورہ ہمارے اعتراض کا جواب نہین ہوسکتا وجہہ سوم آنکہ آپ کی مستندہ
بیت کا مصرع دوم موزون نہین ہے شاید کہ بشا کی جگہہ بش ہا ہووے پس
بش کے آخر ہا زیادہ کیا گیا اور بش ہا کہتے ہین زہر کی دور کرنیوالی کو اور عورت
کا یہہ ہی نام مناسب ہے یہانتک ہم نے عربی وغیرہ زبانون کے نقصانات کی
تشریح کی اور سنسکرت کو سب پر ترجیح دی اب ہم آریون کے مذہب کے اصول
بیان کرینگے اور اصول جمع ہے اصل کی اور اصل کے معنی ہین بنیاد اور جڑ

جو نش مارتی ہے پس جو کوئی دو شئے مغایر کے خلط سے انکار کرے اوسکی برابر بیوقوف کون ہے البتہ عربی وغیرہ کے حروف اور حرکات اب مخلوط نہین ہو سکتے اگر انکا واضع اول ہی اخلاط کی رعایت کرتا تو ممکن تہا اسواسطے اوسکی وضع ہی پر ہمارا اعتراض ہے کہ اوسنے حروف و حرکات ایسے بنائے کہ جو لوگون کو دقت مین ڈالنے والے ہین۔

محمد علی اور تغیر و تبدیل ہوائے نفسانی کے موافق ہر ایک خط مین ہو سکتی ہے جعل سازمنے اپنی بہیون مین ہمیشہ اس قسم کی کاٹ چہانٹ کرکے بے ایمانیان کرتے رہتے ہین **جواب** جیسے کہ عربی و فارسی وغیرہ کے حروف تردد مین ڈالنے والے ہین اسی قسم کے بنیون کی بہیون کے خطوط ہین ہم عربی وغیرہ کے خطوط پر بنیون کی بہیون کے خط کو ترجیح نہین دیتے دونون برابر ہین بلکہ بنیون کی بہیون کے حروف حرکات ہی نہین رکھتے حرکات کا حروف سے مغایر اور مخلوط ہونا تو دوسری بات ہے علاوہ اسکے تغیر و تبدیل الفاظ و حروف و حرکات سے تو ہر ایک خط کچھہ کا کچھہ ہو سکتا ہے لاکن عربی وغیرہ کے خطوط اسبسے مرجح و مخصص ہین کہ اون مین بغیر تبدیل و تغیر کئے کچھہ کا کچھہ پڑہا جاتا ہے بلکہ اکثر الفاظ کو صدہا طرح پڑہ سکتے ہین ثبوت اسکا اوپر گذرا۔

محمد علی اشومیدہ پرب مہابہارت مین لکہا ہے کہ کسی امیر نے اپنے بیٹے کی نام اس مضمون کی چٹہی لکہکر ایک شخص کے حوالہ کی کہ حامل خط ہذا ہمارا (اہت) ہے اسکو بشس دیدیجیو یعنی حامل خط ہذا ہمارا دشمن ہے اسکو زہر دیدیجیو (اہت) زبان سنسکرت مین دشمن کو کہتے ہین اور (بشس) زہر کو جبکہ حامل خط شہر کے قریب پہونچا تو کسل راہ سے ایک درخت کے نیچے سو گیا اتفاقیہ بشا نامی دختر اوس امیر کی باغ مین سیر کرتے کرتے حامل خط کے نزدیک پہونچی چونکہ وہ جوان خوبصورت تہا اوسپر مائل ہو گئی اور اوسکی جیب سے وہ نامہ نکالکر دیکہا تو مضمون مذکور پایا پس حرف اول (اہت) کا محو کیا اور بشس کے آخر مین الف بڑہا دیا غرضکہ اس محو اور اثبات کے

کرتا ہے اوسکی جگہہ لکھی جاتین مناسب تر معلوم ہوتا ہے مگر چونکہ بحث لفظی ایک
امر فضول و عبث ہے لہذا اصل مطلب عرض کرتا ہون کہ آپ کی یہہ عبارت مہمل بھی
ہمارے ہی اعتراض کی تائید کرتی ہے کیونکہ آپ کی عبارت مذکورہ کا مطلب یہ ہے
کہ حرکات کا حروف کے ساتھہ لکھا جانا دقت سے خالی نہین ہے پس فی الحقیقت
یہہ ایک اعتراض ہے عربی وغیرہ کے حروف اور حرکات کے واضعین پر کہ اونہون نے
کار بیفائدہ کیا کہ حروف اور حرکات مین مغایرت و تفرقہ قایم رکھا اونکو یہی لازم
تہا کہ حرکات کو ذات حروف مین داخل کرتے کہ ایک لفظ دوسرے لفظ کے ساتھہ مشتبہ
نہوتا اب ہمارا اور میان محمد علی کا اتفاق ہوا بلکہ وے عربی وغیرہ کے واضعین پر
اعتراض کرنے مین ہم سے بھی گوے سبقت لیکر کہتے ہین کہ جن خطوط مین حرکات کو
حروف کے ساتھہ لکھا جاتا ہی الخ دیکھو یہان میان محمد علی نے واضع حروف و حرکات عربی کی
غلطی پر خود گواہی دی کہ جن خطون مین اوسکی وضع پر عمل کرکے حروف کے ساتھہ حرکات
کو لکھتے ہین اونکے پڑہنے مین ہمیشہ دقت رہتی ہے نقطہ صد آفرین میان محمد علی کی راست
گوئی پر کہ رسم خط قران کی ابتری کی خود مقر ہوئے کہ کتابت قران مین لابد حرکات حروف
کے ساتھہ لکھی جاتی ہین پس لاجرم قران کے پڑہنے والون کو مدام دقت پیش آتی
ہوگی اس دقت کا علاج وہی ہے کہ کل اہل عرب متفق ہوکر حروف و حرکات
مروجہ کو نسیاً منسیا گردانین اور کسی سنسکرت خوان کے مشورہ سے ایسے حروف
ایجاد کرین کہ حرکات اونکی ذات مین داخل ہووین۔ **محمد علی** علاوہ بران حرکات
اور چیز ہین اور حروف اور چیز و دونون کو ملا دینا ہر آئینہ خلاف اصل وضع کے
ہے اور سراسر کجروی اور گمراہی ہے **جواب** بلاشک حرکات غیر ہین اور حروف
غیر اور دو مغایر چیزون کو مخلوط کرنا خلاف عقل ہرگز نہین ہے اکثر دو چیزین ملکر
نیا ہی رنگ پیدا کرتی ہین جیسے شہد و شکر کہ دونون کی آمیزش سے لذت دوبالا

مین اونکی گفتگو نقل کرکے جواب مناسب دیتا ہون **محمد علی** ناظرین کی جناب
مین التماس ہے کہ صولت ہند کی عبارت پر غور فرماوین کہ کس قدر مہمل ہے یہہ بھی نہین
جانتے کہ اعراب کیا چیز ہے اور اوسکی تعریف کیا ہے اور وہ نفس حروف معربہ مین کیونکر
داخل ہوسکتا ہے **جواب** صولت ہند کی عبارت تو بالکل مطلب خیز ہے مگر سمجھنے
کے لیے عقل چاہیے لا کلام آپ نہین جانتے کہ اعراب کیا شے ہے اور اوسکی بحث
کسواسطے ہے اگر جناب اوسکی حقیقت سے کچھہ بھی خبر رکھتے تو اسقدر بیہودہ درائی
مین اوقات بسر نہ کرتے بلا شبہہ اب اعراب نفس حروف معربہ مین داخل نہین ہوسکتا
واضعین زبان عربی وغیرہ پر یہہ ہی ہمارا اعتراض ہے اگر عربی وغیرہ کے واضع کچھہ
بھی سلیقہ رکھتے تو روز اول ہی ایسے حروف وضع کرتے کہ اعراب جنکے نفس مین داخل
ہوتا جیسے کہ سنسکرت مین اعراب نفس حروف سے غیر نہین ہے اور اعراب کو سنسکرت
مین ماترا کہتے ہین اور روے گویا عین حروف ہین ذات حروف سے اصلا مغایرت
نہین رکھتے اسیواسطے سنسکرت مین جیسیکا تیسا پڑہا جاتا ہے ایک لفظ مین دوسرے
لفظ کا ہرگز شبہہ نہین پڑتا اگر اہل عرب وغیرہ کو کچھہ اپنی عزت وآبرو کا پاس ہووے
تو ان حروف معربہ کو بالکل محو کرکے از سر نو دوسرے ایسے حروف ایجاد کرین
کہ اعراب جنکی ذات سے مغایر نہوین جبتک کہ ایسا نہ کرینگے ہمارے اعتراض سے
محفوظ نہوینگے۔ **محمد علی** اگر صولت ہند کی اس عبارت مہمل سے مقصود یہہ ہے
کہ حرکات کو حروف کے ساتھہ نہین لکہا جاتا تو یہہ ایک بیہودہ بات ہے بلکہ جن خطوط
مین حرکات کو حروف کے ساتھہ لکہا جاتا ہے اونکے پڑہنے مین ہمیشہ دقت رہتی ہے
جواب صولت ہند کی عبارت تو نقص لفظی ومعنوی سے بری ہے البتہ آپ ہی
کی عبارت مہمل ہے کہ ان دونون فقرون مین لفظ حرکات کے بعد کلمہ کو بمعنی
لاے ہو اور اسیطرح دونون جگہہ لفظ لکہا جاتا ہے آپ کی بیسمجھی پر دلالت

ایک وقت مین ایک ہی فعل ہو سکتا ہے اور بحث اسکی دور و دراز ہے کسی جگہہ مفصل لکھی جاویگی علاوہ اسکے سماے الف مقتضی اسکا ہے کہ اول اسم الف ہووے کہ مسمی بغیر اسم کے نہین ہو سکتا ہمنے فرض کیا کہ خط مستقیم سب کے اول موضوع ہوا مگر اوسوقت اوسکو مسمی نہین کہہ سکتے تہے کہ اوسکے لیے کوئی اسم مقرر نہوا تہا اور اسم الف مقتضی اسکا ہے کہ پہلے مسمی ہووے کہ مسمی کے بغیر وجود اسم کا فضول و عبث ہے یہہ تمام اشکال عربی وغیرہ کے اسماے حروف اور مسمیات حروف مین واقع ہے سنسکرت مین چونکہ اسم و مسمی ایک ہے کوئی اعتراض وارد نہین ہوتا جو کوئی زبان سنسکرت سے اندک بہی بہرہ رکہتا ہے بخوبی جانتا ہے عربی و فارسی وغیرہ زبانون کے نفس حروف مین اعراب کا نہ داخل ہونا اور اکثر حروف کے درمیان صرف نقطہ ہی کا فرق اور تفاوت رکہنا مبتدی کو حیرت مین ڈالنے والا ہے اور اہل شرارت بہی تغیر تغیر و تبدیل اشکال الفاظ و حروف کے اپنی ہواے نفسانی کے موافق جعلسازی کر سکتے ہین مثلا ایسی (ٹر) صورت کے لفظ کو باعتبار نقاط و حرکات حرف اول و دوم کے دو سو (٢٠٠) سے زیادہ طرح پر پڑہ سکتے ہین اسی قیاس پر ایسی (حر) شکل کا لفظ دو سو طرح کے قریب پڑہا جا سکتا ہے اسی طور پر دوسرے الفاظ کو بہی جان لو اور باعث اس ساری سرگردانی و حیرانی کا ان زبانون کے واضعین کی کوتاہی عقل و درایت ہے کہ اونہون نے اپنی بیوقوفی سے اکثر حروف کی صور مین صرف نقاط ہی کا فرق رکہا اور اعراب کو نفس حروف مین داخل نہ کیا چونکہ سنسکرت کے حروف اس قسم کے نقصانات سے منزہ ہین کل الفاظ جیسے کے تیسے پڑہے جاتے ہین کوئی بہی مشتبہ نہین ہے اسکا تو کیا ذکر ہے کہ ایک لفظ متعدد طور پر پڑہا جاوے جو کوئی زبان سنسکرت سے گو نہ خبردار ہے اوسپر کوئی امر پوشیدہ نہین ہے ہمنے یہی مضمون مختصر طریق پر صولت ہند مین درج کیا تہا میان محمد علی اوسکو مطلق نہ سمجہکر بقول شخصے ہرے کو ہرا ہی سوجہتا ہے ہماری عبارت کو مہمل کہنے لگے اب

تب اوسپر دلالت کرنے کے لئے منار و سنگ قایم کئے گئے تقدم دال ہرگز نہین ہوسکتا کیونکہ جب تک مسافت مقررہ بذریعہ پیمایش کے معین نہوگی تعمیر منار و نصب سنگ بیکار و عبث ہے اگر اس دلیل سے قطع نظر کرکے وضع مسمیات حروف کو وضع اسماے حروف پر تقدیم دیجاوے تو بھی غلط ہے کیونکہ اس صورت مین یہہ ہی لازم آتا ہے کہ بروقت بنانے اسم الف کے لام اور فا کا اسم نہین بنایا گیا تھا پس اسم الف مین بعد خط مستقیم کے ترکیب لام اور فا کی کیا خصوصیت تھی کہ کسی اسم کے ساتھہ مسمی نہین ہوے تھے بلکہ خط و نقش محض تھے مثل دوسرے نقوش اور خطوط کی جو کہ اسوقت مسمیات حروف مین شمار کئے جاتے ہین اگر کوئی کہے کہ اول اسم خا و لام ہی وضع کیا گیا تو ایک کے وسط اور دوسرے کے آخر مین ترکیب خط مستقیم کی کیا تخصیص تھی کیونکہ ہنوز وہ کسی اسم کے ساتھہ مسمی نہین ہوا تھا بلکہ محض نقش و خط تھا مانند دوسرے نقوش و خطوط کی غرضکہ اسماے حروف مین سے تم نہین کہہ سکتے کہ پہلے کونسا اسم وضع کیا گیا اور یہہ بھی آپ نہین کہہ سکتے کہ اول مسمیات حروف وضع کئے یا پہلے اسماے حروف بنائے کیونکہ وضع مسمی بغیر اسم کے نہین ہوسکتا مثلاً جب تک کہ اول خط مستقیم کا اسم قایم نہ کیا جاویگا وہ مسمی قطعاً نہوویگا اسیطرح اسماے حروف بدون مسمیات کے ممتنع ہین مثلاً الف کہ اسم خط مستقیم کا ہے ترکیب دیا گیا ہے مسمیات ثلاثہ سے اگرچہ السنہ وغیرہ مین تقدیم اسم کی مسمی پر اور تقدیم مسمی کی اسم پر دونون طرح ممکن ہے مگر حروف عربی وغیرہ مین نہ تقدم اسم بن سکتا ہے اور نہ تقدم مسمی لیکن ابتداءً کہ ایک دوسرے کا محتاج ہے چنانچہ الف کہ جب تک اول اوسکا اسم وضع نہ کیا گیا تھا وہ مسمی نہ بنا تھا اسیطور پر جب تک کہ اول مسمی الف کا موضوع نہوا تھا وضع اسم ممتنع تھا اگر کوئی کہے کہ مسمیات و اسماے حروف دونون ایک ہی وقت مین موضوع ہوے تھے تو بھی غلط ہے کیونکہ آن واحد مین دو فعل نہین ہوسکتے بلکہ ممتنع و محال ہین ایک

سنسکرت مین جنکو [illegible] اور [illegible] کہتے ہین ۱۲

نام اور مسمیات مغائر ہین جیسے ابرن اور اکار نام ہین حرف अ کے تو جواب یہہ ہے
کہ ابرن اور اکار حرف अ کے نام نہین ہین بلکہ حرف (ا) کے آخر کلمہ برن اسواسطے
لگاتے ہین کہ ممدودہ اور مقصورہ دونون طرح کے حرف (ا) کا فایدہ دیوے اور
کلمہ کار اگر ممدودہ کے آخر لگاتے ہین تو وہ صرف ممدودہ ہی کا فائدہ دیتا ہے اور اگر مقصورہ
کے آخر لگاتے ہین تو فقط مقصورہ ہی کا پس لفظ برن اور کار حروف سنسکرت کے آخر غرض
ہذا کے لیے لگائے جاتے ہین جو کوئی ان دونون کو حرف (ا) کا نام کہتا ہے اوسکی
ناواقفی مین کچھہ شک نہین ہے جبکہ حروف عربی وفارسی کے مسمیات اور اسمار مین مغایرت
اور تفرقہ متحقق ہے تو لازم آتا ہے کہ دونون مین سے ایک کو تقدم ذاتی ہووے اور دوسرے
کو تاخر اصلی یعنی مسمیات حروف از اسماے حروف اول ہووین یا اسماے حروف مسمیات
حروف سے پہلے ہووین اور یہہ ناممکن ومحال ہے تفصیل اسکی عنقریب آنے والی ہے
قطع نظر ازین فرمائے کہ واضع زبان عربی وغیرہ نے اول کس حرف کا اسم وضع
کیا اگر کہو کہ الف کا تو غلط محض ہے کیونکہ اسم الف کا بغیر وضع اسم لام اور فا کے غیر ممکن
ہے لہذا اگر کہا جاوے کہ اول اسماے لام اور فا وضع کیے تو بہی درست نہین ہو سکتا
کسواسطے کہ اسم لام اور فا کا بغیر الف کے محال ہے کہ اسم لام کے درمیان اور اسم فا کے
آخر مین الف موجود ہے اگر جواب سوال ہذا کا کہ اول کس حرف کا اسم بنایا گیا آپ کے
پاس ہووے تو پیش کیجے اگر کوئی کہے کہ زبان عربی وغیرہ کے واضع نے اول مسمیات
حروف وضع کر کے بعدہ اسماے حروف بنائے تو بہی غلط ہے کیونکہ مسمیات حروف
کہ مراد خط ونقش حروف سے ہے دلالت کرتے ہین الف وغیرہ اسماے حروف پر جیسے
منار وشاہراہ انگریزی کے پتہر دال ہوتے ہین مسافت مقررہ پر اور مدلول کے
لیے تقدم زمانی ضرور ہے کسواسطے کہ جب تک مدلول نہوگا دال کی اصلاح ضرورت نہ
پڑیگی بعد وجود مدلول کے دال تجویز کیا جاتا ہے چنانچہ جسوقت مسافت معینہ قرار پائی تو

ڈانٹے فقیر اندرمن پر بےشعوری کا بہتان لگاکر درپے اعتراض ہوے ہین **اعتراض** حروف کے مسمیات اور اسمار مین بھی تفرقہ نہین کرسکتے ملفوظ حرف اور چیز ہے اور اوس حرف کا نام لینا دوسری چیز ہے حروف مبسوطہ جن سے کلمات مرکب ہوتے ہین مسمیات ہین اور وہ الفاظ کہ جن سے اون حروف کو تعبیر کرتے ہین اسمار ہین حروف مذکور کے کہ دلالت کرتے ہین اوپر اپنے مسمیات کے الخ **جواب** مہربانمن حروف عربی و فارسی وغیرہ کے مسمیات و اسمار مین جسقدر کہ مغایرت ہے اوس سے ہم کما حقہ واقف ہین اس بارہ مین ہم پر کوئی امر مخفی نہین ہے ہمارا اعتراض اوس مغایرت اور تفرقہ ہی پر ہے جو کہ عربی وغیرہ کے مسمیات حروف اور اسماے حروف مین واقع ہے کیونکہ وہ ایک امر فضول ہے مسمیات اور اسماے حروف مین اتحاد ہونا چاہیے جیسے کہ زبان سنسکرت کے حروف اور اونکے نامون مین ہے کہ جس حروف کا جو اسم ہے وہی اوسکا مسمیٰ ہے یعنے ہر ایک حرف کا جو نام مقرر ہے وہ حرف اوسیکا فائدہ دیتا ہے جیسی क کہ وغیرہ کہ انکے نام اور مسمیٰ مین کسی طرح کا تفرقہ و مغایرت نہین ہے یہہ میان محمد علی جو کہتے ہین کہ اسماے حروف اور مسمیات حروف مین مغایرت عربی ہی کے ساتھہ مخصوص نہین ہے بلکہ فارسی اور انگریزی سنسکرت مین بھی ایسا ہی ہے مثلاً انگریزی مین (ایچ) ایم) نام ہین (ہ) اور (م) کے - اور سنسکرت مین (ررا) نام ہے (ر) کا وہ اونکا قول محض بیجا ہے کیونکہ فارسی و عربی و انگریزی وغیرہ پر تو ہمارا اعتراض ہی ہے اور سنسکرت مین (ررا) کسی حرف کا نام نہین ہے ہمنے تو ایسا جہالت آمیز کلام آجتک کسی سنسکرت دان کی زبان سے نہین سنا سنسکرت مین تو جو حرف (ر) کا نام ہے وہی اوسکا مسمیٰ ہے دونون مین کچھہ فرق نہین ہے اگر کوئی کہے کہ سنسکرت مین بھی حرفون کے

کہ سنسکرت کی قدر عظیم ہے کہ زبان خدائے کریم ہے دراصل ثقالت حروف مراد ہے
گرانی و دشواری تلفظ سے مثلاً ثائے مثلثہ کا تلفظ اسقدر مشکل و دشوار ہے کہ اکثر
اہل زبان و مسلمان بھی اوسکو سین مہملہ و صاد مہملہ کے تلفظ سے ممتاز و مشخص نہین
کرسکتے دوسرے ملک کے رہنے والون اور غیر قوم کا تو کیا ذکر ہے اسیطرح تائے
فوقانی و طائے مہملہ کے اور حائے حطی و ہائے ہوز کے تلفظ مین کوئی شخص شاذ و نادر
ہی تمیز کرسکتا ہوگا زائے معجمہ و ذال معجمہ و ضاد معجمہ و ظائے معجمہ کے تلفظ مین امتیاز
دینا تو سخت مشکل ہے سنسکرت کے حرفون کو تو آریہ اور مسلمان بآسانی و سہولت
ادا کرتے ہین اور ایک ایک کو جیسا کہ چاہیے جدا جدا پڑھتے ہین مثلاً (ک)
کی جگہہ (ک) بولتے ہین اور (کہہ) کی جگہ (کہہ) علیٰ ہذا القیاس پس جو کوئی کہتا ہے
کہ زبان سنسکرت ثقیل ہے اوسکا دعوی بیدلیل ہے عربی و فارسی وغیرہ کے حرف
کی تعلیم بھی عقل کو پراگندہ کرنے والی ہے کہ جسوقت ان زبانون کے حروف مفردہ مبتدی
کو پڑہائے جاتے ہین تو اوسکے سامنے لکھا ہوا ایک ایک حرف ہوتا ہے اور تلفظ
دو دو یا تین تین حروف کا کرایا جاتا ہے مثلاً جسوقت لکھی ہوئی ایسی صورت (ا)
ہوتی ہے بروقت تلفظ کی اوسکو تین حرف جداگانہ کے ساتھہ تعبیر کرتے ہین یعنے
الف کہتے ہین اور جب لکھی ہوئی اسطرح کی شکل (ب) ہوتی ہے تو حالت تلفظ
مین اوسکو دو حرف جداگانہ کے ساتھہ ادا کرتے ہین یعنے (بے) کہتے ہین ہی
قیاس پر اور ون کو بھی سمجھہ لو اہل عقل فکر کرین کہ ایک حرف لکھنا اور دو یا تین
حرف کے ساتھہ اوسکا تلفظ کرنا فضول محض ہے کہ انجام کار وہ عبارت مین ایک
ہی حرف کا فائدہ دیتا ہے پس یہہ تمام ان زبانون کے واضعین کی عقل کا فتور کہ
جسنے اسی مضمون کا خلاصہ صولت ہند کے شروع مین درج کیا تہا میان محمد علی اپنی
عقل کی کوتاہی سے اوسکے حقیقت کو دریافت نہ فرماکر بقول شخصے اولٹا چور کوتوال کو

ہی کہ ہر چند علماے صرف اوسکے رفع کرنے کی تدبیرین کرتے ہین مگر وہ کہان جاتا ہے کہ وصف ذاتی و جبلی زبان عربی کا ہے علت وہوے وہاے جاے عادت کبھی نہ جاے مخفی نہ ہے کہ کلام عرب مین حروف علت کو کہ واو و الف و یا ہین ثقیل جانتے ہین سب سے زیادہ ثقیل (واو) ہے اوسکی بہ نسبت (یا) کم ثقیل ہے اور (یا) کی بہ نسبت (الف) کی ثقالت کم ہے اسیطرح اعراب مین ضمہ سب سے زیادہ ثقیل ہے اوسکی بہ نسبت کسرہ کی ثقالت کچھہ کم ہے اس ثقالت کے دور کرنے کے لیے کبھی ایک کو دوسرے سے بدل کرتے ہین کبھی حرکت کو گرا دیتے ہین کبھی درپے حذف حرف ہوتے ہین مگر اس سے کچھہ نتیجہ نہین نکلتا کیونکہ اگر واو الف سے بدل کیا گیا تو بھی ثقالت قایم رہی کہ الف خود ثقیل ہے علاوہ اسکے جس صورت مین حروف علت وغیرہ بذاتہ ثقیل سمجھے گے ہین تو زبان عربی سے ثقالت اوسی صورت مین دور ہوسکتی ہے کہ قطعاً اونکا استعمال ترک کیا جاوے اور یہہ محال ہے پس ثقالت زبان عربی لازوال ہے بلکہ مین دعوی کرتا ہون کہ کوئی اہل عرب ایک فقرہ بھی ایسا نہین کہہ سکتا کہ جو بالکل ثقالت اعرابی و حرفی سے خالی ہووے قران کہ جسکی فصاحت پر مسلمان نازان ہین دونون قسم کی ثقالت سے بہرا ہوا ہے جیسے کہ قران کا حرف اول و آخر مکسور ہے اسیطرح درمیان مین بھی ثقالت کا انبار ہے کہین اعرابی کہین حرفی چار ناچار ہے ایک آیت بھی ایسی نہ نکلیگی کہ دونون طرح کے ثقل سے بری ہووے اسیوسطے مصنف قران نے اپنے کلام کو قول ثقیل کہا ہے دیکھو سورہ مزمل مین ہے۔

انا سنلقی علیک قولاً ثقیلا یعنی ہم اوتارین گے تجھہ پر ایک قول ثقیل فقط اب باب اعلال و تخفیف سے بلکہ خود قران شریف سے ثابت ہو گیا کہ زبان عربی سراسر ثقیل ہے اگر کوئی بحوالہ امام فخرالدین رازی وغیرہ کے کہے کہ آیت مین ثقل سے عظمت و قدر مراد ہے تو جو مسلمان کہ سنسکرت کو ثقیل کہتے ہین اوس سے اونکی مراد بھی یہی ہے

سنسکرت کی کچھہ خصوصیت نہین ہے اگر کھہ ख اور گھہ घ وغیرہ حروف پر اعتراض ہے
تو وے اردو مین بہی موجود ہین حالانکہ اردو کو کوئی مسلمان ثقیل نہین سمجھتا بلکہ
میان محمد علی نے ظفر مبین کے صفحہ ۱۵ مین عرفی کے ایک قصیدہ فارسی کی نسبت
مرزا رفیع کے قصیدہ اردو کو ازروے فصاحت و بلاغت کے بہتر اور بڑہکر لکہا ہے
باوجودیکہ مرزا رفیع کا قصیدہ کھہ ख اور گھہ घ وغیرہ حروف سے بہرا ہوا ہے پس حروف
مذکورہ پر ثقل کا بہتان لگانا انصاف سے بعید ہے غرضکہ حروف مذکورہ کے
ثقل کی بابت جو مسلمانون نے گفتگو کی ہے اور اونکو سنسکرت کے ساتھہ مخصوص
سمجہا ہے وہ بالکل اونکی بے شعوری و نادانی ہے کیونکہ وے حروف اکثر زبانون
مین مستعمل ہین ہان دہاتین عرب کی زبان مین اونکا استعمال نہین ہے پس یہہ
اوس زبان کا قصور ہے نہ باعث اسکا ثقل حروف مذکور ہے علاوہ اسکے ثقل
حروف مذکور کا بسبب مخارج کے ہے یا بسبب صفات استعلاء و اطباق کے برتقدیر
اول جو مخرج (ک) کا ہے وہی (کھہ) و (گھہ) کا ہے پس اسکے کیا معنی کہ (ک گ)
ثقیل نہووے اور (کھہ) اور گھہ مین ثقالت پائی جاوے اسی پر دوسرے حروف
کے مخارج کو قیاس کر لیجئے برتقدیر دوم جسقدر استعلاء و اطباق کہ حاے حطی و عین
مہملہ و غین معجمہ و قاف وغیرہ احرف کے ادا کرنے مین عارض ہوتا ہے حروف
سنسکرت وغیرہ کے بولنے مین اوسکا عشر عشیر بہی متصور نہین ہے پس عربی کی برابر
کوئی زبان ثقیل نہین ہے کہ خود اہل عرب جسوقت حاے حطی بولتے ہین حلق پہاڑتے
ہین اور منہہ بگاڑتے ہین ہر گاہ عین و غین ادا کرتے ہین زبان نکالتے ہین اور
جہاگ ڈالتے ہین جبکہ قاف زبان پر لاتے ہین آثار کراہت جتلاتے ہین اسیطرح
عربی کے دوسرے احرف بہی نہایت غیر مانوس و ثقیل ہین قطع نظر ازین عربی کی ثقالت
پر تو باب اعلال و تخفیف گواہ ہے کہ اس زبان کو ثقل اعرابی و حرفی اسقدر لاحق

یہہ شرتی ہے اور معنی اسکے یہہ ہین کہ جیو نہ پیدا ہوتا ہے نہ مرتا ہے فقط اس شرتی کے آخر کا ایک لفظ بدل کر مہابہارت والے نے اوسکو اسطرح نظم کیا ہے۔

(نہ جایتے مریتے وا کداچت) "न जायते म्रियते वा कदाचित्"

اب مہابہارت کی اس منظومہ عبارت کو شرتی کوئی نہین کہتا سب پنڈت سمرتی کہتے ہین باوجودیکہ بجنسہ شرتی کے الفاظ ہین یہان سے واضح ہوا کہ اگرچہ سنسکرتا بہت مشہور کی زبان ہے لیکن ویدمقدس کے سواے جتنی کتابین سنسکرت مین آج تک تصنیف کی گئین ہین ویسے اونکے مصنفون ہی کی جانب نسبت دی گئی ہین وید مقدس کی برابری وہمسری کا سے اونکو کچھہ مناسبت نہین ہے جیسے کہ مسلمان جھوٹا دعوی کرتے ہین کہ سنسکرت جنون کی زبان ہے اسیطرح کہتے ہین کہ ثقیل تر السنہ تمام جہان ہے لیکن یہہ اونکی ادعا محض بے بنیان ہے اور ثبوت اسکا بر از حیطہ امکان ہے اصل حقیقت یہہ ہے کہ ہر شخص اپنی ناواقفی و جہالت سے دوسرے زبانو کو ثقیل جانتا ہے اگر ان لوگون کی تصدیق کیجاے تو لازم آے کہ ساری زبانین ثقیل ہوں سنسکرت کی کچھہ خصوصیت نہین ہے فی الواقع سنسکرت اخف السنہ ہے جیسا کہ تجربہ اور روزانہ برتاو سے ظاہر ہے اگر کوئی ٹ اور ڈ وغیرہ حروف کی نسبت گفتگو کرے کہ یہہ ثقیل ہین تو اوسکا اتہام ہے کیونکہ جو شخص علم بیاکرن سے اندک بہرہ مند ہے اور مخارج حروف سے واقف ہے بلا تکلف حروف مذکور کو ادا کرتا ہے بلکہ جرمن و انگلستان وغیرہ غیر ملکون کے لوگ بیاکرن مین گونہ مہارت پیدا کر کے فصاحت و بلاغت کے ساتھہ سنسکرت مین گفتگو کرتے ہین حتی کہ تصنیف و تالیف کی لذت سے بھی خبردار ہین میکس مولر اور ولسن ڈاکٹر کی گذارشات ہمارے دعوے کے شاہد عادل ہین علاوہ اسکے حروف متنازعہ سنسکرت سے مخصوص نہین ہین بلکہ لیٹن و انگریزی و رومی و گریک وغیرہ مین بھی داخل ہین پس لازم آیا کہ یہہ تمام زبانین ثقیل ہووین

دل مین وسوسہ ڈالنے والا بہی جن ہے جن ہی نے آدم کو بہشت سے گرایا جن ہی نے
زکریا کو قتل کرایا جن ہی نے ایوب کو رنج والم بے پایان دیا جن ہی نے محمد صاحب کو
مغلوب خواب گران کیا اس قسم کی بہت مثال ہین کہ مسلمانون اور جنون کی پیوستگی پر
دال ہین یہان اسیقدر پر کفایت منظور ہے کہ طوالت سے خاطر رنجور ہے غرضکہ سنسکرت
جنون کی لسان ہرگز نہین ہے بلکہ زبان رب العالمین ہے ابیات ہی یہہ بیشک
زبان رب جلیل ؛ ہین مضامین عمدہ اوسکی دلیل ؛ ہے بلاغت عیان عبارت سے
حسن تشبیہہ و استعارت سے ؛ قدرت خلق ہے کہان ایسی ؛ کہ عبارت کرے عیان ایسی
سوال جبکہ سنسکرت پرمیشور کی زبان ہے تو لازم آتا ہے کہ سنسکرت کی
تمام کتابین مثل وید کے آسمانی ہووین جواب کتاب اوس شخص کی طرف
منسوب ہوتی ہے کہ جس نے اوسکے الفاظ کو ترتیب دیا ہووے اور فقرات مرتب کے
ہووین مثلاً کوئی ہندوستانی عربی خوان زبان عربی مین کتاب تصنیف کرے تو یہہ
کتاب اوس شخص باشندہ ہند کی طرف منسوب ہوگی اور وہی اوسکا مصنف قرار پاویگا
ملک عرب کے رہنے والون سے اوسکا کچہہ تعلق نہین ہے باوجودیکہ اس شخص ہندوستانی
نے عربون کی زبان مین کتاب بنائی مگر اوسکی تصنیف و تالیف عربون کے ساتہہ
ہرگز منسوب نہوگی اور یہہ شخص ہندوستانی ہی عرب قرار نہ پاویگا معترض کے طور پر تو
لازم آتاہے کہ اس کتاب کے مصنف و مولف عرب لوگ ہووین کہ کتاب مذکور اونکی زبان
مین ہے مگر ایسا کوئی تصور نہ کریگا غور کرو کہ اگر زید صرف قران کے الفاظ لیکر کوئی
رسالہ بناوے تو اوسکو مسلمان کلام خدا ابداً نہ جانینگے زید ہی کی کتاب سمجہین گے
باوصفیکہ زید نے ایسا التزام کیا ہووے کہ فقط الفاظ قران ہی سے اوسکو انجام دیا
ہووے اسیطرح (نہ جاییت مرییت وا بپشچت)

" नजायतेम्रियतेवाविपश्चित् "

بلکہ وہ پرمیشوری کی زبان ہے پس مسلمان جو کہتے ہین کہ سنسکرت جنون کی بولی
ہے وہ اونکی عداوت قلبی وقساوت دلی ہے آجتک اونہون نے اس دعوے
کے ثبوت مین کوئی دلیل پیش نہین کی سنسکرت توکلام زبان خالق زمین وآسمان ہے
اور کلام بالکل انس و جان البتہ اگر عربی جنون کی زبان ہووے تو قرین قیاس ہے کہ جو
مفسرین محمد صاحب نے جنون کو دعوت اسلام کی اور قران سنایا جن تصدیق قران کرکے
دفعۃً ایمان لائے اگر عربی جنون کی بولی نہین ہے تو محمد صاحب نے اونکی گفتگو کیسے
سمجھی کہ امی تھے اپنی فطری بولی کے سواے دوسری زبان سے واقف نہ تھے اور نہ
جنون نے قران کسطرح سمجھا آیا کسی سے عربی کی تعلیم پائی تھی یہان سے صریح جانا
جاتا ہے کہ محمد اور جنون کی ایک ہی بولی ہے اگر ایسا نہوتا تو دونون کا مکالمہ ممکن نہ تھا
کہ دونون نے کوئی زبان نہ سیکھی تھی پس لاکلام دونون کی بولی واحد تھی اگر سنسکرت
جنون کی زبان ہوتی تو آریاورت کے سواے دوسرے ملکون مین بھی رواج پاتی کہ
جن سب جگہہ آمد و رفت رکھتے ہین ہندوستان ہی کی تخصیص نہین ہے حالانکہ جہان
کہین سنسکرت کی ترقی ہوئی وہ بالکل آریاورت کی بدولت ہے چنانچہ جرمن اور انگلستان
وغیرہ کے لوگون نے یہان آکر اوربہت مدتتک تعلیم پاکر اپنے ملکون مین سنسکرت کا درس
وتدریس جاری کیا ناظرین اخبار پر کوئی بات مخفی نہین ہے انصاف کرو کہ اگر سنسکرت
جنون کی لسان ہوتی تو اشخاص جن گرفتہ سنسکرت ہی مین گفتگو کرتے کہ جبکہ سر پر جن
آتا ہے اوس سے اپنی ہی بولی بلواتا ہے مگر ایسا کبھی نہین دیکھا گیا کہ جن گرفتہ آدمی
نے سنسکرت مین بات کی ہووے علاوہ اسکے اگر سنسکرت جنون کی بولی ہوتی تو
کل مسلمان سنسکرت ہی بولتے کہ اونکو جنون سے بدرجہ غایت تعلق ہے کہ موافق
قران وحدیث کے جسوقت مسلمان اپنی مان کے پیٹ سے پیدا ہوتا ہے تو اول اوسکو
جن مس کرتا ہے ایک ایک مسلمان کے ساتھہ ایک ایک جن ہردم ہمنشین ہے انکی

جہت سے بنایا کہ اور ملکون کے باشندہ بھی سنسکرت سے بہرہ مند ہوویں تو جواب یہہ ہے کہ ظہور وید مقدس و رشیان خدارس کے زمانہ مین سوائے آریاورت کے کوئی ملک آباد نہ تہا کہ ابتدائے آفرینش برہماورت سے ہے جو کہ آریاورت کا ایک حصہ ہے پس اون دنون مین دوسرے ملکون کی سنسکرت سے بہرہ مندی ممکن نہ تہی منکرین خود کہتے ہین کہ عہد آدم سے پہلے نوع انسان کا وجود نہ تہا اور پیدائیش آدم سے ابتک چہہ ہزار برس گذرے ہین پس رشیون کے زمانہ مین کہ عہد آدم سے بہت پہلا ہے یہود و نصارا و مسلمان کے اعتقاد کے موافق نوع بشری معدوم محض تہی عرب و ایران وغیرہ کی آبادی کا تو کیا ذکر ہے اس سے یہہ ہی لازم آیا کہ سنسکرت آریاورت کی زبان نہین ہے بلکہ تمام ملکون کی زبانون سے نرالی ہے البتہ قدیم الایام سے آریاورت مین اوسکا رواج بہ کثرت چلا آتا ہے مگر اس سے یہہ نہین جانا گیا کہ اس ملک کی زبان ہو گئی اب سمجہنا چاہیے کہ دراصل سنسکرت کے جتنے الفاظ ہین سب شکت ہین اور سنسکرت مین شکت کہتے ہین ایسے لفظ کو جو شکتی سے متعلق ہووے اور شکتی کہتے ہین پرمیشور کے اس قسم کے ارادہ کو کہ فلانے لفظ سے فلانے معنی سمجہے جاوین اور یہہ ارادہ انادی یعنی ازلی ہے پس روز ازل سے سنسکرت کے سارے الفاظ پرمیشور کی شکتی سے ملصوق ہین اس مرحلہ کی بحث شبد شکتی پرکاشکا نامی کتاب مین مفصلاً طے ہوئی ہے اس سے یہہ ہی برآمد ہوا کہ زبان سنسکرت کا واضع پرماتما ہے یہہ خصوصیت سنسکرت کے سوائے دوسری زبان مین نہین ہے کہ اوسکے الفاظ اور معانی کا پیوند پرمیشور کے ارادہ سے قایم ہووے یہود و نصارا و مسلمان تو خود کہتے ہین کہ واضع زبان انسان ہے یا آواز سقوط مکان ہے انصاف کرو کہ جس دن پرمیشور نے انسان کو پیدا کیا وہ بغیر تعلیم پرمیشور کے ہرگز گفتگو نہین کر سکتا تہا پس جو زبان کہ اوسکو پرمیشور نے سکہلائی وہ دوسرے کی طرف ہرگز منسوب نہین ہو سکتی

بلکہ خود بخود وہ آجاتی ہے حالانکہ سنسکرت کو شروع ہی سے پڑہتے چلے آئے ہین بغیر
تعلیم کے کسی کو حاصل نہین ہوتی چنانچہ پتن جلی رشی نے مہابہاشیہ مین کہا ہے۔

वृहस्पतिःप्रवक्ता इंद्रश्चाध्येता

یعنی اندر نے برہسپتی سے سنسکرت پڑہی فقط یہان سے واضح ہوا کہ سنسکرت دیوتون
کے لوگ کی بہی زبان نہین ہے وگرنہ اندر دیوتا کسواسطے برہسپتی کی شاگردی اختیار
کرتا اور سنسکرت پڑہتا اگر سنسکرت آریاورت دیش کی بہاشا ہوتی تو ہم لوگون کو کسواسطے
اوسکے پڑہنے اور پڑہانے کی ضرورت پڑتی کیونکہ اپنے ملک کی بولی خود بخود بڑے ہوتے ہی
آجاتی ہے اوسکی تعلیم وتعلم کی کسیکو احتیاج نہین ہوتی چونکہ آریاورت کے لوگون نے
بہی بطناً بعد بطن اور نسلاً بعد نسل سنسکرت پڑہا اور پڑہایا اس سے جاناگیا کہ وہ آریاورت
کی زبان نہین ہے علاوہ اسکے کوئی اہل زبان اپنی زبان کی صرف ونحو اپنے ملک
کے باشندون کے تعلیم کے لئے وضع نہین کرتا مثلاً کسی اہل عرب نے اپنے ملک کے
لوگون کو عربی تعلیم کرنے کے واسطے عربی کی صرف ونحو نہین بنائی یہہ ہی حال فارسی وغیرہ
کا ہے بلکہ عربی کی صرف ونحو فارسی والون نے اپنے عربی خوان ہونے کے لیے بنائی
ہے اسیطرح یہان کے لوگون نے فارسی سمجہنے کے واسطے قواعد فارسی کی کتابین بنائین
مراد اس سے یہہ ہے کہ جسوقت ملک فارس پر عربون کا تسلط ہوا تو ایران مین عربی زبان
نے بڑی قدرومنزلت پائی پس اہل فارس نے عربی کی درس وتدریس کے لئے اوسکی
صرف ونحو کی بنیاد ڈالی اسیطرح جب اس ملک مین فارسی کی ترقی ہوئی تو ہندوستانیون
نے اوسکے قواعد جمع کرنے شروع کئے بخلاف سنسکرت کے کہ اوسکی صرف ونحو جسکو
بیاکرن کہتے ہین پانینی وپتن جلی وغیرہ رشیون نے جوکہ وید کے زمانے کے قریب تہے
آریاورت کے رہنے والون کی آسانی کے لئے بنائی کہ آریاورت مین تعلیم وتعلم سنسکرت
بطریق سہل رواج پائے اگر کوئی کہے کہ ان رشیون نے سنسکرت کا بیاکرن اس

کے ساتھہ گوناگون الفاظ بن گئے ہین میکس مولر صاحب کی کتاب لیکچرس آن دی سائنس آف لینگویج کے صفحہ ۱۰۵ مین لکھا ہے کہ لارڈ مان بڈو صاحب کہتا ہے کہ ہندوستان کے برہمنون مین ایک ایسی زبان جاری ہے جو ہومر یونانی شاعر کی عبارت سے ہر طور پر فصیح ہے سوائے اسکے مجھکو اور بھی اس زبان کا حال دریافت ہوا ہے اگر زندگی بخیر رہی تو پایہ ثبوت کو پہنچا دونگا کہ یونانی سنسکرت سے نکلی ہے اسی کتاب کے صفحہ ۱۰۴ مین ہے کہ سر ولیم جونس نے لکھا ہے کہ سنسکرت کی وضع نہایت عجیب و غریب ہے یونانی سے زیادہ کامل ہے اور لیٹن سے بڑہکر وسیع ہے اور دونون کی نسبت شستہ تر ہے اور اسی کتاب کے صفحہ ۱۰۳ مین ہے کہ ہیل ہڈ صاحب اپنی بنگالی گرمر کے دیباچہ مین لکھتا ہے کہ سنسکرت کے الفاظ کی عربی و فارسی و یونانی و لیٹن سے بہت مشابہت ہے اور یہہ مشابہت مصطلحات کے درمیان ہی نہین ہے کہ جس سے یہہ قیاس کیا جاوے کہ جب ایک قوم نے دوسری قوم سے علوم و فنون لئے اوسکے ساتھہ ہی مصطلحات بھی اخذ کر لین بلکہ مشابہت زبان کے اصلی لفظون مین ہے جیسا کہ اسماے اعداد اور اون چیزونکے نام جن کی ضرورت ہر ایک قوم کو کچھہ شایستگی ہونے پر بھی ہوتی ہے فقط چونکہ سنسکرت سب زبانون سے پہلے ہے اس سے معلوم ہوا کہ تمام زبانین سنسکرت ہی سے نکلی ہین اب چاہیے جاننا کہ جو زبان سب سے پہلے ہوگی وہی ایشور کی زبان ہو سکتی ہے کیونکہ جسوقت ایشور نے انسان پیدا کئے وے بے تعلیم ایشور کے کوئی بات از خود ایجاد نہین کر سکتے پس جو بولی کہ اونکو ایشور نے وید مقدس کے ذریعہ سے سکھلائی وہ سنسکرت ہے اور لا کلام وہی آسمانی زبان و ربانی کلام ہے وہ کسی ملک کی بولی نہین ہے اور پہلے بھی نہ تھی کہ جس زمانے مین وید مقدس کا ظہور ہوا فی الفور اوس سے ہر ملک کے لوگون نے اپنی اپنی زبان بنائی اگر سنسکرت آریاورت کی بولی ہوتی تو رشیون اور منیون کو کہ روز اول سے آریاورت کے رہنے والے تھے اوسکے پڑہنے کی ہرگز ضرورت نہ پڑتی کیونکہ اپنے ملک کی زبان کوئی پڑہکر نہین سیکھتا

تاریخ انگلستان کے صفحہ گیارہ مین لکھا ہے کہ قدیم مصری ویونانی وروی وانگریز تناسخ یعنی
آواگون کو مانتے تہے اور ہمارے پرانے ڈروادلوگ جو کہ ہمارے گرو تہے یہہ ہی سکہلاتے تہے
اور ہم لوگ مانتے تہے لیکن روشنی پہیلنے کے بعد اس پرانی تعلیم کو چہوڑ دیا فقط کتاب چیمبرس
ان فارمیشن فاروی پیپل مین لکھا ہے کہ پی تہے گورس جو مشہور حکیم بلدہ سے ماس کا تہا لوگو
کو مسئلہ تناسخ کی ہدایت کرتا تہا اور کہتا تہا کہ مین خبردار ہون کہ میرا پہلا جسم کیا تہا فقط پرمیشور
نے چاہا تو کسی رسالہ مین تناسخ کی بحث تمام لکہی جایگی چونکہ ابتدا مین تمام ولایتون کے لوگ اون
کے اس عمدہ مسئلہ کے قایل تہے اس سے ثابت ہوا کہ آریون مین داخل تہے اور ویدیہ آتما
کی طرف مائل تہے اس تمام گفتگو سے یہہ ہی تحقیق ہوا کہ سنسکرت پرماتما کی زبان ہے کہ سرشٹی
کی آدی مین اوسنے بواسطہ وید اقدس کے بندگان خاص کو یاد کرائی اونکے وسیلہ سے
آجتک مروج ہے اور ساری دنیا کی زبانین اسی سے اخذ کی گئین چنانچہ الف روایم ای
اور ڈبلو ٹی ویب ایم اے صاحب نے کتاب ہنٹس آن دی سٹڈی آف انگلش مین صفحہ اول
سے لیکر سات تک جو کچہہ کہ لکہا ہے اوسکا یہہ ہی مدعا ہے کہ سو برس گذرے کہ اہل یوروپ
کا ایسا اعتقاد تہا کہ سب زبانون کی اصل سریانی ہے لیکن جسوقت سنسکرت مین مہارت
حاصل کی یہہ ہی بات دریافت ہوئی کہ فارسی ویونانی ولیٹن وجرمنی وغیرہ سنسکرت سے
نکلی ہین فقط یہان سے بخوبی ثابت ہو گیا کہ تمام بولیون کی جڑ سنسکرت ہی کیونکہ جسوقت
سنسکرت بگڑی اوس سے طرح طرح کی زبان پیدا ہو گئی جیسے ماتا سے مان ومادر
ومام ومدر اول سنسکرت دوم بہاشا سوم چہارم فارسی پنجم انگریزی اسیطرح پتا سے
پدر و فادر وپیٹر و ویٹر اول سنسکرت دوم فارسی سوم انگریزی چہارم یونانی ولیٹن
پنجم جرمنی اسیطرح پد و پادن وپا وپاڈاس اول سنسکرت دوم بہاشا سوم فارسی
چہارم یونانی اسی قیاس پر ناسا و ناک ونیسس و نوز اول سنسکرت دوم بہاشا
سوم لیٹن چہارم انگریزی اس قسم کے ہزارہا کلمات ہین کہ جن سے کچہہ تبدیل و تغیر

اختلاف ڈالین تاکہ ایک دوسرے کی بات نہ سمجھین۔ ۸ تب خداوند نے اونکو وہان
سے تمام روے زمین پر پراگندہ کیا سو وے اوس شہر کے بنانے سے باز رہے۔
۹۔ اسلیئے اوسکا نام بابل ہوا کیونکہ خداوند نے وہان ساری زمین کی زبانون مین
اختلاف ڈالا اور وہان سے خداوند نے اونکو تمام روے زمین پر پراگندہ کیا فقط
اسمین اتنی ہی بات قرین قیاس ہے کہ ابتداے آفرینش مین پرماتما نے اپنی خاص زبان
سکھلائی اور وہ بالیقین سنسکرت ہی تھی جسکو ہم دیو بانی اور سربانی کہتے ہین (اور جب وے
پورب سے روانہ ہوے) اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اول پیدایش آریاورت ہی مین
ہوئی اور یہان ہی سے لوگ اوس طرف کو روانہ ہوئے اسیواسطے میکس مولر صاحب نے
لکچرس آن دی سائینس لینگویج کے صفحہ ۱۵۲ مین لکھا ہے کہ لیبنٹز صاحب نے کہا
کہ مین از روے یقین بیان کرتا ہون کہ سب زبانون کی اصل ایک ہی زبان ہے اور
نبی آدم مشرق سے مغرب کو آئے فقط باقی عبارت بالکل واہیات ہے کیونکہ اوس سے
لازم آتا ہے کہ ایشور محدود ہی جاتا آتا ہے اور اوترتا چڑہتا ہے آدمیون سے خوف کرتا ہے
اور ڈرتا ہے کہ مبادا انسان میرے قابو سے باہر نکل جائین اور خودمختار ہوجائین مین
حیرت مین ہون کہ پادری صاحبان کس مونہہ سے ہندؤن کے دیوتاون پر جہوٹے اعتراض
کرتے ہین کہ جب کوئی شخص عبادت کرتا ہے تو اندر دیوتا خوفناک ہوتا ہے غور کرو کہ جب
تمہارے آسمانی ایشور کا یہہ حال ہے تو تم کو کیا مجال ہے کہ اندر پر زبان طعن دراز
کرو غرض کہ سربانی سنسکرت کے سواے دوسری زبان نہین ہے ہووے تو یہود
و نصارا و مسلمان اپنی کتابون سے نشان دین کہ خلاے ملک مین مروج تھی پہر
توریت اور میکس مولر صاحب کے اس مضمون سے کہ لوگ مشرق سے مغرب کو آئے فقط
یہہ ہی جانا گیا کہ تمام روے زمین پر اول آریہ لوگون کی بود و باش تھی جبکہ آریہ ورت
مین انسانون کی کثرت ہوئی تو دوسرے ملکون مین جا بسے اسیواسطے کالبر صاحب نے

اپنی غلط فہمی سے یای تحتانی لکہنا اور پڑہنا شایع کیا ہے سنسکرت مین سربانی اور دیوبانی
زبان خدا کو کہتے ہین جو کہ ابتدای آفرینش مین پرماتما نے بذریعہ وید اتہ دن کے اپنے
خواص کو تعلیم کی تہی اور رشیون اور منیون مین پہیلائی تہی رفتہ رفتہ اوسی کے الفاظ و کلمات
کو تبدیل و تغیر کر کے طرح طرحکی زبانین لوگون نے جاری کر لی ہین سنسکرت مین سُر
بضم سین مہملہ یعنی پرماتما کے بہی مستعمل ہے اس صورت مین یہہ کلمہ مرکب ہے (سو) اور (ربا)
سے یعنی باآسانی نجات و درجات کا دینے والا۔

सुर पु० सुष्टुरग्निर्ददात्यभीष्टं सुखं ऊ॰ देवे सूर्यैपराङिदेव

یہہ لغت سنسکرت کی عبارت ہے جسکی نجات دہندہ کی طرف اشارت ہے لفظ بانی سنسکرت
مین بمعنی زبان و بولی کے مستعمل ہوتا ہے سربانی و دیوبانی دونون مرادف ہین ایسے ہی بجاے
باے موحدہ یاے تحتانی پڑہنا اور سریانی ایک ملک کی زبان کا نام دہرنا مسلمانون کی نادانی
و لاعلمی ہے ایسواسطے توریت کی کتاب پیدایش کے گیارہوین باب مین صرف اسیقدر لکہا ہے
کہ اول دنیا مین ایک ہی زبان جاری تہی قید سریانی نہین ہے اصل عبارت وہان کی
اسطرح ہے اور تمام زمین پر ایک ہی زبان اور ایک ہی بولی تہی۔ ۲ اور جب وسے پورب
سے روانہ ہوے تو ایسا ہوا کہ اونہون نے سنعار کے ملک مین ایک میدان پایا اور
وہان رہنے لگے۔ ۳ اور آپسمین کہا آؤ ہم اینٹ بناوین اور آگ مین پکاوین سو
اونکو پتہر کی جگہہ اینٹ اور گچ کی جگہہ گارا تہا۔ ۴۔ اور اونہون نے کہا کہ آؤ ہم اپنے
واسطے ایک شہر بناوین اور ایک برج جسکی چوٹی آسمان تک پہونچے اور یہان اپنا نام
کرین ایسا نہو کہ تمام روے زمین پر پریشان ہو جاوین۔ ۵ اور خداوند اوس شہر اور
برج کو جسے بنی آدم بناتے تہے دیکہنے اوترا۔ ۶ اور خداوند نے کہا دیکہو لوگ ایک
ہین اور اون سب کی ایک ہی بولی ہے اب وے یہہ کرنے لگے سو وے جس کام کا
ارادہ رکہین گے اوس سے باز نرہ سکین گے۔ ۷ آؤ ہم اوترین اور اونکی بولی مین

کہ بادشاہ نمرود کے زمانہ مین تمام لوگون کی زبان سریانی تہی جبکہ قصر نمرود گرا اوس سے
ایسی مہیب آواز برآمد ہوئی کہ عالم کی زبانون مین اختلاف پڑ گیا بس ہر ایک قوم نے ایک زبان
مین گفتگو کرنی شروع کی اسطرح پر کہ ایک قوم دوسری قوم کی زبان سے واقف نہوئی پس
دنیا مین بہتر زبانین مختلف واقع ہوئین مطلب آیت یہہ ہے کہ خدا نے محمد سے یہ کہا ہے کہ جس
وقت نمرود اور اوسکے مطیعون نے مکر کیا ہمنے اونکے اوپر اونکی عمارت گرادی تفسیر معالم
مین لکہا ہے کہ نمرود نے خدا سے مقابلہ کرنیکے لیے ایک منار نہایت بلند تیار کرایا جب
اوسپر چڑہا آسمان ویسا ہی دور نظر آیا جیسا کہ زمین سے دکہائی دیتا تہا دوسرے دن وہ
منار گر پڑا اسکا اوسکا دریا مین گرا اور باقی نمرودیون کے گہرون پر آرہا اور ایک آواز
مہیب اوس سے پیدا ہوئی کہ ساری دنیا کی زبانین متبلبل یعنی درہم برہم ہوگئین اور اونکے
کلام مین اختلاف پڑ گیا شہر بابل کے بابل نام ہونے کی وجہ یہہ ہی ہے اس سے پہلے
اوس بلدہ کا نام کوثا تہا محمد بن جریر طبری نے لکہا ہے کہ عہد نمرود مین تمام آدمیون کی
زبان سریانی تہی جب قصر نمرود گر پڑا اوسکی آواز کی ہیبت سے زبانین مختلف ہوگئین اور ہر ایک
قوم علیحدہ زبان مین کلام کرنے لگی اس طرز پر کہ ایک کی بولی دوسرا نہ سمجہے نقطان
مفسرین کی تفسیر سے ثابت ہے کہ عربی وغیرہ ساری زبانین اوس قصر کے گرنیکی آواز سے
حادث ہوئی ہین کہ جو نمرود نے خدا کے ساتہ مقابلہ و مقاتلہ کے واسطے بنایا تہا پس جو کوئی
عربی کو قدیم کہتا ہے وہ غلطی عظیم مین پڑا ہے ان مفسرین کے قول سے یہہ ہی جانا گیا کہ
عربی وغیرہ زبانین نجس ہین کہ اونکی پیدایش کا باعث منار خدا آزار ہے پہر بقول شخصیکے
زبان خلق نقارہ خدا یہود و نصاریٰ و مسلمان جو کہتے ہین کہ اول سب لوگون کی زبان سریانی
تہی تمام زبانین اوسی سے بگڑ کر بنگئی ہین یہہ بالکل ہمارے ہی قول کی تائید ہے اور ہمکا
یہہ ہی مقصود ہے کہ سنسکرت ام الالسنہ ہے اور ساری بولیان اسی سے حادث ہوئی ہین
کیونکہ سریانی سے اون لوگون کی مراد سنسکرت ہے کہ سریانی کی بار موجدہ کو اونہون نے

॥ परमात्मने नमः ॥

زبان پر ہے میری حمد خداوند ہمین جسکی نام نامی ستچد انند ہے وہی ہے برہم اور بہگوت وہی ہے
وہی آنند ہے چت ست وہی ہے نہ اوسکی ابتدا و انتہا ہے وہی جلوہ گر ارض و سما ہے
کیا پیدا اوسی نے دو جہان کو زمین کو آسمان کو لامکان کو ۔ اول حمد خداوند رقم کرتے
ہین بعدہ حصہ دوم آریہ تدبیر کا ہش حوالہ قلم یہہ حصہ بہی گفتگوے عارفانہ سے مشحون ہے
کہ از اول تا آخر وید و شاستر کا مضمون ہے یہان بہی دیانند سرسوتی کے عقاید پر گفتگو ہے
کہ احقاق حق و ابطال باطل کی جستجو ہے سنسکرت لسان قدیم ہے اور ماخذ زبان
ہفت اقلیم اگر یہہ عیان نہوتی کسی کو جرات تفسیر و بیان نہوتی اگر کوئی مسلمان کہنے لگے
کہ ہماری ہی زبان قدیم ہے اوسی سے سنسکرت نکالی گئی ہے اور یہہ تمام الفاظ عربی
سے لیکر سنسکرت والون نے اپنے طور پر بنا لیے ہین تو ہم اسطرح پر جواب دینگے کہ
عبرانی و عربی وغیرہ کوئی زبان قدیم نہین ہے کہ تمہاری ہی کتابون سے تمہاری
زبانون کا حادث ہونا ثابت ہوتا ہے چنانچہ امام ثعلبی نے سورہ نحل کی (قد مکر الذین
من قبلہم فاتی اللہ بنیانہم من القواعد فخر علیہم السقف من فوقہم) اس آیت کی تفسیر مین لکہا ہے

بیت

بنام آنکه او ثانی ندارد ۔ صفات حادث و فانی ندارد

آریتو پرکاش

در مطبع سودرشن الہ آباد باہتمام منشی نراین داس طبع گشت

ओ३म्

اوم

परमात्मने नमः

پرماتمنے نمہ

अनंत तत्व प्रकाश

اننت تتو پرکاش

मुन्शी इन्द्र मणि रचित

مصنفہ منشی اندرمن

मिहर हिन्द यंत्रालय मुरादाबाद में पंडित

वंशीधर के प्रबंध से मुद्रित

हुआ

مطبع مہر ہند مراد آباد میں پنڈت بنشی دھر کے اہتمام سے چھپا

पहली बार ६०० मूल्य ≡)

پہلی بار ۶۰۰ قیمت فی کاپی

ओ३म्

परमात्मा जयति

दोहा

है उपास्य सब जगत् का वोही सर्वाधार॥ जिस ने ब्रह्मा को दिये वेद ज्ञान मय चार॥ वेदादिक सत् शास्त्र का है यही मत निर्द्धार॥ जीव अनंत असंख्य हैं गणना रहित अपार॥ दयानंद के हृदय में छाया महद्ज्ञान॥ देश हितैषी में किया तद्विरुद्ध व्याख्यान॥ खंडन उनके कथन का करूं शास्त्र अनुसार॥ सत्पुरुषों को चाहिये निश दिन यही विचार॥४

प्रकट हो कि वेदादिक सत्शास्त्रों के जानने वाले ऋषि मुनि और आचार्यों का सनातन से यही मत चला आया है कि जीव अनंत अर्थात् संख्या रहित हैं इसी कारण जगन्नाथदास ने अपनी प्रश्नोत्तरी में लिखा था कि जीव वास्तविक अनंत हैं इस कारण

اوم

پرماتما جیتی

لکھوں میں حمد اوس پرماتما کی * رسالت جسنے رہما کو عطا کی * بنایا اونکو آن میں جہان کو * زمین کو آسمان کو لامکان کو * وہی صورت نمائے انس و جان ہے * وہی برپا کن کون و مکان ہے * وہی ہے عدل گستر داد پرور * وہی ہے بے نیاز و پاک برتر * صفتیں ارواح کی ہیں غیر محدود * وہی ہے اونکا مالک اور معبود * جو محدود اونکو کہتے ہیں یا انکو تقسیم او پر کرتی ہیں خرج و منتہ * خلاف وید یہ اونکا بیان ہے * نہیں ہے پوشیدہ اک اک پر عیاں ہے * مگر جو لوگ ہیں گم گشتۂ ازراہ * کیا جاتا اونکو حق سے آگاہ * امابعد یہ رسالہ ہیچ فقیر اندرمن کے طرف سے رد میں کہ جو انت او غیر محدود نے ہو ہیں دیانند سرستی کے عقائد باطلہ کو مردود نے ہیں طالبان احقاق حق و ابطال باطل کو بشارت ہے کہ تعصب طرفداری سے قطع نظر کر کے حق و باطل کی تمیز میں سعی نمایاں کرین اور بندہ اندرمن کو ممنون احسان جانیں جاننا کہ وید و شاستر کے جانے والے رشیوں اور آچاریوں کا قدیم الایام سے یہی مذہب چلا آیا ہے کہ جیو انت یعنی بے انتہا ہیں اسیواسطے پنڈت جگنّاتھ داس نے اپنی اریہ شپنوتری میں لکھا تہا کہ جیو فی الحقیقت انت ہونے سے

ईश्वर के ज्ञान में भी अनंत ही हैं पंडित दयानंद सरस्वती ने सब के विरुद्ध देश हितैषी मासिक पत्र संवत १६३६ कार्त्तिक मास में यह व्याख्यान मुद्रित कराया कि जब जीव देश काल वस्तु परिच्छिन्न अर्थात् भिन्न२ हैं उन को अनंत कहना मानो एक अज्ञानी का दृष्टांत बनना है अनंत तो क्या परंतु परमेश्वर के ज्ञान में असंख्य भी नहीं होसक्ते इत्यादि पंडित दयानंद सरस्वती के इस लेख से पंडितों की तो किसी प्रकार हानि नहीं परंतु जो लोग कि वेदादि सत्शास्त्रों का ज्ञान नहीं रखते उन का असन्मार्ग में प्रवर्त्त होना संभव है अतएव वेदादि सत्शास्त्र से जीवों का अनंत और असंख्यात होना सिद्ध किया जाता है और दयानंद सरस्वती को उनके असमंजस कथन से चुप

स्वामीजी जब जीव देशकाल वस्तु परिच्छिन्न है **उत्तर** जीव को काल परिच्छिन्न

پرمیشور کے گیان مین بھی اننت ہی ہین پنڈت دیانند سرسوتی نے سب کے برخلاف دیش ہتیشی رسالہ ماہوار مطبوعہ سنبت ۱۹۳۹ کارتک ماس مین یہہ بیاکھیان طبع کرایا کہ جب جیو دیش کال بستو پری چہن ارتھات بھن بھن ہین اونکو اننت کہنا مانو ایک اگیانی کا درشٹانت بننا ہی اننت تو کیا پرنتو پرمیشور کے گیان مین اسنکھیہ بھی نہین ہوسکتی الخ پنڈت دیانند سرسوتی کی اس تحریر سے پنڈتون کا تو کسی طرح پرہرج نہین ہی مگر جو لوگ کہ علم وید وشاستر سے محروم ہین اونکا گمراہ ہونا ممکن ہے لہذا وید اور شاستر سے جیوون کا اننت اور غیر محدود ہونا ثابت کیا جاتا ہی اور دیانند سرسوتی کو اونکی گفتگوی واہیہ سے ساکت

سوامی جی جب جیو دیش کال بستو پری چہن ہی **جواب** جیو کو کال پری چہن

वही कहेगा कि जो मुसलमान या ई-साइयों का भाई होगा क्योंकि काल प-रिच्छिन्न उसको कहते हैं कि जो किसी काल में विद्यमान होवे और किसी स-मय में नष्ट अर्थात् उत्पत्ति और नाश वाला होवे जो वस्तु अनादि और अनंत हैं उस में काल परि च्छेद कदापि नहीं है और आर्यों का यही मत है कि जीव जन्म और मरण शून्य है और अनादि औ-र अनंत है अर्थात् न कभी उत्पन्न हुआ है और न कभी नाश मान होगा किंतु सर्वदा एक ही प्रकार से रहता है जैसा कि श्वेता श्वतर उपनिषत् में है (नित्यो नित्या नां चेतन श्चेतना नामे को बहू नां यो विदधाति कामान्) स्वामी दयानं-द सरस्वती के मत का कुछ ठिकाना नहीं है कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ अब से दश वर्ष पहिले जीव को काल परिच्छिन्न और उत्पत्ति वाला जा-नते थे सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ट १५२) और २३२ आदि में देखो जब कि उनको

وہی ہوگا کہ جو مسلمان یا عیسایئوں کا بھائی ہوگا کیونکہ کال پرچھن اوسکو کہتے ہین کہ کسی یا زمین موجود ہووے اور کسی وقت مین معدوم یعنی حادث وفانی ہووے جو چیز قدیم و واجب ہے اوس مین کال پری چھید ہرگز نہین ہے اور آریون کا یہہ بھی مذہب ہے کہ جیو حدوث و فنا سے منزہ ہے اور اناوی اور انت ہے یعنی نہ کبھی پیدا ہوا اور نہ کبھی فنا ہوگا بلکہ دایم ایک ہی طور پر قایم رہتا ہے چنانچہ شویتاشوترا اپنشد مین ہے

नित्यो नित्या नां चेत नश्चेतना नामे को बहू नां यो विद धातिका मान्

سوامی دیانند سرسوتی کے دین ایمان کا کچھہ ٹھکانا نہین ہے کبھی کچھہ کہتے ہین اور کبھی کچھہ اب دس برس پہلے جیو کو کال پری چھن اور حادث جانتے تھے ستیارتھہ پرکاش کے صفحہ ۱۵۲ و ۲۳۲ وغیرہ مین دیکھو جبکہ اون کو

कोयल और मुरादावाद में समझाया गया कि जीव की उत्पत्ति मानना वेद और उप-निषत् और सूत्र आदि समस्त प्रमाणिक ग्रंथों के विरुद्ध है और युक्ति विचार से भी ऐसा मानने में बहुत दोष हैं उन दोषों की व्याख्या यहां आवश्यक नहीं है कभी जीवों के जन्मांतरप्राप्ति के विषय में वर्णन की जायगी निदान बहुत समझाने के उपरान्त स्वामी जी ने जीव को अनादि और अंतर हित-माना और चांदापुर के शास्त्रार्थ तथा पादरी स्कॉट साहिब के शास्त्रार्थ में इसी सिद्धान्त से जय को प्राप्त हुए और भूमिका तथा वेदभाष्य में भी जीव को अनादि माना अब फिर अपने पहिले मत को स्वीकार किया और वेदभाष्य तथा भूमिका का खंडन करने लगे **स्वामी जी** (अर्थात भिन्न २ है) **उत्तर** जैसे स्वामी जी का मूल अशुद्ध है ऐसे ही यह व्याख्या भी बुद्धि के विरुद्ध है क्योंकि यह नियम कदापि नहीं है कि जो वस्तु देश काल वस्तु परिच्छिन्न होवे वही भिन्न २ हो किंतु जितनी वस्तु देश काल

بمقام کویل ومراد آباد سمجھایا گیا کہ جیو کی پیدائش ماننا وید و اپنشد و سوتر وغیرہ کل کتابون کے خلاف ہے علاوہ اسکے دلائل عقلی کی راہ سے بھی ایسا ماننے مین بہت نقصان ہین اون نقصانون کی تشریح یہان چندان ضرور نہین ہے کبھی تناسخ کے بیان مین کیجاویگی غرضکہ بعد فہمایش بسیار کے سوامی جی جیو کے ازلی و ابدی ہونے کے قایل ہوئے چنانچہ چاندا پور کے میلے اور پادری اسکاٹ صاحب کی مباحثہ مین اسی پر کاربند ہوکر مخالفین سے گوی سبقت لیگئے اور بھومکا اور وید بہاشیہ مین بہی جیو کی قدامت پر قایم رہے شاید کہ اب پہر اپنے پہلے عقیدہ پر آگئے اور بھومکا اور وید بہاشیہ کا رد کرنے لگے ع مبارک ہنکو یہ ہندی کتہا ہو **سوامی جی** اترتھات بھن بھن ہین **جواب** جیسے کہ سوامی جی کا متن بے اصل ہے اسیطرح یہ شرح بہی خلاف عقل و نقل ہے کیونکہ یہہ قید ہرگز نہین ہے کہ جو اشیا و شکال ستوریچھن ہین وہی بہن بہن ہین یعنی مغائر ہووین بلکہ جتنی چیزین و شکال

वस्तु परिच्छिन्न नहीं हैं वे भी भिन्न२ हैं जैसे कि आकाश और दिक और परमात्मा यद्यपि देश काल परि च्छेद रहित हैं अ-र्थात् समस्त स्थान और काल और पदार्थों के साथ व्याप्ति रखते हैं फिर भी आपस में पृथक् २ हैं अर्थात् आकाश दिक् से भिन्न है और दिक् आकाश से भिन्न इसी प्रकार परमात्मा आदि को जानो फिर न्याय और काणाद के मत में जीवात्मा तीनों परि च्छेद से रहित हैं और आपस में भिन्न२ हैं

स्वामी जी इन को अनंत कहना मानो एक अज्ञानी का दृष्टांत बनना है

उत्तर वास्तव में जीव अनंत ही हैं चाहे जितने मुक्त होजावें जगत् का उच्छेद कभी न होगा इस कारण उन को अनंत कहना अज्ञानी का दृष्टांत बनना नहीं है किंतु जीवों के अनंत होने का निषेध करना अज्ञानता का चिन्ह है कि किसी पदार्थ की वस्तुता को विरुद्ध वर्णन करना है जैसा कि कोई पुरुष पशु को पत्थर कहे तो उस की मूर्खता में क्या संदेह

بستو پری چھن نہیں ہین وے بھی بہن بہن ہین جیسے آکاش اور دک اور پرماتما وغیرہ باوجودیکہ دیش کال پریچھید سے بری ہین یعنی کل مکان وزمان واشیاء کے ساتھ احاطہ کر رہے ہین پھر بھی باہم غیریت رکھتے ہین یعنی آکاش دک سے غیر ہے اور دک آکاش سے مغائر ہے اسی پر اوروں کو قیاس کرلو پھر نیائے اور کاناد شاستر کے مت مین جیوآتما تینون پریچھید سے منزہ ہین اور آپس مین مغائر ہین

سوامی جی انکو اننت کہنا مانو ایک اگیانی کا درشٹانت بننا ہے

جواب فی الحقیقت جیو اننت یعنی بے انتہا ہی ہین چاہے جتنے مکت ہو جاوین یعنی نجات پا جاوین دنیا ابدا منتہی نہوگی سلسلہ آمد و رفت ہمیشہ قایم رہیگا لہذا انکو اننت کہنا بیوقوف کی مثال بننا نہین ہے بلکہ جیوون یعنی ارواح کے اننت ہونے سے انکار کرنا نادانی کی نشانی ہے کہ کسی شے کی ماہیت کو خلاف بیان کرنا ہے مثلا کوئی شخص حیوان کو حجر کہے تو اوسکی بیوقوفی مین کیا شک

है देखो विज्ञान भिक्षु ने योग सूत्र वृत्ति में जीवों के अनंत होने में यह स्मृति प्रमाण दी है १ अतीता नागताश्चैव या वंतः संहिताक्षणाः ततोप्यनंत गुणिता जीवा नां राशयः पृथक् १ अर्थात् अनादिकाल से जितने क्षण व्यतीत हुए हैं और अनंत काल तक जितने व्यतीत होंगे जीवोंकी राशि उन से भी अनंत गुणी हैं १ पराशर ऋषि ने भी कहा है स्थूलैः सूक्ष्मैः तथा स्थूल सूक्ष्मैः सूक्ष्मतरैस्तथा स्थूला स्थूल तरश्चैतत्सर्वं प्राणि भिरा वृतं १ अंगुलस्याष्ट भागो पिनसोस्ति मुनि सत्तम न संति प्राणि नो यत्र कर्म वंधनि वंधनाः २ अर्थात् छोटे और बड़े प्राणियों से सारा आकाश भरा हुआ है उंगली के आठवें भाग की समान भी ऐसा कहीं नहीं है कि जहां प्राणि न होवें सारे आकाश में अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं

स्वामी जी अनंत तो क्या परन्तु परमेश्वर के ज्ञान में असंख्य भी नहीं होसके **उत्तर** स्वामीजी वस्तुतः अनंत

ہے دیکھو گیان بھکشو نے یوگ سوتر برتی میں جیو کے اننت ہونے میں یہہ سمرتی سند لکھی ہے

अतीता नागताश्चैव या वंतः संहिताक्षणाः ततोप्यनंत गुणिता जीवा नां राशयः पृथक् १

یعنی زمانہ ازل سے جتنے لمحے و لحظے گذرے ہیں اور وقت ابد تک جتنے گذرینگے روحوں کے گروہ اون سے بھی بے انتہا درجہ بڑے ہیں فقط پراشر رشی نے بھی کہا ہے -

स्थूलैः सूक्ष्मैः तथा स्थूल सूक्ष्मैः सूक्ष्मतरैस्तथा स्थूला स्थूलतरश्चैतत्सर्वं प्राणि भिरा वृतं १ अंगुलस्याष्ट भागो पिनसोस्ति मुनि सत्तम न संति प्राणि नो यत्र कर्म वंधनि वंधनाः २

یعنی چھوٹے اور بڑے جانداروں سے سارا اکاش بھرا ہوا ہے انگلی کے آٹھویں حصہ برابر بھی ایسا نہیں ہے کہ جاندار ان سے خالی ہو سارے اکاش میں اپنے اعمال کا پھل پا رہے ہیں -

سوامی جی اننت تو کیا بلکہ پرمیشور کے گیان میں اسنکھیہ بھی نہیں ہو سکتے **جواب** سوامی جی کو اننت

और असंख्य शब्द का अर्थ भी नहीं जा-
नते देखो जब जिस पदार्थ के लिये अ-
नंत शब्द कहा जाता है जैसा कि कहें कि
जीव अनंत हैं तो यही अर्थ होता है कि
जीवों की गणना नहीं है उन की संख्या
अनंत है इसी कारण परमात्मा को अनंत
कहते हैं कि उस के नामों और गुणों की
गणना नहीं होसकती अर्थात् अनंत हैं
इसी प्रकार जिन पदार्थों के लिये असं-
ख्य शब्द कहा जाता है तो यही प्रयोज-
न होता है कि उन की संख्या अर्थात् ग-
णना का अंत नहीं है अतएव दोनों श-
ब्दों का अर्थ एक ही है और दोनों आप-
स में पर्यायी हैं स्वामी जी ने भी सत्या-
र्थ प्रकाश में ऐसा ही लिखा है इसकी
व्याख्या समीप आयेगी निःसंदेह जीव
परमेश्वर के ज्ञान में भी अनंत और असं-
ख्य हैं कि पूर्ण ज्ञानी वही है कि जैसा
पदार्थ हो उस को वैसा ही जाने सर्प को
सर्प जाने और रज्जु को रज्जु जो कोई
इस के विरुद्ध जानता है वह विद्वान्

اور اسنکھیہ کی حقیقت بھی معلوم نہیں ہے
پس اونکی وہی مثل ہے کہ اونچی دکان اور
پھیکا پکوان دیکھو جب جس چیز کے حق میں لفظ
اننت کہا جاتا ہے مثلاً کہیں کہ روحیں اننت ہیں
تو یہی معنی ہوتے ہیں کہ روحوں کی شمار
نہیں ہے اونکی تعداد بے انتہا ہے اسواسطے
پرماتما کو اننت کہتے ہیں کہ اوسکے ناموں اور
صفتوں کی تعداد نہیں ہے یعنی بے
انتہا ہیں اسیطرح جن چیزوں کے حق میں
لفظ اسنکھیہ کہا جاتا ہے تو یہی غرض
ہوتی ہے کہ اونکی سنکھیا یعنی گنتی
کی انتہا نہیں ہے لہذا دونوں لفظوں
کا مفہوم واحد ہے اور دونوں آپس
میں مرادف ہیں سوامی جی نے بھی
ستیارتھ پرکاش میں ایسا ہی لکھا ہے
تفصیل اسکی عنقریب آئیگی بیشک بلاشبہ
ارواح پرمیشور کے گیان میں بھی اننت
اور اسنکھیہ ہیں کہ پورا گیانی وہی ہے کہ جیسی
شے ہو ویسی ہی جانے سانپ
کو سانپ جانے اور رسی کو رسی جو کوئی
اسکے برعکس جانتا ہے وہ عالم

ग्रौर ज्ञानी नहीं है ग्रौर उस का ज्ञान ग्रौर विद्या यथार्थ नहीं परमात्मा जीवों को जैसे कि वह ग्रसंख्य ग्रौर गणना रहित हैं वैसे ही जानता है कि जीवों की गणना ग्रंत वाली नहीं होती ग्रौर संख्या ग्रंत को नहीं पहुंचती यदि इस के विरुद्ध जाने तो उस की विद्या ग्रौर ज्ञान में दोष ग्रावे विद्या ग्रौर ज्ञान की निपुणता इसी में है कि वास्तव में जो पदार्थ जैसा है उस को वैसा ही जाने यहां वास्तव बात यही है कि जीवों की गणना नहीं है यदि जीवों की संख्या का ग्रंत होता ग्रौर परमेश्वर उस को न जानता तो निःसंदेह उस के ज्ञान में दोष ग्राता **स्वामी जी** परमेश्वर के समीप तो सब जीव वस्तुतः ग्रतीव ग्रल्प हैं जीवों की तो क्या परंतु प्रति जीव के ग्रनेक कर्मों के भी ग्रंत ग्रौर संख्या को परमेश्वर यथावत् जानता है +

उत्तर प्रत्येक वस्तु वास्तव में ग्रपने स्वरूप से जैसी कि है उस को परमेश्वर वैसी ही जानता है यदि उस को विपरीत

وگیانی نہین ہے اور اوسکا گیان وعلم کامل نہین ہے پرماتما روحون کو جیسی کہ وہ بیشمار اور لاتعداد ہین ویسی ہی جانتا ہے کہ روحون کی شمار منتھی نھوگی اور تعداد انتھی کو نہین پھنچتی اگر اسکے برخلاف جانے تو اوسکے علم اور گیان مین قصور آئے علم و گیان کا کمال اسی مین ہے کہ اصلیت شیٔ جیسی ہو ویسے ہی جانے یہان حقیقت و ماہیت اتنی ہی ہے کہ روحون کی گنتی نہین ہے اگر تعداد ارواح کی انتھا ہوتی اور پرمیشور اوسکو نہ جانتا تو البتہ اوسکے گیان مین نقصان عائد ہوتا **سوامی جی** پرمیشور کے سمیپ تو سب جیو بستوتہ اتیو الپ ہین جیوون کی تو کیا پرنتو پرتی جیو کے بھی انت اور سنکھیا کو پرمیشور یتھاوت جانتا ہے،

جواب ہر ایک چیز فی الحقیقت بذات خود جیسی کہ ہے اوسکو پرمیشور ویسی ہی جانتا ہے اگر اسکے برخلاف

जाने तो उसके परमेश्वर होने ही में सं-
देह है देखो दयानंद जी ने भी सत्यार्थ
प्रकाश के पृष्ठ २३८ में यही लिखा है
(ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा प-
दार्थ है उस को वैसा ही जानता है नि-
दान जब कि वास्तव में जीव अनंत हैं तो
परमेश्वर के समीप क्योंकर अतीव अल्प
हैं क्या परमेश्वर उनके स्वरूप का ज्ञान
नहीं रखता. जीवों का अनंत होना दया-
नंद सरस्वती ने आप स्वीकार किया है दे-
खो सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ३३२ में (अनं-
ता वै वेदाः इस श्रुति का क्या अर्थ किया
है उन का लेख यह है कि (वेद शब्द का य-
ह अर्थ है जिस से जाना जाय पदार्थ उस
का नाम वेद है और वेत्ति सोयं वेदः जोजा-
नने वाला है उस का नाम भी वेद है सो अ-
नंत नाम असंख्यात जीव हैं इत्यादि य-
हां से दो बातें जानी जाती हैं एक यह कि
स्वामी जी के निश्चय में भी जीव अनंत हैं
दूसरे यह कि अनंत और असंख्य दोनों श-
ब्द पर्यायी हैं और दोनों का तात्पर्य एक है

جانے تو اوسکے پرمیشور ہونے ہی مین
شک ہے دیکھو سوامی دیانند سرستی
نے ستیارتھ پرکاش کے صفحہ
دو سو اڑتیس مین یہی مضمون لکھا ہے
(ایشور کا گیان نربھرم ہے جو
جیسا پدارتھ ہے اوسکو ویسا
ہی جانتا ہے) پس جبکہ دراصل جیو
اننت ہین تو پرمیشور کی نزدیک کیونکر
اتی الپ یعنی کمتر ہین آیا پرمیشور انکی
اصلیت کا جزو انہین ہے اور جیون کا
اننت ہونا خود دیانند سرستی نے قبول
کیا ہے دیکھو ستیارتھ پرکاش کے صفحہ
تین سو بتیس مین (अनन्ता वै वेदाः
اس شرتی کا کیا ارتھ کیا ہے اونکی اصل عبارت
یہہ ہے کہ وید شبد کا یہہ ارتھ ہے جس سے جانا جاے
پدارتھ اوسکا نام وید ہے اور वेत्ति सोयं वेदः
جو جاننیوالا ہے اوسکا نام بھی وید ہے سو اننت
نام اسنکھیہ جیو ہین وغیرہ یہان سے دو باتین جانی
جاتی ہین ایک یہہ کہ سوامی جی کے عقیدہ مین بھی
جیو اننت ہین دوسرے یہہ کہ اننت اور اسنکھیہ دونون
لفظ مترادف ہین اور دونون کا مفہوم واحد ہے

निदान यही प्रकट हुआ कि स्वामी जी ने जीवों के अनंत होने पर वृथा आक्षेप किया या उनके मत में हलचल है कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ पूर्ण विश्वास किसी विषय में नहीं रखते फिर उक्त श्रुति का अर्थ भी अशुद्ध किया है क्योंकि वेद शब्द का जीव और गुण अर्थ कदापि नहीं है होवे तो निरुक्त और कोष का प्रमाण दीजिये और दिखलाइये कि किस ऋषि और मुनि ने इस शब्द का उक्त अर्थ किया है उस श्रुति का वास्तव अर्थ यह है कि वेदों का अंत अर्थात् नाश कभी न होगा सर्वदा यही वेद विद्यमान रहेंगे और यह भी अशुद्ध है कि वेद अपरिमित हैं क्योंकि वेद तो चार ही हैं पांचवां नहीं है और उनके अष्टक और अध्याय और वर्ग और मंडल और श्रुति आदि भी परिमित हैं निदान जो कोई कहता है कि वेदों का अंत नहीं है वह दयानंद सरस्वती की सदृश अज्ञान में है यहां तक यह बात सिद्ध की

بس یہہ ہی واضح ہوا کہ سوامی جی نے جیوون کے اننت ہونے پر ناحق اعتراض کیا یا اونکے مذہب مین تزلزل ہے کبھی کچھ کہتے ہین اور کبھی کچھ پورا اعتقاد کسی بات پر نہین رکہتے پھر شرتی مذکور کا ارتھ بھی غلط کیا ہی کیونکہ لفظ وید کا جیو اور گن ارتھ ہرگز نہین ہی ہووے تو نرکت اور کوش کی سند دیجیے اور دکھلائیے کہ کس رشی اور منی نے اس لفظ کو معنی مذکور مین استعمال کیا ہے اوس شرتی کا اصلی ارتھ یہہ ہے کہ ویدون کا انت یعنی خاتمہ ہرگز نہوگا تا ابدالاباد یہہ ہی وید قایم رہینگے اور یہہ معنی بھی غلط ہین کہ ویدون کی انتہا نہین ہے کیونکہ وید تو چار ہی ہین پانچوان نہین ہے اور اونکے اشٹک اور ادھیاے اور برگ اور منڈل اور شرتی وغیرہ بھی معدود ہین پس جو کوئی کہتا ہے کہ ویدون کی انتہا نہین ہے وہ دیانند سرسوتی کی طرح غلطی پر ہے یہانتک یہہ بات ثابت کی

गई कि जीव अनंत हैं ॥ अब विदित हो
कि प्रत्येक जीव के जन्म और कर्म भी अ-
नंत हैं कि अनादि काल से जन्म लेता और कर्म
करता चला आता है यदि इस बात को भी दयानं
द जी स्वीकार न करेंगे तो अपने मत से हाथ धो
वेंगे क्योंकि जीव और कर्म और संसार का अनादि
होना स्वीकार कर चुके हैं भूमिका के पृष्ठ १७ औ
१८ में देखो वहां यह लिखा है (सर्वे जीवाः स्व
रूपतोऽनाद्यस्तेषां कर्माणि सर्वं कार्यं ज
गच्च प्रवाहेणैवानादीनि सन्तीति
जब कि जीव अनादि काल से जन्म लेते
हैं और कर्म करते हैं तो उन के जन्म और
कर्म के अनंत होने में किसी प्रकार का सं-
देह नहीं यदि कोई कहे कि जीव के ज-
न्म और कर्म मनुष्यों के ज्ञान में अनंत
हैं परमेश्वर के ज्ञान में नहीं तो हम कहें
गे कि इस दशा में जीव और उसके जन्म
और कर्म और सृष्टि का प्रवाह अनादि न
रहा किंतु उन की आदि ठहर गई अब दया-
नंद सरस्वती को चाहिये कि अपने पहले
मत को जो कि सत्यार्थ प्रकाश में प्रकट

گئی کہ ارواح بیشمار ہیں اب چاہیے
جانتا کہ ہر ایک جیو کے جنم اور کرم
بھی اننت ہیں کہ انادی کال سے
جنم لیتا اور کرم کرتا چلا آتا ہے اگر اس
سے بھی دیانند سرسوتی انحراف
کرینگے تو اپنے عقیدہ سے ہاتھ دھو بیٹھینگے
کیونکہ جیو اور کرم اور سنسار کو انادی
ہونے پر اقرار کر چکے ہیں بھومیکا
کے صفحہ (۱۷) اور (۱۸) میں دیکھو
وہان کی اصل عبارت یہہ ہے –
सर्वे जीवाः स्वरूपतोऽनाद्य
स्तेषां कर्माणि सर्वं कार्यं ज
गच्च प्रवाहेणैवानादीनि
सन्तीति
غرضکہ جس صورت میں جیو انادی کال سے
جنم لیتے ہیں اور کرم کرتے ہیں تو انکے جنم اور کرم
کے اننت ہونے میں کسی طرح کا شک نہیں اگر کوئی کہے
کہ جیو کے جنم اور کرم انسان کے گیان میں اننت ہیں
پرمیشور کے گیان میں نہیں ہیں تو ہم کہینگے کہ اس
صورت میں جیو اور اسکے جنم و کرم و سنسار کا سلسلہ
انادی یعنی ازلی نہ رہا بلکہ اسکی ابتدا قائم
ہو گئی اب دیانند سرسوتی کو چاہیے کہ اپنے
پہلے عقیدہ پر جو کہ ستیارتھ پرکاش میں ظاہر
مین

किया है स्वीकार करें और जीव की उत्प-
त्ति और जगत् का प्रारंभकाल माने हैं अ-
र्थात् जो पदार्थ कि परमेश्वर के ज्ञान में
सादि है वह जीव के ज्ञान में भी वैसा ही
होगा नहीं तो जीव का अज्ञान जाना जाय-
गा यदि कोई कहे कि जब परमेश्वर जीव
आदि का उत्पत्ति काल आदि नहीं जान-
ता तो वह सर्वज्ञ कहां रहा तो उत्तर यह
है कि जैसा पदार्थ हो उस को वैसा ही
जानना यथार्थ ज्ञान है उस के विरुद्ध जा-
नना महदज्ञान है इस कारण हमारा य-
ही विश्वास है कि परमात्मा प्रत्येक पदा-
र्थ को यथावत् जानता है जो अनादि है
उस को अनादि जानता है और जो अनंत
है उस को अनंत समझता है यदि इसके
विपरीत जाने तो निश्चय उसके ज्ञान में
दोष आवे हम प्रश्न करते हैं कि परमे-
श्वर अपने आदि और अंत को जानता है
या नहीं यदि जानता है तो वह उत्पत्ति
और नाश वाला ठहरा और परमेश्वर औ-
र परमात्मा न रहा किंतु अस्मदादि को

کیا ہے عود کرین اور جیو کی پیدائش
اور دنیا کے آغاز پر از سر نو اعتقاد
لائین سو آریہ جو چیز کہ پرمیشور کے گیان
مین سادی اور ابتدائی ہے وہ جیو کے
علم مین بھی ویسی ہی ہو گی ورنہ جیو کا
علم و گیان جہل و بھرم قرار پائیگا اگر
کوئی کہے کہ جب پرمیشور جیو وغیرہ کی ابتدا
سے آگاہ نہین ہے تو وہ سروگیہ یعنی ہمہ دان
کہان رہا تو جواب یہہ ہے کہ جیسا پدارتھ
ہووے اسکو ویسا ہی جاننا گیان اور علم
ہے اسکو خلاف جاننا بےعلم اور اگیان
ہے اسواسطے ہمارا یہہ ہی عقیدہ ہے کہ
پرماتما ہر ایک شی کی ماہیت و حقیقت کو
بخوبی جانتا ہے جو چیز کہ انادی ہے اوسکو
انادی جانتا ہے اور جو شی کہ اننت ہے اوسکو
اننت سمجھتا ہے اگر اسکے برعکس جانے تو لا کلام
اوسکے علم و درایت مین نقص لازم آئے
ہم دریافت کرتے ہین کہ پرمیشور اپنی ابتدا اور انتہا
سے بھی خبردار ہے یا نہین بتقدیر اول وہ
حادث و فانی قرار پایا پس پرمیشور اور
پرماتما نہ رہا بلکہ ہمارے اجسام

के शरीरों की सदृश आदि और अंत वाला हुआ और जो नहीं जानता तो दयानंद सरस्वती के कथनानुसार उसकी सर्वज्ञता में दोष आया क्योंकि यहां भी उन का यह विश्वास होगा कि परमेश्वर मनुष्यों के ज्ञान में अनादि और अनंत है और आप अपने आदि और अंत को जानता है निदान उन का परमेश्वर किसी दिन मृत्यु को अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि मनुष्य उस दिन को नहीं जानते परंतु वह जानता है कि अमुक दिवस मेरा नाश होगा सच्चे आर्यों पर तो कुछ दोष नहीं आता कि वह कह सक्ते हैं कि परमात्मा अपने स्वरूप और गुणों को जैसे कि अनादि और अनंत हैं वैसे जानता है इस कारण उसकी सर्वज्ञता में कुछ दोष नहीं आता आश्चर्य की बात है कि सत्यार्थ प्रकाश में स्वामीजी ने भी ऐसी आशंकाओं का यही उत्तर दिया है फिर हम प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर अपने ज्ञान और शक्ति के आदि और अंत को भी जानता है या नहीं दोनों

کی مانند آغاز و انجام والا ہوا بر تقدیر دوم و بانند سرسوتی کے قول کی موافق اوسکی سروگیتا اور ہمہ دانی مین قصور آیا کیونکہ اس مقام پر بھی اونکا یہی عقیدہ ہو گا کہ پرمیشور انسان کو علم مین انادی اور اننت ہے اور آپ اپنے اول و آخر سی واقف ہے پس بلاشبہ اونکا پرمیشور کسی روز پنجۂ موت مین گرفتار ہو گا گو انسان اوس دن سے واقف نہین ہین گو وہ خود جانتا ہے کہ فلان روز میرا خاتمہ ہو گا - اصلی آریہ لوگون پر تو کچھ الزام نہین آتا کہ وہ کہہ سکتے ہین کہ پرماتما اپنی ذات وصفات کو جیسی کہ بے ابتدا ولا انتہا ہے ویسی جانتا ہے لہذا اوسکی ہمہ دانی و عالم الغیبی پر کوئی اعتراض نہین آتا عجیبات سے یہہ ہے کہ ستیارتھ پرکاش مین سوامی جی نے بھی ایسے اعتراضون کا یہی جواب دیا ہے چنانچہ اوسکی عبارت بجنسہ نقل کی گئی ہے ہم دریافت کرتے ہین کہ پرمیشور کو اپنے علم و قدرت کی ابتدا و انتہا بھی معلوم ہے یا نہین دونون

प्रकार दयानंद सरस्वती के कथनानुसार वही दोष आयगा कि या परमेश्वर अज्ञानी और अविद्वान् ठहरेगा या उसका ज्ञान और शक्ति परिमित और परिच्छिन्न समझे जायेंगे हमारे यहां तो इसका भी वही उत्तर है कि परमात्मा का ज्ञान पूर्ण है जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा ही जानता है अपने ज्ञान और शक्ति के विषय में भी उस को यही ज्ञान है कि उन का आदि और अंत नहीं किंतु वे आदि और अंत रहित और सर्व व्यापक हैं इस कथन से हमारा प्रयोजन यही है कि जीवों की संख्या का अंत नहीं है और प्रत्येक जीव ने अनादि काल से इतने कर्म किये हैं कि वह भी अनंत और असंख्यात हैं क्योंकि जब जन्म लेने और कर्म करने का प्रवाह अनादि है तो स्वतः सिद्ध होगया कि प्रत्येक जीव के जन्म और कर्म अनंत हैं हां यदि दयानंद सरस्वती जन्म और कर्मों का प्रवाह अनादि न मानें तो यह दूसरी बात है परंतु परमात्मा का

صورت مین دیانند سرسوتی کی قول کی مطابق وہی قباحت وارد ہوگی کہ یا پرمیشور اگیانی اور بےعلم ٹھہریگا یا اوسکا علم و قدرت محدود سمجھی جائینگی ہماری یہان تو اسکا بھی وہی جواب ہی کہ پرماتما کا گیان اور دانائی اتم و اکمل ہی کہ ماہیت اشیا کو جیسی کہ ہی کما حقہ جانتا ہی اپنی علم و قدرت کی بارہ مین بہی اوسکو یہہ ہی معلوم ہی کہ اونکی ابتدا و انتہا نہین ہی بلکہ وے ابتدا و انتہا سے منزہ اور محیط کل اشیا ہین اس تمہید سی ہمارا مطلب یہہ ہی ہی کہ تعداد ارواح کی انتہا نہین ہی اور ایک ایک روح نی اناد کال سی اتنے کرم کئے ہین کہ وہ بہی اننت و بی انتہا ہین کیونکہ جس صورت مین جنم لینی اور کرم کرنی کی سلسلہ کی انتہا نہین ہی تو خود ثابت ہوگیا کہ ہر ایک جیو کی جنم اور کرم اننت ہین ہان اگر دیانند سرسوتی جنم و کرم کی سلسلہ کی اناد ہونیسی انکار کرین تو یہہ دوسری بات ہی مگر پرماتما کا

धन्य वाद है कि अभी तक वे जीव और
संसार को अनादि मानते हैं फिर क्यों कर
कहते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक जीव के कर्म
के अंत और संख्या को जानता है निः सं-
देह परमेश्वर पर यह दयानंद सरस्वती
का दोषा रोपण है क्योंकि जब वेद और
उपनिषत् में जीव और संसार को अनादि
लिखा है तो प्रत्येक जीव के कर्मों के अ-
नंत होने में क्या संदेह है कब संभव हो
सक्ता है कि जो पदार्थ वस्तुतः जिस प्रका-
र का है परमेश्वर उस के विरुद्ध जाने क्या
परमेश्वर भी तुम्हारी सदृश भ्रम जाल
में फंसा हुआ है सिद्धान्त यही है कि
परमात्मा जीव के कर्मों को अनंत ही
जानता है **स्वामी जी** जो ऐसा नहो-
ता तो वह पर ब्रह्म जीव और उनके कर्मों
का जैसा २ जिस २ जीव ने कर्म किया है
उन२ का फल न देसके **उत्तर** विदि-
त हो कि पंडित दयानंद सरस्वती को
नागरी भाषा की वाक्य रचना भी नहीं
आती नहीं तो जीव शब्द के उपरान्त

شکر ہے کہ ابھی تک وے جیو اور
سنسار کے انادی ہونے پر قایم ہیں
پس کیونکر کہتے ہیں کہ پرمیشور ایک
ایک جیو کے کرم کے انت اور تعداد
کو جانتا ہے۔ بلا شبہ پرمیشور پر یہ
دیانند سرسوتی کا بہتان ہے کیونکہ جب
صورت میں بقول وید او پنشد کے
جیو اور سنسار انادی ہیں تو ہر ایک
جیو کے کرموں کے انت ہونے میں کیا کلام
ہے پس کیونکر ممکن ہو سکتا ہے کہ جیسی
شے کی ماہیت ہو وہی پرمیشور اوسکے
خلاف جانے۔ آیا پرمیشور بھی تمہاری
طرح بھرم جال میں پھنسا ہوا ہے
لہذا اصل وہی ہے کہ پرماتما جیو کے کرموں کو
انت ہی جانتا ہے۔ **سوامی جی**
جو ایسا نہوتا تو وہ پربرہم جیو اور اونکے
کرموں کا جیسا جیسا جس جس جیو نے
کرم کیا ہے اون اون کا پھل نہ دے سکے
جواب واضح ہو جاننا کہ پنڈت
دیانند سرسوتی کو ناگری عبارت لکھنی کا شعور
نہیں ہے ورنہ لفظ جیو کے بعد

(और उन) यह दो शब्द और जिस२ के पश्चात् जीव शब्द अधिक नलाते और न देसक्ता के स्थान पर न देसके न लिखते इन वाक्यों के उत्तर से प्रथम दो बातों का समझना आवश्यक है एक यह कि जैसे परमात्मा स्वरूप से अनंत है और देश काल वस्तु परिच्छेद रहित है इसी प्रकार उसके गुण अर्थात् ज्ञान और शक्ति और इच्छा और प्रयत्न भी अनंत और सर्व व्यापक हैं यहां वेद और उपनिषत् आदि के प्रमाण लिखने की आवश्यकता नहीं है कि पंडित दयानंद सरस्वती भी परमात्मा के स्वरूप और गुणों को अनंत ही मानते हैं जैसाकि भूमिका के प्रथम पृष्ठ में लिखा है (यथादि ब्रह्मा नंत मनादि विश्व कृदजं) अर्थात् ब्रह्म का आदि और अंत नहीं है और सारे जगत् का उत्पन्न करने वाला है इति फिर पृष्ठ १२ में यह वाक्य है कि परमेश्वर का अनंत सामर्थ्य है दूसरे यह कि प्रत्येक

(اور اُون) یہہ دو لفظ اور لفظ جس جس کے بعد کلمہ جیو زایدنہ لاتی اور نہ دیسکتا کی جگہہ نہ دیسکے نہ لکھتے ان فقرون کے جواب سی پہلے دو باتون کا سمجھنا ضروری ہی ایک یہہ کہ جیسے پرماتما کی ذات اننت ہے اور دیش کال بستو پریچھید سے منزہ ہی یعنی کوئی جگہہ اور کوئی زمانہ اور کوئی چیز اوسکی احاطہ ذاتی سے خالی نہین ہی تمام الکنہ وازمنہ واشیا مین جلوہ گر ہے ؎ دیدہ باطن کو اپنے کھول اور نظارہ کر ہر شش جہت مین ہی وہی پرتو فگن جلوہ کنان اسیطرح اوسکی صفات یعنی علم وقدرت وارادہ وتدبیر وغیرہ بھی اننت اور محیط کل ہین یہان وید اپنشد وغیرہ کی سند پیش کرنیکی ضرورت نہین ہے کہ پنڈت دیانند سرستی بہی پرماتما کی ذات وصفات کو اننت ہی مانتے ہین چنانچہ بہومیکا کے صفحہ اول مین ہی ब्रह्मा नंत मनादि विश्व कृदजं یعنی برہم کی ابتدا و انتہا نہین ہی اور ساری مخلوق کا خالق ہی پہر صفحہ بارہ ۱۲ مین یہہ فقرہ ہی کہ پرمیشور کا اننت سامرتہہ ہی یعنی پرمیشور کی قدرت بے انتہا ہے فقط دوسرے یہہ کہ ہر ایک

कार्य की सिद्धि के लिये उसी के यो-
ग्य सामग्री चाहिये यदि वैसी ही सा-
मग्री न होगी तो कार्य सिद्धि कदापि
न होगी जैसा कि जगत् के प्रकाश को
सूर्य का होना अवश्य है दीपक आ-
दि से कदापि कार्य सिद्धि न होगी
एक दिन में पान सौ कोश रेल और
विमान ही के द्वारा पहुंच सक्ते हैं अ-
श्वादि से यह कार्य होना कठिन है
इसी प्रकार मुक्ति की प्राप्ति के लिये ब्र-
ह्मज्ञान के अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग
नहीं है यदि कोई चाहे कि मैं किसी दू-
सरे धर्म कर्म से मुक्ति प्राप्त करूं तो कदा-
पि नहीं हो सक्ती इस से यही सिद्ध
हुआ कि प्रत्येक कार्य की सिद्धि के
लिये विशेष सामग्री होती है वह का-
र्य उसी से सिद्ध होता है अन्य प्रकार
कदापि नहीं तात्पर्य यह है कि जैसे
जीवों की संख्या का अंत नहीं है
और प्रत्येक जीव के कर्म भी अनंत
हैं वैसे ही परमात्मा के ज्ञान और इच्छा

کام کے انجام دینے کے لئے اوسکے
لایق ذریعہ ووسیلہ درکار ہوتا ہے اگر
ویسے ہی وسیلہ وذریعہ کا اہتمام نہوگا
تو اوس کام کا بخیر انجام نہوگا مثلاً
تمام دنیا کے روشن ہونے کے لئے
آفتاب ہی کا ہونا ضروری ہے چراغ
ومشعل سے اصلاً کاربراری نہوگی ایک روز
میں پانسو کوس کی راہ قطع کرنیکے لئے
ریل اور بمان ہی کافی ہوسکتے ہیں گھوڑے
ہاتھی وغیرہ سے منزل مقصود میں پہنچنا
دشوار ہے اسیطرح سنسار کی تکالیف سے
مکتی یعنی نجات ابدی حاصل کرنیکا ذریعہ
ووسیلہ برہم گیان کے سوا دوسرا نہیں اگر
کوئی ارادہ کرے کہ میں کسی دوسرے دھرم وکرم
سے مکتی حاصل کروں تو اوسکا خیال خام ہے اس تمہید
سے یہی بر آمد ہوا کہ ہر ایک کام کا آلہ خاص ہوتا ہے
وہ کام اوسی سے کرسی نشین ہوسکتا ہے دوسرے
ہرگز نہیں اس سے یہ نتیجہ نکلا کہ جیسے جیوان
کی سنکھیا کا انت نہیں ہے اور ہر ایک
جیو کے کرم بھی اننت ہیں ویسے
ہی پرماتما کے علم و ارادہ

ऋौर प्रयत्न का भी ऋंत नहीं है ऋत एव
परमात्मा ऋपने ऋनंत ज्ञान से ऋनंत
जीवों को यथावत् जानता है ऋौर ऋपने
ऋनंत इच्छा ऋौर प्रयत्न से प्रत्येक जीव
के कर्मों का फल देता है इस में कुछ दो-
ष नहीं ऋाता क्योंकि ऋनंत जीवों का ज्ञा-
न होना ऋौर उनके ऋनंत कर्मों का फल
देना जैसा बड़ा कार्य है उसके प्रबंध के
लिये वैसा ही बड़ा कारण ऋौर द्वार है इस
कारण कोई कठिनता नहीं है हां यदि ई-
श्वर का ज्ञान ऋादि ऋनंत न होता तो इ-
स कार्य का प्रबंध होना कठिन था परंतु
ऐसा नहीं है किंतु जैसा कार्य है वैसी ही
उस के लिये सामग्री है **स्वामी जी**
जब कोई इन से प्रश्न करे कि एक २ जी-
व ऋनंत हैं वा सब मिल के १ **उत्तर**
यहां से स्वामी दयानंद सरस्वती का पां-
ड़ित्य प्रकट है कि उनको पंडित जगन्ना-
थ दास की प्रश्नोत्री के समझने की भी
बुद्धि नहीं है नहीं तो हम से यह प्रश्न
न करते कि एक २ जीव ऋनंत है या सब

وتدبیر کی بھی انتھا نہیں ہے پس
پرماتما اپنے اننت گیان سے اننت
جیوون کو کماحقہ جانتا ہے اور اپنے
اننت ارادہ وتدبیر سے ہر ایک
جیو کے اننت کرمون کا پھل دیتا
ہے اس مین کوئی قباحت لازم
نہین آتی کیونکہ اننت جیوون سے واقف
ہونا اور انکو بے انتہا اعمال کی جزا
وسزا دینا جیسا کہ کار عظیم ہے ویسا
ہی اوسکے سرانجام دہی کا آلہ و ذریعہ بھی
بہت اعلیٰ ہے لہذا کوئی دشواری نہین ہے
البتہ اگر پرمیشور کا گیان وغیرہ اننت
نہوتا تو اس کام کا انتظام ناممکن تھا
حالانکہ ایسا نہین ہے بلکہ جیسا کام ہے
ویسا ہی اوسکا آلہ بھی لاکلام ہے۔
سوامی جی جب کوئی ان سے پرشن
کرے کہ ایک ایک جیو اننت ہین وا سب ملکے
جواب یہان سے سوامی دیانند سرستی کی
پانڈت دکھائی دیتی ہے کہ انکو پنڈت جگناتھ داس کی پرشنوتری
کو سمجھنے کا بھی سلیقہ نہین ہے، ورنہ ہم سے یہ سوال
نکرتے کہ ایک ایک جیو اننت ہے یا سب

رحیم بخش

मिलकर क्योंकि प्रश्नोत्तरी का प्रश्न १५
यह है कि जीवों को किस समय उत्पन्न
किया और वह कितने हैं इस प्रश्न का
उत्तर यह लिखा है कि जीव अनादि हैं
कभी उत्पन्न नहीं हुए और अनंत हैं अ-
र्थात् उन की गणना नहीं- यदि स्वामी
जी इस प्रश्न और उत्तर के आशय को स-
मझते तो इस प्रकार वृथा कथन क्यों
करते उत्तर प्रश्नोत्तर के देखने से बाल-
क भी समझ सके हैं कि ग्रंथ कर्त्ता का
प्रयोजन यह है कि जीवों की संख्या का
अंत नहीं है प्रश्नोत्तर १८ में भी इसी अ-
भिप्राय की व्याख्या की गई है स्वामी
जी की वाक्य रचना देखिये कि लिखते
हैं कि एक२ जीव अनंत हैं यहां से प्र-
कट है कि वह यह भी नहीं जानते कि
जीव शब्द एक वचन है या बहु वचन
यदि जानते होते तो (हैं) के स्थान में
(है) लिखते और इस प्रकार कहते कि
एक२ जीव अनंत है निदान वैदिक लो-
ग जो जीवों को अनंत मानते हैं उससे

ملکر کیونکہ پرشنوتری کا پرشن ۱۵ ایہہ ہے
کہ جیوون کو پرماتما نے کس وقت پیدا
کیا اور وے کتنے ہین اس پرشن
کا اوتر یہہ لکہا ہے کہ جیو انادی ہین یعنے
کبہی پیدا نہین ہوئے اور انت ہین
یعنی بیشمار ہین اگر سوامی جی اس
پرشن اور اوتر کی حقیقت سے آگاہ
ہوتے تو کسواسطے اسقدر فضول
گفتگو بڑہاتے سوال وجواب ہذا
کے دیکہنے سے لڑکے بہی سمجہ سکتے
ہین کہ مصنف کا مطلب یہہ ہے کہ
جیوون کی شمار کا انت یعنی انتہا نہین
ہے چنانچہ سوال وجواب ۱۸ ہین بہی
اسی مطلب کی تشریح وتنقیح کی گئی ہے
سوامی جی کی تحریر کا انداز دیکہو کہ لکہتے
ہین کہ ایک ایک جیو انت ہین) یہان سے ظاہر
ہے کہ انکو معلوم نہین ہے کہ ناگری مین لفظ جیو مفرد
ہے یا جمع اگر وے تفرد وجمعیت سے ماہر ہوتے
تو بجای ہین لفظ ہے لاتے اور اسطرح کہتے
کہ ایک ایک جیو انت ہے الغرض کہ پیروان
ویدمت جو جیوون کو انت مانتے ہین اوس سے

उन का यह प्रयोजन है कि जीव इतने हैं कि कोई उन की गणना नहीं कर सक्ता। यदि स्वामी जी प्रश्न करें कि क्या परमेश्वर भी उन की गणना नहीं कर सक्ता तो उत्तर यह है कि इस से परमेश्वर के ज्ञान में कुछ दोष नहीं आता क्योंकि ज्ञान उसी का नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा ही जाने सो परमेश्वर ऐसा ही जानता है कि जीव असंख्यात हैं यदि कोई कहे कि हम भी जीवों को अनंत ही जानते हैं फिर हमारे जानने की अपेक्षा परमेश्वर के जानने में क्या विशेषता है तो उत्तर यह है कि हमारे और परमेश्वर के जानने में पृथ्वी और आकाश का भेद है कि परमेश्वर अपने अनंत ज्ञान और शक्ति से अनंत जीवों के पुण्य और पाप रूप कर्मों का साक्षी है और उन की स्थिति प्रवृत्ति को जानता है प्रत्येक का अन्तर्यामी है और अनंत जन्मों के वास्तविक वृत्तान्त को यथावत् जानता है हम केवल वेद शास्त्र के लेखानुसार इतना

اونکا مقصود یہہ ہی کہ جیو اتنے ہیں کہ کوئی اونکی گنتی نہیں کر سکتا اگر سوامی جی دریافت کریں کہ کیا پرمیشور بھی اونکی شمار نہیں کر سکتا تو جواب یہہ ہی کہ اس سے پرمیشور کے علم و ادراک مین ضعف نہیں آتا کیونکہ گیان اور علم اوسی کا نام ہے کہ ماہیت و حقیقت اشیا کو جیسی کی تیسی جانے سو پرمیشور ایسا ہی جانتا ہے کہ جیو بے انتہا ہین اگر کوئی کہے کہ ہم بھی جیوون کو اننت ہی جانتے ہین پس ہمارے جاننے کی نسبت پرمیشور کے جاننے مین کیا خصوصیت ہے تو جواب یہ ہے کہ ہمارے اور پرمیشور کے جاننے مین زمین و آسمان کا فرق ہی کہ پرمیشور اپنے اننت گیان و شکتی سے اننت جیوون کے اعمال نیک و بد کا شاہد ہی اور اونکی حرکات و سکنات پر ہر دم ناظر ہی ایک ایک کے راز اندرونی سے خبردار ہی اور اونکے اننت جنموں کی حقیقت حال سے آگاہ ہے ہم تو موافق وید و شاستر کے اتنا

ही जानते हैं कि जीव अनंत हैं निदान हमारे और परमेश्वर के ज्ञान में कुछ भी साहश्य नहीं स्वामी दयानंद सरस्वती को यह भी स्मरण न रहा कि हम ने प्रथम क्या लिखा था और अब क्या लिखते हैं देखो भूमिका के ११६ पृष्ठ में पुरुष सूक्त की (सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात्) इस श्रुति में सहस्र शीर्षा शब्द का यह अर्थ लिखा है कि हम लोगों के असंख्यात अर्थात् अगणित शिर हैं जिस पुरुष में उसको सहस्र शीर्षा कहते हैं स्वामी जी का लेख यह है (सहस्राणि संख्यातान्यस्मदादीनां शिरांसि यस्मिन्पूर्णे पुरुषे परमात्मनि स सहस्र शीर्षा पुरुषः) जिसके बीच में सब जगत् के असंख्यात शिर आंख और पग ठहर रहे हैं उसको सहस्र शीर्षा सहस्राक्ष और सहस्र पात भी कहते हैं फिर सत्यार्थ प्रकाश में असंख्यात और अनंत शब्द को आप पर्यायी अर्थात् एक अर्थ वाला लिख चुके हैं वह

ہی جانتے ہین کہ جیو اننت ہین پس ہمارے اور پرمیشور کے علم و ادراک مین کچھ مناسبت نہین ہے ع چہ نسبت خاک را با عالم پاک * سوامی دیانند سرسوتی کو اپنی پہلی اور پچھلی تحریرات کی مطابقت منظور نہین ہے یا اونکو یاد نرہا کہ پیشتر ہم نے کیا لکھا تہا اور اب کیا رقم کرتے ہین دیکھو بہومیکا کو صفحہ ۱۱۹ ایکسو انیس مین پرش سوکت کی

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः [सहस्र पात्

اس شرتی کو لفظ سہسر شیرشا کا یہ ارتہ لکہا ہے کہ ہم لوگون کے اسنکہیات یعنی بیشمار سر ہین جس پرش مین اوسکو سہسر شیرشا کہتے ہین اصل عبارت سوامی جی کی یہ ہے

सहस्राणि संख्यातान्यस्मदादीनां शिरांसि यस्मिन्पूर्णे पुरुषे परमात्मनि स सहस्र शीर्षा पुरुषः

جسکے بیچ مین سب جگت کی اسنکہیات سر آنکھ اور پاگ ٹھہر رہے ہین اوسکو سہسر شیرشا سہسر اکش اور سہسر پات بہی کہتے ہین پہر ستیارتھ پرکاش مین لفظ اسنکہیات اور اننت کو خود مرادف و ہم معنی قرار دیچکے ہین چنانچہ اسکی سند عنقریب گذری اور جبکہ

सत्यार्थ प्रकाश का लेख ऊपर लिखा गया यहां से प्रकट है कि स्वामी जी के निश्चय में केवल मनुष्य अनंत अर्थात् असंख्यात हैं संपूर्ण जीवों की तो क्या कथा है अब स्वामी जी पर क्या विपत्ति आई कि मनुष्य और पशु पक्षी आदि संपूर्ण जीवों को भी अनंत नहीं मानते यहां उनका वह कथन भी मिथ्या ठहरेगा कि जीव मनुष्यों के ज्ञान में अनंत हैं परमात्मा के ज्ञान में नहीं क्योंकि सहस्र शीर्षा पुरुषः यह श्रुति यजुर्वेद के ३१ अध्याय की है और वेद परमेश्वर का वाक्य है यदि परमेश्वर के ज्ञान में जीव अनंत न होते तो वह उनको अनंत क्यों कहता अब यदि स्वामी दयानंद सरस्वती अपने स्वभावानुसार भूमिका के उक्त लेख का खंडन करके सहस्र शब्द का अर्थ दशशत ही कहने लगें तो सर्वथा मिथ्या है क्योंकि यह अर्थ उस दशा में सत्य होसक्ता है कि संपूर्ण ब्रह्मांडों में केवल दशशत ही मनुष्य

ستیارتھ پرکاش کی عبارت نقل کی گئی یہان سے ظاہر ہے کہ سوامی جی کے عقیدہ مین صرف انسان اننت اور اسنکھیات ہین تمام حیوون کا تو کیا ذکر ہے اب سوامی جی پر کیا مشکل آپڑی کہ انس و حیوان طیور و دواب وغیرہ تمام حیوون کے اننت ہونے سے انکار کرنے لگے یہان انکا وہ عذر بھی پیش نجائیگا کہ جیو انسان کے گیان مین اننت و اسنکھیات ہین نہ پرماتما کی علم مین کیونکہ سہسر شیرشا پرشہ یہہ شرتی یجروید کے اکتیس ۳۱ ادھیاے کی ہے اور وید پرمیشور کا کلام ہے پس جسمین جسقدر مضمون و مفہوم ہے وہ پرمیشور ہی کا مقصود و مرام ہے دوسرے کا ہرگز نہین ہے اگر اب سوامی دیانند سرسوتی اپنی عادت کی موافق بھومیکا کی مضمون مذکور کی تکذیب کر کے لفظ سہسر کو معنی ہزار ہی کہنے لگین تو غلط محض ہے کیونکہ یہہ معنی اوس صورت مین صحیح ہو سکتے ہیں کہ تمام برہمانڈون مین دس ہزار ہی انسان

होवें परंतु इस के मिथ्या होने में कि-
सी को संदेह नहीं है इस के सिवाय
जब कि परमात्मा में हज़ार शिर ठहर
रहे हैं तो आंखें और पांव दो २ हज़ा-
र होने चाहियें कि एक शिर में दो आं-
ख होती हैं और प्रत्येक मनुष्य दो
पांव रखता है परंतु यजुर्वेद की उ-
क्त श्रुति में सहस्र शीर्षा शब्द के
अनंतर सहस्राक्ष सहस्र पात लिखा
है जिसका अर्थ हुआ हज़ार हैं आं
खें और हज़ार हैं पांव जिस में - वास्तव
बात वही है कि यहां सहस्र शब्द का
अर्थ असंख्यात अर्थात् अनंत है
पंडित दयानंद सरस्वती जी की व्या-
ख्या पर सिद्धान्त नहीं है किंतु पहि-
ली व्याख्याओं में भी यहां सहस्र
शब्द का अर्थ असंख्यात पर्थात
अनंत ही है यजुर्वेद का महीधरकृ-
त भाष्य देखलो सायणाचार्य ने
भी साम वेद के टीके में ऐसा ही लि
खा है क्योंकि यही श्रुति साम वेद में

ہووین حالانکہ اسکے بطلان مین
کسی کو شک نہین ہے علاوہ برین
جبکہ پرماتما مین ہزار سر ٹھہر رہے ہین
تو آنکھین اور پانون دو دو ہزار
ہونے چاہئین کہ ایک سر مین دو
آنکھین ہوتی ہین اور ہر ایک انسان
دو پانون رکھتا ہی مگر یجروید کی
شرتی مذکور مین لفظ سہسر شیرشا کے
بعد (سہسراکشہ سہسر پات) مرقوم ہے
جسکے معنی ہوئی ہزار ہین آنکھین جسمین
اور ہزار ہین پانون جسمین فقط -
اصل وہی ہے کہ یہان لفظ سہسر بمعنی
بیشمار و لاانتہا ہی پنڈت دیانند
سرسوتی جی کی تفسیر پر منحصر نہین
ہے بلکہ پہلی تفسیرون مین بھی
یہان لفظ سہسر بمعنی اسنکھیات
وانَنت ہی لیا ہے مہی دہر
کی تصنیف یجروید کا ٹیکا دیکھ لو
سائناچاریہ نے بھی سام وید
کے ٹیکے مین ایسا ہی لکھا ہی
کیونکہ یہہ شرتی بعینہ سام وید مین

भी आई है अब साम वेद की चौथी जिल्द के पृष्ठ ३१५ से उक्त श्रुति टीके सहित लिखी जाती है यथाहि सहस्र शीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् भाष्यं सर्व प्राणि समष्टि रूपो ब्रह्मांड देहो विराडाख्यो यः पुरुषः सोऽयं सहस्र शीर्षाः सहस्र शब्दस्यो पलक्षण त्वात् अनंतैः शिरोभिर्युक्त इत्यर्थः आरण्य संहिता में भी उक्त श्रुति आई है और वहां उस की सायणा चार्य ने इस प्रकार व्याख्या की है (सहस्र शीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् भाष्यं सर्व प्राणि समष्टि रूपो ब्रह्मांड देहो विराडाख्यायः पुरुषः सोऽयं सहस्र शीर्षाः सहस्र शब्दस्योपलक्षण त्वात् अनंतैः शिरोभिर्युक्त इत्यर्थः यानि सर्व प्राणि नां शिरांसि तानि सर्वाणि तद्देहान्तः पाति त्वात्तदीयान्येवेति सहस्र शीर्ष त्वम् एवं सहस्राक्षत्वम् सहस्र पाद त्वं च) इस समस्त कथन से यही सिद्ध हुआ कि जीवों की संख्या का वास्तव में अंत नहीं है और परमेश्वर भी उन को ऐसा ही जानता है यदि परमात्मा के समीप जीवों

بھی آئی ہے لہذا اب سام وید کی چوتھی جلد کے صفحہ تین سو پندرہ ۳۱۵ کی عبارت مع شرتی مذکور کے بجنسہ نقل کیجاتی ہے۔

सहस्र शीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् भाष्यं सर्व प्राणि समष्टि रूपो ब्रह्माण्ड देहो विराडाख्यो यः पुरुषः सोऽयं सहस्र शीर्षाः सहस्र शब्दस्योपलक्षण त्वात् अनंतैः शिरोभिर्युक्त इत्यर्थः

آرنیہ سنگھیا مین بھی شرتی مذکور آئی ہے اور وہاں اوسکی سایناچاریہ نے اسطرح بیاکھیا کی ہے۔

सहस्र शीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् भाष्यं सर्व प्राणि समष्टि रूपो ब्रह्मांड देहो विराडाख्यो यः पुरुषः सोऽयं सहस्र शीर्षाः (सहस्र शब्दस्योपलक्षण त्वात्) अनंतैः शिरोभिर्युक्त इत्यर्थः यानि सर्व प्राणि नां शिरांसि तानि सर्वाणि तद्देहान्तः पाति त्वात्तदीयान्येवेति सहस्र शीर्षत्वम् एवं सहस्राक्षत्वं सहस्र पादत्वं च

اس تمام گفتگو سے یہی مدلل ہوا کہ جیوون کی سنکھیا کی الحقیقت انت نہیں ہے اور پرمیشور بھی اونکو ایسا ہی جانتا، اگر پرماتما کے نزدیک جیوون

की संख्या का अंत होता तो वह वेद में यूं न
कहता कि प्राणियों के अनंत शिर पुरुष में
स्थित हैं प्रकट है कि एक मनुष्य के एकही
शिर होता है जब कि शिर अनंत हैं तो शिर
वाले अवश्य अनंत हुए यह स्वामी दयानंद
सरस्वती की व्याख्या का अभिप्राय है इस
से यही विदित हुआ कि उन के विचार में
मनुष्य अनंत हैं फिर मनुष्य देवता अप्सरा
गंधर्व किन्नर राक्षस दैत्य और पशु पक्षी
कीट पतंग कृमी आदि संपूर्ण जीवों के
अनंत होने का कैसे निषेध करते हैं
स्वामी जी जो एक २ अनंत हैं तो (य-
आत्मनि तिष्ठन् इत्यादि ब्राह्मण वचन
अर्थात् जो परमात्मा व्याप्य जीवों में व्याप
क होरहा है **उत्तर** यहां भी वही बात है
कि स्वामी जी को नागरी भाषा लिखने की
शक्ति नहीं कि एक शब्द के लियें जो एक
वचन है (हैं) क्रिया जो बहु वचन है ला-
ये हैं इस से जाना गया कि उन को एक
वचन और बहु वचन का ज्ञान नहीं है इसी
प्रकार इत्यादि ब्राह्मण वचन इसपदस मूह

کی شمار کا انت ہوتا تو وہ اپنی کتاب
مقدس میں یوں نہ کہتا کہ انسانوں
کے اننت اور اسنکھیات سر پرش میں
معلق ہیں فقط ظاہر ہو کہ ایک انسان
کا ایک ہی سر ہوتا ہی جبکہ سر اننت ہیں
تو سر والے بہر صورت اننت ہوئے یہہ
سوامی دیانند سرستی کی تفسیر کا مطلب
ہی اس سے یہی بر آمد ہوا کہ ان کی رائے میں
انسان اننت ہیں پس کیسی عقلمندی
کی بات ہے کہ انسان دیوتا اپسرہ
و گندہرب و کنر و راکشس و دیت و پشو
و پنچھی کیٹ و پتنگ کرمی وغیرہ کل جیون
کا اننت ہونے سے انکار کرتے ہیں سوامی جی
جو ایک ایک اننت ہیں تو یہ آتمنی تشٹھن اتیادی
براہمن بچن رہتا جو پرماتما بیاپیہ جیون
میں بیاپک ہو رہا ہے جواب یہاں بھی یہی
بات در کار ہے کہ سوامی جی کو ناگری
عبارت لکھنے کی استعداد نہیں کہ لفظ ایک کے لئے
کہ واحد ہے کلمہ کہ جمع کا صیغہ ہے لائے ہیں پس سوائے
اسکے کہ انکو جمع و واحد کی تمیز نہیں ہے کیا تصور
کیا جاوے اسیطرح د اتیادی براہمن بچن کا اس مبتدا

का प्रयोजन कुछ न खुला अर्थात् यह नहीं जाना गया कि इस का अन्वय किस पद के साथ है सिवाय इस के यहां स्वामी जी ने दो पूर्व पक्ष किये हैं पहिला यह कि एक २ जीव अनंत है दूसरा यह कि या मिलकर सब अनंत हैं इस से उन को उचित था कि दोनों पूर्व पक्षों के शुद्धा शुद्ध को प्रकट करते परंतु उन्हों ने एक ही पूर्व पक्ष की व्यवस्था में समाप्ति की दूसरे पूर्व पक्ष की महाराज को खबर भी नहीं कि कहां रहा यह संपूर्ण दोष उन की विद्वता के नमूनः हैं अब हम इस बात को छोड़ कर वास्तविक अभिप्राय का विचार करते हैं ध्यान कीजिये जो कोई झूठ बोलता है और सत्य को छुपाना चाहता है उस के मुख से एक दो शब्द ऐसा निकल जाता है जिस से उस का सारा प्रपंच प्रकट हो जाता है जैसे कि पंडित दयानंद सरस्वती चिर काल से वेदादि सच्छास्त्र विरुद्ध उपदेश करते थे कि जीव स्वतंत्र है जो चाहता है वह करता है परंतु इस समय उन के मुख से (य आत्मनि तिष्ठन् यह ऐसा शत पथ ब्राह्मण

کی خبر عبارت میں کو نہیں ہے اس سے جانا گیا کہ وہ مبتدا و خبر سے خبردار نہیں ہیں لہذا اونکی ترکیب ثانی کی بہی غلطی ہو گئی سوا اسکے یہان سوامی جی نے دو شق کی ہیں پہلا یہہ کہ ایک ایک جیو اننت ہی دوسرا یہہ کہ یا ملکر سب اننت ہین لہذا اونکو لازم تہا کہ دونوں شقون کی غلطی و صحت سے خبر دیتے حالانکہ اونہوں نے ایک ہی شق کی نسبت مین خاتمہ بالخیر کر دیا دوسرے شق کی مہاراج کو خبر بہی نہین کہ کہان ہا یہہ تمام غلطیان اونکی علمیت کا نمونہ ہین اب ہم اس سے قطع نظر کر کے مطلب کی طرف رجوع کرتے ہین توجہ کیجیے جو کوئی دروغگوئی پر آمادہ ہوتا ہے اور حق مخفی کرنا چاہتا ہے اوسکی زبان سے ایک دو کلمہ ایسا برآمد ہوتا ہے جس سے اوسکی ساری مکاری ظاہر ہو جاتی ہے چنانچہ پنڈت دیانند سرسوتی مدت سے لوگون کو گمراہ کرتے تہے کہ جیو یعنی روح صاحب اختیار و خود مختار ہے جو چاہتی ہے وہ کرتی ہے مگر اس وقت اونکی زبان سے [यथा त्मनि ति- ایسا نکلا ہے ... ष्ठन]

का प्रमाण निकला कि जिस से उन का
कथन सर्वथा मिथ्या होगया परंतु स्वामी
जी ने यहां भी धोखा दिया है कि उक्त श्रुति
का एक टुकड़ा लिखा और शेष को छुपा
लिया वह श्रुति पूर्ण इस प्रकार से है
(य ग्रात्मनि तिष्ठन् ग्रात्मनोऽन्तरो यंग्रा-
त्मान वेद यस्य ग्रात्मा शरीरं यग्रात्मानम-
न्तरो यम यति सत ग्रात्मान्तर्यामी अमृतः १
ग्रर्थात् जो परमात्मा जीव में व्यापक हो
कर जीव से निराला है जिस को जीव नहीं
जानता जीव जिस का शरीर है ग्रर्थात् जी-
व की स्थिति प्रवृत्ति जिसके ग्राधीन है जो
जीव में व्यापक होकर उस को यमन करे
है वह ग्रमृत स्वरूप ग्रात्मा तेरा ग्रंतर्या-
मी है १ यहां से प्रकट है कि जीव स्वतंत्र
नहीं है इस की व्याख्या स्वतंत्र ग्रौर परतंत्र
के विषय में ग्रायगी ग्रब प्रकट हो कि
पंड़ित दयानंद सरस्वती ने जिस प्रयोजन
के लिये इस श्रुति के ग्रादि का एक वाक्य
लिखा है वह प्रयोजन उनसे वर्णन नहो
सका इसी कारण इत्यादि ब्राह्मण वचन

کی سند نکلی کہ جس سے اونکی تمام کاروائی
باطل ہوگی مگر پنڈت صاحب نے یہان
بھی فریب ہی سے درگذر نکی کہ پوری
شرتی مین سے ایک ٹکڑا نقل کیا اور
باقی کو ہضم کر گئے تمام و کمال وہ شرتی
اسطرح ہے۔
य ग्रात्मनि तिष्ठन् ग्रात्म-
नोऽन्तरायं ग्रात्मान वेद
य स्य ग्रात्मा शरीरं यग्रा-
त्मानमन्तरो यम यति सत
ग्रात्मान्तर्यामी अमृतः १
یعنی جو پرماتما جیو مین بیاپک ہو کر جیو
سے نرالا ہے جسکو جیو نہین جانتا جیو
جسکا شریر ہے یعنی جیو کی حرکات و
سکنات جسکے اختیار مین ہین جو جیو مین جلوہ گر
ہو کر اپنا تصرف کرتا ہے وہی حی و
قایم رہتا تیرے اندر ہے تو اُسکو فقط
یہان سے ظاہر ہے کہ جیو خودمختار نہین ہے
تفصیل اسکی سوتنتر اور پرتنتر کی
بحث مین آئیگی - اب پوشیدہ نرہے
کہ پنڈت دیانند سرسوتی نے جس مطلب
کے لئے اس شرتی کے اول کی
ذراسی عبارت نقل کی ہے وہ مطلب
اون سے ادا نہو سکا اسیواسطے اتیادی براہمن

यह पद समूह प्रयोजन शून्य रहा अब मैं इस पद समूह के प्रयोजन को विदित कर के प्रथम उन के अभिप्राय को प्रकट करता हूं तदनंतर यथावत् उस का उत्तर देता हूं उक्त श्रुति का एक टुकड़ा लिखने से स्वामी जी का वास्तविक प्रयोजन यही था कि यदि एक२ जीव को स्वरूप से अनंत मानोगे तो (इत्यादि ब्राह्मण वचन के विरुद्ध होगा) इस से यही सिद्ध हुआ कि उनके विचारानुसार जिस पदार्थ में कोई व्यापक होता है वह पदार्थ अनंत नहीं हो सकता परंतु यह स्वामी जी का अज्ञान है उन को चाहिये कि शत पथ ब्राह्मण के उक्त वचन से किंचित पूर्व दृष्टि डालें कि जैसे जीवात्मा में परमात्मा की व्याप्ति कही है वैसे ही आकाश और दिक् में भी परमेश्वर की व्याप्ति मानी है यथाहि य आकाशे तिष्ठन्नाकाशादन्तरो यमाकाशो न वेद यस्याकाशः शरीरं य आकाश मंतरो यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः १ अर्थात् जो परमात्मा आकाश में व्यापक होकर

پھر مبتدا بے خبر یا اب میں اس مبتدا کی خبر سے خبردار کر کے اول ان کے مطلب کا اظہار کرتا ہوں بعدہٗ خاطر خواہ اوسکا جواب دیتا ہوں شرتی مذکور کا ایک ٹکڑا نقل کرنے سے سوامی جی کا مقصود اصلی یہی تھا کہ اگر ایک ایک جیو کو بذات خود اننت مانو گے تو نتیجہ براہمن کے بچن مذکور کی مخالفت لازم آئیگی پس اس سے یہی ثابت ہوا کہ ان کے نزدیک جس چیز میں کوئی بیاپک ہوتا ہے اوسکا اننت ہونا ممتنع ہے مگر یہہ سوامی جی کی غلط فہمی ہے انکو چاہیے کہ شتپتھ براہمن کے بچن مذکورہ سے قدرے بالا نظر ڈالیں کہ جیسے جیو آتما میں پرماتما کی بیاپتی کہی ہے ویسے ہی آکاش و دگ میں بھی پرمیشور کی بیاپتی مانی ہے چنانچہ

य आकाशे तिष्ठन्नाकाशादन्तरो यमाकाशो न वेद यस्याकाशः शरीरं य आकाश मंतरो यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः

یعنی جو پرماتما آکاش میں بیاپک ہو کر

आकाश से निराला है जिस को आकाश नहीं जानता जिस का आकाश शरीर है जो आकाश में व्याप्त हो कर उस को यमन करता है वह अमृत स्वरूप परमात्मा तेरा अंतर्यामी है १ योदिक्षु तिष्ठन् दिग्भ्योन्तरोयंदिशोनविदुर्यस्यदिशः शरीरं योदिशोन्तरोयमयत्येषत आत्मान्तर्यामीम्यमृतः२ अर्थात् जो परमात्मा दिगों में व्यापक होकर दिगों से निराला है जिस को दिग् नहीं जानती दिग् जिस का शरीर है जो दिगों में व्यापक हो कर उनको यमन करता है वह अमृत स्वरूप परमात्मा तेरा अंतर्यामी है २ संपूर्ण बुद्धिमान् जानते हैं कि आकाश अनंत है कदापि अंत वाला नहीं परन्तु परमात्मा उस में भी व्यापक है इसी प्रकार दिगों को समझो जैसे आकाश का अंत नहीं है वैसे ही दिगों का भी अंत नहीं इस से यही प्रकट हुआ कि पंडित दयानंद सरस्वती ने शत पथ ब्राह्मण कभी नहीं देखा नहीं तो ऐसी विरुद्ध बातें लिखकर अपनी हंसी न कराते

آکاش سے نرالا ہے جسکو آکاش نہین جانتا جسکا آکاش شریر ہے جو آکاش مین جلوہ گر ہوکر اپنا تصرف کرتا ہے وہی حی وقایم پرماتما تیرے اندر پرتوافگن ہے فقط

योदिक्षु तिष्ठन्दिग्भ्योन्तरो य दिशो न विदुर्यस्य दिशः शरीरं योदिशोन्तरो यमयत्येषत आत्मान्तर्यामीम्यमृतः२

یعنی جو پرماتما دگون مین بیاپک ہوکر دگ سے نرالا ہے جسکو دگ نہین جانتین دگ جسکا شریر ہین جو دگون مین جلوہ گر ہوکر اپنا تصرف کرتا ہے وہ حی وقایم پرماتما تیرے اندر پرتوافگن ہے فقط جملہ اہل عقل واقف ہین کہ آکاش اننت ہے ہرگز منتہی نہین ہوتا باوجود اسکے پرماتما اوس مین بھی بیاپک ہے اسی پر دگ کو قیاس کرلو اور دگ کہتے ہین طرف و سمت کو جیسے آکاش کی انتہا نہین ویسی ہی طرف بھی اننت ہے پس یہ بھی واضح ہوا کہ پنڈت دیانند سرسوتی نے شتپتھ برہمن کبھی نہین دیکھا ورنہ ایسی خلاف واقع باتین لکھکر اپنی ہنسی نکراتے

स्वामी जी और ऐसा ही जगन्नाथदास ने पृष्ठ ५ प्रश्नोत्तर (३२ के उत्तर में लिखा है कि जीवेश्वर का व्याप्य व्यापक संबंध है **उत्तर** स्वामी जी यह भी नहीं जानते कि प्रश्न किसका नाम है और उत्तर किस को कहते हैं यदि इन दोनों शब्दों के आशय को समझते तो ऐसा न लिखते कि प्रश्नोत्तर ३२ के उत्तर में लिखा है क्योंकि प्रश्नोत्तर का उत्तर नहीं होता किंतु प्रश्न का उत्तर होता है यह संपूर्ण उन की न्यून विद्या का फल है जब उनका लेख ही शुद्ध नहीं है तो और क्या आशा है **स्वामी जी** इस लिये जीव अनंत वा असंख्य परमेश्वर के ज्ञान में नहीं किंतु जीवों के ज्ञान में जीव अनंत है **उत्तर** यहां से यही जाना गया कि स्वामी जी को वाक्य रचना नहीं आती और अभिप्राय के समझने की बुद्धि नहीं क्योंकि उन के इस लेख का यही अभिप्राय है कि एक जीव परमेश्वर के ज्ञान में अनंत वा असंख्य नहीं है किंतु जीवों के ज्ञान में एक जीव असंख्य है क्योंकि स्वामी जी ने असंख्य

سوامی جی اور ایسا ہی جگناتھ داس نے پرشٹ ۵ پرشنوتر ۳۲ کے اوتر مین لکہا ہی کہ جیو ایشور کا بیاپیہ بیاپک سنبندہ ہی **جواب** سوامی جی یہہ بہی نہین جانتے کہ پرشن کسکا نام ہی اور اوتر کسکو کہتے ہین اگر ان دونون لفظون کی حقیقت سے مطلع ہوتے تو یون نہ لکھتے کہ پرشنوتر ۳۲ کا اوتر مین لکہا ہی کیونکہ پرشنوتر کا اوتر نہین ہوتا بلکہ پرشن کا اوتر ہوتا ہی یہہ تمام اونکی کم استعدادی کا ثمرہ ہے جبکہ سوامی جی کی گفتگو ہی صحیح نہین ہی تو آیندہ اون سے کیا امید ہی **سوامی جی** اسلئے جیو انت یا اسنکہیہ پرمیشور کے گیان مین نہین مگر جیوون کے گیان مین اسنکہیہ ہی **جواب** یہان سے بہی واضح ہوا کہ سوامی جی کو عبارت نویسی مین مہارت نہین ہی اور مفہوم و مضمون کے سمجھنے کی بہی طاقت نہین کیونکہ اونکی عبارت کا یہہ مطلب ہی کہ ایک جیو پرمیشور کے گیان مین انت یا اسنکہیہ نہین ہے لیکن جیوون کے علم مین ایک جیو اسنکہیہ ہی کیونکہ سوامی جی نے لفظ اسنکہیہ

शब्द के उपरान्त (है) क्रिया कि एक व-
चन है लिखी है और यही (है) क्रिया पहि
ले वाक्य के अंत में शेष समझना चाहिये
अत एव दोनों वाक्यों में जीव शब्द से अभि
प्रेत एक जीव है परंतु किसी का निश्चय
नहीं कि एक जीव परमेश्वर के ज्ञान में अ-
नंत वा असंख्य है फिर स्वामी जी किस का
खंडन करते हैं कि एक जीव परमेश्वर के
ज्ञान में अनंत वा असंख्य नहीं है संपूर्ण
वेदानुयायियों का यही निश्चय है कि
जीवों की संख्या अनंत है अर्थात् जीव इ-
तने हैं कि उन की संख्या का अंत नहीं और
कोई उन की गणना नहीं कर सक्ता यदि
हम स्वामी जी के लिखे को शुद्ध ही स-
मझलें तो यही सिद्धान्त होगा कि परमे-
श्वर के ज्ञान में एक जीव तो अनंत वा अ-
संख्य नहीं है परंतु समस्त जीव परमात्मा
के ज्ञान में भी अनंत और असंख्य हैं अब ह-
मारा और स्वामी जी का ऐक्य हुआ और इ-
स विषय में कुछ विरोध न रहा परंतु स्वा-
मी जी का दूसरा वाक्य फिर भी अशुद्ध है

کے بعد کلمہ ہی کہ واحد کی لئی موضوع
ہے لائی ہیں پس یہی لفظ ہی
پہلی فقرہ کی آخر سی محذوف سمجھنا چاہیے
لہذا دونون فقرون مین لفظ
جیو سی مراد ایک جیو ہی حالانکہ کسی
بشر کا عقیدہ نہیں ہے کہ ایک جیو
پرمیشور کی گیان مین اننت یا اسنکھیہ ہی
پس سوامی جی کسکی تکذیب کرتے ہین
کہ ایک جیو پرمیشور کی گیان مین اننت و
اسنکھیہ نہیں ہی کل پیروان وید کا
یہہ ہی اعتقاد ہی کہ جیوون کی شمار
اننت و بی انتہا ہی یعنی جیو اتنی ہین کہ
منتہی نہیں ہو سکتے اور کوئی انکی شمار نہیں
کر سکتا اگر ہم سوامی جی کی عبارت کو
صحیح ہی فرض کر لین تو بھی یہہ ہی حاصل ہوگا کہ
پرمیشور کی گیان مین ایک جیو تو اننت
و اسنکھیہ نہین ہی لیکن کل جیو پرماتما
کے گیان مین بھی اننت و سنکھیہ ہین
پس ہمارا اور سوامی جی کا اتحاد ہوا
اور اس بارہ مین کوئی نزاع باقی نہ رہی
مگر سوامی جی کا دوسرا فقرہ بہر بھی غلط محض ہے

कि एक जीव किसी जीव के ज्ञान में भी असं-
ख्य नहीं है सब की तो क्या कथा है फिर स्वा-
मी जी के लेख से जाना जाता है कि अनंत
और है और असंख्य और परंतु यह अशुद्ध
है अनंत और असंख्य में कुछ भेद नहीं है
दोनों का अर्थ एक है सत्यार्थ प्रकाश में पं-
डित दयानंद सरस्वती ने भी ऐसा ही लिखा
है उनका लेख पृष्ठ के पते सहित ऊपर लि-
खा गया ध्यान करो कि हमारा और स्वामी
जी का इस बात पर शास्त्रार्थ है कि हमारा
कथन है कि जीव वास्तविक अनंत और अ-
संख्य हैं जैसे मनुष्य जीवों की संख्या के
अंत को नहीं पहुंच सकता ऐसे ही पर-
मात्मा के ज्ञान में जीव अनंत और संख्या
रहित हैं स्वामी जी कहते हैं कि जीव मनु-
ष्यों के ज्ञान में असंख्य और अनंत हैं
और परमेश्वर के ज्ञान में अनंत और असंख्य
नहीं परंतु यह सर्वथा अशुद्ध है क्योंकि
मनुष्यों के ज्ञान में तो अनेक वस्तु अनंत
और असंख्य हैं जैसा कि वर्षा काल में
कितने कीड़े उत्पन्न हुए कोई मनुष्य

کہ ایک جیو کسی جیو کے گیان میں بھی
اسنکھیہ نہیں ہے سب کا تو کیا ذکر ہے یہاں تک
بحث لفظی تھی اب معنی میں گفتگو شروع
ہوتی ہے مخفی نرہے کہ سوامی جی کی اس
تحریر سے جانا جاتا ہے کہ اننت غیر ہے اور اسنکھیہ
غیر مگر یہ غلط ہے اننت و اسنکھیہ میں کچھ
فرق نہیں ہے دونوں کا مفہوم ایک ہے
کیونکہ اننت کہتے ہیں لا انتہا کو اور اسنکھیہ کے
معنی بیشمار ہیں ستیارتھ پرکاش میں پنڈت
دیانند سرسوتی نے بھی ایسا ہی لکھا ہے چنانچہ ان کی
عبارت مع حوالہ صفحہ کے اوپر نقل کی گئی ہے
خیال کرو کہ ہمارے اور سوامی جی کے درمیان
اس بات کی نزاع ہے کہ ہمارا قول ہے کہ جیو
فی الواقع اننت اور اسنکھیہ ہیں جیسے کہ انسان
جیوون کی سنکھیا کے انت کو نہیں پہنچ سکتا ایسے
ہی پرماتما کے علم میں جیو بے انتہا اور خارج از شمار
ہیں پنڈت صاحب کا مقولہ ہے کہ جیو صرف انسان کے گیان
میں اسنکھیہ اور اننت ہیں اور پرمیشور کے علم میں اننت و
اسنکھیہ والے نہیں مگر یہ محض غلط ہے کیونکہ انسان کے
علم و ادراک میں تو ساری ہی چیزیں اننت اور اسنکھیہ ہیں
مثلاً ایام برسات میں کس قدر کیڑے پیدا ہوئے کوئی انسان

उन की गणना नहीं कर सक्ता इसी प्रकार
प्रति वर्ष जितना अन्न उत्पन्न होता है को
ई मनुष्य एक प्रकार के अन्न के दानों की
भी गणना नहीं कर सक्ता और कोई आका
श के तारों को नहीं गिन सक्ता कौन सा
मनुष्य है कि जो वृक्षों के पत्तों और पर-
वतों के पत्थरों की संख्या को जाने कि
कितने हैं यद्यपि इस प्रकार के पदा-
र्थों में से मनुष्य एक वस्तु के अंत को भी
निर्णय नहीं कर सक्ता और नहीं जान
सक्ता कि अमुक वस्तु की संख्या कितनी है
परंतु इन वस्तुओं को कहीं अनंत और असं
ख्य नहीं कहा और जीवों के विषय में अ-
नंत वा असंख्यात शब्द स्पष्ट लिखे हैं इससे य
ही सिद्ध हुआ कि जीव वास्तव में अनंत
और असंख्य हैं परमेश्वर भी उन को अ
नंत और असंख्य ही जानता है यदि इ
स के विरुद्ध जाने तो उस के ज्ञान में
दोष आवे कि जो वस्तु वास्तव में जैसी
है उस को वैसी न जानी किंतु उस के वि-
रुद्ध जानी और ज्ञान की विलक्षणता

اونکی شمار نہیں کرسکتا اور انتہا کو نہیں
پہونچ سکتا اسی طرح ہر فصل میں ایک ایک
قسم کا اناج کتنا پیدا ہوتا ہے کسی انسان کی
طاقت نہیں ہے کہ ایک قسم کے اناج کے دانوں
کی بھی گنتی کرسکے کوئی عاقل و حکیم آسمان
کے تاروں کو نہیں گن سکتا کہ کتنے ہیں کونسا
بشر ہے کہ درختوں کے پتوں اور پہاڑ کے
پتھروں کی انتہا کو پہونچ جاوے کہ کسقدر ہیں
باوجودیکہ اس قسم کی اشیا میں سے انسان ایک
چیز کی انتہا کو بھی معلوم نہیں کرسکتا کہ فلانی چیز
کتنی ہے لیکن ان چیزوں کو کہیں اننت و
اسنکھیہ نہیں کہا البتہ جیو وغیرہ کی سنکھیا
کے بارہ ہی میں اننت و اسنکھیات وغیرہ
الفاظ ایراد کئے ہیں اس سے یہی
ثابت ہوا کہ جیو درحقیقت اننت اور بیشمار
ہیں پرمیشور بھی اونکو بے انتہا اور لاتعداد
ہی جانتا ہے اگر اسکے خلاف
جانے تو اسکے علم و ادراک میں
نقصان آئے کہ کسی شے کی جیسی کہ بابت
حقیقت تھی ویسی نجانی بلکہ اسکے
برعکس سمجھی علم و حکمت کا کمال

यही है कि प्रत्येक वस्तु को यथावत् जाने जिस वस्तु का अंत और संख्या है उस को अंत और संख्या वाली जाने और जो वस्तु कि अनंत और असंख्यात है उस को अनंत और असंख्य माने ऐसा ही स्वामी दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में माना है उस स्थान का लेख यथावत् पहिले लिखा गया पंडित दयानंद सरस्वती बहुत पदार्थों को ऐसा मानते हैं कि परमात्मा के ज्ञान में भी उन का अंत और संख्या नहीं है जैसा कि स्वामी जी ही ने अनादि काल से कितनी वार जन्म लिया है उन समस्त जन्मों की पूरी संख्या और अंत परमेश्वर को भी विदित नहीं है और इस से परमेश्वर के ज्ञान में किसी प्रकार का दोष नहीं आता क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के अनादि काल से लेकर अद्य पर्यंत अनंत और असंख्य जन्म हुए हैं अतएव परमेश्वर भी उन को अनंत और असंख्य ही जानता है यदि इस के विरुद्ध जाने तो उस के ज्ञान में दोष आवे कि वस्तुतः बात और प्रकार थी और उस ने और

یہہ ہی ہے کہ ہر ایک شی کو جیسی کی تیسی دریافت کرے جس چیز کی کہ انتہا و شمار ہے اوسکے انت اور سنکھیا کا قایل ہو اور جو چیز کہ لا انتہا و بے تعداد ہے اوسکو اننت اور اسنکھیہ کہے ایسا ہی سوامی دیانند سرستی نے ستیارتھ پرکاش میں مانا ہے اوس مقام کی اصل عبارت بالاجنسہ تحریر کی گئی پنڈت دیانند سرستی کے اعتقاد میں ایسی بہت اشیا ہیں کہ پرماتما کے گیان میں بہی اونکا انت و سنکھیا نہیں ہے مثلا خود سوامی جی نے انادی کال سے کتنی بار جنم لیا ہے اون تمام جنموں کی پوری شمار و انتہا پرمیشور کو بہی معلوم نہیں ہے اور اس سے پرمیشور کے علم و دانش میں کسی طرح کی کوتاہی نہیں آتی کیونکہ ہر ایک انسان کے انادی کال سے لیکر آج تک بے انتہا و لاتعداد جنم ہوئے ہیں پس پرمیشور بہی اونکو اننت و اسنکھیہ ہی جانتا ہے اگر اسکے خلاف جانے تو اوسکو علم و ادراک میں نقصان واقع ہوگا کہ اصلیت معاملہ اور طرح تہی اور اوسنے اور

प्रकार समझो यदि कोई विद्वान् अपनी बुद्धि के अनुसार स्वामी जी के जन्मों का आदि और अंत ठहरावे तो स्वामी जी के मत के विरुद्ध होगा क्योंकि संसार और जीवों का अनादि होना मिथ्या होजायगा और यह स्वामी जी के विरुद्ध है ध्यान करो कि जब प्रत्येक जीव के जन्म अनंत और असंख्य हैं तो कर्म आप ही अनंत और असंख्य हुए अतएव जैसे परमेश्वर के ज्ञान में प्रत्येक जीव के जन्म अनंत और असंख्य हैं ऐसे ही उनके कर्मों को भी परमात्मा अनंत ही जानता है परंतु जोकि परमात्मा की शक्ति भी अनंत है इस कारण अपनी अनंत शक्ति से अनंत जीवों के अनंत कर्मों का फल यथावत् देता है इस विषय में कोई दोष नहीं आता इसकी व्याख्या ऊपर हो चुकी बारंबार आवश्यकता नहीं अब प्रकट हो कि जैसे प्रत्येक जीव के जन्मों का अंत नहीं है ऐसे ही अनादि काल से कितनी बार सृष्टि हुई इसकी संख्या नहीं होसकती यदि

طرح سمجھو اگر کوئی حکیم و دانا اپنی عقل کی موافق سوامی جی کی جنموں کی ابتدا و انتہا قرار دے تو سوامی جی کے مت کی مخالفت لازم آیگی کیونکہ سنسار اور جیو کا انادی ہونا باطل ہو جائیگا اور یہ خود سوامی جی کے مخالف ہے غور کرو کہ جب ہر ایک جیو کے جنم اننت و اسنکھیہ ہیں تو کرم یعنی اعمال آپ ہی لاانتہا و بیشمار ہوئے لہذا جیسے پرمیشور کے گیان میں ہر ایک جیو کے جنم اننت و اسنکھیہ ہیں ایسے ہی اوسکے کرموں کو بھی پرماتما اننت ہی جانتا ہے مگر چونکہ پرماتما کی شکتی یعنی قدرت بھی اننت و بے انتہا ہے اسواسطے اپنی اننت شکتی سے اننت جیووں کے اننت کرموں کا پھل دیتا ہے اس بارہ میں کوئی قباحت لازم نہیں آتی تفصیل اسکی بالا گذری دوبارہ کی ضرورت نہیں ہے اب جتا جانا کہ جیسے ہر ایک جیو کے جنموں کی انتہا نہیں ہے ایسی ہی انادی کال سے کتنی بار دنیا کی پیدایش ہوئی اسکی کوئی شمار معلوم نہیں اگر

कहीं से इस का आदि मानोगे तो सृष्टि का प्रवाह अनादि होना मिथ्या ठहरेगा और यह स्वामी जी के भी विरुद्ध है इसी प्रकार अनादि काल से अद्य पर्यन्त कितने पल और कितनी घड़ी और कितने घंटे और कितने दिन और कितने महीने और कितने वर्ष आदि व्यतीत हुए हैं वे परमेश्वर के ज्ञान में भी अनंत और असंख्यात हैं परमात्मा उनके अंत को नहीं जानता और इस से परमेश्वर के परमेश्वरत्व में कोई दोष नहीं आता क्योंकि जितने पदार्थ अनंत हैं उन को अनंत ही जानना ज्ञान की परिपूर्णता है कि जैसा पदार्थ था उस को वैसा ही जाना यदि उसके विरुद्ध जानता तो उस के ज्ञान में दोष आता और समझा जाता कि उसका ज्ञान यथावत् नहीं कि जैसा पदार्थ था उस को वैसा न जान सका इससे यही सिद्ध किया गया कि जीव इतने हैं कि उन की संख्या का अंत होना असम्भव है इस कारण परमात्मा के ज्ञान में भी वे अनंत ही हैं और पंडित दयानंद सरस्वती जो

کہیں سے اسکی ابتدا اقرار دوگے تو سلسلۂ دنیا کا انادی ہونا باطل ہوگا اور یہہ خود سوامی جی کی مخالف ہی اسیطرح روز ازل سی آج تک کتنے پل اور کتنی گہڑی اور کتنے گھنٹے اور کتنے دن اور کتنے مہینے اور کتنے برس وغیرہ گذرے ہیں وے پرمیشور کی گیان مین بہی اننت و اسنکہیات ہین پرماتما انکی انتہا کی تعداد کو نہین جانتا اور اس سے پرمیشور کے پرمیشورپنی مین کوئی قباحت نہین آتی کیونکہ جتنی چیزین بیانتہا ہین انکو بیانتہا ہی جاننا علم و حکمت کا کمال ہی کہ جیسی شے تہی اسکو ویسا ہی جانا اگر اسکی خلاف جانتا تو اسکو علم و حکمت پر الزام آتا اور سمجہا جاتا کہ اسکی علم و حکمت مین فتور ہی کہ جیسا پدارتھ تھا اسکو ویسا نہ جان سکا اس تمہید سی یہہ ہی ثابت کیا گیا کہ جیو اتنی ہین کہ انکی شمار کا منتہی ہونا ممتنع و محال ہی اسلیے لہذا پرماتما کی علم مین بہی وے اننت اور بیانتہا ہی ہین اور پنڈت دیانند سرسوتی جو

कहते हैं कि परमेश्वर के ज्ञान में जीव अनंत वा असंख्य नहीं हैं परंतु जीवों के ज्ञान में असंख्य हैं वह सर्वथा अशुद्ध है क्योंकि जीवों के ज्ञान में तो लाखों पदार्थ असंख्य हैं जिन में से नमूने के लिये दो चार का वर्णन ऊपर किया गया यदि जीव भी उन संपूर्ण पदार्थों की सदृश जीवों ही के ज्ञान में असंख्य होते तो वेद और ब्राह्मण में परमात्मा और ब्रह्मा केवल जीवों ही को अनंत न लिखते किंतु वृक्ष और वृक्ष पत्रादि पदार्थों को भी जीवों की समान अनंत कहते क्योंकि मनुष्य के ज्ञान में यह सब ही असंख्य हैं किसी के लिये विशेषता नहीं है स्वामी दयानंद सरस्वती को यह महद्ज्ञान क्योंकर हुआ इसका वास्तव कारण यह है कि जालंधर नगर में स्वामीजी की किसी ईसाई के साथ मत विषयक बातचीत हुई ईसाई ने कहा कि जब तुम जीवों को अनादि मानते हो और उन की उत्पत्ति का निषेध करते हो इस दशा में यदि एक २ कल्प में एक २ जीव भी मुक्ति को प्राप्त करे तो किसी समय संपूर्ण जीव मुक्त हो जायंगे और संसार प्रवाह का उच्छेद हो जायगा स्वामीजी ने उत्तर दिया कि जीव

کہتی ہین کہ پرمیشور کی گیان مین جیو اننت یا اسنکھیہ نہین ہین لیکن جیوون کے گیان مین اسنکھیہ ہین وہ محض غلط ہے کیونکہ جیوون کے گیان مین تو لاکھون چیزین اسنکھیہ ہین جنمین سے بطور نمونہ کے چند اشیا کا ذکر قریب کیا گیا اگر جیو بھی ونکل تمام اشیا کی طرح جیوون ہی کے علم مین اسنکھیہ ہوتی تو وید اور براہمن مین صرف جیوون ہی کے ساتھ اننت ہونے کی خصوصیت نہ پائی جاتی بلکہ درخت اور برگ درخت وغیرہ اشیا کو بھی جیوون کی مانند اننت کہا ہوتا کیونکہ انسان کے علم مین یہ سب ہی اشیا اسنکھیہ ہین کسی کے لئے ترجیح نہین ہے سوامی دیانند سرستی ایسی بڑی غلطی مین کیونکر پڑے اسکا سبب اصلی یہ ہے کہ شہر جالندہر مین سوامی جی کی کسی عیسائی کے ساتھ گفتگوے مذہبی ہوئی عیسائی نے کہا کہ جب تم جیوون کو انادی مانتے ہو اور انکی پیدایش سے انکار کرتے ہو اگر اس صورت مین ایک ایک کلپ مین ایک ایک جیو بھی مکتی حاصل کرے تو کسیوقت کل جیو مکت ہو جاوینگے اور سلسلۂ عالم منقطع ہوگا سوامی جی نے جواب دیا کہ جیو

अनंत और असंख्य हैं अत सब जीवों की समाप्ति और संसार का उच्छेद कभी न होगा ईसाई बोला कि परमेश्वर संपूर्ण जीवों को जानता है वा नहीं और संपूर्ण के शुभाशुभ कर्मों का फल देता है वा नहीं स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा सब जीवों को जानता भी है और सबके कर्मों का फल भी देता है ईसाई ने कहा कि जब यह बात है तो जीव अनंत नहीं हैं यदि अनंत होते तो परमेश्वर को सब जीवों का ज्ञान किस प्रकार होता और वह प्रत्येक के कर्मों का फल कैसे देता तब स्वामी जी ने ईसाई को तो जैसे तैसे चुप कर दिया परंतु आप अज्ञान में पड़कर कहने लगे कि जीवों का अनंत होना मिथ्या है हां मुक्ति सदा के लिये नहीं है किंतु एक काल के पश्चात् मुक्त जीव फिर संसार में आते हैं अतएव संसार का उच्छेद कभी न होगा यह स्वामी जी की कपोल कल्पित व्यवस्था है जिस पर अनेक दोष आते हैं उन में से कुछ यहां वर्णन किये गये और कुछ मुक्ति के विषय में निवेदन किये जायंगे शोक कि जब स्वामी जी से ईसाई के तुच्छ प्रश्न का उत्तर न आया तो वेद और शास्त्र के विरुद्ध दो बातें स्वीकार कर बैठे

اننت و بیشمار ہیں لہذا جیو اور عالم ہرگز تمام نہونگے عیسائی بولا کہ پرمیشور کل جیوون کو جانتا ہے یا نہیں اور سب کے اعمال نیک و بد کی جزا و سزا دیتا ہے یا نہیں سوامی جی نے کہا کہ پرماتما سب جیوون کو جانتا بھی ہے اور سب کے کرمون کا پھل بھی دیتا عیسائی نے کہا کہ جب یہ بات ہے تو جیو اننت نہیں ہیں اگر اننت ہوتے تو پرمیشور کا علم و عدل انکا احاطہ کس طرح کر لیتا پس سوامی جی نے عیسائی کو تو حیلون اور حوالون کے ساتھ خاموش کر دیا مگر خود غلطی میں پڑ کر کہنے لگے کہ جیوون کا اننت ہونا باطل ہے ہاں مکتی ہمیشہ کے لئے نہیں ہے بلکہ ایک کلپ کے بعد مکت جیو پھر سنسار میں آتے ہیں لہذا سنسار کا سلسلہ ابدا قایم رہیگا ہرگز قطع نہوگا یہ سوامی جی کا طبعزاد مسئلہ ہے جسپر ہزاروں قباحتیں وارد ہوتی ہیں انمیں سے چند یہاں گذارش کی گئیں اور چند مکتی کے بیان میں عرض کیجاوینگی افسوس کہ جب سوامی جی عیسائی کے ادنی سوال کا جواب نہ آیا تو وید اور شاستر کے خلاف دو باتیں قبول کر بیٹھے

एक यह कि जीव अनंत नहीं है दूसरी यह कि मुक्ति सदा के लिये नहीं किंतु एक कल्प के लिये है दूसरे के प्रश्न का वास्तविक उत्तर वही है कि जैसे जीव अनंत हैं वैसेही परमात्मा का ज्ञान और न्याय भी अनंत है निदान परमेश्वर अपने अनंत ज्ञान और न्याय से अनंत जीवों को जानता और उनके कर्मों का फल देता है यदि परमेश्वर का ज्ञान और न्याय अंतवाला होता तो निःसंदेह जीवों का अनंत होना मिथ्या रहता सो ऐसा नहीं है इसकी व्याख्या ऊपर हो चुकी यदि इतने पर भी पंडित दयानंद सरस्वती जीवों का अनंत होना स्वीकार न करेंगे तो वेद और ब्राह्मण आदि से विमुख समझे जायंगे क्योंकि वेदों की (सहस्रशीर्षा पुरुषः) इस श्रुति से सायणाचार्य और दयानंद सरस्वती की व्याख्या के अनुसार और शतपथ ब्राह्मण की (अनंता वै वेदाः) इस श्रुति से दयानंद सरस्वती की व्याख्या के अनुसार प्रत्यक्ष सिद्ध होगया कि जीव परमेश्वर के ज्ञान में भी असंख्य और अनंत हैं अब दयानंदियों को उचित है कि पक्षपात को छोड़कर

सत्यासत्य के निर्णय में तत्पर
रहें

लिखितं मनोहरस्वरूपेण

ایک یہہ کہ جیو انت نہیں ہیں دوسری یہہ کہ مکتی ایک کلپ کے لئے ہے ہمیشا کے لئے نہیں سوال کا جواب حقیقی تو وہی ہے کہ جیسے جیو انت ہیں ویسے ہی پرماتما کا علم و عدل بھی انت ہے پس پرمیشور اپنے انت علم و عدل سے انت جیوون کو جانتا اور انکے اعمال کا مکافات دیتا ہے اگر پرمیشور کا گیان اور نیائے انت والا ہوتا تو ان سب جیوون کا احاطہ کرلیتا تو بیشک جیوون کا انت ہونا باطل ہوجاتا سو ایسا نہیں ہے تشریح اسکی اوپر گذر چکی اگر اتنے پر بھی پنڈت دیانند سرسوتی جیوون کے انت ہونے سے انکار کرینگے تو وید اور براہمن وغیرہ کتب سے برگشتہ شمار کئے جاوینگے کیونکہ ویدون کی (سہسر شیرشا) اس شرتی سے موافق تفسیر سائنا چاریہ و دیانند سرسوتی کے اور شتپتھ براہمن کی (اننتا وئی ویدا) اس شرتی سے مطابق تفسیر دیانند سرسوتی کے علانیہ ثابت ہوگیا کہ جیو پرمیشور کے گیان میں بھی بیشمار اور انت ہیں اب دیانندیوں کو لازم ہے کہ تعصب چھوڑ کر تحقیق حق و باطل میں مشغول ہوں۔

چونکہ انت کی بحث ختم ہونا دشوار ہے لہذا اسقدر پر اختصار چاہتا ہے فقط

کتبہ

ओ३म
اوم

परमात्मने नमः
پرماتمنے نمہ

वेदद्वार प्रकाश
ویدوار پرکاش

मुन्शी इन्द्रमणि रचित
مصنفہ منشی اندرمن

सुदर्शन यंत्रालय मुरादाबाद में मुन्शी
नारायण दास के प्रवंध से
मुद्रित हुआ
سودرشن پریس مرادآباد میں منشی نارائن داس کے اہتمام سے چھپا

पहली वार १४०० मूल्य ।=
پہلی بار ۱۴۰۰ قیمت فی کاپی ۲ر

ओ३म्

परमात्मा जयति

वेदद्वार प्रकाश

दोहा

नमस्कार उस ब्रह्म को जिस के नाम हज़ार ॥ पुरुष ईश परमात्मा अजर अमर अविकार ॥१॥ जो लोग कि सत्यासत्य के निर्णय में उद्यत हैं उन पर छुपा नहीं कि सृष्टि के आरंभ से ले कर आज तक सब ऋषि और मुनि और आचार्य्य यही सिद्धान्त करते चले आये हैं कि ऋगाद्यात्मक वेद हम को श्री ब्रह्मा जी के द्वारा परमात्मा से प्राप्त हुआ है और वास्तव यही सत्य है और इसी के अनुकूल पण्डित जगन्नाथ दास ने अपनी प्रश्नोत्तरी मे लिखा था कि परमात्मा ने सर्ग की आदि में ब्रह्मा जी को वेद का उपदेश किया उन

اوم

پرماتما جیتی

وید دوار پرکاش

بیت

بنام آنکہ نامش صد ہزار است ٭ پرتھو پرماتما اج ادم کار است ٭ پس ازین طالبان احقاق حق و ابطال باطل کی رای پر پوشیدہ نہیں کہ روز ازل سے جملہ رشی و منی و پنڈت و آچاریہ بالاتفاق یہی تحقیق کرتے چلے آئے ہیں کہ وید مقدس ہمکو برہما جی کے ذریعہ سے ملا ہے اور یہی بجا ہے اسیکی مطابق پنڈت جگن ناتھ داس نے اپنی پرشنوتری میں لکھا تھا کہ پرماتما نے ابتداے آفرینش میں برہما جی کو وید مقدس کا پرکاش کیا اون

से देवादि मनुष्य पर्य्यन्त को मि-
ला। दयानंद सरस्वती ने वेद शा-
स्त्र से विमुख होकर देशहितैषी
मासिक पत्र मुद्रित कार्त्तिक मास
संवत् १९३९ में यह व्याख्यान
लिखवाया। स्वामी जी यह
बात पण्डित जगन्नाथ की प्रमा-
ण करने योग्य नहीं क्योंकि "अ-
ग्नेर्वै ऋग्वेदो जायते वायोर्यजु
र्वेदः सूर्यात्सामवेदः" शतपथ
ब्राह्मण वचन "अग्नि वायु रवि
भ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् दुदो
ह यज्ञ सिद्ध्यर्थं ऋग्यजुः साम ल
क्षणम् मनु स्मृति का वचन ॥ अ
ब देखिये अग्नि आदि महर्षियों
से ऋग्वेदादि का प्रकाश हुआ इ-
त्यादि ब्राह्मण वचनों के अनुसार
मनु जी महाराज कहते हैं कि ब्र-
ह्मा जी ने अग्न्यादि महर्षियों के
द्वारा वेदों की प्राप्ति की अत एव"
यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै

سے دیوتا اور منشیہ وغیرہ کو
حاصل ہوا سوامی دیانند سرسوتی نے
وید شاستر سے برگشتگی اختیار کر کے
دیش ہتیشی نامی رسالہ ماہوار مطبوعہ ماہ
کارتک سنبت ۱۹۳۹ مین یہ مضمون
درج کرایا سوامی جی پنڈت
جگناتھ کی یہ بات سند کرنے کے
لائق نہین ہے کیونکہ
अग्नेर्वै ऋग्वेदो जायते वा
योर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः
یہ شتپتھ براہمن کا بچن ہے
अग्नि वायु रविभ्यस्तु त्रयं
ब्रह्म सनातनम् दुदोह यज्ञ
सिद्ध्यर्थं ऋग्यजुः साम ल
क्षणम् १
یہ منو سمرتی کا بچن ہے اب دیکھو اگنی
وغیرہ مہرشیون سے رگ وید وغیرہ کا ظاہر
ہوا اس قسم کے براہمن بچنون کی مطابق
منوجی مہاراج کہتے ہین کہ برہماجی نے اگنی وغیرہ
مہرشیون کے ذریعہ سے ویدون کی تحصیل کی
यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै

वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै" इस श्वे-
ताश्वतरोपनिषद् के वचन की सं-
गति शतपथ और मनु जी के वच-
न से अविरुद्ध होनी चाहिये किंतु
परमात्मा ने चारों महर्षियों के द्वारा
श्री ब्रह्मा जी को चार वेदों की प्रा-
प्ति कराई और अब भी जो कोई चा-
र वेदों को पढ़ता है वही यज्ञ में ब्र-
ह्मासन को प्राप्त और उसी का ना-
म ब्रह्मा भी होता है यदि मुंशी इ-
न्द्रमणि जी और उन के शिष्य पं-
ण्डित जगन्नाथ दास वेद और
तदनुयाई ब्राह्मण ग्रन्थों को
पढ़े होते तो ऐसे भारी भ्रम में पड़
ऐसे२ अन्यथा भावना वालेख क्यों
करते इन को उचित है कि अपना
हठ छोड़ सत्य का ग्रहण अव-
श्य करें **उत्तर** पण्डित जगन्ना-
थदास ही की बात प्रमाण करने यो-
ग्य है क्योंकि यह ही सत्य है और
सत्य से किसी को ना फिरना चा-

वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै
اس شویتا شوترا اونپشد کے بچن
کی موافقت شت پتھہ اور منوجی
کے بچن سے اسطرح پر ہونی چاہیئے
کہ جس مین اختلاف نرہے لیکن
پرماتمانے چارون مہرشیون کے
ذریعہ سے برہماجی کو چار ویدون
کی تحصیل کرائی اور اب بھی جو
کوئی چار ویدون کو پڑھتا ہی وہ
ہی یگیہ مین برہماسن کو حاصل کرتا ہی
اور اوسی کا نام برہما بھی ہوتا ہی
اگر منشی اندرمن اور اونکی شششیہ پنڈت
جگناتھ داس وید اور براہمن وغیرہ
کتابین پڑہی ہوتے تو ایسے بہاری
شک مین پڑکر ایسی ایسی گفتگو یا تحریر
کیون کرتے انکو چاہیئے کہ اپنا
ہٹ چھوڑکر ضرور راستی اختیار
کرین **جواب** پنڈت
جگناتھ داس ہی کی بات شایان
اعتبار ہی کہ وہ ہی حق ہی اور
حق سے کسی کو پھرنا نہ چاہیئے

है कि सत्यही में जय है (सत्य से व ज
यते नानृतम्) अर्थात् सत्य से जय हो
ती है अन्तत से नहीं स्वामीजीने जो अ
पना अभिप्राय सिद्ध करने के लिये श
त पथ ब्राह्मण के नाम से यह वचन
लिखा है (अग्नेर्वै ऋग्वेदो जायते
वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः) इस
से यह ही जाना जाता है कि स्वामीजी
ने शत पथ कभी नहीं देखा अथवा
देखा भी है तो भूल गये क्योंकि यह
श्रुति कई जगह अशुद्ध है प्रथम अ
ग्नि शब्द के आगे (वै) शब्द बढा
या है और ऋग्वेद के आगे (जाय
ते) यह शब्द बढाया है वास्तव य
ह दोनों शब्द मूल श्रुति में नहीं हैं फि
र श्रुति में यजुर्वेद के आगे सूर्यात् य
ह पद नहीं है किंतु (आदित्यात्)
यह पाठ है यह स्वामीजी ने भ्रम से
श्रुति का पाठ अस्तव्यस्त लिखा है
इस श्रुति का पूर्ण पाठ वास्तव इस
प्रकार है (तेभ्यस्त प्तेभ्यस्त्रयो वेदा

کہ راستی ہی میں بزرگی اور بڑائی ہے
جیسا کہ منڈک اپنشد میں ہے
सत्य मेव जयते नानृतम् ॥
یعنی راستی سے جیت ہوتی ہے جھوٹ
سے نہیں سوامی جی نے جو اپنا مطلب
حاصل کرنے کے لئے شت پتھ براہمن
نام سے یہ بچن لکھا ہے
अग्नेर्वै ऋग्वेदो जायते वायो
र्यजुर्वेदः सूर्यात्साम वेदः ॥
اس سے یہی جانا جاتا ہے کہ سوامی جی
نے شت پتھ براہمن کبھی نہیں دیکھا
اگر دیکھا بھی ہووے تو بھول گئے کیونکہ
یہ شرتی کئی جگہ سے غلط لکھی ہے اول
اگنی شبد کے آگے (وی) (वै) شبد
بڑھایا ہے اور رگ وید کے آگے (جایتے) شبد
بڑھایا ہے فی الحقیقت یہ دونوں لفظ
اصل شرتی میں نہیں ہیں پھر شرتی میں
یجروید کے آگے (سوریات) یہ پد نہیں ہے بلکہ اس
جگہ (آدتیات) (आदित्यात) یہ پاٹھ ہے
سوامی جی نے نادانی سے شرتی کی عبارت درہم برہم
کر کے لکھی ہے اس شرتی کا تمام و کمال اصل
پاٹھ شت پتھ براہمن کے گیارہویں کانڈ کے پانچویں
ادھیائے میں اس طرح ہے
तेभ्यस्त प्तेभ्यस्त्रयो वेदा

ऽप्रजायंताग्ने ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः आदित्यात्सामवेदः) शतपथ कां ११ अ ५ प्रथम स्वामी जी ने भी भूमिका के पृष्ठ १६ में इस श्रुति का पाठ इसी प्रकार लिखा है (वै) और (जायते) यह दोनों शब्द नहीं बढाये किंतु आदित्यात् के स्थान में केवल सूर्यात् पाठ अशुद्ध लिखा है स्वामी जी को सत्यार्थ प्रकाश का लेख भी स्मरण न रहा कि वहां पृष्ठ २४१-२४२ में क्या लिख चुके हैं जब कि उन की प्रमाण दी हुई श्रुति का पाठ ही अशुद्ध है तो उन से अर्थ निर्णय की क्या आशा है शतपथ ब्राह्मण की इस श्रुति का अर्थ यह है कि अग्नि वायु आदित्य इन तीन तपस्वियों से तीन वेद अर्थात् ऋग् यजुः साम का प्रकाश हुआ अर्थात् वेदत्रय विहितकर्मों का प्रचार हुआ क्योंकि इस श्रुति में (अजायंत) क्रिया है और वह

ऽप्रजायंताग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः आदित्यात्सामवेदः॥ "

اول سوامی جی نے بھی بھومیکا کے صفحہ ۱۶ مین اس شرتی کا پاٹھ اسی طرح پر لکھا ہے (وَی) (वै) اور (جایتے) یہہ دونون لفظ نہین بڑہائے لیکن (آدتیات) (आदित्यात्) کی جگہہ صرف (سوریات) غلط پاٹھ لکھا ہے سوامی جی کو ستیارتھ پرکاش کی تحریر بھی یاد نہ رہی کہ وہان صفحہ ۲۴۱ اور ۲۴۲ مین کیا لکھہ چکے ہین جبکہ انکی سند دی ہوئی شرتی کی عبارت ہی غلط ہے تو اون سے تحقیق معنی کی کیا امید ہے شت پتھ براہمن کی اس شرتی کا ارتھ یہہ ہے کہ اگنی بایو آدتیہ ان تینون تپسویون سے تین وید یعنی رگ یجر سام کا پرکاش ہوا یعنی تینون ویدون مین کہے ہوئے کرمون کا پرچار ہوا کیونکہ اس شرتی مین (اجاینت) (अजायंत) کریا یعنی فعل ہے اور وہ

(जनि) धातु से बनती है जो प्रादुर्भा-
व के अर्थ में प्रसिद्ध है और प्रादुर्भा-
व कहते हैं प्रकाश होने को जिस को
भाषान्तर में ज़ाहिर होना कहते हैं ता-
त्पर्य यह हुआ कि इन तीनों देवतों
ने जगत् में तीनों वेदों का प्रचार कि-
या अर्थात् इन्हों ने ब्रह्मा जी से वेदों
को पढ़कर वेद विहित यज्ञादि कर्मों
का अनुष्ठान आप किया और औरों
से कराया परमात्मा ने सृष्टि की आ-
दि में श्री ब्रह्मा जी ही के हृदय में वे-
दों का प्रकाश किया यहां श्वेता-
श्वतरोपनिषत् की यह श्रुति प्रमाण
है (यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै
वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै तं ह देव
मात्म बुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरण
महं प्रपद्ये) अर्थ यह है कि जिस पर-
मात्मा ने (पूर्व) अर्थात् सृष्टि की
आदि में ब्रह्मा जी को उत्पन्न किया
और जिस परमात्मा ने ब्रह्मा जी ही
के लिये वेदों को दिया उस ही प्रकाश

(جنی) (जनि) دہاتو یعنی مصدر سے
بنتی ہے جو کہ پر اُدر بھاو کے معنی
مین مشہور ہے اور پر اُدر بھاو کہتے ہین ظاہر
ہونے کو جسکا ترجمہ اُردو مین ظاہر ہونا
ہے مطلب یہ ہوا کہ ان تینون
نے دُنیا مین تینون ویدون کو
رواج دیا یعنی انہون نے برہماجی سے
ویدون کو پڑہ کر ویدون مین کہے ہوئے یگیہ
وغیرہ کرمون کا استعمال آپ کیا اور اور
لوگون سے کرایا پرماتما نے ابتدا آفرینش
مین برہماجی کے دل مین ویدون کا پرکاش
کیا یہان شویتا شوتر اُپنشد کی
یہ شرتی سند ہے

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वे
दांश्च प्रहिणोति तस्मै तं ह देव
मात्म बुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरण
महं प्रपद्ये ॥

یعنی جس پرماتما نے (پورب) ای ابتدا
دنیا مین برہماجی کو پیدا کیا اور
جس پرماتما نے برہماجی ہی کے لئے
ویدون کو دیا اوسی پرکاش

स्वरूप आत्मज्ञान के प्रकाश करने
वाले परमात्मा की मैं मुमुक्षु शरण
होता हूं १ देखो इस श्रुति में (पूर्व)
शब्द है जिस से विदित है कि परमा-
त्मा ने सृष्टि की आदि में ब्रह्मा जी के
हृदय में वेदों को डाला और शतपथ
की श्रुति में ऐसा कोई शब्द नहीं है
कि जिस से सृष्टि की आदि में अग्न्या-
दि के जन्म का बोध हो और फिर श्वे-
ताश्वतर की श्रुति में (यो) शब्द है जि-
सका अर्थ अन्ययोगव्यवच्छेद है
अर्थात् सृष्टि की आदि में परमात्मा
ने ब्रह्मा जी ही के लिये वेदों का उप-
देश किया दूसरे के लिये नहीं किया
क्योंकि अन्य योग व्यवच्छेद कह-
ते हैं दूसरे के योग के पृथक करने को
अर्थात् दूर करने को इस से येही वि-
ज्ञात होता है कि सर्ग की आदि में
परमात्मा ने केवल एक ब्रह्मा जी के
हृदय में वेदों का प्रकाश किया
अग्न्यादिक के हृदय में कदापि

روپ آتم گیان کے پرکاش کرنیوالے
پرماتما کی مین نجات کا چاہنے والا
پناہ لیتا ہوں - دیکھو اس شرتی میں
(پورب) شبد ہے جس سے جانا جاتا ہے کہ
پرماتما نے پیدائش کے شروع میں برہماجی
کے دل میں ویدوں کو ڈالا اور
دیانند سرسوتی کی مستندہ شتپتھ
براہمن کی شرتی میں ایسا کوئی لفظ نہیں
ہے کہ جس سے جانا جاوے کہ ابتدا پیدائش
میں اگنی اور وایو اور آدتیہ کا جنم ہوا ہو
شویتا شوترا اپنشد کی شرتی
میں (یہی) (یو) شبد ہے
جسکا مفہوم یہ ہے کہ پرماتما
نے سرشٹی کی آدی میں
برہماجی ہی کے لئے ویدوں
کا اوپدیش کیا دوسرے کے
واسطے نہیں کیا اس سے
ثابت ہوتا ہے کہ روز
ازل پرماتما نے صرف ایک
برہماجی کے دل میں ویدوں کا
پرکاش کیا اگنی وغیرہ کے دل میں ہرگز

नहीं किया इस पक्ष में (वै) शब्द का अन्वय तत् शब्द के साथ होगा जोकि ब्रह्मा का वाचक है और जो (वै) शब्द का अन्वय (यत्) शब्द के साथ करें जो परमात्मा का वाचक है तो यह तात्पर्य होगा कि ब्रह्मा जी को वेदों का उपदेश परमात्मा ही ने किया दूसरे ने कदापि नहीं किया बुद्धिमान् विचार करें कि जैसा (वै) शब्द अन्य योगव्य व च्छेद के लिये श्वेताश्वतर की श्रुति में आया है ऐसा कोई शब्द शतपथ की श्रुति में भी है सो कोई नहीं स्वामी जी ने जो श्वेताश्वतर की श्रुति के अर्थ में यह बात बढ़ाई है कि (परमात्मा ने अग्न्यादि महर्षियों के द्वारा ब्रह्मा जी को वेदों की प्राप्ति कराई) वह सर्वथा अशुद्ध है क्योंकि श्वेताश्वतर की श्रुति में इस अर्थ का वाचक कोई पद नहीं है किंतु इस के विरुद्ध (पूर्व) शब्द और (वै) शब्द

نہین کیا اس صورت مین (وئی) (वै) شبد کا تعلق (تت) (तत्) شبد کے ساتھ ہوگا جسکے معنی یہہ ہین کہ برہما جی کے لئے۔ اور اگر (وئی) (वै) شبد کا تعلق (یت) (यत्) شبد کے ساتھ ہوگا جسکے معنی پرماتما کے ہین تو یہہ مطلب ہوگا کہ برہما جی کو وید کا اوپدیش پرماتما ہی نے کیا دوسرے نے اصلا نہین کیا اہل حق اور دانا لوگ خیال کرین کہ جیسا (وئی) (वै) شبد معنی مذکورہ کے لئے شویتاشوتر کی شرتی مین موجود ہے ایسا کوئی شبد شت پتھ کی شرتی مین کہین نہین ہے پس سوامی جی نے جو شویتاشوتر کی شرتی کے معنی مین یہہ بات بڑہائی ہے کہ پرماتما نے اگنی وغیرہ رشیون کی وساطت برہما جی کو ویدون کی تحصیل کرائی وہ بالکل غلط ہے کیونکہ شویتاشوتر کی شرتی مین اس معنی کا کوئی لفظ نہین ہے بلکہ اسکے خلاف لفظ (پورب) ہے اور لفظ (وئی) (वै)

है जिन का अर्थ पूर्व निवेदन किया
गया कि सृष्टि की आदि में परमा-
त्मा ने ब्रह्मा जी ही के लिये वेदों का
उपदेश किया अन्य के लिये नहीं
फिर स्वामी जी ने जो अग्न्यादि को
महर्षि कहा है वह सर्वथा शास्त्र बाह्य
है किसी ग्रंथ में इन को महर्षि वा
ऋषि नहीं लिखा परंतु वेदादि
शास्त्रों में देवता कहा है देखो
यजुर्वेद के चतुर्दशाध्याय की बीस-
वीं श्रुति (अग्निर्देवता वातो देवता
सूर्यो देवता चंद्रमा देवतेत्यादि)
दयानन्दानुयायी लोग पक्षपात
छोड़ कर विचार करें कि स्वामी
जी का यह कथन कि अग्न्यादिक
ने ब्रह्मा जी को वेद पढ़ाये श्वेता-
श्वतर की श्रुति से लेश मात्र भी
नहीं निकलता केवल उन की
कपोल कल्पना है जैसे कि श्वेता-
श्वतर उपनिषत् में ब्रह्मा जी के
लिये (पूर्व) शब्द आया है इसी

ہیں جنکے معنی سابق حوالہ قلم کیے
گئے کہ ابتداے دنیا مین پرماتما
نے برہما جی ہی کے لئے وید نازل
کیے دوسرے کے لئے نہین کیے پھر سوامی
جی نے جو اگنی وغیرہ کو مہرشی کہا ہے
وہ سربسر شاستر سے باہر ہے کیونکہ کسی گرنتھ
مین ان کو مہرشی یا رشی نہین لکھا البتہ وید
وغیرہ شاستروں مین دیوتا کہا ہے دیکھو یجر
وید کے چودہوین ادھیاے کی بیسوین شرتی
अग्निर्देवता वातो देवता
सूर्यो देवता चंद्रमा देवता
دیانندپنتھی تعصب چھوڑکر غور
کرین کہ سوامی جی کی یہ گفتگو
کہ اگنی وغیرہ نے برہما جی کو
وید پڑھایا ابد شویتاشوتر
اوپنشد کی شرتی سے برآمد
نہین ہوتی صرف اون ہی
صاحب کی دنت کتھا ہے
اب سنئے کہ جیسے شویتاشوتر
اوپنشد مین برہما جی کے لئے
(پورب) شبد آیا ہے اسی

प्रकार मुंडक उपनिषत में ब्रह्मा जी
के विषय में (प्रथम) शब्द लिखा है
(यथाहि ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव
विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता)
अर्थात् ब्रह्मा जी सब देवताओं से
प्रथम उत्पन्न हुए जो कि विश्व की
सृष्टि और पालन के द्वार हैं जब कि
ब्रह्मा सब देवताओं की आदि में
उत्पन्न हुए हैं और सारे विश्व की
सृष्टि के द्वार हैं तो अग्नि वायु आदित्या-
दिक की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के पश्चात्
स्वतः सिद्ध होगई इस से येही जाना
गया कि अग्नि वायु आदित्यादिक
को ब्रह्मा जी ने उत्पन्न किया और
उन को वेद पढ़ाया क्या अग्न्यादिक
सारे विश्व से बाहर हैं ऐसी प्रत्यक्ष
श्रुति के विरुद्ध स्वामी जी क्यों कर
कहते हैं कि अग्न्यादिक ने ब्रह्मा जी
को वेद पढ़ाया सृष्टि की आदि में
सबसे प्रथम परमात्मा ने श्री ब्रह्मा
जी को उत्पन्न किया यह अभिप्राय

طرح منڈک اپنیشد میں برہما جی
کے بارہ میں (پرتھم) (प्रथम)
شبد لکھا ہے دیکھئے
ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूव
विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता
یعنی برہما جی سب دیوتوں سے
پہلے پیدا ہوئے جو کہ تمام دنیا
کی پیدائش اور پرورش کے ذریعہ ہیں
فقط جبکہ برہما جی نے کل دیوتوں
سے پہلے ظہور کیا ہے اور وے
ساری سرشٹی کے ذریعہ ہیں تو اگنی
بایو سورج کی پیدائش برہما جی کے
بعد خود ثابت ہو گئی اس سے یہ
ہی جانا گیا کہ اگنی وغیرہ برہما
جی سے پیدا ہوئے اور برہما جی
نے انکو وید پڑھایا کیا اگنی
وغیرہ کل دنیا سے خارج ہیں ایسی
صریح شرتی کے خلاف سوامی جی
کیونکر کہتے ہیں کہ اگنی وغیرہ نے برہما جی
کو وید پڑھایا ابتدائے آفرینش میں سب سے
اول پرماتما نے برہما جی کو پیدا کیا یہ مطلب

श्वेताश्वतर में दूसरी जगह भी आया है यथाहि "यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥१॥" अर्थात् जो परमात्मा इन्द्रादिक देवताओं के प्रभव का कारण है और विश्व का स्वामी और पापियों का रुलाने वाला और सर्वज्ञ है जिस ने (पूर्व) अर्थात् सृष्टि की आदि में श्री ब्रह्मा जी को उत्पन्न किया वह परमेश्वर हम को शुभ बुद्धि के साथ संयुक्त करे ॥१॥ कपिल ऋषि ने सांख्य शास्त्र के तीसरे अध्याय में ब्रह्मा जी का सृष्टि की आदि में होना माना है यथाहि (आ ब्रह्मस्तम्भपर्यंतं तत्कृते सृष्टिराविवेकात्) यहां ब्रह्मा जी का होना सृष्टि की आदि में स्पष्ट है महाभारत के शांति पर्व प्रभृति से भी प्रकट है कि

شویتا شوتر اوپنشد مین دوسری جگہہ بھی آیا ہی دیکھو۔

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो बुद्ध्या शुभयासंयुनक्तु ॥ ॥ ॥

یعنی جو پرماتما اندر آدی دیوتون کے جنم وغیرہ کا کارن اور دنیا کا مالک اور گنہگارون کو رولانیوالا اور عالم الغیب ہے اور جس نی سرشٹی کی شروع مین برہما جی کو پیدا کیا ہی وہ پرمیشور ہمکو اچھا گیان دے۔ فقط کپل رشی نے سانکھیہ شاستر کے تیسرے ادھیای مین برہما جی کا سرشٹی کی ابتدا مین ہونا مانا ہی کپل رشی کا وہ بچن یہ ہی۔

आ ब्रह्मस्तम्भपर्यन्त तत्कृते सृष्टिराविवेकात् ॥ ॥ ॥

یہان سے ظاہر ہی کہ ابتدای آفرینش مین سب سے پہلے برہما جی ہی کا ظہور ہوا۔ مہابھارت کے شانتی پرب وغیرہ سے بھی ثابت ہی کہ

ब्रह्मा जी सृष्टि की आदि में
उत्पन्न हुए और परमात्मा ने उन
को वेद का उपदेश किया पराशर
ने भी अपने सूत्रों में ब्रह्मा जी
की उत्पत्ति सृष्टि की आदि में
लिखी है तथाहि सकलजगता
मनादिरादिभूत ऋग्यजुःसामादि
मयी भगवद्विष्णुमयस्य ब्रह्मणो
मूर्त्ती रूपं हिरण्यगर्भो ब्रह्मांडतो
भगवान् ब्रह्मा प्राग्बभूव ॥ १ ॥
इस सूत्र की वृत्ति रत्नगर्भ भट्टा
चार्य ने इस प्रकार की है ब्रह्मांड
तो ब्रह्मा प्राग्बभूव किं विशिष्टः
जगतामादिमूलकारणं स्वयं
चानादिर्दृष्टकारणशून्यः भगव-
द्विष्णुमयस्य भगवद्विष्णोर्मूर्त्तिः
रूपम परिच्छिन्नं स्वरूपं हिरण्य-
स्य ब्रह्मांडस्य गर्भरूपश्चेत्यर्थः १
अर्थात् सारे जगत् का कारण
हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ब्रह्मांड से
पहिले उत्पन्न हुआ - जैसे कि

برہماجی شروع آفرینش میں پیدا
ہوئے اور پرماتما نے اونکو
وید کا اوپدیش کیا پراشر رشی نے
بھی اپنے سوتروں میں برہماجی
کی پیدائش سرشٹی کی آدی میں
لکھی ہے وہ سوتر یہ ہے -

सकलजगतामनादिरादि
भूत ऋग्यजुःसामादि मयी भगव
द्विष्णुमयस्य ब्रह्मणो मूर्त्ती रूपं
हिरण्य गर्भो ब्रह्मांडतो भगवान्
ब्रह्मा प्राग्बभूव ॥ १ ॥

اس سوتر کی معنی رتن گربھ بھٹاچاریہ
نے اسطرح پر لکھے ہیں -

ब्रह्मांड तो ब्रह्मा प्राग्बभूव
किं विशिष्टः जगतामादि
मूलकारणं स्वयं चानादि
दृष्ट कारणशून्यः भग-
वद्विष्णुमयस्य भगवद्वि
ष्णोर्मूर्त्तिः रूपम परिच्छिन्नं
स्वरूप हिरण्यस्य ब्रह्मांड
स्य गर्भरूपश्चेत्यर्थः ॥ १ ॥

اس سوتر کا ترجمہ یہ ہے کہ سارے
جہان کے کارن ہرنیہ گربھ
برہما برہمانڈ سے پہلے پیدا ہوئی
فقط اب غور کیجیے کہ جیسے

श्वेत श्वतर और मुंड को पनिषत्
और सांख्य शास्त्र और पराशर सूत्र
में संपूर्ण देवताओं से प्रथम ब्रह्मा
जी का उत्पन्न होना स्पष्ट लिखा
है इसी प्रकार यदि स्वामी जी किसी
श्रुति से अग्न्यादिक का सब देव-
ताओं से प्रथम उत्पन्न होना और
ब्रह्मा जी को वेदों का पढ़ाना सिद्ध
करें तो उनकी बात स्वीकार करने
योग्य हो सकती है अन्यथा नहीं
मुंडकोपनिषत् में उक्त श्रुति से
आगे यह बात लिखी है कि ब्रह्मा
जी ने अपने बड़े बेटे अथर्व को
ब्रह्म विद्या अर्थात् वेद विद्या जो
सब विद्याओं की मूल है पढ़ाई
और अथर्व ने वही विद्या अंगीर
को पढ़ाई अंगीर ने भरद्वाजगोत्री
सत्यवाह को पढ़ाई उसने वही
विद्या अंगिरा को पढ़ाई तथाहि
स ब्रह्म विद्यां सर्व विद्या प्रतिष्ठा
मथर्वाय ज्येष्ठ पुत्राय प्राह ॥१॥

شویتا شوتر اونیشد اور منڈک
اونیشد اور پراشر سوتر اور
مہابھارت وغیرہ مین سب
دیوتاؤن سے پہلے برہما جی
کا پیدا ہونا صریحاً لکھا ہے
اسیطرح اگر سوامی جی کسی
شرتی سے اگنی اور بایو
وغیرہ کا کل دیوتاؤن سے
پہلے پیدا ہونا اور برہما جی کو
وید پڑہانا ثابت کرین تو البتہ
اونکی بات قابل تسلیم ہوسکتی
ہی پھر منڈک اونیشد مین شرتی
مذکور کے آگے یہ بات لکھی ہی
کہ برہما جی نے اپنے بڑے بیٹے
اتھرو کو برہم ودیا یعنی وید ودیا
جو سب ودیاؤن کی اصل ہی پڑہائی
اور اتھرو نے وہی ودیا انگیر
کو پڑہائی انگیر نے بہردواج گوتری
ستیہ باہ کو پڑہائی اوس نے وہی ودیا
انگرا کو پڑہائی چنانچہ —

स ब्रह्म विद्यां सर्व विद्याप्रतिष्ठा
मथर्वाय ज्येष्ठ पुत्राय प्राह ॥१॥

अथर्वणोयां प्रवदेत ब्रह्माथर्वा तांपुरो वाचाङ्गिरे ब्रह्म विद्यां स भारद्वजाय सत्य वाहाय प्राह भारद्वाजोङ्गिरसे परावरां ॥ २ ॥

अर्थात् ब्रह्मा जी ने वह वेद विद्या जिस के सब विद्या आश्रय हैं अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्व ऋषि को पढ़ाई ब्रह्मा ने जो विद्या अथर्व को पढ़ाई अथर्व ने वह ब्रह्म विद्या पूर्व अंगीर ऋषि को पढ़ाई अंगीर ने भारद्वाज गोत्री सत्य वाह को पढ़ाई उसने वह परावर विद्या अंगिरा को पढ़ाई ॥ २ ॥ धन्य है स्वामीजी के निर्णय पर कि श्रुति में तो अंगिरा को शिष्य परम्परा कर के ब्रह्मा जी का चतुर्थ शिष्य गिना है और वह कहते हैं कि अंगिरा ने ब्रह्मा जी को अथर्व वेद पढ़ाया स्वामी दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मुद्रित सन १८७५ के पृष्ठ २५० में लिखा है कि अंगिरा ने ब्रह्मा के

अथर्वणोयां प्रवदेत ब्रह्माथर्वा तां पुरो वाचाङ्गिरे ब्रह्म विद्यां स भारद्वजाय सत्य वाहाय प्राह भारद्वाजोऽङ्गिरसे परावरां ॥ २ ॥

یعنی برہماجی نے وہ وید ودیا جسکی کل ودیا محتاج ہین اپنے بڑے بیٹے اتھرو رشی کو پڑہائی برہماجی نے جو ودیا اتھرو رشی کو پڑھائی اتھرو رشی نے وہ ودیا پہلے انگیر نامی رشی کو پڑہائی انگیر نے بھردواج گوتری ستیہ واہ کو پڑھائی اوس نے وہ پرابر ودیا انگرا کو پڑہائی فقط افسوس ہے کہ سوامی جی کی تحقیقات پر کہ شرتی مین تو انگرا برہما جی کا سلسلہ وار چوتھا شاگرد شمار کیا ہے اور وہ کہتے ہین کہ انگرا نے برہما جی کو اتھرب بید پڑہایا یعنی خود سوامی دیانند سرستی نے ستیارتھ پرکاش مطبوعہ ۱۸۷۵ء کے صفحہ ۲۵۰ مین لکھا ہے کہ انگرا نے برہما جی کے

शिष्य के शिष्य से संस्कृत पढ़ी
और वह स्वामी जी का वाक्य यह
है (इन्द्र ने बृहस्पति से संस्कृत
पढ़ी और बृहस्पति ने अङ्गिरा
प्रजापति से उसने मनु से मनु
ने विराट से विराट ने ब्रह्मा से)
देखो जब कि स्वामी जी के कथ
नानुकूल संस्कृत भाषा में अंगिरा
ब्रह्मा जी के शिष्य का शिष्य
है तो यह कैसी अयोग्य बात है
कि ब्रह्मा जी को अंगिरा ने अथर्व
वेद पढ़ाया यह सब स्वामी जी
की विद्या का फल है अद्य पर्यन्त
संपूर्ण शास्त्र कारों और आचार्यों
का येही सिद्धान्त चला आया
है कि परमात्मा ने सृष्टि की
आदि में श्री ब्रह्मा जी को चारों
वेदों का उपदेश किया और
उन से ऋषि मुनियों के द्वारा
अस्मदादिकों को वेदों की प्राप्ति
हुई स्वामी जी जो श्रुति स्मृति

شاگرد کے شاگرد سے سنسکرت
پڑہی اور وہ سوامی جی کا قول
اسطرح ہے کہ (اندر نے برہسپتی
سے سنسکرت پڑہی اور برہسپتی
نے انگرا پرجاپتی سے اوس نے منو
سے منو نے براٹ سے براٹ نے
برہما جی سے) فقط دیکھو جبکہ سوامی
جی کے قول کے موافق سنسکرت
بہاشا میں انگرا برہما جی کے
شاگرد کا شاگرد ہے تو یہہ کیسی
بیہودہ گفتگو ہے کہ برہما جی کو انگرا
نے اتھرب وید پڑہایا یہہ سب دیانند
سرسوتی کی ودیا کا نتیجہ ہے ابتک
سارے شاستر کار اور آچاریوں کا یہی
ہی مذہب چلا آیا ہے کہ پرماتما
نے شروع آفرینش میں
برہما جی کو چاروں وید کا
اوپدیش کیا اور اون سے رشی
منیوں کے بواسطہ ہمکو وید
کی پراپتی ہوئی سوامی دیانند
سرسوتی جو شرتی اور سمرتی

और शिक्षा चार विरुद्ध अपना
कपोल कल्पित व्याख्यान करते
हैं कि ईश्वर ने अग्नि वायु आदित्य
और अंगिरा के ज्ञान में वेदों का
प्रकाश किया और उन्हों ने ब्रह्मा
जी को वेद पढ़ाये इस में उन्हों ने
अपना क्या लाभ विशेष समझा
है फिर स्वामी जी के व्याख्यान के
अनुकूल एक बड़ा आश्चर्य यह
है कि परमात्मा ने अग्नि वायु
आदित्य और अंगिरा को एक २
वेद का उपदेश किया और उन के
द्वारा ब्रह्मा जी को चारों वेदों की
प्राप्ति कराई यदि परमात्मा ने
अग्न्यादि में से किसी एक को
चारों वेद का अधिकारी नहीं
समझा और ब्रह्मा जी को चारों
वेदों का अधिकारी जाना - तो
ब्रह्मा ही जी को स्वतः चारों वेदों
का उपदेश क्यों न किया निदान
स्वामी जी के व्याख्यान से भी

اور آچاریون کے عقائد کے
خلاف اپنا تراشیدہ مسئلہ پیش
کرتے ہین کہ ایشور نے اگنی اور بایو
اور آدتیہ اور انگرا پر وید نازل کیئے
اور اونھون نے برہما جی کو پڑھائے
پرماتما جانے اونھون نے وید اور شاستر
کی مخالفت مین اپنا کیا فایدہ سوچا
ہے پھر سوامی جی کی قول کی موافق
جا تعجب یہ ہے کہ پرماتما نے اگنی اور
بایو اور آدتیہ اور انگرا کو ایک ایک
وید کا اوپدیش کیا اور اونکے بواسطے
برہما جی کو چارون وید کی تحصیل
کرائی اگر پرماتما نے اگنی وغیرہ مین
سے کسی ایک کو چارون وید کے
لایق نہ سمجھا اور برہما جی کو چارون
وید کے اوپدیش کے لایق جانا
تو برہما جی ہی کو بلا واسطہ
چارون وید کا اوپدیش
کیون نہین کیا فی الجملہ
سوامی جی کی تقریر سے بھی

ये ही प्रकट हुआ कि अग्न्यादि की अपेक्षा ब्रह्मा जी पूर्ण विद्वान हैं इसी लिये श्वेता श्वतरोपनिषत् में आया है कि ब्रह्म तत्व के जानने वालो में ब्रह्मा जी ही अग्रगामी हैं तथाहि तद्वेद गुह्यो पनिषत् सुगूढं तद्ब्रह्मा वेदते ब्रह्म योनिं अर्थात जो परमात्मा वेद गुह्योपनिषत में संवृत्त है और ब्रह्मा जी का उत्पन्न करने वाला है उस को ब्रह्मा जी ही जानते हैं जैसे कि ब्रह्मा जी का ब्रह्मज्ञान उपनिषत् से प्रकट है ऐसे अग्नि प्रभृति के ब्रह्म ज्ञान में कोई प्रमाण नहीं ब्रह्मज्ञान तो एक ओर है अग्नि तो देवताओं में भाग प्राप्ति के लिये ही प्रार्थना करता है तथाहि अग्निर्वा अकामयत अन्नादो देवा नां स्यामिति अतः अग्नि ब्रह्मा जी से अधिक वा उन के समान हो इस की तो

یہ ہی برآمد ہوا کہ اگنی وغیرہ کی نسبت برہما جی پوری فضیلت رکھتے ہیں اسی لئے شوتیا شوتر اونپشد میں آیا ہے کہ برہم کی حقیقت کے جاننے والوں میں برہما جی ہی افضل و اکمل ہیں چنانچہ —

तद्वेद गुह्यो पनिषत सु गूढं तद्ब्रह्मा वेदते ब्रह्म योनिं

یعنی جو پرماتما وید کے سّر اکبر اونپشد سے جانا جاتا ہے اور برہما جی کا پیدا کرنیوالا ہے اوسکو برہما جی ہی جانتے ہیں فقط جیسے کہ برہما جی کا برہم گیانی ہونا اونپشد سے ظاہر ہے ایسے اگنی وغیرہ کے برہم گیان میں کوئی سند نہیں ہے برہم گیان تو ایک طرف ہے اگنی تو دیوتوں میں بھاگ حاصل کرنیکے لئے خود درخواست کرتا ہے چنانچہ شرتی ہے —

अग्निर्वा अकामयत अन्नादो देवा नां स्यामिति

اب اسکا تو کیا ذکر ہے کہ اگنی برہما جی سے فائق یا اونکی برابر ہو

क्या कथा है इस से बुद्धिमानों
को योग्य है कि श्वेताश्वतर की
श्रुति के साथ शत पथ ब्राह्मण
के वचन की संगति स्वीकार करें
जैसे कि ऊपर निवेदन की गई
हमारा अभिप्राय धर्म के यथार्थ
निर्णय में है किसी प्रकार का
आग्रह नहीं है यहां तक श्वेता
श्वतर और शत पथ ब्राह्मण की
श्रुति का यथा योग्य एकार्थ
किया गया अब स्वामी जी ने जो
मनु का वचन प्रमाण दिया है
उस की संगति भी श्वेताश्वतर
की श्रुति के साथ की जाती है
स्वामी जी मनु के टीकाकार
कुल्लूक भट्ट को सर्वदा उल्लूक
भट्ट कहते रहे अब मनु के श्लोक
का वास्तविक अर्थ न समझ
कर उसी का कल्पित अर्थ सर्वथा
अशुद्ध श्रुति विरुद्ध स्वीकार कर
बैठे मनु का श्लोक और उसका

اس سے عقلمندوں کو چاہئے
کہ شویتا شوتر کی شرتی کے ساتھ
شت پتھ براہمن کے بچن کی تطبیق
قبول کریں جیسے کہ مفصل قلمبند
کی گئی ہمارا مدعا کا حصہ دہرم
کی تحقیق میں ہے کسی طرح کا تعصب
و طرفداری منظور نہیں ہے یہاں تک
شویتا شوتر اور شت پتھ براہمن
کی شرتی کا جیسا کہ چاہئے
ایک ارتھ کہا گیا اب سوامی
جی نے جو منو کا بچن سند
دیا ہے اوسکی تطبیق بھی
شویتا شوتر کی شرتی کے ساتھ
کی جاتی ہے سوامی جی منو کی
ٹیکا کار کلوک بھٹ کو
ہمیشہ اولوک بھٹ کہتے رہے
اب منو کے شلوک کا اصلی
ارتھ نہ سمجھکر اوسی کا جھوٹا
ارتھ شرتی کے
خلاف قبول کر بیٹھے
منو کا شلوک اور اوسکے

वास्तविक का अर्थ यह है अग्नि
वायु रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सना-
तनं दुदोह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुः
सामलक्षणं अर्थात् ब्रह्मा ने
ऋग्यजुः साम यह नित्य तीन वेद
यज्ञ की सिद्धि के लिये अर्थात्
यज्ञ करने और कराने के लिये
अग्नि वायु रवि नामक देवतों के
अर्थ क्रम पूर्वक दिये अर्थात् अग्नि
के लिये ऋग् वायु के लिये यजुः
रवि के लिये साम क्योंकि वेदत्रय
के बिना यज्ञ का संपादन होना
असंभव है (अग्नि वायु रविभ्यः)
इस पद में चतुर्थी विभक्ति है पंचमी
नहीं है और दुदोह क्रिया ददौ के
अर्थ में है क्योंकि धातु नाम नेका-
र्थत्वात् यह बात व्याकरण के
ग्रन्थों में प्रसिद्ध है अर्थ इस का
यह है कि धातुओं के अनेक अर्थ
होते हैं और महाभाष्य के अध्याय
६ पाद १ आह्निक १ में इस प्रकार

معنی حقیقی یہ ہیں —

अग्नि वायु रविभ्यस्तु
त्रयं ब्रह्म सनातनं दुदो
ह यज्ञसिध्यर्थमृग्यजुः
साम लक्षणं ॥१॥

یعنی برہما جی نے رگ یجر و سام
یہ تین وید قدیم یگیہ کی تیاری
کے لئے یعنی یگیہ کرنے اور کرانے
کے لئے اگنی اور بایو اور روی
نامی دیوتوں کے لئے ترتیب وار
دئے یعنی اگنی کے واسطے
رگ اور بایو کے واسطے یجر اور
روی کے واسطے سام کیونکہ
تینوں وید کے بنا یگیہ کا سامان
غیر ممکن ہے (اگنی بایو روی بھیہ)

अग्निवायुरविभ्यः

اس پد میں چتھی ہی بکتی
ہے نہ پنچمی اور (دودوہ) (दुदोह)
کریا یعنی فعل ہے (ددی) کے معنی میں
کیونکہ سنسکرت کے مصادر کے معنی
متعدد ہوتے ہیں یہ بات بیاکرن کی کتابوں
سے ثابت ہے اور مہابھاشیہ کے ادھیائے
۶ کے پہلے پاد کے پہلے آہنک میں بھی

पाठ आया है (अने कार्या अपि
घातयो भवंति) अभिप्राय दोनों
पाठ का समान है कुल्लूक भट्ट
और उस के अनुयायी दयानंद
सरस्वती ने जो (अग्नि वायु रविभ्यः)
इस पद में पंचमी विभक्ति मानी
है वह पूर्वापर विचार से असंगत
ज्ञात होती है क्योंकि (अग्नि वायुः
रविभ्यस्तु) यह मनु के प्रथमाध्याय
का २३ श्लोक है इसी अध्याय
का श्लोक ९ यह है (तदण्डम
भवद्धैमं सहस्रांशु समप्रभम्
तस्मिन्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोक
पितामहः) मनु अध्याय १ श्लोक
९ अर्थात् तब वह बीज सुवर्ण
के सदृश पवित्र और सूर्य के समान
प्रकाशित ईश्वर की इच्छा से अंड
के आकार होगया उस में आप
ब्रह्मा संपूर्ण लोक के पितामह
उत्पन्न हुए ९ देखो जब कि
सृष्टि की आदि में परमात्मा ने

واضح ہو (اگنی بایورویبھیا
अग्निवायुरविभ्यः
اس پد میں جو کلوک بھٹ اور
اوسکے پیرو دیانند سرستی نے
پنچمی بی بھکتی مانی ہو وہ محض
غلط ہو کہ اگلے اور پچھلے شلوکوں
کے مضمون کو خلاف ہو کیونکہ
(اگنی بایو رویبھیستو)
अग्निवायुरविभ्यस्तु
یہ منو سمرتی کے ادھیائے اول کا
۲۳ تیئسواں شلوک ہو اسی ادھیائے
۹ کا نواں شلوک یہ ہو کہ
तदण्डमभवद्धैमंस
हस्रांशुसमप्रभमतस्मि
न्जज्ञेस्वयंब्रह्मासर्व
लोकपितामहः॥ ॥ ॥
یعنی تب وہ تخم سونے کی مانند
پاک اور سورج کی مانند روشن
پرماتما کے ارادہ سے انڈے کی
صورت ہو گیا اوس میں آپ برہماجی
سب لوگوں کے جد پیدا ہوئے فقط دیکھو
جبکہ سرشٹی کی آدی میں پرماتما نے

ब्रह्मा जी को उत्पन्न किया और उन
को सब लोक की उत्पत्ति का द्वार
बनाया तो अग्नि वायु आदि भी
ब्रह्मा ही की सृष्टि के अंतरगत हुए
इन से ब्रह्मा जी का वेद पढ़ना असंगत
है फिर पहले अध्याय का श्लोक
२१ यह है॰ सर्वेषां तु सनामानि
कर्माणि च पृथक् पृथक् वेदशब्दे
भ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे
अर्थात् ब्रह्मा ने सृष्टि की आदि में
सब के नाम और सब के कर्म वेद
के शब्दों से जान कर भिन्न २ बनाये
जैसा गो जाति का गो नाम रक्खा
और अश्व जाति का अश्व ब्राह्मण
का कर्म अध्ययन अध्यापन आदि
ठहराया और क्षत्रिय का प्रजा रक्षण
आदि और लौकिक की व्यवस्था भी
पृथक् २ ठहराई जैसे कुलाल के
लिये घड़ा बनाना और जुलाहे
के लिये कपड़ा बुन्ना इत्यादि॰
देखिये जब कि सृष्टि की आदि में

برہماجی کو پیدا کیا اور اونکو
ساری جہان کی پیدائش کا ذریعہ
بنایا تو اگنی اور بایو وغیرہ بھی
اسی جہان کے انترگت ہونگی
جو کہ برہماجی کے وسیلے سے موجود
ہوا پس اگنی اور بایو وغیرہ سے
برہماجی کا وید پڑہنا غیر ممکن ہے
پھر منوسمرتی کے پہلے ادہیای کا
اکیسواں ۲۱ شلوک یہ ہے۔

सर्वेषां तु सनामानि क
र्माणि च पृथक् पृथक्
वेद शब्देभ्यः एवादौ
पृथक् संस्थाश्च निर्म
मे ॥२१॥

یعنی برہماجی نے ابتدا پیدائش میں سب کے
نام اور سب کے کام وید کے شبدوں سے
جانکر جدا جدا بنائی جیسے گاہوکی
جاتی کا نام گو اور گھوڑے کی جاتی کا نام
اشو کہا براہمن کا کام وید پڑہنا اور پڑہانا
وغیرہ کشتریہ کا کام دنیا کی حفاظت وغیرہ ٹھہرایا
اور عمومًا حرفے اور پیشے بھی علیحدہ
علیحدہ ٹھہرائے جیسے کمہار کے لئے گھڑا
بنانا اور جولاہے کے واسطے کپڑا بننا
وغیرہ علی ہذا القیاس دیکھو جب کہ سرشٹی کی شروع میں

ब्रह्मा जी ने वेद के शब्दों से जानकर
सब के नाम और कर्म निर्माण किये
तो अवश्य है कि अग्नि का अग्नि
और वायु का वायु और आदित्य
का आदित्य नाम भी वेद के अनुकूल
ब्रह्मा ही ने रक्खा वह कौन सा वेद
था कि सब सृष्टि की आदि में अग्नि
की अग्नि संज्ञा और वायु की वायु
संज्ञा और आदित्य की आदित्य संज्ञा
होने से पहिले ब्रह्मा जी के पास था
जिस से उन्हों ने सब के नाम रक्खे
इस से येही विदित हुआ कि सारी
सृष्टि से पहले परमात्मा ने ब्रह्मा जी
ही के हृदय में वेदों का प्रकाश किया
और उन्हों ने सृष्टि की आदि में तदनु-
सार सब के नाम और काम नियत
किये यदि अग्नि वायु आदित्य अंगिरा
सृष्टि की आदि में उत्पन्न हुए होते
और ईश्वर ने प्रथम इन्हीं को वेदों
का उपदेश किया होता तो वही
सब के नाम और कर्म और लौकि

برہماجی نی وید کے شبدوں سے
جانکر سب کے نام اور کام ٹھہرائے
تو ضرور ہی کہ اگنی کا اگنی اور بایو
کا بایو اور آدتیہ کا آدتیہ نام بھی
وید کی موافق برہماجی ہی نے رکھا
وہ کون سا وید تھا کہ کل آفرینش
کے آغاز مین اگنی کی اگنی نام
ہونے اور بایو کو بایو نام ہونے اور آدتیہ
کے آدتیہ نام ہونے سے پہلی برہماجی
کے پاس موجود تھا جس سے
اونھون نے سب نام رکھے اس سے
یہی واضح ہوا کہ ساری پیدائش
سے پہلے پرماتما نے برہماجی ہی
پر وید نازل کیا اور اونھون نے
روز ازل اوسی کے مطابق
سب کے نام اور کام مقرر
کئے اگر اگنی بایو آدتیہ انگرا
ابتداء دنیا مین پیدا ہوئے
ہوتے اور پرمیشور نے روز اول
ان ہی کو وید کا اپدیش کیا
ہوتا تو وہی سب کے نام اور کام وغیرہ

की व्यवस्था वेदानुसार निर्माण
करते न कि ब्रह्मा जी इस से निश्चय
है कि अग्नि वायु रविभ्यस्तु इस
श्लोक का अर्थ जो कुछ हम ने
निर्णय किया है वही ठीक है फिर
इसी अध्याय का श्लोक २२ यह है
(कर्मात्मनां च देवानां सोऽसृजत्
प्राणिनां प्रभुः साध्यानां च गणं
सूक्ष्मं यज्ञं चैव सनातनं) अर्थात उस
प्राणियों के प्रभु ब्रह्मा ने कर्म है
स्वभाव जिन का ऐसे देवताओं का
समूह और साध्यों का समूह और
सनातन यज्ञ को उत्पन्न किया २२
इस श्लोक में प्रभु शब्द ब्रह्मा का
विशेषण है और अर्थ उस का जनक
अर्थात् पिता है क्यों कि निरुक्ति उस
की यह है प्रकर्षेण भवत्यस्मादिति
अर्थात् जिस से जन्म हो वह प्रभु है
यहां से विदित होता है कि अग्नि
वायु आदि की गणना भी इसी
देवगण में है इस से बाहर नहीं है

ویدکی موافق تعین کرتے نہ
کہ برہماجی اس سے بخوبی جانا گیا کہ
(اگنی بایو روی بہیستو)
अग्नि वायु रविभ्यस्तु
اس شلوک کا ارتھ جو کچھ ہم نے
تحقیق کیا ہی وہ ہی صحیح ہی پھر
منو کے ادہیائے اول کا شلوک
بائیسواں ۲۲ یہ ہی
कर्मात्मनां च देवानां
सोऽसृजत् प्राणिनां
प्रभुः साध्यानां च गणं
सूक्ष्मं यज्ञं चैव सना-
तनं
یعنی اوس جانداروں کی پربہو
برہماجی نے کرم ہی سو بہاؤ جن کا
ایسے دیوتوں کے گروہ کو اور
سادہیوں کی گروہ کو اور سناتن
یگیہ کو پیدا کیا فقط اس شلوک
میں پربہو شبد برہما کی صفت ہے
اور پربہو اسکو کہتی ہین کہ جس سے پیدا ہوں
یعنی باپ یہاں ظاہر ہوتا ہی کہ اگنی بایو
وغیرہ کی شمار بھی اسی دیوتاؤں کی گروہ
میں ہوگی اس سے باہر اصلا نہیں

कि अग्नि वायु प्रभृति का देवता होना यजुर्वेद के चतुर्दशाध्याय की इस श्रुति से सिद्ध है (अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चंद्रमा देवते त्यादि) इस से स्पष्ट विदित हुआ कि देव गण की सृष्टि के साथ ब्रह्मा ने अग्नि वायु को भी उत्पन्न किया और वेदानुकूल उन के नाम रक्खे जब कि इन की उत्पत्ति और नाम रखने से पहिले ही ब्रह्मा जी के पास वेद विद्यमान थे तो क्यों कर होसकता है कि अग्नि वायु ने ब्रह्मा जी को वेद पढ़ाये फिर इसी अध्याय का श्लोक २३ वह है जिस के अर्थ में हमारा और स्वामी जी का विवाद है पूर्वापर श्लोकों की संगति मिलने के लिये वह श्लोक और उस का तात्पर्य फिर भी निवेदन किया जाता है (अग्नि वायु रवि भ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञ सिध्यर्थ मृग्यजुः साम लक्षणम्)

اگنی بایو وغیرہ کا دیوتا ہونا یجر وید کے چودھویں ادھیائے کی اس شرتی سے ثابت ہے۔

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चंद्रमा देवतेत्यादि

اس سے صریحاً محقق ہوا کہ دیوتاؤن کے گروہ کے ساتھ برہماجی نے اگنی بایو کو بھی اتپن کیا اور وید کے انکول اونکے نام رکھے جبکہ پیدا ہونے اور نام رکھنے سے پہلے ہی برہماجی کے پاس وید موجود تھے تو کیونکر ہو سکتا ہے کہ اگنی بایو نے برہماجی کو وید پڑھائے پھر اسی ادھیائے کا تئیسوان شلوک وہ ہے جسکے معنی میں ہمارا اور سوامی جی کا اختلاف ہے اگلے اور پچھلے شلوکون میں تطبیق ہونے کے لئے وہ شلوک اور اوسکا تاپرج پھر بھی عرض کیا جاتا ہے،

अग्नि वायु रविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनं दुदोह यज्ञ सिध्यर्थ मृग्यजुः साम लक्षणं ॥ ॥ ॥ ॥

अर्थात् ब्रह्मा जी ने यज्ञ के प्रचार करने के लिये अग्नि वायु और रवि के अर्थ तीनों सनातन वेद दिये अर्थात् पढ़ाये २३ इस से अगले श्लोक में है कि ब्रह्मा जी ने सूर्य्यादि ग्रह उत्पन्न किये यहां से विज्ञात हुआ कि सूर्य्य ब्रह्मा जी का पुत्र है और मनु के इसी अध्याय के श्लोक ३२ प्रभृति का यह अभिप्राय है कि ब्रह्मा ने १ स्त्री और १ पुरुष उत्पन्न किया इन दोनों से विराट नामी पुरुष उत्पन्न हुआ और विराट से मनु का जन्म हुआ मनु से अंगिरा उत्पन्न हुआ और पाराशर सूत्र में आदित्य को ब्रह्मा जी के पुत्र का धेवता लिखा है तथाहि (ब्रह्मणश्च दक्षिणां गुष्ट जन्मा दक्षः प्रजापतिर्द क्षस्या प्यदि ति रदितेर्विव स्वानिति) अर्थात ब्रह्मा जी के दक्षिण अंगुष्ट से दक्ष प्रजा पति

یعنی برہما جی نے اپنے اوتپین کئے ہوئے یگیہ کے پرچار کرنیکے واسطے اگنی باَیو روی کے لئے تینوں سناتن وید دئے یعنی پڑہائے فقط اس سے اگلے شلوک میں ہے کہ برہما جی نے سورج وغیرہ گرہ پیدا کئے فقط یہاں سے معلوم ہوا کہ سورج برہما جی کا بیٹا ہے اور منو کے پہلے ادہیائے کے شلوک بتیس ٣٢ وغیرہ کا مطلب یہ ہے کہ برہما جی سے ایک عورت اور ایک مرد پیدا ہوا ان دونوں سے بیراٹ نامی شخص پیدا ہوا اور بیراٹ سے منو کا ظہور ہوا منو سے انگرا پیدا ہوا اور پراشر سوتر میں سورج کو برہما جی کے بیٹے کا نواسہ لکہا ہے چنانچہ۔

ब्रह्मणश्च दक्षिणां गुष्ट जन्मा दक्षः प्रजापतिर्द क्षस्याप्य दिति रदितेर्विव स्वानिति॥

یعنی برہما جی کے داہنے انگشت سے دکش پرجاپتی

उत्पन्न हुआ और दक्ष प्रजा पति
से अदितिनामिका कन्या उत्पन्न
हुई उस से विवस्वान् अर्थात् आ-
दित्य उत्पन्न हुआ यहां से प्रकट
है कि अंगिरा ब्रह्मा जी की चौथी
पीढ़ी में हुआ और आदित्य ब्रह्मा
जी के पुत्र का धेवता है अंगिरा और
आदित्य के जन्म से बहुत पहिले
ब्रह्मा जी के पास चारों वेद विद्यमान
थे और वह चतुर्मुख प्रसिद्ध थे
उन्हों ही ने वेद के शब्दों से अंगिरा
और आदित्य के पिता और पिता
महादिकों के नाम रक्खे फिर क्यों
कर होसकता है कि अंगिरा और
आदित्य ने ब्रह्मा जी को अथर्व और
सामवेद पढ़ाया स्वामी जी ने जो
भूमिका के पृष्ठ १६। १७ और सत्यार्थ
प्रकाश के पृष्ठ २४१ - २४२
में लिखा है कि अग्नि वायु
आदित्य और अंगिरा सृष्टि की
आदि में हुए थे वह प्रमाण

پیدا ہوا اور دکش پرجاپتی سے
ادتی نامی لڑکی پیدا ہوئی اوس
سے آدتیہ یعنی سورج پیدا ہوا
یہاں سے جانا گیا کہ انگرا برہما جی
کی چوتھی پشت میں ہوا اور آدتیہ
برہما جی کے بیٹے کا نواسہ ہے
انگرا اور آدتیہ کے ظہور سے بہت
پہلے برہما جی کے پاس چاروں
وید تھیا تھے اور وہ چترمکہ مشہور
تھے اونہوں ہی نے وید کے
شبدوں سے انگرا اور آدتیہ
کے باپ اور دادا وغیرہ کے نام
رکھے پھر کیونکر ہوسکتا ہے کہ انگرا اور
آدتیہ نے برہما جی کو اتھرب وید
اور سام وید پڑھایا سوامی جی
نے جو بھومیکا کے صفحہ (۱۶) اور (۱۷)
اور ستیارتھ پرکاش کے
صفحہ (۲۴۱) اور (۲۴۲) میں
لکھا ہے کہ اگنی بایو آدتیہ
انگرا اس سرشٹی کی ابتدا
میں پیدا ہوئے وہ محض

शून्य है किन्तु श्वेताश्वतर और
मुंडकोपनिषत् तथा सांख्य शास्त्र
और मनु स्मृति और पराशर सूत्र
तथा महाभारत के विरुद्ध है अथर्व
वेद को बृहदारण्यकादि उपनिषदों
में जो आङ्गिरस कहा है उस का
कारण यह है कि अंगिरा ऋषि ने
पूर्वोक्त मुंडकोपनिषत के वचनानुसार
ब्रह्मा जी के बेटे के शिष्य के शिष्य
से वेदों को पढ़कर अथर्व वेद को
ऐसा हस्तामलक किया कि उस
के नाम से संबद्ध होगया यदि
स्वामी दयानंद सरस्वती के कथ-
नानुकूल अथर्व वेद का नाम इस
लिये आङ्गिरस होता कि अंगिरा
ऋषि के हृदय में ईश्वर ने उस का
प्रकाश किया तो स्वामी जी के
मतानुसार ऋग्वेद अग्नि के नाम
के साथ यजुः वायु के नाम के साथ
साम आदित्य के नाम के साथ
संबद्ध होता परंतु कहीं इस का

بے بنیاد ہے بلکہ شویتا شوتر
اونپشد اور منڈک اونپشد
اور سانکھیہ شاستر اور منو سمرتی
اور پراشر سوتر اور مہابھارت
کے خلاف ہے پھر اتھربن وید کو
برہدارنیہ وغیرہ اونپشدوں میں
جو انگرس کہا ہے اسکا سبب
یہ ہے کہ منڈک اونپشد کے قول
مذکورہ بالا کی موافق انگرا رشی
نے برہما جی کے بیٹے کے
شاگرد کے شاگرد سے
ویدوں کو پڑھ کر اتھربن وید کو
ایسا ازبر کیا کہ اسکے نام سے
منسوب ہوگیا اگر دیانند سرسوتی
کے قول کی مطابق اتھربن وید
کا نام اس لیے انگرس ہوتا کہ انگرا
رشی پر پرمیشور نے نازل کیا تھا
تو انکی مذہب کی موافق رگ وید
اگنی کے نام کے ساتھ اور یجر وید
وایو کے نام کے ساتھ اور سام وید
آدتیہ کے نام کے ساتھ منسوب ہوتا مگر کہیں اسکا

चिन्ह भी नहीं पाया जाता अत एव इस विषय में जो कुछ कि स्वामी जी का कथन है वह सर्वथा निर्मूल है फिर स्वामी जी ने जो यह लिखा है कि (श्वेताश्वतरोपनिषत् के वचन की संगति शतपथ और मनु जी के वचन से अविरुद्ध होनी चाहिये) यह बड़े अनर्थ की बात है क्योंकि श्रुति के अनुकूल स्मृति का अर्थ होता है न कि स्मृति के अनुकूल श्रुति का अर्थ क्योंकि स्मृति की अपेक्षा श्रुति बलवती है यथाहि श्रुति स्मृति पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते तत्र श्रौतं प्रमाणन्तु तयो र्द्वैधे स्मृति र्वरा। १। यह व्यास स्मृति का वचन है अर्थात् जहां श्रुति और स्मृति और पुराण में विरोध देखा जाय वहां श्रुति प्रमाण है और जहां पुराण और स्मृति में विरोध होय वहां स्मृति प्रमाण है इस लिये श्रुति के अनुकूल स्मृति

نشان بھی نہیں پایا جاتا لہذا اس بارہ میں جو کچھ کہ سوامی جی کی گفتگو ہے وہ بے سروپا ہے پھر سوامی جی نے جو لکھا ہے کہ (شویتاشوترا اپنشد کی شرتی کی تطبیق شت پتھ اور منو سمرتی کے بچن سے بخوبی ہونی چاہیئے) وہ بالکل لغو ہے کیونکہ شرتی کی موافق سمرتی کا ارتھ ہوتا ہے نہ کہ سمرتی کے انوکول شرتی کا ارتھ کیونکہ سمرتی کی نسبت شرتی کا اعتبار زیادہ تر ہے چنانچہ۔

श्रुति स्मृति पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते तत्र श्रौतं प्रमाणन्तु तयो र्द्वैधे स्मृति र्वरा॥१॥

یہ بیاس سمرتی کا بچن ہے اور معنی اسکے یہ ہیں کہ جسجگہہ شرتی اور سمرتی اور پران کے مضمون میں مخالفت نظر آوے وہاں شرتی کا اعتبار کیا جاتا ہے اور جسجگہ سمرتی اور پران میں اختلاف ہو وہاں سمرتی معتبر ہے فقط اسلئے شرتی

की संगति की गई फिर स्वामीजी ने जो यह लिखा है कि अब भी जो कोई चार वेदों को पढ़ता है वही यज्ञ में ब्रह्मासन को प्राप्त और उसी का नाम ब्रह्मा भी होता है, इससे ये ही विदित हुआ कि चारों वेदों का ब्रह्मा जी के साथ एक संबंध विशेष है दूसरे के साथ वैसा नहीं है और वह यही है कि सृष्टि की आदि में परमात्मा ने उनके हृदय में चारों वेदों का आप ही उपदेश किया अतएव जो कोई चार वेदों को अर्थ सहित यथार्थ अभ्यास करके हस्तामलक करता है वही यज्ञ में ब्रह्मा जी का प्रतिनिधि गिना जाता है यदि परमात्मा ने सृष्टि की आदि में अग्न्यादिकों को वेदों का उपदेश किया होता तो ऋग्वेद का हस्तामलक करनेवाला यज्ञ में अग्नि का प्रतिनिधि और यजुः का हस्तामलक करने वाला यज्ञ में वायु का प्रतिनिधि और

کے بچن کو شوتیا شوتر کی شرتی کے ساتھ تطبیق دی گئی پھر سوامی جی نے جو یہ لکھا ہی کہ اب بھی جو کوئی چارون ویدون کو پڑھتا ہی وہی یگیہ مین برہماسن کو حاصل کرتا ہی اوسی کا نام برہما بھی ہوتا ہی اس سے یہی محقق ہوا کہ چارون ویدون کو برہما جی کے ساتھ ایک طرح کی خصوصیت ہے دوسرے کے ساتھ ویسی نہین ہی اور وہ یہی ہی کہ شروع آفرینش مین پرماتما اونکو چارون وید کا آپ ہی اوپدیش کیا لہذا جو کوئی ویدون کو مع معنی کی کما حقہ یاد کرتا ہی وہی یگیہ مین برہما جی کا قایم مقام شمار کیا جاتا ہی اگر پرماتما نی سرشٹی کی آدی مین اگنی وغیرہ کو ویدون کا اوپدیش کیا ہوتا تو رگ وید کو یاد کرنیوالا یگیہ مین اگنی کے قایم مقام اور یجر وید کو یاد کرنیوالا یگیہ مین وایو کے قایم مقام اور

सामका हस्तामलक करने वाला
यज्ञ में आदित्यका प्रतिनिधि और
अथर्व का हस्तामलक करने वाला
यज्ञ में अंगिरा का प्रति निधि हुआ
करता सो कुछ भी नहीं है यदि स्वामी
जी और उनके शिष्य वर्ग वेद ब्राह्मण
उपनिषद् और मन्वादिक का यथार्थ
अर्थ समझते तो ऐसे भारी भ्रम में पड़
कर अन्यथा भाव ग्रहण न करते इस
लिये मुन्शी इन्द्रमणि उनके सन्मुख
प्रार्थना करता है कि अपनी हट छोड़
कर सत्य का ग्रहण करें **दोहा**
करें ग्रहण जो सत्य का दे असत्य को
त्याग॥ पावें सो शुभ लोक को छोड़
द्वेष अरु राग॥१॥ सत्य बराबर तप
नहीं नहीं असत्य सम पाप॥
ग्रहण कीजिये सत्यको
नष्ट होंय त्रय
ताप
।२।

سام وید کا یاد کرنیوالا یگیہ مین
آدتیہ کے قایم مقام اور اتہرب
وید کا یاد کرنیوالا یگیہ مین انگرا
کے قایم مقام ہوا کرتا حالانکہ
کچھ بھی نہین ہے - اگر دیانند سرسوتی
اور اونکے پیرو وید اور براہمن اور
اوپنشد اور منوسمرتی وغیرہ
کتابون کے مفہوم اور مقصود سے
آگاہی رکھتے تو ایسی بڑی
غلطی مین پڑکر وید اور شاستر
سے برگشتگی اختیار نکرتے
اسواسطے فقیر اندرمن انکی
خدمت مین عرض کرتا ہے کہ
اپنی ہٹ چھوڑ کر راستی اختیار
کرین **رباعی** راستی
اختیار کر بھلائی ہے یہی
تیری عقل و دانائی ہے جو
کوئی راستی سے ہو
روتاب ہ پاوے دونون
جہان مین
رسوائی
فقط

विज्ञापन

अब पर्यंत संपूर्ण शिष्टों का यही मत चला आ-
या है कि परमात्मा ने सृष्टि की आदि में श्री
ब्रह्मा जी के हृदय में वेदों का प्रकाश किया
और उनके द्वारा समस्त ऋषि मुनि और अस्म-
दादिकों को वेदों की प्राप्ति हुई अब स्वामी
दयानंद सरस्वती ने जो अपने अज्ञान से यह
कल्पना की कि सृष्टि की आदि में परमात्मा
ने अग्नि वायु और आदित्य अंगिरा को वेद
दिये उन से ब्रह्मा को प्राप्त हुए इस का समा-
धान सत्शास्त्रानुसार इस ग्रंथ में किया गया
मूल्य इसका =) है सज्जनों को उचित है कि
पक्षपात को छोड़ कर सत्य का ग्रहण और
असत्य का त्याग करें जिस प्रकार स्वामी जी की
यह बात मिथ्या है इसी प्रकार मुक्ति से पुनरा-
वृत्ति १ देवता मनुष्यों से भिन्न नहीं है २ स्वर्ग नरक
सुख दुःख के भोग ही का नाम है कोई लोक विशेष
नहीं है ३ एक वृक्ष में अनेक जीव हैं ४ जीवों का
अनंत न मानना ५ परस्पर नमस्ते का करना
इत्यादि उनकी अनेक बातें अशुद्ध हैं इनका
खंडन भी शीघ्र मुद्रित होगा

लिखितं मनोहरस्वरूपेण

اطلاع

اب تک سب آچاریوں کا یہی مت
چلا آیا ہے کہ پرماتما نے ابتدا آفرینش
میں برہما جی کو بطریق الہام ویدوں
کا اوپدیش کیا اور انکے ذریعہ سے سب رشی
اور منی وغیرہ کو وید حاصل ہوئے اب
سوامی دیانند سرسوتی نے جو اپنی
لاعلمی سے یہ بات بنائی کہ شروع دنیا
میں پرماتما نے اگنی اور وایو اور
آدتیہ اور انگرا کو وید دئے اون سے
برہما کو حاصل ہوئے اسکا جواب بموجب
شاستر کی موافق اس کتاب میں
دیا گیا قیمت اسکی ۲ ہے اہل انصاف
کو مناسب ہے کہ تعصب کو چھوڑ کر حق کو قبول
اور باطل کو باطل جانیں جسطرح سوامی
جی کی یہ بات جھوٹ ہے اسیطرح مکتی سے واپس
آنا ۱- دیوتا انسانوں سے غیر نہیں ہیں ۲-
بہشت اور دوزخ تکلیف و آرام کے ملنے ہی کا نام ہے
کوئی جگہ خاص نہیں ہے ۳- ایک درخت میں بہت
روحیں ہیں ۴- جیو لا انتہا نہیں ہیں ۵- آپس میں
نمستے کا کرنا ۶- انکے سوا اور بھی انکی بہت باتیں
غلط ہیں انکا رد بھی عنقریب مطبوع ہوگا
فقط

کتبہ منوہر سروپ